कल्लोलजी चतुर्थ

अनुक्रमणिका

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग प्रथम ।।

।। सिकन्दरपुरादि विहार भये ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

श्री श्री गोकुलेश चरण कमलेभ्यो नमः

अथ चतुर्थ कल्लोल लखिये छे ।।

श्लोक -- **श्रीमद् गोकुल भावात्मा सत्कान्भक्तान्नमाम्यहं यत्कृपातोभ वेल्लाभो गोकुलेश रस स्पहिः ।।१।।**

याको अर्थ -- अब श्री गोकुलपति के परिपूरण कृपापात्र अनन्य टेकी परम भक्त कल्याण भटजी श्री गोकुलपति के रस लीलामय चतुर्थ कल्लोल कूं कहें हैं ।। तामें मंगलाचरण कों यह प्रथम श्लोक है ।।

श्लोक -- **श्री गोकुलेश लीलासिंधो सास्तानलं कृतार्थ यितु विज्ञं मन्यानपि कि प्रादुर्भावं तथा तथा तनुषे ।।१।।**

याको अर्थ -- सो कल्याण भटजी कहें हैं, के हे श्री गोकुलेश लीलासिंधो निःसाधन जीवों के ही मुख्य परम फल रूप श्रीजी के लीला सागर सो आप कहां विन विन मूर्खन कूं हू अत्यन्त कृतार्थ करिवे के लिये तैसे तैसे अपने प्रागट्य कूं करो हो, सो जासूं निश्चय है ।। यह जीव तो श्री आपकी या लीलामय गोष्पद में हू सर्व प्रकार समान होय जाय है ।। सो श्री आप तो पार रहित अगाध्य रस सागर हो, सो आप में तरवे कूं तो किंचित मात्र हू समर्थ नहीं है अथवा अपने प्रागट्य के सामर्थ कूं जानो हो तासूं आपके तरवे में न समर्थ हू विन विन जीवन कूं स्पर्श करिके हू सत्फल कूं प्राप्त करो हो ।। या प्रकारं वस्तु स्वरूप कूं द्वगमात्र सूं निरूपण करिके अब प्रसंग कूं वर्णन करें हैं ।। के --

श्लोक -- **एवं स्वतंत्र भावेना वा स्थित परमः प्रभुः ।। विरहन् विविधं भक्तान्विधान कृतार्थ यतः ।।**

या प्रकार स्वतंत्रता सूं विराजमान भये थके सो परम प्रभु श्रीजी विविध प्रकार सूं विहारन करत अनेक प्रकार के भक्तन कूं कृतार्थ करत भये हैं ।।

श्री विट्ठलेश्वर श्री गोस्वामीजी के नंदन जे श्रीमान श्री गोकुलनाथजी हैं सो श्री पार्वती बहूजी जे मुख्य स्वामिनीजी हैं वाके प्राणन सूं हू देखित हैं अथवा सो श्री पार्वती बहूजी स्वकीयावलंबना मुख्य श्री स्वमिनीजी हैं प्राणन सूं हू प्रिय जाकूं ऐसे हैं और जो श्री रुक्मिणीजी काकीजी को उत्संग में गोद में लालना किये है और जे श्री वल्लभजी ऐसे प्रसिद्ध अनन्त गुण महात्म्य सूं अधिक सुन्दर जिनको श्रीमुख है और पद्मन सूं हू अधिक हैं सुन्दर नयन जाके और खर्वन अब्जन पुरुषोत्तमन सूं अधिक सुन्दर हैं चरणकमल की रज जाकी और सर्वात्म भाव वारी सम्पूर्ण जे गोकुल की चन्द्रमुखी हैं विनकूं प्रिय है और विनके भोग में रसिक है और विनमें स्थापन कियो जो परकीया भाव है वाको भोग करिवे वारो है और विनमें उछल्लित किये सिद्ध कियो जो स्वकीया भाव है वाके रसास्वाद सूं हू महारस जिनको और विनको जो पतिव्रता जो भाव है और चातुर्य विनय संबंधी आस्वाद है वाके भोगवे में है मन जाको और जिनको जो मुग्ध भाव है वाके आस्वाद सूं अत्यन्त प्रसन्न होय है और विनमें जे तारुण्य कूं नव जोवन को अंकुर है वाकूं हू देखवे वारे हैं और विनके यौवन संबंधी रस अंकुर के आस्वाद लेवे वारे हैं ॥ और रमण में जो विनको मान आदि वाम भाव है सो आपकूं अत्यन्त प्रिय है और कोमल मनोहर जो विनको मान है तासूं सरस है और विनमें जो लज्जा कूं आधिक्य कहे वाकूं भावना करिवे वारे हैं और विनमें जो मध्याभाव है तामें आशक्त चित्त वारे हैं ॥ और विनको चित्र रमण है ॥ सो आपकूं अत्यन्त प्रिय है और विनमें जो अधिक रस है तासूं अत्यन्त प्रसन्न हैं और विनकी तारुण्य नव जोवन की उन्नति है ॥ प्रकर्ष है सो आपकूं बहुत प्रिय है और विनको जो थोरो थोरो प्रगलंम्भ वाणी वारो भाव है वाके भोग में परम चतुर हैं ॥ और विनमें चाहना के समय प्रगट भयो जो समान लज्जा वारो स्वभाव है वाको भोग करिवे वारे हैं ॥ और विनमें जो प्रगल्भता को रस है वाको स्वाद लेवे वारे हैं और वा रस के आधिक्य सूं पुष्टि होय रही है मुख प्रसन्नता जामें और विन सुन्दरीन कूं जो जोवन को भार है तासूं सुखी होय है ॥ और विनके रमण संबंधी पूर्ण चातुर्य कूं जानवे वारो है और विनमें आशक्ति सूं प्रगट भयो अधिक रस है वाके भोक्ता हैं और विनके प्रिय हैं और विनसूं थोरे लज्जित हू हैं ॥ और विनकी जो अपने आधीन करवे वारी क्रिया है तासूं है आस्वाद जाको और विनके ही भावन कूं भावना करें

हैं ॥ और विनमें उदय होय रहे जे उपहास सहित वचन और टेडे वचन और मान धैर्य मुग्धता हैं सो विनके रस आस्वाद में तत्पर हैं और विनके संबंधी मुग्धता मान और धैर्य आदि सूं उदय भयो जो रस को समूह है वाके लेवे में परम पंडित है ॥ और विनके संबंधी मुग्धता मान और अधीरता सूं और कठोर वचनन सूं जो रस समूह होय है वाके रस आस्वादन में तत्पर है ॥ और विनके जे प्रगल्भता और धैर्य और रमण में उदासीनता और बाहिर को आदर और मान कूं आछी रीति सूं छिपावनो है विनसूं प्रगट भयो जो माधुर्य है वाकूं आछी रीति सूं आस्वादन करवे वारे है ॥ और हू जे विनके मान अधीर्य प्रगल्भता सहित चातुर्य के वात कूं छिपावने के जे वचन हैं और धैर्य हैं विनसूं भयो जो रस आस्वाद है तामें जाग्त्रे मन अत्यन्त ही आशक्त है और कबहू जों वे प्रगल्भता के वचन कहे है और कबहू वर्ज्जन कहे है ॥ और कबहू अधीर होय है ॥ और कबहू ताड़न करे है ॥ ऐसे जे विनके विचित्र भाव हैं विनसूं भयो जो रस समूह है ॥ वाके विशेष सूं जानवे वारे हैं और जो कबहू के अल्प प्रेम कूं प्रगट करे है ॥ और कबहू अधिक प्रेम प्रगट करे है ॥ विनको जो माधुर्य है वाके आस्वाद में सावधान है ॥ और विनमें जो पर विवाहिता भाव सूं रस है वाके भोक्ता हैं ॥ और विनमें जो अविवाहिता भाव सूं रस है वाकूं विशेष भावना करिवे वारे हैं ॥ और विनके प्रति अधीन होयवे सूं है रस जाको और विनके पिता आदिकन के वश तामें है बुद्धि जाकी और विनमें जे परकीया भाव के वर्तमान होने पर हू लीला शक्ति सूं तैसे तैसे उछल्लित रस होय रह्यो जो स्वाधीन भरता वारो भाव है और जो तब तब खंडिता भाव है ॥ और अद्‌भुत विप्रलब्धा भाव है और जो कलहांतरिता भाव है और जो वासकसज्जना भाव है और जो उत्कंठिता भाव है ॥ और तैसो सो अभिसारिका. भाव है और जो अमृत सूं हू सुन्दर संप्रोषित पतिका भाव है सो विन सगरे रसन के भोक्ता श्रीजी हैं ॥ और जो तमिस्त्राभिसारिका भाव है अंधियारी रात्रि में तैसे वस्त्र श्रृंगार कूं करिकें छिपकें ही प्रिय के निकट जो पधारनो है और जो ज्योत्सनाभिसार का भाव है के चांदनी रात्रि में तैसे वस्त्र श्रृंगार करिके जो प्रिय के निकट पधारनो है और जो दिनाभिसारका भाव है के दिन में ही पुरुष आदि रूपन सूं प्रिय के निकट पधारनो है और वर्षाभिसारिका कैसे के वर्षा में जो प्रिय के निकट पधारनो है और तैसो जो पवन समूह में जो प्रिय

के निकट पधारनो है और वधुत्पाताभिसरण है के बिजुरी गर्ज रही है, गिरि रही है वा समय में हू तैसे श्रृंगार युक्ति सूं प्रिय के निकट पधारनो है और प्रसभामिसरण है के बल सूं हू प्रिय प्रिया के निकट पधारनो है ऐसे जे विन सुन्दरीन के रसमय अभिसरण हैं विन सगरेन के ही रस के भोक्ता श्रीजी हैं और पूर्वोक्त प्रकार के अभिसरणों में बड़े कुलवारी स्त्रीन कूं जो अपने अंगन में लीन होय जावनो है, और जो गहेनेन कूं मूक करनो है तैसे घूंघट आदि सूं सगरे अंगन कूं छिपाय के चलनो है और तिस महा रस के संभोग में अत्यन्त परायण है मन जाको ऐसे श्रीजी हैं ।। और विन सुन्दरीन कूं भ्रूअ नेत्र मुख आदिकन में विलक्षणता कूं करिवे वारो श्रीजी के अर्थ अनिरवचनीय सूक्ष्म रस रूप थोरो प्रतीत होयवे वारो संभोग इच्छा कूं जतायवे वारो जो प्रथम विकार है वाके भोग में सावधान है और प्रगट भये हू वा विकार के हू भोक्ता हैं ।। और विन सुन्दरीन की जो रूप शोभा है विनके आस्वाद भोक्ता हैं ।। और विनके जोवन की विशेष शोभा कूं जानवे वारो है ।। और विनके अंग अंग की शोभा में मग्न होय रह्यो है आत्मा जाको ऐसे हैं और विनकी जो अवस्था संबंधी है वाकूं भावना करिवे वारो है और विनकी जो रसमय कांती है जो अत्यन्त शोभायमान होय रही है ।। वामें तत्पर है और विनकूं जो सगरी अवस्था में माधुर्य है वामें सावधान है ।। और जो विनको निर्भय भाव है वाके भोक्ता हैं और जो विनकूं सर्वकाल में विनय प्रार्थना है जो धैर्य है वाकूं अत्यन्त भावना करिवे वारे हैं और प्रीति सूं वे सुन्दरी श्रीजी के अनुकरण कूं करें हैं ।। वामें जाकी बुद्धि अत्यन्त निमग्न होय रही है ।। और विनके विलास में अत्यन्त बंध्यो भयो है मन जाको और वो अत्यन्त अल्प श्रृंगार में हू जो विनकी मनोहरता बढ़े है वामें अपनी आत्मा कूं हू जाने न्योछावर कियो है ।। और अत्यन्त वांछित वस्तु में हू विन सुन्दरी गणन कूं सौभाग्य के गर्व सूं अनादर होय है सो वामें ही आशक्त मन वारे श्रीजी हैं ।। और विनके संबंधी मंद हंसनो वृथा रुदन करनो और हंसनो और श्रम और कोप मय जे हैं विनसूं प्रगट भयो जो विनकी प्राप्ति सूं उत्पन्न भये हर्ष ने जो कियो रस समूह है वाके ही अनुभव में तत्पर हैं तब विनकूं स्तन केश अधर आदिकन कूं स्वयं श्रीजी ग्रहण करें हैं ।। तब हर्ष के अधिक होने पर हू संभ्रम सहित विनकूं नून्य ऐसो जो वचन है वा अमृत रूप महासागर के पान सूं भयो जो अत्यन्त मद है तासूं होय रह्यो है बड़ो

गर्व जाकूं और जो तैसे समय में वे सुन्दरी गण हस्तकमल और शिर कूं निरोध कूं करत चंचल करें हैं ।। सो विनको जो शोभा सागर है वामें निरन्तर मग्न होयवे सूं शीतल है अपनो अंतःकरण जाकूं और श्रीजी के प्रति पधारवे में विनको जो साहस और हर्ष आदि सूं भयो जो भूषण वस्त्रादिकन कूं तैसो रसमय सुन्दर विपर्यव है सो वाकी माधुर्य कूं स्वाद लेवे वारे हैं ।। और सौभाग्य नव जोवन शोभा पूर्ण जो विनमें अनिर्वचनीय मनोहर गर्व होय है वाके पान में लंपट चित्त वारे श्रीजी हैं ।। और कबहू जो वे सुन्दरी जन उत्तर देवे के समय में हू जो लज्जा सूं मौन कूं धारण करे है, वाके रसपान में है हृदय जाको और जो वस्तु आछी रीत सूं ज्ञात हू है तथापि न जानत जैसे होय तैसे जो वे विदग्धा सुन्दरी श्रीजी सूं पूछें हैं । सो वा माधुर्य ने हर्यो है मन जाको ऐसे श्रीजी हैं और श्रीजी के प्रति आगमन में उत्साह सूं आधो सजो भयो जो विनको भूषण है वाकी मनोहरता को स्वाद लेवे वारे हैं जो श्रीजी निकट हू विराजमान हैं ।। तबहू जो वे कमलनयनी गण उत्साह सहित इत उत वृथा ही देखें हैं सो उछल्लित होय रह्यो जो वाकूं महारस है वाको अनुभव करिवे वारे हैं ।। जो वे कबहू तैसे तैसे कहूं कछु हू प्रेम रस सहित रहस्य कूं श्रीजी के प्रति कहे है ।। वाकी माधुरी सूं प्रसन्न है और जो सुन्दर वस्तु के दर्शन और ग्रहण आदि के अर्थ विनकूं चंचलता उदय होय है ।। वाके अमृत पान में लोभी मन वारे हैं ।। और जो विनकूं नव जोवन के आधिक्य सूं अमृत पर हू हरिवे वारो जो हास्य प्रगट होय है सो वाके रस पान में लंपट मन वारे हैं ।। जो श्रीजी के समक्ष ही कबहू विनकूं किंचित मात्र कारण सूं ही जो संभ्रम होय है सो तो निधि लक्षन के लाभ सूं हू मधुर है ।। सो चन्द्र रूप है वामें श्रीजी चकोर रूप हैं । जो विहार में वे श्रीजी के संग तैसे तैसे विहार कूं करे है सो निर्मल उज्ज्वल पुष्प है विनके रसपान में श्रीजी मधुर रूप है ।। भौंरा रूप है जो मुग्धा भाव में है के अविवाहिता है विनकूं जब श्रीजी देखे है सो वे जो लज्जा कूं दिखावे है और श्रीजी सन्मुख नहीं देखे है और जो वे इत उत जाते भये श्रीजी कूं अथवा छिपे भये कूं अथवा अपने सूं आगे जाय रहे श्रीजी कूं जो वे देखे हैं और मंद मंद बहुत प्रकार सूं अपने कूं तुम कौन हो इत्यादि प्रकार सूं पूछी भई हू वे कांपत कांपत ही गदगद स्वरा सूं नीचो मुख करिके जो कछुक वे कहें हैं और जो अन्य लोगन ने निरन्तर कही जो श्रीजी की कथा

है वाकूं और ठौर में नयन कूं देकर सावधान होयके जो वे गौरांगी सुनें हैं यह जे अत्यन्त मधुर रस है विनके पान सूं पूर्णायमान है मन और नयन जाके और जो यह प्रेम के भार सूं अपने निकट नयनों के सन्मुख श्रीजी की चिर पर्यन्त स्थिति कूं बहुत माने है ।। वामें अत्यन्त प्रसन्न होय है और जो कबहू अलंकार कूं हू त्याग नहीं करे हैं के सदैव ही श्रृंगार कूं धारण करि रही हैं और जो वे कबहू अपने केशन के बांधने और सूधे करिवे की मिस सूं श्रीजी के प्रति जो अपनो कुच कलश और नाभि पद्म और भुज मूल कूं स्पष्ट दिखावें हैं ।। और जो वे अपनी अंतरंग सखीन कूं वचनादि सूं निरन्तर धैर्य देवे हैं ।। और विनमें जो विश्वास करे है ।। विनकूं बहु मान देवे है और जे श्रीजी के गुणन कूं विनके प्रति कहे है ।। और विनके प्रति धन कूं अर्पण करे है और श्रीजी पौढ़े तो वे हू पौढ़े है ।। श्रीजी श्री अंग में कछु क्लेशादि दिखावे सो वे हू अपने में अत्यन्त दुःखी होय है ।। और जो श्रीजी के सुखी होने में अपने में हू सुख कूं माने है ।। और जो श्रीजी के सन्मुख स्थित होयके दूर सूं श्रीजी कूं विकार सहित देखत ही अपने परिजनों के सहित विकार सहित बोले है और जो श्रीजी कूं देखिकें अनिरवचनीय प्रकार सूं जो हंसे है और वृथा कानन कूं खुजावे है और अपनी कवरी कूं वैनी कूं खोले है ।। और वाकूं जो बांधे है ।। और अपने अंगन कूं जो ताड़न करे है और जो बालक कूं गाढ़ आलिंगन करिके चुंबन करे है ।। और जो सखीजन मस्तक में तिलक कूं धारण करें है ।। और जो मुख नीचो करिके चरण के अंगुष्टाग्र सूं भूमि कूं लिखे है ।। और शोभायमान कटाक्ष वारी जे वे हैं जो ऊँचो देखे है ।। और जो वे अपने अधर कूं दंतन सूं दंसे है और श्रीजी सूं मुख कूं नीचो करिके बोले है ।। और जो वे जहां गड़ी होय वाकूं कबहू नहीं छांड़े हैं ।। और कछुक कार्य के मिस सूं श्रीजी के घर में पधारें हैं ।। और जा श्रीजी ने कछुक दियो है वाकूं बारंबार अपने अंग में धारण करिके बारंबार देखे हैं ।। और जो श्रीजी कूं संयोग होय तो वामें तो अत्यन्त प्रसन्न होय हैं ।। और जो श्रीजी को मिलाप नहीं होय तो वे मलीन वस्त्र वारी होय हैं ।। और कृश होय हैं ।। और जो श्रीजी कूं प्रिय हैं वाकूं बहुत मान देवे हैं ।। और जो हंसत हंसत थोरे मूल्य वारी ही वस्तुन कूं प्रार्थना करें हैं ।। और जो शयन करत हू सो श्रीजी के सन्मुख बारंबार कही भई हू नहीं होय हैं ।। और जो श्रीजी के सन्मुख विराजमान भई थकी

सो रुचिर अंगन वारी तो सुन्दरीगण विकारन कूं प्राप्त होय हैं ।। और स्तंभ स्वेद और कंप तैसे स्वरभंग और विवर्णता और अश्रु वर्षा और रोमांचन कूं जो धारण करें हैं ।। और सुख दुःख सूं होयवे वारे चेष्टा ज्ञान जामें निवृत्त होय जाय ऐसे प्रावल्य कूं जो प्राप्त होय है ।। और जो कृश उदरवारी वे श्रीजी के संग अत्यन्त मधुर और स्निग्ध वचन कहे हैं सो जाके तुल्य और जासूं अधिक रस नहीं है ऐसे यह सगरे रसन कूं जो विशेष अनुभव रूप साम्राज्य् है वाके लाभ सूं अत्यन्त प्रसन्न है आत्मा जाकूं ऐसे श्रीजी हैं ।। सो ऐसे या प्रकार निस्तुष करोड़न रस सागर मय मूर्ती वारे श्रीजी के तैसे रसमय कल्लो हैं प्रसरे भये ही सगरी वसुमती अलौकिक भूमि कहा के अलौकिक भक्तन के हदयन कूं व्याप्त होय जाते भये हैं ।।५१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरा विहारमये चतुर्थ कल्लोले प्रथम तरंग समाप्तम् ।।१।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग द्वितीय ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ द्वितीय स्तरंग लिख्यते ।।२।।

श्लोक -- **तत्त त्रिवृन्मृगाक्ष्योतः संपूर्णे पुरषोत्तमे सर्वावतारावतारी दुर्ल्लभ तमैरलः ।।१।।**

याको अर्थ -- तिस तिस देश की जे मृगनयनी हैं सो सगरे अवतारन के जे अवतारी हैं विनमें हू और अत्यन्त दुर्ल्लभ है ।। ऐसे इत उत सूं सुने भये जे सम्पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी में तरुणता सौंदर्यता शोभा और प्रभाव तैसे भावादिक और यश प्रताप महात्म्य बल पौरुष नीति और आचार विद्या पवित्रता और धर्म धैर्य दयादिक और विदग्धता, शील, विलय माधुर्य प्रेम भक्ति तैसे उदारता गंभीरता रस अहंकार कूं अभाव और सौहार्द और अनन्त भाषा को ज्ञान और भक्तवत्सलादिक और तैसो प्रिय बोलनो और कोऊ को अपराध न देखनो और अत्यन्त द्रढ़ अंगीकार और कोमलता सत्य वचन सुन्दर बुद्धि और परिहास

रस कूं समुद्र रूप तो और मंगलमय जे सुन्दर लक्षण वारे यह कहे तैसे और हू जे विविधि गुण हैं विनसूं वे मृगनयनी श्रीजी में अत्यन्त उत्कंठ भाव कूं बांधती भई हैं ॥ और प्राणन सूं हू अधिक प्रिय वा श्रीजी में उपयोग न होयवे सूं अपने जन्म और जाति और गुण और स्वरूप और अपने विदग्धता सुन्दरता और शील दृष्टि विन सगरेन की व्यर्थता कूं मानती भई है ॥ और या प्राणप्रिय श्रीजी के दरशन कूं अत्यन्त इच्छा करत भई है ॥ सो कितनी एक तो स्त्री पराधीन हैं सो गोकुल में गमन की आशा हू सर्वथा नजर नहीं आवे है ॥ तासूं अपने शरीर सूं वा गोकुल में वेग गमन के अर्थ वाण रूप कूं और पक्षी भाव कूं और तहाँ गमन करिवे वारे पवन भाव कूं और तहां के चन्द्र भाव कूं हू और सूर्य भाव कूं और सूर्य की किरण भाव कूं तैसे तम रूप कूं और चन्द्रिका रूप कूं और आकाश रूप कूं और समय रूप कूं तैसे दिन भाव और रात्रि भाव कूं और तहाँ की धरा कहाँ भूमि ररूप कूं और हू तहां श्रीजी के सुख अर्थ दर्शन स्पर्श आदि अर्थ तामें उपयोगी तैसे तैसे रूप कूं चाहना करत हैं ॥ और महा बलवान दरशन की इच्छा सूं पीड़ित होय रही हैं ॥ तासूं सो विन मृगनयनीन के जो वृन्द हैं चित्रकारीन के स्त्रीन कूं प्रार्थना करत भये हैं ॥ सो वा प्राण प्रिय को रूप लिखके तो हमकूं दर्शन करावो ॥ तब विनने हू लिखके तैसो चित्र दिखायो है ॥ तामें दर्शन की इच्छा वारो जो सो स्त्रीन को समूह है सो विनके नयनन सूं प्रवृत्त भये जे निर्दय आंसू हैं सो विनकूं निवारण करत भये हैं सो बड़ो खेद है ॥ सो हम तो विचार करत हू नहीं जानें हैं के विनने काहे कूं निवारण कियो है ॥ और कबहू निद्रा ने एक वार दर्शन करायो जो वा प्रिय कूं यथाश्रुत स्वरूप है ॥ वामें अत्यन्त आदर सूं वाकूं फेर हू दर्शन के अर्थ लुब्ध होयके चाहना करत हू वे मृगनयनी वा निद्रा कूं हू न प्राप्त होती भई है ॥ और वा प्रिय के तिस स्वरूप दर्शन की बात तो अत्यन्त दूर है ॥ कबहू नट अनुकरण में जे चतुर हैं विनने बड़े यत्न सूं प्रिय कूं अभिनय कियो है ॥ तब प्रिय को दर्शन करिके जोलों यह हर्ष वेग सूं वाकूं आलिंगन करिवे लिये उठिके ठाड़ी होती भई है ॥ तोलों लोगन के मुख सूं उदय भये जे तुमने भलो अभिनय कियो है ऐसे शब्द हैं इन शब्दन सूं सो अन्तर्ध्यान ही होय जातो भयो है ॥ कबहू संकल्पन सूं हू प्रिय सन्मुख प्राप्त भयो है ॥ तब वाके दर्शन कूं आछी रीति सूं प्राप्त होयके हू वा प्राणपति प्रिय के अमृत सूं हू अधिक

वांछित आलिंगन कूं और तैसे संवाद कूं न प्राप्त होयके और आश्रय रहित जे वे मृगनयनी हैं सो अपने कूं प्रेम रहित ही कल्पना करत के हमारे में प्रेम नहीं है ॥ यदि होय तो श्रीजी कूं मिलापादि न होय इत्यादि प्रकार सूं कल्पना करत ही वे अत्यन्त मूर्च्छा कूं हू प्राप्त होय जाती भई हैं ॥ विशेष सूं गुजरात आदि देश में स्थित जे स्त्री हैं सो प्रिय श्रीजी में आशक्त भई थकी वाके दर्शन की इच्छा वारी सो आनन्द कूं नहीं प्राप्त होती भई हैं ॥ सो वे कबहू एकांत में वा श्रीजी कूं लिखके और वाके निकट अपने कूं हू लिखके अपने मनोरथ के अनुसार भावना कर रही हैं ॥ इतने में अचानक तहाँ पति आय गयो है तब डरके वा श्रीजी के हाथ में वेग सूं पुष्पमय धनुष वांण कूं लिखकर पति के आगे पूछी भई वे कहेती भई हैं ॥ के मैंने रती के सहित कामदेव कूं लेख कीनो है ॥ ऐसे वृथा ही और को और ही प्रगट करत भई हैं ॥ सो पति हू रूप के उत्कर्ष सूं सुने भये श्री गोकुलेशजी कूं हों प्रियाजी के सहित जानके सो यही स्त्री वा श्रीजी के अनुकरण कूं हू करे हैं ॥ यह समझके वाकूं बढ़ी भई भक्ति वारो जानके यासूं दंड जैसे बारंबार सो पति प्रणाम कूं करत भयो है ॥ और कबहू सुन्दर अन्न कूं सुवर्णमय भोजन पात्र में परोस के सासु ने कह्यो है के बहू हू अपने उत्तम रत्नमय लीलागृह में स्थित होय रहे अपने पति कूं भोजन के अर्थ बुलाय लावो ॥ ऐसे सासु के वचनन कूं सुनकर सो बहु तहाँ जायके, हे श्रीमद् गोकुल मंडन, हे प्राणेश्वर श्री गोकुलेश, मेरे भोजन घर कूं और मेरे शैय्या घर कूं तैसे मेरे हृदय स्थल कूं अपने चरण कमलों के न्यास सूं अत्यन्त अलंकृत करिये ॥ ऐसे प्रफुल्लित होय रही रोमावली जामें गदगद अक्षरन सूं सो कहेत प्रेम के अधिकता सूं उन्मय हृदयवारी वे स्त्री वा पति कूं नहीं देखिके सो पूर्ण चन्द्र में आसक्त कुमोदिनी सूर्य के उदय में जा दशा कूं प्राप्त होय है वा दशा कूं प्राप्त होय जाती भई हैं ॥ कबहू विन नव विवाहितान कूं सखीजन कहें हैं के हे प्रिये स्त्री रत्न रूप अपने स्वरूप सूं प्राणपति के घर कूं अलंकृत करिके सिद्ध भयो है अपनो सगरो पुरुषार्थ जाकूं ऐसी तुम वेग होवो । इतने वचन सूं सुनिके श्री गोकुलेश्वर में आशक्त जे वे नवोढ़ा हैं या श्री गोकुलपति कूं मान के उदय होय रही पुलकावलि सूं वेगि सूं जब गई हैं तहाँ अमृत के अभिलाखा वारो विष कूं देखके जैसे होय तैसे वा पति कूं देखिकें मूर्छित होय जाती भई हैं ॥ सो मूर्छित भई थकी वे स्त्री

रत्न यदि श्री गोकुलपति की इच्छा सूं पूर्ण किये विन के गृहपति के मुख सूं जो श्रीमद् गोकुल को प्रभु है तैसे सगरे विश्व को पति है सो कमलनयन श्रीजी इहां अपने दर्शनार्थ तप्त होय रही और पराधीन होयवे सूं तहां गमन में न समर्थ जो तुम हो तुमारे मनोरथन कूं पूर्ण करेंगे ।। वेग ही पधारेंगे ।। ऐसे प्रकार की निकसी भई वाणी ने विनके मन की जो आशा है सो उदिपित करी है ।। सो आशा ही यदि इनकूं नहीं जिवाय तो यह तो कदाचित हू नहीं जीवें । सो तब तो इनकूं मृत संजीवनी हू बल सूं नही जिवाय सके है ।। सो पूर्णमासी में उदय भयो कालकूट को भैया हू चन्द्रमा यद्यपि अत्यन्त हू दारुण है ।। तथापि श्रीमद् गुजरात की चन्द्रमुखीन के प्राणन कूं लेवे में समर्थ जो नहीं भयो है तामें बीज कारण यह है के प्राणेश जे श्रीजी हैं वाके श्रीमुख सूं अपने सदृशता के अंशांश में हू कछुक तुच्छ अंशांश है तासूं हू प्राणन कूं हरवे में समर्थ नहीं है ।। और सर्व तो बलवान जो या श्रीजी की इच्छा है तासूं प्रबल कियो जो सो तैसो चन्दनवन संबंधी शीतल कोमल सुगंधित पवन है ।। और प्रफुल्लित कियो है पुष्पन को समूह जाने ऐसी जो बसंतादि ऋतु हैं और प्रफुल्लित करी है कुमुद वारी सरसी, जानो ऐसी जो पूर्ण चन्द्र की चन्द्रिका है और कोकिला के वृन्द ने उदय कियो जो सो पंचम तार कूं शब्द है, और सो रत्न मुक्ता सूं जटित सुवर्णमय भीति वारो जो सुन्दर घर है और इन्द्र की शोभा कूं निरादर करिवे वारो जो उदय होय रह्यो योवन है सो यह सगरे प्रलय काल की अग्नि की ज्वाला समूह के समान है ।। सो यह जलाय रहे हू इन मृगनयनीन कूं जो भस्मसात करिवे मे जो समर्थ नहीं भये हैं ।। तामें प्राणपति श्रीजी को जो अत्यन्त बलवती विनके प्रति रसदान की इच्छा सों ही पराक्रम कूं करत भई है ।। और जो चाचा हरिवंश नाम भक्त है सो हू महाप्रभुन को भक्त है सेवक है आपमें दयालु है सोहू वा गुजरात देश में स्थित है सो मन सूं कर्म सूं और वाणी सूं विन मृगनयनीन को जितनो भाव है सो प्रथम सूचना कियो है ।। और जो नहीं कियो है सो वा सगरे भाव रूप विनके वृत्तांत कूं यह चाचा हरिवंशजी जानते भये हैं ।। और तहां स्थित जे भक्त हैं जे मन और कर्म और वचन सूं हू महाप्रभून में तत्पर हैं और तैसे रसात्मक श्रीजी के श्रीमुख को दर्शन करिवे की इच्छा वारे हैं ।। और तैसे तहां बांधे भये हैं ।। श्री गोकुल में आयवे मे समर्थ नहीं हैं ।। और या श्रीजी की अनेक प्रकार सूं अत्यन्त सेवा की इच्छा

वारे हैं ॥ और धन प्राण शरीर स्त्री पुत्र पौत्र कन्या बहू ग्रह, बंधु सगरे संबंधीन कूं और तैसे गैया गज, बैल वस्त्र अलंकार केशन कूं तैसे और हू जो कछु है सो सगरे श्री आपके चरण कमलों में अर्पण करिवे की इच्छा वारे हैं ॥ और नानाविधि मनोरथ वारे हैं और तहां अपनो गमन तो नहीं होय सके है ॥ और इहां श्रीजी कूं पधारनो हू नहीं संभवे है ॥ सो जासूं मनोरथ सिद्ध नहीं होय है ॥ तासूं बारंबार दुःखी होय रहे हैं ॥ सो विनके सगरे वृत्तांत कूं यह चाचा हरिवंशजी अवधारण करत भयो है ॥ और विनके स्तंभ सूं स्तंभ कूं और अश्रु स्वेद सूं मग्नता कूं और स्वर भंग सूं, भंग कूं और कंप सूं, कंप कूं और विवर्णता सूं, विवर्णता कूं और प्रलय सूं प्राणन के प्रलय कूं और रोमावली के हर्ष सूं रोमोद्गम कूं तहां तहां यह बुद्धिमान चाचा हरिवंशजी देखिके विचारके तैसे तैसे सगरी श्रृष्टि के समाधान कूं श्रीजी के विना और उपायन सूं अशक्त जानके जो लौं श्रीजी नहीं पधारे तो लौं और उपाय सूं इनको समाधान नहीं होय है यह निश्चय करिके और प्रभुन कूं परिश्रम देवे में हू न प्रसन्न होवत सो चाचा हरिवंशजी तैसे वृत्तांत के लिखवे में हू अपने अपराधन कूं भावना करत तैसे भक्तन में छिपे भये श्रीजी के भाव कूं हू उत्कंठ करत सो तहां विनकी कृपा सूं और क्षण क्षण में अधिक होय रही विनकी प्रीति सूं तैसे श्रीजी के विना हमारी तो और गती नहीं है ॥ ऐसे विनके भाव सूं बल सूं ग्रहण किये भये सो चाचा हरिवंशजी या सगरे वृत्तांत कूं ब्याज सूं मिस सूं पत्र में लिखवे कूं इच्छा करत भयो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरा विहारमये चतुर्थ कल्लोले द्वितीय तरंग समाप्तम् ॥२॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग तृतीय ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ तृतीय स्तरंग लिख्यते ॥३॥

श्लोक -- **श्री गोकुले प्रमोधाभ्रिराज मानेचसर्वयाः । भ्रातृषु स्वेच्छये वास्य पृथगभूय स्थितेष्वलं ॥१॥**

याको अर्थ -- इहां श्री गोकुल निजधाम में महाप्रभु श्रीजी सर्व प्रकार सूं शोभित ही विराजमान हैं ।। और जे श्रीजी के भ्राता हैं वे हू सगरे अपनी इच्छा सूं ही या श्रीजी सूं अत्यन्त न्यारे होयके स्थित होय रहे हैं । और प्राणेश जे श्रीजी हैं सो अपने सेव्य श्रीनाथजी कूं लेकर इनसूं न्यारे ही विराजमान होय रहे हैं ।। तामें मध्यान के सूर्य जैसे आवर्ण करिवे में आच्छादन करिवे में अशक्य जो प्रभुन को महारसमय रूप है सो चारों ओर सूं प्रगट होय रह्यो है ।। और आपको जो महा तेजस्वी परम बुद्धिमान चांपाभाई नाम वारो अधिकारी है सो व्यय करवे योग्य धन के न होयवे सूं चिन्ताकुल होयके सो गुजरात आदि देश में स्थित जे भक्त हैं विनके मन कूं जो उछल्लित प्रवल भाव है जो श्रीजी के दर्शन न होयवे सूं संताप रूप कूं ही प्राप्त होय रह्यो है ।। और तैसे तैस असंख्य मनोरथ शतन सूं जो मिल्यो है और जो श्रीजी के ना मिलिवे सूं हृदय में साहस सूं अपने स्वरूपन कूं हू लोप अर्थ के प्राणन कूं त्याग करिवे अर्थ हू उद्यम वारो होय रह्यो है ।। ऐसे विनके भाव कूं चाचा हरिवंशजी जैसे विचार के प्रभुन के दुर्लभ अभिप्राय कूं जानवे की इच्छा सूं हाथन कूं बांधके प्रभुन के चरण कमलो में दंडवत प्रणाम कूं करिके सो अधिकारीजी विज्ञापना करत भयो है ।। हे प्रभो श्री आप तो कृपासागर हो तिस तिस भक्तन के सगरे पुरुषार्थन कूं सिद्ध करिवे वारे हो ।। सो ऐसे आप परदेश में अवश्य यात्रा करें ।। या प्रकार अधिकारीजी की विज्ञापन कूं सुनिके सो परम चतुर कृपासागर श्रीमद् गोकुल के मंडन श्रीजी हंसत हंसत श्रीमुख सूं वा अधिकारी के वैसे धन न होयवे कूं चिन्ता कूं दूर करत ही कहते भये हैं के हौं तो धन के लिये तो श्री गोकुल कूं छांड़ि के अन्यत्र नहीं जावुंगो ।। मोकूं तो श्री गिरधारीजी के प्रति भक्ति सूं प्राप्त भये मुष्ठी प्रमाण चणा हू अर्पण करिवे कूं वांच्छित हैं अधिक नहीं चाहिये ।। हे महाप्राज्ञ तुम तो परम बुद्धिमान हो सो तुमकूं तैसे तैसे चिन्ता नहीं करवे योग्य है ।। ऐसे कहकर अधिकारीजी कूं अमूल्य श्रेष्ठ रत्न जटित मुद्रिका कूं देते भये हैं ।। के संशय रहित होयके यासूं सगरी सामग्री कूं सिद्ध करोगे ।। ऐसे हू कहेते भये हैं ।। सो या प्रकार के कथन सूं श्रीमद् गोकुलनायक श्रीजी या भाव कूं प्रगट करते भये हैं के लौकिक संपदा बहुत हू होय सो हमकूं नहीं चाहिये ।। और भक्तन ने दीनी थोरी हू संपदा होय सो अलौकिक संपदा हमकूं चाहिये है ।। सो या प्रकार अधिश्लोक सूं या अधिकारीजी को समाधान

स्पष्ट ही करते भये हैं ।। सो भक्तन के अर्थ व्याकुल होय रहे अधिकारीजी कूं मुद्रिका दान पूर्वक आज्ञा सूं सर्व सामिग्री के सिद्ध करिवे कूं समाधान करते भये हैं ।। और भक्तन के अर्थ यात्रा में उपयोगी सगरे कार्य के करिवे में हू वा अधिकारीजी कूं आज्ञा करते भये हैं ।। तब सो परम बुद्धिमान श्रेष्ठ अधिकारी चांपाभाई पछा त्रिवाड़ी और शंकर भाई सहित ही अपने चित्त में यह विचारिके, के विना विज्ञप्ति के प्रभुन की सहसा जो यात्रा है सो लोकन में लौकिक हृदय में और तैसे परदेश वासी भक्तन के हृदय में हू अनुचित प्रतीत नहीं होय यासूं सगरे वृत्तांत अर्थ सूं गर्भित पत्र कूं तैसे लिखतो भयो है, के जैसे सों चाचा हरिवंशजी तैसे विज्ञापना गर्भित पत्र कूं प्रभुन के प्रति लिखे जो जासूं सगरे भक्तन कूं सुख देवे वारी श्री महाप्रभुन की सगरे लोकन में प्रकाशमान श्री गोकुल निज धाम सूं यात्रा होय तब थोड़े से काल सूं या श्री महाप्रभुन के पत्र कूं सो चाचा हरिवंशजी हू प्राप्त होयके सो महाप्रभुन के और आपके भक्तन के अभिप्राय कूं हू विचारके प्रसन्न होय के परम चतुर चाचा हरिवंशजी स्वयं दर्शन किये जे तैसे तहां के निवासी भक्त हैं विनके सगरे वृत्तांत कूं सूचना करिवे वारे और सगरे लोकन के मन कूं रंजन करिवे वारे और सगरे भक्तन के सुख कूं प्राप्त करिवे वारे पत्र कूं अपने आप्त प्रमाणित पुरुष द्वारा प्रभुन के प्रति पठावतो भयो है । सो आये भये वा चाचा के पत्र कूं वे दोनो अधिकारी चांपा भाई और शंकर भाई तैसे परम भक्त पछा त्रिवाड़ी यह लेकर करोड़न वैकुंठ हू जाके चरणन की रेणुं कूं वंदना करे हैं ऐसे अपने मन्दिर में नाना विधि लीला के उपयोगी अपने भक्तन के संग विराजमान जे प्रसिद्ध तैसे महात्म्य वारे संपूर्ण पुरुषोत्तम श्रीमद् गोकुल के राकेश करुणा सागर महाप्रभुजी श्रीजी हैं सो आपके निकट बड़े आदर सूं ले आवते भये हैं ।। तब प्रसन्न श्रीमुख वारे श्रीजी को दर्शन करिके वा पत्र कूं वांचते भये हैं ।। के हे महाराजाधिराज जे शहे गुणार्णव, हे कृपानिधे, हे सन्मार्ग, रक्षा कवच, श्रेष्ठ मार्ग जो पुष्टि मार्ग है वाके रक्षा अर्थ कवच रूप हे प्रभो आपके पितामह श्रीमद् आचार्यजी श्री महाप्रभु जी और तात पाद कृपा सागर श्रीमद् गोस्वामी श्री विट्ठलनाथजी ने सर्व प्रकार सूं पुष्टि मार्ग कूं रक्षा कियो है ।। और स्वयं द्वारिकापुरी में पधारिके तहां प्राण जैसे जो भगवान द्वारिकापति श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो बहुत वार ही दर्शन कियो है सो आप तहां वाके अर्थ वेग ही सर्व प्रकार सूं पधारें सो योग्य है ।।

आप जो तहाँ पधारेंगे सो आपके दर्शन अर्थ जे उत्साह वारे तहां के बड़े भक्त हैं जे निरन्तर ही प्रतीक्षा कर रहे हैं विनके हू मनोरथ रूप महा वृक्षन कूं वेग ही सफल करोगे ।। और तहां तहां नगरी में विराजमान जे पूर्ण चन्द्रमुखी हैं विनके जे नयन रूप चकोरी हैं सो वे हू शीत किरण चन्द्रमा के जैसे तैसे आपके श्रीमुख के किरण समूहन कूं अत्यन्त पान करिके कृत्य कृत्य भाव कूं प्राप्त होय ।। और तैसे तैसे तहां तहां विन विन भक्तन के संग सहित विलास के नाना विधि विहार वारे आप जो पधारोगे सो आपके पधारवे सूं सगरे जे वनवासी और जलाशय वासी तैसे पर्वतवासी और पुर वासी जीव हैं विनमें हू मुक्ती और पद पद की प्राप्ति और भक्ति हू विना यत्न के हर्ष भाव कूं त्याग कर सुलभता कूं अंगीकार करें हैं ।। प्रभो यदि सर्व धर्मन के धुरंधर आप द्वारिका में नहीं पधारे तो और हू कोउ जन तहां नहीं जायगे जासूं जन तो श्री आपके श्रीमुख कूं देखवे वारो है ।। अथवा हों दास हू आपके श्रीमुख कूं देखवे वारो हूं ।। और यह समान शील, व्यसन सूं एक भाव कूं प्राप्त होय रहे आपके कृपापात्र मृगनयनी वर्ग हू आपके श्रीमुख कूं देखवे वारो है ।। तासूं आप वेग पधारोगे ।। सो यह मेरी विज्ञापना रूप आग्रह कूं क्षमा करके जगत्मंगल मूर्ती श्री महाराजजी मो पर प्रसन्न होओ ।। सो भक्तन में श्रेष्ठ जो चाचा हरिवंशजी हैं वाकी या प्रकार की गूढ़ाशय गर्भित विज्ञप्ति कूं सुनकर निश्चय सूं करिके श्रीजी में अत्यन्त भक्तिवारे और अपने परम कृपापात्र भाव कूं सदा सिद्ध करि रहे और निकट रहिके कर्म मन वाणी सूं चरण कमलन कूं अत्यन्त सेवा करि रहे जे गुजराती भक्त हते विन महात्मा के अनुरोध सूं और तहां गुजरात में स्थित जे भक्त हैं विनमें जो परम प्रसन्नता है ।। तासूं और परमेषटय पद तैसे इन्द्र पद की प्राप्ति और योग सूं सिद्ध होयवे वारी पाताल राज और सार्वभौम पद की प्राप्ति और योग सूं सिद्ध होयवे वारी सगरी सिद्धी और सगरी मुक्ति भक्ति और तैसे अनन्त भक्ति और तैसे महा वैकुण्ठ लाभादि हू अनेक हजारन विन विन पुरुषार्थन कूं विज्ञ जन जा रस के ऊपर न्यौछावर करवे कूं हू अत्यन्त तुच्छ जानिके नहीं आदर करें हैं ऐसे सर्व रस सूं अधिक रस कूं विदग्ध सार्वभौम रूप तैसे सौंदर्य के सागर रूप जे श्रीजी हैं वाके श्रीमान तिसतिस अंगन सूं प्राप्ति की इच्छा कर रही जे तिस तिस संदेश की मृगनयनी हैं जे अपने तैसे जोवन कूं स्वयं देखिके वाकूं श्रीजी के उपयोग न होयवे सूं बारंबार खेद कूं

प्राप्त होय रही हैं ।। और जे निरन्तर तप्त होय रही हैं ।। और जे पराधीन होयवे सूं स्वयं श्री गोकुल में नहीं पधार सकें हैं ।। और जे निरन्तर चरण कमलन को ध्यान करि रही हैं ।। ऐसी विन मृगनयनीन के अर्थ अपने चित्त रूप कलश में छिपाय राख्यो और अब अत्यन्त उछल्लित होय रह्यो जो कृपा रस को समूह है तासूं विनके देशन कूं पावन करिवे की इच्छा वारे ईश्वर सो श्रीजी द्वारिका में पधारवे कूं इच्छा करत भये हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादे विहारमये चतुर्थ कल्लोले तृतीय तरंग समाप्तम् ।।३।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग चतुर्थ ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चतुर्थ स्तरंग लिख्यते ।।४।।

श्लोक -- **रसार्थ रस शीताष्मु गणिते वत्सरे सिते ।। पक्षे चैत्रस्य शुभ दनवम्यां परमेश्वरः ।।१।।**

याको अर्थ -- संवत १६४६ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में शुभदायक नवमी तिथि में ज्योतिष शास्त्र के वेत्ता गोविन्द तिवारी ने शुभकर और सर्व मंगल वारो श्रेष्ठ मुहूर्त बतायो है ।। तामें सो श्रीजी शुभ प्रस्थान की इच्छा करत भये हैं ।। तब आपको जो सारथी है, सहित सामग्री के सुन्दर रथ कूं सजायके लावतो भयो है ।। सो अमूल्य जे आस्तरण हैं विनसूं शोभायमान है ।। और इन्द्र गोप जैसे लाल वर्ण वारी भारी तुल्य सूं मिल्यो है और तैसे हेम मुक्ता मणि वारे जामें फुंदना लटक रहे हैं ऐसे बड़े तकिया सूं शोभायमान है और जे घोड़ान की सेवा में तत्पर है विनने सुन्दर जिनके वागे हैं ।। सुन्दर जिनके साज हैं ।। और सुन्दर जिनके लक्षण हैं ऐसे जे सुन्दर घोड़ा हैं सो लायके आगे ठाड़े किये हैं ।। और जो श्री प्रभुन कूं श्रीअंग सेवक हतो सो हू तरंग के संग श्री आपके निकट आयके ठहेरतो भयो है ।। और तीन पायी के ऊपर सुन्दर लाल वस्त्र सूं वेष्टित और स्वेत वस्त्र सूं छिपायके जल के पात्र कूं धारण करिके आगे धरते भये हैं ।। और बीड़ी कूं और कर्पूर कूं तैसी दो पात्रिन

कूं तैसे तैसे तहां धारण करते भये हैं। और मधुर विविधि भक्ष्य कूं और गोपीचन्दन और चन्दन कूं तैसे तुलसी शंख चक्रादि मुद्रा और श्री गोवर्द्धननाथजी के चरणामृत और श्रीमद् विट्ठलनाथजी श्री गोस्वामीजी के चरणामृत कूं लायके आगे धारण करते भये हैं ॥ और सुन्दर धोये भये पहेरवे लायक धोती और उपेरना तैसे और हू वस्त्रन कूं लायके आगे धरते भये हैं ॥ और प्रभुन को जन्मपत्र है और शिवा लिखी मुद्रत है और तुलसी काष्ट की माला है और गुंजा माला है और कुमकुम है और तिथि पत्र है और पुष्प तैल है और दिव्य कांकसी है और बहुत यज्ञोपवीत है और चन्दन सूं मिल्यो भयो सीप है उनकूं आगे धरत भये हैं ॥ और एक शकट में शैय्या के जे साज हैं जे अमूल्य आसन है ॥ तूल है और तेल जैसे शोभायमान लाल वर्ण वारो प्रभुन को आसन है और बड़ो तकिया है ॥ और पहेरवे योग्य वस्त्र हैं यह धरते भये हैं ॥ और श्रीमद् भागवतादिकन की पुस्तक हैं और श्री सुवोधिनीजी को पुस्तक है तैसे टिप्णीजी को पुस्तक है और हू श्री आचार्यजी श्री महाप्रभुजी ने और श्री गोस्वामीजी ने कीये ग्रंथ टीकादि हैं और जो गीतगोविन्द को पुस्तक है और कर्णामृत को पुस्तक है और लेखनी है ॥ तैसे मुसी पात्र है और हू पात्र पत्रा हैं कागज कोरे पुस्तकादि लिखवे कूं हैं और जे छुरिका हैं और पूंग तांबूल हैं और काथे को चूर्ण है ॥ और इलायची आदि और कर्तकी कैंची अथवा सरौता है और लवंग है ॥ और छत्र है बड़े पंखा हैं यह हू सर्व तामें धारण किये हैं ॥ और हस्ती के ऊपर चंदुवा और वस्त्र के जैसे विध ग्रह हैं और कनात और उत्तम रसोईघर है तैसे सुन्दर शैय्या मंदिर और बैठक मंदिर और स्नान गृह और चरण प्रक्षालन को घर यह सगरे धारण करते भये हैं ॥ और सुवर्णमय भोजन पात्र और सुवर्णमय थारी और चतुर स्वर्ण कारनने बनाई स्वर्णमय छोटी और बड़ी विविधि प्रकार की झारी और पीकदानी जैसे जल कूं ताते करवे लिये ततेरा और पीठ तैसे चतुष्यादिका और कढ़ाह हैं ॥ वैसे सत्य और कुदाल और सोहनी और विविधि प्रकार के पादुका और विविधि बहुत प्रकार के दिव्य भाजन यह सगरे बनायके विनके ऊपर धारण करते भये हैं ॥ तब स्नान कर शुद्ध भये द्विज ब्राह्मण हू प्रभुन के निकट और हू तिस तिस अपरस की वस्तु कूं तैसे तैसे धारण करते भये हैं ॥ सो सुकी दधि और दधि तैसे दूध और पेड़ा और पापड़ तैसे माखन की बड़ी और मूंगन की बड़ी

और वांछित विविधि प्रकारन सू इकट्ठे किये जे विविधि फल हैं विनकूं जे जसता के पात्र हैं सो वे हू सगरे यथोचित रीति सूं धारण किये हैं ॥ और शालिग्राम स्वरूप वारो जो श्रीकृष्णदेव है वाकी पूजा के योग्य जे सामिग्री है सो घंटा हैं, आरती है और धूप कूं चन्द्न घिसवे कूं पत्थर है और नैवेद्य में योग्य बहुत भक्ष्य फलादिक हैं और धूप कूं तैसे दीप को पात्र है और हू सो सो उचित मनोहर अमूल्य वस्तु हैं और तर्पण के अर्थ ताम्र को पात्र है और खड़ग पात्र है यह सगरे बनायके धारण करते भये हैं ॥ और जे श्री महाराज के शुभ को विचार करिवे वारे हते वे हू प्रेम सूं आयके निकट प्राप्त होते भये हैं ॥ और संदंशिका है और तवा है और रोटी बेलिवे कूं पाथर है और बेलना है और चालनी है तैसे संकुला है और लोहमयी सुन्दर चुल्ही है और हू खुरवा है तैसे पीतल के घट हैं और कुवा के जल हैं और विन पात्रन के ढांकना हैं सो वे सगरे तिस तिस वाहन में धारण करे भये ही प्रभुन के निकट आय जाते भये हैं ॥ और हू विविधि प्रकार के सुन्दर उज्ज्वल मनोहर शुद्ध तंदुल हैं और मूंग है, मसूर है, राई है और चणा हैं विनके दाने हैं और गेंहू हैं, तैसे विनके वस्त्रन से छने भये चूर्ण हैं और श्रेष्ठ घृत है और तिली को तेल है और हू श्रेष्ठ सर्षयादि कूं उफन्यो भयो के सुगंधित तेल है तैसे शुद्ध के फेणी है और श्वेत खांड है और खांड की चत्ती है, मिसरी है और सीतोपलादि है और गुड़ है, हरदी है और मिरची है और जीरा हींग और पीपली है और राई को शाक है मेंथी को शाक है और चूका को शाक है और असिका और चंद सूरक है तैसे सो और लवण और जायफल तैसे हरड़, अजवायन और अदरक तैसे और लवण चूक तैसे नींबू और कंद रतालू, रंभाफल, आमले और द्राक्षा फल तैसे बदर चूर्ण और तिल और सरसों की खली यह वस्तु तैसे और हू असंख्य वस्तु सगरी तैयार करिके प्राप्त करत भये हैं और तब श्री आपके संग चलिवे कूं नांपित और रजक और रंगरेज और पत्रावली के बनायवे वारे तैसे और हू तिस तिस कर्म के करिवे वारे हू या प्रकार सगरे तैयार होय रहे हैं ॥ तब महाप्रभु कृपा सागर श्रीजी अपने बंधुन कूं यथायोग्य ही धैर्य देकर और अपनी जे शोभा आदिक बहेन हैं विनकूं हू मान देकरिकें पूछकें और प्रणाम करिके तैसे श्रीनाथ जी सूं अत्यन्त प्रेम सूं आज्ञा लेकरिकें और प्रणाम करिकें सो महा यश वारे दही दूर्वा आदि जे मंगल वस्तु हैं विनको आदर करिकें पंड्या

रघुनाथ ने जो मुहूर्त कह्यो है सो हर्षमय मुहूर्त मानो अपने हस्त कमल सूं सगरे शुभ फलन कूं लेकर दर्शन करिवे कूं हू आयो है ।। तामें स्वयं श्री गोकुलाधीश्वर जी प्रस्थान कूं करत भये हैं ।। तब प्रस्थान करि रहे श्रीजी के प्रति बंधुजन मंद हास्य सूं पुष्प समूहन कूं और दृष्टि सूं वंदन माला कूं और हस्तन सूं पल्लव कूं वाणी सूं मधुर मुख सूं कमल कूं और कपोल सूं दर्प्पण कूं और सात्विक भाव सूं आर्द्र भये कुचन सूं सहित जल के कलस कूं सिद्ध करिकें या प्रकार उत्तम मंगलमय विधि कूं करत भये हैं ।। तब अपने श्रेष्ठ प्रेम सूं पूर्ण आत्मा वारे ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य शूद्र सुन्दर बुद्धिवारे ज्ञाती वारे बंधुजन तैसे स्नेह वारे बूढ़े बाल तरुण और ज्ञाती बंधु जनन की स्त्री तैसे वैष्णव तैसे और हू भक्त भृत्य व्यौपारी और श्री गोकुल की युवतीजन यह सगरी श्रीजी के पीछे चलि रही हैं और प्रणाम करि रही हैं ।। सराहना करि रही हैं ।। और आशीर्वाद करें हैं, गायन करें हैं, यथायोग्य ही तैसे तैसे स्तुति करें हैं ।। ऐसे सो श्रीजी अपने दास सेवक वैष्णवन ने सुन्दर अलंकृत करी और विछाये हैं बिछोना जामें ऐसी जो नाव है वाके ऊपर विराजमान होते भये हैं ।। तब अपन पीछे आय रहे जे सगरे जन हैं विन मंद मंद हंसत श्रीमुख कमल सूं धैर्य देकर के और सगरेन कूं तैसे विदा हू करिके श्री कालिन्द्री जी के तरंगन कूं भावपूर्ण देखत ही अपने सगरे शरणागतन कूं वेग ही संसार सागर के पार पहोंचायवे वारे तैसे अपने चरण कमलों के दायक सों श्रीजी श्री यमुनाजी के पार कूं वेग ही पहौंच जाते भये हैं ।। या श्रीजी के प्रस्थान में जो श्री गोकुल की सुन्दर नयन वारी स्त्री जनन कूं ताप भये है वा ताप के प्राण निकसिवे में जो उद्यम है वाकूं विना श्रीजी के और को शिथिल कर सके ।। तासूं तब प्राणपति श्रीजी ने यह कार्य तो सर्वथा ही करतव्य है या प्रकार के ज्ञान सूं और हमारे प्रेम सूं श्रीजी को मन हू आकर्षित भयो है ।। याकूं सूचना करिवे वारो जो संग को श्रीजी के मिलाप को संभव है होवनो है ।। सो यह आनन्द हू आत्मानन्द है ।। या प्रकार के अखंडित ज्ञान सूं और अपने अंतरंग निज्जनन सूं तैसे अपने हू श्रीमुख सूं और तैसी तैसी अपनी वा उक्ति सूं के वचनामृत सूं केवल विनके अनुभव गोचर जे अपनी दृष्टि है विनसूं विन श्रीमद् गोकुल सुन्दरीन कूं समाधान करिकें धैर्य देकरिके तब वाजीराज जो राज घोड़ा है वाके ऊपर चढ़िकें अपने सेवकन के संग प्रस्थान करत भये हैं ।। तब जय

जय जय जय या प्रकार सूं भक्तन के मुख समूहन सूं जो ध्वनि प्रगट भई है ॥ तासूं सो सगरे जगत कूं शब्दमय कर देतो भयो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहारभये चतुर्थ कल्लोले चतुर्थ तरंग समाप्तम् ॥४॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग पंचम ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पंचम स्तरंग लिख्यते ॥५॥

श्लोक -- **यावत्प्राणेश्वरस्तस्य हथस्तद्रेणु मंडले ॥ तत्पश्चाग्दामिन तश्वकोपितस्यु कणः ॥१॥**

याको अर्थ -- जो लौं प्राणनाथ श्रीजी और आपको घोड़ा और वाको रज मंडल और वाके पीछे चलिवे वारे सेवक वैष्णवादि और विनकूं रजकण कूं विन सुन्दरीन के नयनन कूं प्राप्त भये हैं तो लौं तो वे कछु कछु देखते भये हैं ॥ जब विनकूं दर्शन नहीं भयो है तब तो वे कहूं निविड़ अंधकार में प्रवेश कर जाते भये हैं ॥ जा अंधकार के आगे या श्रीजी के वियोग सूं नष्ट भये सगरे सुख कूं न सहेन कर रहे और तासूं दुःख संबंधी अश्रुन के समूह रूप जल को अत्यन्त वर्षा करि रहे जे अन्य स्त्रीन के नयन रूप मेघ हैं विनसूं सो सुन्दर रात्रि हू कार्तिक संबंधी रात्रि रूप ही प्रतीत होती भई है ॥ तब कितनी एक सुन्दरी तो अपार जो अत्यन्त प्रिय श्रीजी के परदेश पधारवे रूप क्लेश को सागर है वामें अत्यन्त पतित तुल्य वे गिरायी हैं ॥ सो वामें यह फेरि स्वासन कूं नहीं प्राप्त होयंगी परन्तुं हौं तो तब यह मानूं हूं के प्रभुन की कृपा के समूह सूं वेग सूं ही मूर्च्छा कूं प्राप्त होयके विनकूं चिर पर्यन्त ही अत्यन्त दृढ़ ही ग्रहण कर जाती भई हैं ॥ जासूं वे तैसे अपार सागर में हू प्राणन सूं रहित नहीं भई हैं ॥ और कितनी एक स्त्री तो आंसुन के समूहन सूं रचना करती हू भई हैं ॥ और वामें जे मग्न नहीं भई हैं सो इन समुद्रन कूं वेग ही आचमन कर रह्यो जो बलवान यह ताप रूप अगत्स्य है वाको हू पराक्रम है ॥ और कितनी एक सुन्दरी तो वा श्रीजी के वियोग रूर अग्नि सूं अत्यन्त ही दग्ध

होय रही हैं ।। और वा वियोगाग्नि सूं भयो जो तम है धूम है अंधकार है तासूं इनकी दृष्टि हू रुक गई है ।। सो यदि देखती तो यमुनाजी में हू गिरि जातीं परन्तु देख नहीं सकें हैं ।। और कितनी एक सुन्दरीन के अंग के ताप सूं तैसी हू प्रवाहन सूं भर रहीं यमुनाजी सूख ही जाती ।। यदि निरन्तर उदय होय रहे विनके नयन कमलों के जल सूं अत्यन्त पूरण नहीं होय तो और कितनी एक सुन्दरी तो वा श्रीजी के वियोग अग्नि सूं प्रगट भयो बढ़ रहे तैसे ताप में हू परदेश सूं पधारके अपने जीवन के प्रति जो सर्व सूं बलवान प्रभुन की महाहर्ष दान की इच्छा है तासूं रुक गयो है दग्ध होवनो जिनकूं, ऐसे हैं प्राण जिनके ऐसी वे स्त्री वा ताप सूं तहां के गुल्मलतादिक जलाय देती यदि विन सुन्दरीन के सिंचन करि रहे जे नयन हैं वे निरन्तर होय रही आसून सूं विनकूं निरन्तर निवारण नहीं करते तो और कितनी एक सुन्दरी तो वा श्रीजी के वियोग रूप अग्नि के भयानक संताप कूं सहन करवे में समर्थ नहीं भई हैं ।। तासूं कालिन्द्री श्री यमुनाजी में प्रवेश करवे लगी हैं ।। तब विनकी सखीजन या प्रकार के ताप सूं प्रिय श्रीजी की या प्रिया श्री यमुनाजी कूं विना प्रयोजन के ही यह सुखाय देंयगी सो योग्य नहीं है ।। यह विचारके विनकूं हठ सूं ही रोकती भई हैं ।। और कितनी एक सुन्दरीन के प्राण तो वा श्रीजी के तैसे वियोगाग्नि सूं जलत हू वा श्रीजी ने आगे देनो जो परमानन्द है वामें लोभी चित्त वारे होयके वज्र रूप सूं अपने कूं रक्षा कर लेते भये हैं ।। और यह श्री गोकुलाधीश्वर भगवान श्रीजी तो सदैव ही श्री गोकुल में ही विहार करत हैं ।। कदाचित हू या श्री गोकुल को त्याग नहीं करें हैं ।। ऐसो या प्रकार को जो कितने एक भक्तन को निश्चय है ।। सो वा श्रीजी की इच्छा सूं प्रबल होयके सो हौं तहां तहां तब तुमकूं वा श्रीजी को दर्शन करावुंगो ।। ऐसे चाटुकार कूं करत कितनी एक सुन्दरीन के विन द्वारा मन में हठ सूं बड़े यत्न सूं प्रवेश करिके सो देह कूं त्याग करिके जाने की इच्छा वारे जे विनके प्राण हते विनकूं रक्षा करत भई हैं ।। और हमारे जे प्रिय श्रीजी हैं सो तो करुणा सु कोमल हैं और रस सूं आर्द्र हृदय वारे हैं सो हमकूं अन्यत्र छांड़ि के कबहू जायवे वारे नहीं हैं ।। और गये हू नहीं हैं ।। और जाने परहू वेग ही पधारेंगे ।। ऐसे या प्रकार के हृदय वारे जे और भक्त हैं सो वे वा श्रीजी की वियोगाग्नि सूं भये अत्यन्त ताप कूं सहेन करवे में न समर्थ होय रहे और तासूं निःसंशय

चलि रहे जे प्रांण हैं विनके चरण कूं बारंबार चाटुकार सूं प्रणामन कूं करत विन प्राणन कूं बड़े यत्न सूं रक्षा करत भये हैं ।। और हम तो प्रियतम के वियोग दुःख कूं सहन नहीं कर सकें हैं तासूं यदि हम अपने शरीरन कूं अब त्याग कर देवे तो यह हमारे तनु फेर पधारे जे हमारे प्रिय श्रीजी हैं वाके आलिंगन सूं वंचित ही होय जायंगे तामें और स्त्रीन के तनु वा आलिंगन सूं अत्यन्त ही कृतार्थ होयंगे तासूं विन तनु कूं हम त्याग नहीं करें हैं ।। या प्रकार सूं अपने तन में कृपा वारी कितनी एक स्त्री अपने तन कूं बल सूं रक्षा करत भई हैं ।। और तैसे रस सूं आर्द्र हृदय वारे जे हमारे प्रिय हैं हम हू वाकूं प्रिय हैं ।। सो ऐसो हमकूं काहे कूं त्याग करेंगे ? कबहू नहीं त्यागेंगे ।। यह तो दुष्ट स्वप्न ही हमारो वचन कर रह्यो है ।। तासूं या वचन को हम मन में और कानों में हू नहीं धारण करेंगी ।। ऐसे या प्रकार सूं ही विचारके और कानों कूं अत्यन्त ढांपिके कितनी एक चन्द्रमुखी सुन्दरी हैं सो यथापूर्व ही विराजमान होती भई हैं ।। और हे प्रभो, जासूं हम प्राणन कूं धारण कर रही हैं तासूं हे रसाद्र रस सूं भीजे भये श्रीजी तुमने हमकूं त्याग नहीं कियो है ।। सो हम जानें हैं ।। और जो हम दग्ध होय रही हैं सो तो ऐसे परम कोमल दयालु तुमारे में अपने कठोरता रूप दोष के निरन्तर लगायवे सूं ही है ।। ऐसे या प्रकार अपने मन में लज्जा सूं मिली भई कितनी एक सुन्दरी श्रीजी कूं विज्ञापना करत वा लज्जा ने ही बचाये हैं, प्राण जिनके ऐसी वे स्थित होती भई हैं ।। और वा श्रीजी के वियोग सूं तप्त होय रही हमकूं स्पर्श करके गयो पवन है सो जासूं स्वयं अत्यन्त तप्त हैं ।। तासूं तैसी अत्यन्त ताप वारी हमारी दशा कूं श्रीजी के प्रति सुनायके श्रीजी कूं अत्यन्त तप्त करेगो ।। ऐसे या प्रकार की बढ़ि रही चिन्ता सूं मिली भई कितनी एक सुन्दरी अब हम कहा करें या प्रकार के विचार में मूढ़ होय के अपने कूं हू नहीं जानती भई हैं तो दुःख और मरण के जीवन कूं कहा अनुसंधान करेगी ।। और जो वितने काल पर्यंत विनने दुःख कूं इन सुन्दरीन में देवे अर्थ वा श्रीजी की विरह रूप अग्नि उदय भयी है ।। अत्यन्त बलवान सो इहां महा सुखदान रूप अपने अपने कार्य कूं करवे अर्थ तैसे समय में हू विनके जीवन कूं रक्षा करत भयो है ।। और अपने वियोग सूं अत्यन्त दग्ध भये हैं देह प्राण इन्द्रियादिक जिनके ऐसी कितनी एक सुन्दरीन कूं सो श्रीजी स्वयं ही विनके तिस तिस देह इन्द्रिय प्राणादि रूप होयके

विनकूं रक्षा करत भये हैं ।। और अपने वियोग रूप बढ़े भये अग्नि सूं दग्ध होय रहे कितनी एक सुन्दरीन के देह रूप वन कूं अलौकिक चेष्टा वारे प्रिय श्रीजी वा क्षण में स्वयं प्रगट होयके वा अग्नि कूं शांत करिके विन देहन कूं रक्षा करत भये हैं ।। और कितनी एक सुन्दरीन कूं दृष्टि जे हैं सो वे श्रीजी के दर्शन सूं भयो जो दुख है तासूं फूट रही है सो क्षण एक अपने श्रीमुख के दर्शन कराय के वासूं विनकूं संधान करत भये हैं ।। और कितनी एक सुन्दरीन की आप के वियोग रूप दुःख सूं हृदय देश फट रह्यो है ।। तब वा क्षण में प्रगट होय के अपने स्वरूप सूं श्रीजी वाकूं तैसे ही संवार के सुखी करके फेर पधारते भये हैं ।। और अपने वियोग सूं कितनी एक सुन्दरीन की फाट रही त्वचा कूं क्षण भर दान किये अपने स्पर्श प्रथम जैसे सुखी ही करते भये हैं ।। और वा वियोग समय उदय होय रह्यो जो तम है सो सर्व प्रकार सूं विश्व कूं हू लोप कर रह्यो है ।। तामें कितनी एक मृगाक्षी दिशा भ्रम सूं विकल होय जाती भई हैं तब सो श्रीजी स्वयं स्पष्ट करे भये अपने श्री अंग के किरणन के प्रकाशन सूं विनकूं रक्षा करते भये हैं ।। और कितनी एक सुन्दरीन के अपनी वाणी के न सुनवे रूप सुची सूं विकल होय रहे कानन कूं हे प्राण वल्लभे तुम मति विकल होवो वेग ही हू पधारो हूं ऐसे अपने वचनामृत के सिंचनसूं वे रसिक शिरोमणी श्रीजी विनकूं वेग ही रक्षा करत भये हैं और जो प्रियाजी सर्व प्रकार सूं ही वाहिर और भीतर हू वा प्रिय श्रीजी में अनुराग वारी हैं सो वह तो वा श्रीजी के विना क्षण भर हू नहीं प्राण धारण कर सके हैं ।। यह सगरे भक्तन ने ही निश्चय कियो है ।। तथापि याकूं प्रकर्ष सूं सुन्दर प्रसंन्न प्रफुल्लित होय रहे अपनो मुख दिखायके श्रीजी अत्यन्त आनन्दित करते भये है ।। जैसो अचानक उदय भये मेघ सूं सिंचन करी ग्रीष्म ऋतु की दग्धी भई लता जैसे होय तैसे ही प्रिय श्रीजी ने दान कियो जो अत्यन्त विन रस है ता करके ये सुन्दरी वाहिर भीतर हू अत्यन्त सघन ही भीज गई है ।। और तैसे क्षण में हू अपनी अन्तरंग सखीन के संग श्रीमद् गोकुल के प्रति पधार रही है ।। सो दुःख रूप हू सूं बड़े यत्न सूं हू ग्रास न प्राप्त भयी जैसे द्वितीया को चन्द्रकला होय तैसे हू यह सुन्दरी हू अत्यन्त कोमल है ।। सो यदि अपने घर के प्रति चले है तो हम जाने है के रस सूं भीज रहे परम चतुरवर श्रीजी ने पधार के याको समाधान हू कियो है ।। और अनुनय हू कियो है ।। तैसे

तैसे रमण हू कियो है ।। और हे प्रिय सर्व साधारणों के दर्शन योग्य कोई स्वरूप सूं मिलो भयो जैसो होय तैसे तिस-तिस देशन कूं अप्रयोजन विशेष के अर्थ पधारत हू हों तुम्हारे या भोग्य-योग्य और मुक्त स्वरूप सूं तो निश्चय सूं तुमारे ही अनुकूल रहूंगो के तुमारे ही निकट रहूंगो ऐसे या प्रकार रसिकवर श्रीजी ने याकू सांत्वन हू कियो है ।। तब तो हमहू या सुन्दरी के संग ही पीछे घर कूं चले यासूं ही दिन रात्रि तप्त होय रही जे हम हैं सो हमारे संग अपने अर्थ ही अवश्य ही यह दया निधि प्रिय मिलेंगे अथवा हमारे घरन में के या सुन्दरीन की गलिन में के द्वार में कवहू घरन में तैसे तैसे प्राप्त होयेंगे ।। और तैसे-तैसे लज्जा कूं हू प्राप्त होयेंगे और रस सूं भीज रह्यो है ह्रदय जाको ऐसे ये प्रिय तैसे तैसे हमारे बन्धन में हू आवेंगे के वशीभूत होय जावेंगे ।। जैसे प्रिय श्रीजी फेर निकसिवे में हू कवहू चेष्टा ही नहीं करेंगे ।। सो तिस-तिस रसको दान करिवे की इच्छा वारे प्रिय श्रीजी ने इत्यादि प्रकार की भावना सूं देह और प्राणन के संग वगद रही वे सगरी सुन्दरी हू बड़े यत्न सूं अपने घर के प्रति चल रही वा सुन्दरी के संग घर के प्रति प्राप्त करती भई है ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले पंचम तरंग समाप्तम् ।।५।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग षष्टम ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ षष्टम स्तरंग लिख्यते ।।६।।

श्लोक -- **एवं गोकुल वाम भ्रूज नाना तादृशामयं अनभीष्ट स्तादृशेन प्रेरशां विरहो वलात् ।।१।।**

याको अर्थ -- ऐसे या प्रकार श्री गोकुल की जे सुन्दर नयनी स्त्रीजन है विनकूं जो तैसे प्रिय श्रीजी के संग तेसो वल सूं जो यह न वांछित विरह प्राप्त भयो है सो दुरघट अर्थ के सिद्ध करवे में तैसे-तैसे नियुक्त जो प्रभु की लीला शक्ति है सो यह वाको हू बल जाने है ।। अत्यन्त कौतिकी प्रभुन ने ही अत्यन्त अनुग्रह सूं प्रवास के अनन्तर अपनो मिलाप वांछित कियो है सो

रसं के सिद्धान्त जानवे वारे धैर्यवान जाकूं अत्यन्त ही महा फल कहे हैं ॥ सो वा प्रवास के अनन्तर श्रीजी की जै वांछित वा प्राप्ति कूं हू या श्रीजी और आपते इन जीवो में साहस सूं करवे की इच्छा वारे की लीला शक्ति कूं हू अधिक सूं अनुग्रह मानो है ॥ प्रियतम के प्राप्त सू प्रथम जो वाकूं सुननो आदि है के प्रियजी यहां पधारे हैं, सो फल है और मानके अनन्तर जो प्रिय की प्राप्ति है सो यह प्राप्ति महत्तम फल है और प्रवास के अनन्तर जो प्रियकी प्राप्ति है जो रस शास्त्रन में हू प्रसिद्ध है सो प्राप्ति महत्तम फल है ॥ और पूर्व-पूर्व सूं यह उत्तर-उत्तर अधिक-अधिक रसरूप कह्यो है ॥ सो सगरे गुणन सूं मिले जे परम पुरुष जे श्री गोकुलेशजी है वे-वे ही अनन्त ही शक्ति है ॥ सो उत्कृष्ट है, नित्य है और अप्रतक्य हैं ॥ विचार में नहीं आवे है ॥ और अनिर्देष्य है ॥ विनकूं निर्देश नहीं होय सके है जासूं अनन्त है और विनकूं वाधाहू कोऊ नहीं कर सके हैं और वे आपस में विरुद्ध हू है और अनुकूल हू है ॥ प्रभून की इच्छा होय तो अत्यन्त दुर्घट अर्थ कूं हू सिद्ध करवे वारी है और आपकी इच्छा न होय तो सुख सूं सिद्ध होयवे वारे अर्थ में हू प्रवर्त नहीं होय है ॥ यासूं हू विना विन भक्तनने तैसे-तैसे समय में यह रसात्मक श्रीजी को अनुभव कियो है ॥ और तासूं हू यह रसिक राय प्रभु अनन्त शत योजन दूर सूं हू भक्तन की वार्ता कू सुन लेवे हैं ॥ और तेसे देखहू लेवे हैं और कवहू स्पर्श हू करे हैं और वाकी सुगन्धी हू लेवे है और भक्तन के अर्पण करी सामग्री कूं आरोग हू लेवे है ॥ और अंगीकार हू कर लेवे हैं ॥ और आपकी इच्छा न होय तो कोई आपके कान में हू कहे तो वाकूं नहीं सुने है ॥ और अपने निज धाम श्री गोकुल में विराजमान होय रहे हू यह प्रिय श्रीजी एक स्वरूप सूं एक ही समय में भिन्न-भिन्न तिन देशन में हू विराजमान होय रहे श्रीजी वारंवार ही भक्तन ने अनुभव किये है ॥ और विन-विन घरन में और भक्तन में और विन-विन भाग्यवती स्त्रीन में विन संशय के ही यह महाप्रभु साक्षात ही अनुभव किये है ॥ और श्रीमद् भागवत में हू दशम् स्कन्ध में तिस-तिस कार्य की सिद्धि अर्थ आप श्रीजी की सो शक्ति हू स्पष्ट लिखि है ॥ **चित्र वतंत हे के नव पुषायुग पतृ पृथक गृहेषु द्रष्ट साहास्त्र स्त्रियं एक उदा वहन ॥** यह बड़ो आश्चर्य है के एक स्वरूप सूं एक समय में न्यारे-न्यारे घरन में सोलह हजार स्त्रीन कूं एक भगवान ही व्याह करते भये है ॥ सो यह हू आपकी

शक्ति कूं स्वरूप दृष्टान्त सूं दिखायो है और हू रासोत्सव **संप्रवृत्तो गोपी मंडल मंडितः योगेश्वरेण कृष्णेन तासां मध्येद्दयोद्दर्यो प्रविष्टेन ग्रहीतां वाकंठे स्वनिकटां स्त्रीयः ॥** गोपीजनो के मण्डल सूं शोभायमान रासउत्सव आछी रीत सूं प्रवर्त होतो भयो है ॥ तामे दोय-दोय गोपी विराजमान है विनके मध्य-मध्य में योगेश्वर भगवान कृष्ण प्रगट होयके विनके कंठ कूंएक-एक भुजा सूं धारण करते भये है ॥ तब वे तो सगरी ही गोपीजन श्रीकृष्ण कूं अपने अपने ही निकट मानती भयी है ॥ सो या प्रकार सूं श्रीजी की शक्ति हू दिखाई है ॥ सो इत्यादिकन में कवहू संदेह नहीं करनो है ॥ के प्रभु तो परदेश में प्रस्थान नहीं कियो है ॥ और यह स्त्रीजन तो श्री गोकुल में विराजमान है ॥ सो प्रथम जो समाधान कह्यो है सो कैसे सम्भवे है ॥ सो यामे कछु हू सन्देह नहीं है ॥ प्रभुन में सम्भवे है सो यह श्रीजी देशान्तर में के स्थानान्तर में हू पधारे हैं ॥ के स्वयं अदृश्य भाव कूं अंगीकार कियो है तो हू सदैव ही या श्रीमद् गोकुल में हू विराजमान नहीं है ॥ यासूं ही महाभक्तन ने तहां-तहां तैसे-तैसे तब-तब यह प्रभु अनुभव कियो है और अनुभव करेहू है ॥ यासूं ही या श्रीमद् गोकुल की जे सुन्दरी गण है जे प्रियतम श्रीजी ने अनिवर्चनीय अलोकिक सर्वात्म भाव कूं धारण कर रही है ॥ सो विनकूं जीवन और तासूं तैसे-तैसे तब-तब जीव कूं धारण करनो और तहां-तहां मध्य में एकान्त में समाधान करनो सो वा लीला शक्ति के विना सम्भवे है का ॥ किन्तु सो लीला शक्ति कू हू सगरो सिद्ध होय है ॥ जासूं सो श्रीजी या श्रीगोकुल के प्रभु है, प्राण है, जीवन है, आधार है, और वल है तासूं गुप्त होयके अथवा प्रगट होयके और ठौर में हू विराज मान होय तोहू या श्रीमद् गोकुल में ही सर्वदा नित्य ही विराज मान ही है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले षष्ठम् तरंग समाप्तम् ॥६॥

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग सप्तम् ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सप्तम् स्तरंग लिख्यते ।।७।।

श्लोक -- **अथ श्रीमद् गोकुलेंदु मुखीनां तादृशैरत्नं तैशौर्भाव विशेयैश्च विलासैर्वचने रपिः ।।१।।**

याको अर्थ -- अव श्री गोकुल की चंद्रमुखीन के जे तैसे वे वे भाव विशेष है और विलास है और वचन है, और गुण हैं, चेष्टा है, हास्य है और मंद हास्य है और प्रेम पूर्वक देखनो और विनोद विलास और तैसे श्री अंग है और जो विनके कटाक्ष है और विहार है सोवण्य है और निमर्याद रूप और कांति और भूषण है और जो विनके चातुर्य जोवन मान प्रगल्भता कोमलता है और माधुर्य स्वभाव दक्षिणता धैर्य और गमनागमन है और जे विनके उत्साह और एकत और उत्कंठ भाव हैं और विनय है तैसे विनकूं जो निरंहकारता है और आदर है और तैसो मान है और जे क्षण-क्षण में विनके नवीन भाव हैं और तैसे-तैसे अभिसार हैं और लीला है वर्ज्जव है और श्री मुख के विलास है और लज्जा है तैसे प्रभून के नेत्रन कूं जो नचावनो है और मुग्धता है और घूंघट के जे मनोहर भाव हैं, और जे विनके दुरवे वचन हैं और न न शब्द के समूह हैं और स्नेह है दासभाव है तैसे विनके जे स्वभाविक सख्य है सेवा है दृढता है वे सगरे तैसे-तैसे है ह्रदय में आरूढ, भये थके है सो विन सूं अत्यंत आकर्षित होय रहे हूं श्रीजी परंतु प्रथम कहे अनुसार रूपवारी लीला शक्ति सूं और तिस-तिस देशकी जे मृगनयनी है विनके और विन भक्तन के गुणनसूं हूं और तैसे भाव सूं और विविध मनोरथनसूं और विनके बड़े भाग्यन सूं और सगरे भक्तन में स्वभाविक अपनी कृपा सूं और सगरे भक्तन में सगरे आनंद कूं वर्षा कूं करिवे वारे अपने दुस्त्यज स्वभाव सूं और प्रबल गुणन सूं और सगरे भक्तन कूं आनन्द देवे वारे विराजमान सुन्दर लक्षण सूं सगरे जीवन के उद्धार अर्थ तेसे प्रवृत होय रहे अपने प्राकट्य सूं और श्रीमद् गोकुलकी जे सुन्दर नयनी स्त्री है विनके सर्वस हैं ।। स्वभाव सूं और अपने में अनुराग

वारे सगरे भक्तन में स्वभाविक कृपा सूं और आपके वियोग में अपने प्राणन के वियोग में जैसे होय तैसे ही प्रिय के विना न दूर होयवे योग्य अत्यंत दुःख कूं मान रही जे वे सुन्दरी है विनको जो प्रिय श्रीजी के संगम की अभिलाषा है ता सूं और अपने जे भक्त हैं विनके प्रेरणा सूं हूं और संजोग लक्षण जैसे वियोग रूप जो श्रृंगार रस कूं दूसरो दल है जो दृढ़ संयोग सिद्ध करिवे वारो है ॥ और जो अंतर संबंधी रमणकूं वर्षा करि रह्यो है ॥ ऐसे वा विप्रयोग रसकूं इन सुंदरीन कूं भोग करायवे अर्थ के अनुभव करायवे अर्थ इनकूं अत्यंत ताप वारो कर रही जो अपनी ते, सो इच्छा है ॥ जो होयवे वारे हिम जैसे अत्यंत शीतल संयोग रस के आधिक्य सूं विन सुंदरीन के संग या श्रीजी के भेद के अभावकूं सिद्ध करिवेवारी है ॥ और अनेक विलासन सूं कमलीन कूं जैसे होय रहे तैसे विन सगरी सुंदरीन के प्रति मोद कूं जो सदैव ही दान करि रही है ॥ ऐसी वा अपनी इच्छा शक्तिसूं और विन सुंदरीन में तैसे भक्तन में सुख देवे अर्थ विचार करि रही जो कृपा है तासूं और वलवान जो ईश्वर भाव है तासूं तैसे और हू जे हेतु है जे अस्मदादि जनन सूं नहीं जाने जाय है ॥ ऐसे विन हेतुन सूं हू वलात्कार ग्रहण करे भये आकर्षण करे भये सो श्रीजी सुंदर मुहूर्त में अपने घर सूं प्रस्थान कूं करिके श्रीमद् गोवर्द्धन पर्वतकूं प्राप्त होते भये हैं ॥ सो जा सूं प्रस्थान कर पधारे हैं ॥ तासूं तहां गोपालपुर में जो अपनो घर है वाकूं अपने प्रवेश सूं अलंक्रत नही करते भये हैं ॥ किंतु आनोर गाम में पधारते भये हैं ॥ सो तहां अश्वराज सूं उतरके प्रभु श्रीजी अपने वस्त्रनकूं हू उतार के स्नान करिके मंगलमय सुद्धि श्वेत वस्त्रनकूं पहेरि के आचमन करिके तिलक लगाय के श्रीमद् गोवर्द्धन गिरिराज पधारते भये है ॥ तहां श्री गिरिधारीजी को दरसन करिके सहित प्रेम के प्रणाम करते भये है ॥ और अपने अभिप्राय कूं हू जतावते भये हैं ॥ तब यह श्री गिरिधारीजी तो प्राणन सूं हू अत्यन्त प्रिय जे श्रीजी है वाकी इच्छाकूं न उल्लंघन करत और अश्रुन के समूहन सूं रूक रह्यो है कंठ जाको ऐसे सो श्री गोवर्द्धन धारीजी विरहसूं व्याकुल होयके विरहसूं व्याकुल या श्रीजी कूं कहेवे में न समर्थ भये थके बड़े यत्नसूं हू आपके परदेश पधारवे कूं मानते भये हैं ॥ और वा श्रीजी में प्रेमसूं विहवल होय के भक्तन के कार्यनकूं सिद्ध करिके सर्व प्रकार सूं वेग ही इहां पधार के इहा के जे भक्त हैं जो आपके विरह सूं व्याकुल होय रहे है विनकूं

वेग ही हर्षित करोगे ऐसे ही सूचना हू करत भये हैं ।। तब सो श्रीजी दृष्टि सूं हू श्री गोवर्द्धनधर के कहिवे कूं सहित प्रेम विनय के अंगीकार करिके और श्री गिरिराजजी सूं हू उतरिके वा श्री गोवर्द्धनधारी के मंदिर के ऊपर शोभायमान होय रही ध्वजाकूं हू प्रणाम करिकें और दरसन करिके तब शुभ यात्रा योग्य वस्त्रनकूं पहेर के तहां के जे भीतरिया सेवक हैं विनकूं सेवा में सावधान करिकें और विनने आगे अर्पण करी जे मंगल अर्थ दही आदिक हैं और माला वस्त्रादिक है वाकूं बड़े आदर सूं ले करिके विनकूं विदा करत भये हैं ।। तब वहां सूं प्रसन्न करिके श्रीजी पेठे ग्रामकूं प्राप्त होते भये हैं ।। तहां स्त्रीन में भक्ति कूं प्रवर्त करिवेवारें रस सागर श्रीजी उछल्लित होय रह्यो है प्रेम को समुद्र जिनमें ऐसे अपने सेवकन कूं चारो ओर मंडलाकार गोपाल जैसे बैठाय के विनके मध्य श्रीकृष्ण जैसे स्वयं विराजमान होयके रात्री समय में फलहारकूं करत भये हैं ।। या पेठा ग्राम में ही श्री गोकुलसूं आयके सगरे कोषाध्यक्ष और अधिकारी वैष्णव सेवक भक्त स्त्री पुरुष मिलते भये हैं ।। और हथियार जिनके हाथ में हैं ऐसे पहेरेदार और घुड़वाल तैसे गाड़ीवारे और हू तिस-तिस कार्य के करिवे वारे सगरे ही तहां मिलते भये हैं ।। और प्रभुन के सदैव ही हितकूं विचारवे वारो सो पछा त्रिवाड़ी, और जो सदैव ही दूध की फेंनकूं सिद्ध करिके प्रभुन को आरोगावे हैं ।। और प्रसन्न करें है ।। और श्रीपाद जाकूं कहे है सो जगन्नाथदास हू और गणेश नाम वारो गोपाल और माधवदास नागर परिचारग और प्रभून के रसोई घर में विविध व्यंजन और परिपक्व भये भात आदि सामिग्रीन सूं प्रभुन कूं प्रसन्न करिवेवारो स्वजातीय हरीपत भट जो तांबूल की सेवा में राख्यो है ऐसो राघवदास और धनकूं रक्षा करिवेवारो गौरा श्यामदास और सगरे जन जाकूं पहेरेदारन में श्रेष्ठ कहे हैं । ऐसो लंकीरावत और सहेजा और लाडिक और जेसन और जमुना और रामदास तैसे रागैर, वजीया, राजीया और गोधा पटेल और हमीर पटेल यह सगरे हू जिनके गुणन की महाप्रभु हू बड़ाई करें हैं महाप्रभु हूं जाके गुणन की बड़ाई करे है यह परम श्रेष्ठ दैवी जीव हैं ।। और सरयु नदी के पार में जे ब्राह्मण है विनमें पुजित जो श्रीमाली ज्ञातीवारो महावियदास है जो प्रभुनके घर में जे वैष्णव आवे है विनके पाक कर्म में प्रभुन की आज्ञा सूं तत्पर है ।। सो और प्रभुन के श्री अंग को सेवक निकट रहिवे वारो कृष्णदास और कोषाध्यक्ष और वांछित अर्थन के लेवे में प्रभुन ने जाकूं

आज्ञा कियो है ऐसे प्रभुन की आज्ञा मानिवे वारो जो सदैव ही प्रभुन की शैया कूं उठावे है ऐसो कान्हमहप्प वारो और घोड़ा की सेवा में तत्पर हरीदास और नरवद सो यह तैसे और हू बड़े भाग्यवारे तिस-तिस सेवा में सावधान और गुणक्रिया प्रेमशीलतो जब वलसूं अधिक सो वे सगरे ही प्राणन सूं अधिक जो अत्यंत प्रिय अपनो प्रभू परमेश्वर श्रीजी है ।। सो आपुके निकट आवते भये हैं ।। तब विन आये भये सगरे वैष्णव भक्त सेवकनकूं सो करूणा सागर श्रीजी प्रेम रसकूं वर्षा करि रहे अपने नयन सूं अनुमोदन करत भये है ।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले सप्तम् तरंग समाप्तम् ।।७।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग अष्टम ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्टम् स्तरंग लिख्यते ।।८।।

श्लोक -- **ततो दशभ्यां प्रत्यूषे स्त्रात्वा नित्यमिवेश्वरः ।। विहिता वश्य कर्तव्यश्वा पारव्यमधिकारिणं ।।१।।**

याको अर्थ -- तब दशमी के दिन प्रभात समय में नित्य जैसे ही प्रभु स्नान करिके अवश्य कर्तव्य नित्यक्रत्यकूं करिके चांपा भाई अधिकारी कूं श्री गोकुल में जायवे के अर्थ आदर सूं आज्ञा करते भये है के तुमकूं सर्वत्र सर्व प्रकार सूं श्रीनाथजी की सेवा में ओर घरके कार्य में हू सर्वदा ही सावधान करिवे योग्य है ।। तैसे और वैष्नव हू भक्त और भृत्य हू वे सगरे हूं सावधान रहे ।। तब सो अधिकारीजी विन वैष्णव सेवक भक्तन के संग ही प्रभुन कूं प्रणाम करिके नयनन सूं आंसुन कूं अत्यंत वर्षा करत नम्र होय रहे शिर सूं प्रभुन की आज्ञा कूं धारण करत भयो है ।। तब श्री गोकुल में जातो भयो है ।। और सो अधिकारीन में मुख्य और प्रभुन को परम भक्त चांपाभाई प्रभुन की आज्ञा के अनुसार ही वर्ततो भयो है ।। तब यात्रा के अनुकूल शोभायमान होय रहे वा माहा रसात्मक स्वरूप सूं पुरुषोत्तम कूं अलंकृत करत और वा पुरुषोत्तमता सूं वा स्वरूप कूं

शोभायमांन करत और वा स्वरूप सूं घोड़ा के जे साज हैं ।। विनकूं अलंकृत करत और वा साजन सूं चंचल जाको नाम है और मन जैसे जाको वेग है और मनोहर, सुंदर जाके लक्षण है ऐसे घोड़ा कूं शोभायमान करत और वा घोड़ा राजसूं भक्तन के द्वार कूं शोभित करत और वासूं ग्राम कूं तासूं देसकूं तासूं भूमि कूं वा भूमि सूं चतुर्दश लोकनकूं विन चौदह लोकन सूं और हू सगरे लोकन कूं अलंकृत करत श्री महाप्रभुजी वेगि चलिवेवारे सुंदर रंगवारे छवीले नाम वारे घोड़ा कूं और नीले लटकन नामवारे घोड़ाकूं आगे करिके तैसे औरनकूं हू अपने आगे चलवे वारो करिकें विविध लीला कूं और विविध मधुर कथानकूं विन-विन अंतरंग भक्तन के संग प्रेम सहित बारंबार करत श्री गोकुल कूं और श्री गोकुलवासी जननकूं स्मरण करत सुन्दर श्रीजी आगे प्रस्थान करत भये है । सो मार्ग में चलत सुंदरवर श्रीजी सती सग्राम पुर वन निवासी जीवन के नयनों में चित्तों में और सगरे अंगन में अमृत सागरन कूं वर्षा करत भये हैं ।। पधार रहे वा श्रीजी केशु भरू पारस सूं भरी भई द्रष्टि के जे वृक्ष हू सनमुख भये हैं ।। वे सूखे हू हरे होय जाते भये हैं ।। और जे वृक्ष फल पुष्पदलादिकन सूं रहित हते वेहु विन फल पुष्प दलादिकन सुं मंडीत होयके तब परम शोभाकूं धारण करते भये हैं ।। जब या प्रकार सूं प्रभु श्रीजी अपनी कृपा सूं सगरे जड़ चैतन्य जीवों के प्रति दरसन हू दे रहे हैं ।। तब ईश्वरन के ईश्वरनकूं हू दुर्ल्लभ वा दरसन कूं प्राप्त होय के अत्यंत हर्षित होय रहे जे वे वे जल पुष्प हैं विनने हू रस अर्पण कियो जो अपनो सार सर्वस्वरूप शीतलता और सुगंधता है ।। वाकूं विनकूं दूत जो पवन है सो उठाय के वाके भारसूं मंद मंद चलत ही प्रभुन के आगे आवतो भयो है ।। ओर महा तेजस्वी प्रभु श्रीजी तहां विराजमान होय रहे है ।। तब सो सूर्य अपने चंद्र कहा तीक्षण किरणन कूं प्रायः ही संकोच करत भयो है ।। और कहुंक हू विन किरणन कूं जो विस्तारित करतो भयो है ।। सो तो वा प्रभुनके श्री मस्तक ऊपर छत्रकूं धारण कर रह्यो जो तेसो महाभाग्य निधि महात्मा भक्त विशेष है ।। वाके सेवा रस के बढ़ायवे कूं और या प्रकार सूं शोभायमान जे प्राणनाथ है वाके तैसे दरसन में लोभी नयनकूं धारण कर रहे जे भक्त हैं विनकूं अनुकूल होयवे कूं हू किरणन कूं विस्तारतो करतो भयो है ।। आपके अंगीकृत जीव है विनको रूप हू विलक्षण होय है यामें कहा संदेह है ।। जासूं पधार रहे श्रीजी ने जिनकूं

अंगीकार करनो है विनको हू यह रूप विलक्षण होय रह्यो है ।। जासूं आपके जे आगे चल रहे चिरपर्यंत निरंतर दौड़ रहे जे आपके सेवक है विनके चरणन में मार्ग में स्थित जे रेती, कांटे, पाथर, के जे टुकड़ा है वे रत्न प्रियान के नख और प्रफुल्लित पुष्पन के बिछौना रूप ही होय जाते भये हैं ।। और सुगंधित पुष्पन कूं और मधुर फल कूं पत्रन सूं और हाथन सूं ले करिके दूर सूं ही वृक्ष और जन आदर सूं ही आपकूं प्रसन्न करिवे कूं आगे आवते भये हैं ।। वन में प्रफुल्लित होय रह्यो जो केतकी को पुष्प है जो गंध के प्रकर्ष सूं कंठ स्थान में प्राप्त होय रहे भौंरा सूं नीलकंठ महादेव के मुख कूं विडंबन करिवे कूं प्रभुन के आगे हे प्रभो, आपके नयों के सनमुख प्राप्त भयो जो हौं हू ऐसे मेरी आपकी प्रफुल्लित दृष्टि सूं शोभा अधिक भई है ।। तासूं मेरो निरादर कर रह्यो जो महादेव है वासूं मोकूं अणुमात्र हू डर नहीं है ।। मेरी तो शोभा अधिक होय रही है ।। या प्रकार सूं सूचना करि रह्यो है ।। औसे केतकी के पुष्प कूं प्रिय श्रीजी अत्यन्त सराहना करत भये हैं और करोड़न कामदेव के सौन्दर्य कूं जय करिवे वारे मेर प्रभुन के आगे चतुर पवन ने जो नवीन लता नचाई है सो सात्विक भाव सूं कांप रही और मकरंद रूप स्वेद की बूंदन सूं व्याप्त होय रही और मंद हास्य रूप आधी प्रफुल्लित कली लीला सूं अत्यन्त शोभायमान होय रही रसदायक या प्रभुन के आगे प्रेम वारी सुन्दर यनी स्त्री जैसे होय तैसे ही आपके भक्तन ने सो आदर सहित देखी है ।। और सुगंधी सूं चाहना के योग्य और गौर जाके अंग है और पाप रूप भौंरा जाको स्पर्श करिवे में समर्थ नही है ।। ऐसी मधुराकार सुंदर मनोहर जो चंपकलता है सो आप में अत्यंत अनुराग वारी नव सुंदरी जैसे होय तैसे ही श्रीजी में देखी है और चतुरन के चक्रवरती जो कोकिला को शब्द है वाकूं हम प्रणाम करे है ।। जो कोकिला को शब्द माधुर्यता सूं हमारे प्रभुन के कानों में चिर पर्यंत ही लग जातो भयो है ।। के स्थिर भयो है ।। और विन गुणन सूं मिले भये पक्षी तो करोडन हू है ।। तथापि केवल नीलकंठ मोर तो वंदना के ही योग्य है जासूं जाके वर्ह में महाप्रभुन की दृष्टि है सो श्रीमद् गोकुल की चंद्रमुखीन के केश पाश में जैसे होय तेसे क्षण एक तो विहार कूं करत भई हैं ।। और पद पद में प्रियतम के घोड़ा के खुरनसूं खंडीत होय रही जो पृथ्वी है जाकी शोभा के कण कूं हू लक्ष्मी हूं प्रार्थना कर रही है ।। ऐसी जो पृथ्वी प्रियतम के नखक्षत सूं अत्यंत शोभायमान

है सगरे अंग जिनके ऐसी जे श्रीमद् गोकुल की लक्ष्मी है के सुंदरी है विनके सोभाग्य को अनुकरण करे हैं ।। स्वर्ग कूं के अमरावती पुरी कूं तृण जेसे हू नहीं माने है ।। सो उछल्लित रस जैसे होय तैसे तब प्रभु पधारे हैं ।। तब कंटक हते ।। सो दुर ही चले जाते भये है ।। और पाथर के टुक़ड़ा हू दूर होय जाते भये है ।। और दर्भन की जो सूंची जेसे शिखर हती सो नीचो मुख कर लेती भई है ।। और जिन वननकूं प्रथम श्री वृंदावन आदिक तृणन की गणना में हू नहीं गिनते हते सो विन वनो में जव श्री गोकुलेश्वर प्रभु विलास सहीत विहार कियो है तब विन व्रंदावनादिकन सूं हू प्राप्त भयो है अत्यंत तैसे-तैसे उत्कर्ष जिनकूं ऐसे विन वननकूं वे वृंदावन आदिक वन निरंतर नमन करत भये है ।। और सदैव विनके दरसन की अभिलाषा करत भये है ।। और अपने में गर्वांध भावकूं विचारते भये हैं और अपने कीये अपराधन कूं दीनता को आश्रय करिके वारंवार ही क्षमा करावते भये हैं ।। सो यह सगरो प्रमाणादि करनो इनकूं व्रथा ही है ।। जासूं इन वनन कूं तो प्रभु श्रीजी अपने कूं दरसन अत्यंत करायके अपने प्रगट भये रस सागर में ऐसो मग्न करायो है जासूं फेर निकस हू नही सके तासूं वा रस सागर में मग्न होयवे सूं यह वन तो अपनो अनुसंधान हू नही करते भये है ।। सो अन्य वन वृंदावनादिकन कूं और विनके प्रणाम दरसनकूं ईच्छा और डर गर्व अपराध क्षमा पनादिकन कूं कैसे जाने अथवा विन वृंदावन आदिकन कूं यह प्रणामादि करनो हू व्रथा नही है ।। जासूं यह वन तो रस में निमग्न होयवे सूं विनके प्रमाणादिकन कूं नहीं अनुसंधान कियो है ।। सो यद्यपि नही करे तो हूं इनमें कियो भयो प्रणामादि हू प्रभून के आगे जैसे होय तैसे ही सगरे अनिष्टन कूं निवारण करिवेवारो है और सगरे जीवन में तैसे जड़ो में हू सगरे दृष्टन कूं देवे वारो है ।। यह निश्चय है ।। और श्रीजी के संग ही जल दूध आदि पान करनो और मेवा मिठाई प्रसाद खावनो और सोवनो और खेलनो ऐसे अपनी ईच्छानुसार विहारन सूं जे दिन रात्र गुजार रहे है और वा प्रभुन के संग ही चल रहे हैं ।। ऐसे जे आपके सेवक भक्त हैं, वैष्णव दास हते विनकूं कोऊ प्रकार सूं परिश्रम नहीं होतो भयो है ।। और श्रीमद् गोकुल की जे मृगनयनी सुंदरी है विनके तैसे केशपाश के दर्शन अनुभव में और विनके गमन में जो सौंदर्य है वाके अनुभव में और विनके दृष्टि के चपलता विशेष के अनुभव में और तैसे अनिर्वचनीय वाणी के माधुर्य रस के

अनुभव में और भुजान की सौंदर्यता के अनुभव में और हस्त कमल की सौंदर्य संपदा के अनुभव में और स्वास संमंधी सुगंधी के अनुभव में तैसे अधर की शोभा समूह के और उनकी कांती समूह के और हास्य शोभा संपदा के अनुभव में प्रभून कूं जो सुख होय है सो मोर तो अपने वर्हन की संपदा सूं और हस्ती तो गती सूं और हिरणी तो नयनो के विलासन सूं और कोकिला तो अपने पंचम स्वरा सूं और नंदी तो तरंगन सूं और नवीन पल्लव तो लालिमा सूं और कमल तो सुगंधी सूं और बंदुक तो अपने सौष्टवता सूं और रंभा विशेष तो अपने वर्ण सूं और चंपक तो अपनी कांती कू संपदा सूं और लता तो पुष्पन के प्रफुल्लता सूं सो वा सुख के अंश लेश कणिका कूं उपायन रूप करिके के भेट करिके क्षण ऐक तो वा तिस-तिस सामर्थ्यवारे प्रभून कूं क्षण ऐक तो अत्यंत प्रसन्न ही करते भये है सो बड़ो आश्चर्य है ।। के दिन रात्र दोषरूप पंक में डूबे भये हू विश्वकूं विन श्री गोकुल की चंद्रमुखीन के शोभा के किणकान सूं जे कृपासागर श्रीजी उद्धार कर रहे है ।। ऐसे प्रभून की स्तुती करिवे में सगरे दोषन कूं आकर रूप मो सरीखो अल्प बुध अधम जन को साहस करेगो ।। और सो श्रीजी ने श्री गोकुल की चंद्रमुखीन के भुजा के जे अणुमात्र सादृश्य कणिका तरंगन में डारे है ।। सो नंदीन कूं और विन चन्द्रमुखीन के नयनों के जे साद्रस्य कणिका पद्‌मन में डारे हैं सो मोरन कूं और विन सुंदरीन के केशन के जे सादृश्य कणिका वर्हन में डारे है सो मोरन कूं और विनके कुचन के सादृश्य कणीका हस्ती के कुंभन में डारे है सो हस्ती कूं और श्रीमुख के सादृश्य कणिका कमलों में डारे हैं सो कमलिनी कूं और वचनो के सदृश्य कणिका पंचम स्वरा में जे डारे है सो अन्य पुष्टि के कोकिलान कूं और श्री हस्तन के सादृश्य कणिका नव पल्लवो में डारे है सो वृक्षनकूं और मंद हास्य के सादृश्य कणिका जे कुंदो में डारे है सो विनकी लतानकूं और उर स्थलों के सदृश्य कणिका जे रंभा में डारे है सो उपवनन कूं और अधर शोभा के जे सादृश्य कणिकां बंधुकन में डारे है सो विनके वक्षन कूं और निश्वासन के जे (कीणका लता में डार्ये है सो विनके) सादृश्य किणका सुगंधी पवनों में डारे है सो श्रेष्ट पुष्पन कूं और श्री अंग के जे सादृश्य किणका लता में डारे है सो विनके स्थानन कूं ऐसे या प्रकार श्री गोकुल संबंधी चंद्रमुखी सुंदरियो के श्री अंगों के जे सादृश्य के जे किणका तरंग वर्ह आदिकन में डारे है वे नंदी

मोर, आदिकन कूं श्रीमद् गोकुल के माणिक्य रूप श्रीजी सूं बहुत मानवारो करत भये है के विन नदी, मोर आदिकन के तरंग वहीं आदिकन कूं देखके अपने प्रियान के भुज केश आदिकन के सादृश्य कणिका के अणुं कूं हू देखके विन नदी मोर आदिकन कूं बहुत मान देते भये हैं ।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले अष्टम् तरंग समाप्तम् ॥८॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग नवम् ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ नवम् स्तरंग लिख्यते ॥९॥

श्लोक -- **जयत्ययं भगवतः सगंभीरिम सागरः ॥ येन गोकुल चंद्रास्यां वियोग वडवानलः ॥१॥**

याको अर्थ -- भगवान श्री गोकुलपति कूं यह गंभीरतारूप सागर सर्वोत्कर्ष सूं विराजमान है ॥ जासूं जो गंभीरतारूप सागर में श्री गोकुल की चंद्रमुखी है विनके वियोगरूप जो वडवानल है जो तैसे-तैसे तहां विन चंद्रमुखीन कूं वलसूं स्मरण कराय रह्यो है ॥ और क्षण क्षण में स्वयं हू बढ़ि रह्यो है ॥ ऐसे वा वियोग वड़वाग्निकूं हू स्वयं आछादन कर लेतो भयो है ॥ और वा प्रभुन के गंभीरतासूं हू वा प्रभुन की ही कृपा सूं कितनेक महद भक्तन की जो कुशाग्र सूं तीक्षण जो बुद्धी है सो अत्यंत सर्वोत्कर्ष सूं विराजमान है ॥ जासूं जो बुद्धी प्रभुन के गंभीरतारूप सागर में हू गुप्त होय के रहिवे वारे या वियोग वडवा अग्नि कूं बल सूं हू अपने प्रतीक्ष करत भई है ॥ और विन चंद्रमुखीन कूं प्रभुन ने जैसे-जैसे प्रकारन सूं स्मरण कियो है विन-विन प्रकारन सूं हू अपने प्रतिक्ष कर लेती भई है ॥ जिन प्रकारन कूं अत्यंत बुद्धिमान हू और जीव क्षण-क्षण में भावना करत हू नहीं जान सके हैं ॥ और जे प्रकार कहे पर हू नही जाने जाय है ॥ और प्रगट किये भये हू समझवे में नहीं आवे है ॥ और सुनवे में हू नही आवे है ॥ और यदि बड़े यत्नसूं कबहू सुने हू है ॥ तथापि चित्तन की सावधानता सूं हू धारण नहीं किये जाय है ॥ सो ऐसे जे प्रकार है दुर्ज्जन

नीरस कुबुद्धि, नास्तिक, मूर्ख, दुष्ट संगीन के आगे कबहु प्रकाश करवे योग्य नहीं है ।। और जे आकाश चित्त है और बज्र चित्त है, विष चित्त है के लोह चित्त है के पाषाण चित्त है के कनक चित्त है ऐसे जीवन के आगे तो कबहु प्रकाश करवे योग्य नहीं है ।। और लाक्षाचित जे पुरूष है विनके आगे तो कबहू कहूं योग्य नहीं है, और जिनको मोम जैसे चित्त होय तो विनके आगे हू कृपा सूं प्रकाश करवे योग्य है ।। और जिनको चित्त है, व्यंग विन जैसे होय और नवनीत जेसे होय और जिनको मन अमृत जैसे होय विनके तो चरणन में हू प्रेमसूं बारंबार प्रणाम करिके हूं बारंबार प्रगट करि कहवे योग्य है ।। तैसे-तैसे व्याख्यान हूं कहवे योग्य है ।। जासूं वे अमृत चित्तवारे भगवदीय या प्रभुनकी वार्ता मात्र सूं हू प्राणन कूं धारण करे है ।। और विनके श्रवण सूं अत्यन्त ही प्रसन्न होय है ।। और तासूं अपने कूं श्रीमद् गोकुल के जीवन रूप श्री गोकुलपति कूं प्राप्त भयो ही माने है ।। सो विनकी कृपासूं सो कहा है जो श्रेष्ठ फल वेग ही नही प्राप्त होय ।। और लौकिक अथवा अलौकिक अथवा और हू ऐसो कहा है जो सिद्ध नहीं होय किंतु वेग ही श्रेष्ट फल हूं प्राप्त होय है ।। और लौकिक अलौकिक हू सिद्ध होय है ।। सो भट्टजी कहे है के तासूं दुष्ट जीवनसूं अत्यंत डरत ही हो तैसे महद भगवदियन के प्रसाद के अर्थ उत्साह कूं करत और विनके ही कृपा के समूह सूं जिन प्रकार कूं जानतो भयो डूं विनमें कितने एक प्रकारन कूं प्रगट कर कहु हूं तासूं हे श्री गोकुलपति पूर्ण करूणैक शरणां वा श्रीमान श्री गोकुलेश्वर के तैसे माधुर्य्य में और महात्म्य में और कृपा के समूह में और विदग्धता में और तेसे रसिकता में और प्रेमाईता में और चरण कमलों में तैसे प्रभुन के स्वरूप और तैसे श्री मुख में और भुज दंडों में और विशाल वक्ष स्थल में और कटाक्षन सूं जो देखवो है विनमें और कपोल मंडलो की प्रफुल्लता में और कथा और अनुकथामृत में तैसे हास्यन के नवीन रंगों में और तैसे मंद मुसकात नर्म स्पर्श समाधान वचनो के नवीन रंगों में और तैसे स्वयं ही प्रथम स्पष्ट दर्शन किये और सुने भये तैसे-तैसे विन-विन लीला के नवीन तरंगों में तुम तो आशक्त बुद्धि वारे तासूं तुम या रस प्रसंगन में हू सावधान होवोगे ।। सो भटजी या प्रकार सूं श्रीजी के कृपा पात्र महद भगवदीय श्रोतान कूं सावधान करिके अब जा प्रकारसूं विन श्री गोकुल संबंधी चन्द्रमुखीन कूं जा जा प्रकार सूं स्मरण कियो है ।। विन प्रकारन में विन-विन प्रकारन

कूं सुनावे है ॥ जो सो कर्तु अकर्तु अन्यथा कर्तु सर्व सामर्थ हरि है ॥ सो यदि स्वयं ही कमलरूप होय और तासूं यदि चतुर्मुख हू सो स्वयं होय और तासूं कामदेव हू सो यदि स्वयं ही होय तब वा कामदेव के दीर्घ मनोरथन सूं अनिर्वचनीय रति हू यदि कल्पना करी जाय तब वा रति की सुंदरता हूं वा मेरी प्रिया के सौंदर्य संबंधी चरण कमल की रजकूं स्पर्श करिवे में हू शंका न करेगी का किंतु वाके सौंदर्य संबंधी चरण कमल की रजकूं हू स्पर्श न कर सकेगी ॥ जासूं विष और दुर्ज्जनो के वचनो का और चन्द्र और कमलेक्षणा के मुख और पद्मन कां और अमृत तेसें और विन सुंदरीन के मंद हास्यन को तृण और महा पर्वतन को जैसे होय तैसे ही तैसे ही भेद स्पष्ट ही है ॥ और परम कोमल सो मेरी प्रिया मेरे निकट विराजमान होते ही अपने सुंदर श्री हस्तन की शोभा सूं रंजित होय रहे पुडरीक उत्पल और कनक सरोजन के जे रात्रि विकासी कुमोदिनीयों के समूह है विनकूं हू देखिके सो यह तो लाल कमलन की पंक्ति है, यह मान के विनकूं ऊँचो फेंकती ही मेरे में मंद हास्य कूं करत पुरूष शब्द वारे कमलों के स्पर्श भ्रमसूं हू लज्जारूपी सागर में मग्न होय जाती भई है ॥ तैसे और स्त्रीन के मुख समूहन को जोवन की पीड़का है ॥ सो तो दर्पणगण कूं पंकील जलन सूं स्नान जैसे है ॥ के उज्वल कूं हू मलीन करिवे वारो है ॥ तैसे और स्त्रीन कूं जो पोछो भयो हू अंगन को समूह है, सो तो कमलाकर जो कमलवारो सरोवर है वाकी शोभाकूं हू दूर करिवेवारो हेमंत रितु जैसे हैं ॥ और रात्री कूं भर्ता जो चंद्रमा है वाकी हू शोभा कूं दूर करिवेवारो हू रूप है के अमावस्या रूप है और हरि जे कृष्ण है वाकी बंधु प्रिया जो श्री राधा है वाके मुख की सर्व प्रकार सूं श्रृंगारादि सूं सिद्ध रह्यो जो उत्कर्ष है, वाको जो दर्शन है सो मेरी प्रिया को मुख है सो मेरी प्रिया के मुखकूं अनुसरण करे है ॥ स्मरण करावे है ॥ और तो जगत मात्र में हू या मेरी प्रिया के मुख कूं अनुसरण करे है, स्मरण करावे है और तो जगत मात्र में हू या मेरी प्रिया के मुख कूं अनुसरण करिवेवारो हू नहीं है ॥ मेरे विरह सूं अत्यंत भई थकी सो मेरी प्रिया निश्चय सूं ज्वलन में के अग्नि प्रवेश में वेग कूं करत भई है ॥ तब यदि सो विरह वा अग्नि कूं नहीं भस्म करतो तो मेरी प्रिया तो तीन्यो ही जगत कूं शुन्य ही कर देती ॥ हों तो यह जानूं हू के वा मृगनयनी के प्राण वायु है सो निश्चय सूं हू पंगु है

नहीं तो आज दिन पर्यंत कंठ में आलंबन करिके कैसे वर्तमान होते तासूं पंगु ही है ।। और वा प्रियाकूं मेंने जहां-जहां देख्यो है के पूछ्यो है और एकांत में रमण कियो है और कपोलो में चुंबन कियो है के स्पर्श कियो है, के आलिंगन दियो है, और जहां-जहां वाके संग हांसी करी है सो मेरे वियोग सूं व्याकुल है मन जाको, ऐसी सो कमल नयनी तहां-तहां आये भये तेसे दिन में विनको स्मरण करेगी ही ।। तब-तब वाकी कहा दिशा होयगी ।। और मुक्ता है सो क्षीर सागर मे गिरी है ।। और जे तारा है सो स्वर्ग में ही चले गये हैं ।। और जो कुंद के पुष्प हैं सो हू माघ में महामहिम में श्रेष्ट तपकूं हू करत भये हैं ।। सो इतनो हू विनने कियो है तो हू मेरी प्रिया के जे दंत है सो पराभव कूं प्राप्त भये है ।। और फाट गयो है त्वचारूप वर्म जाकूं ऐसी दाडिम के बीज की जो पंक्ती है सोहू विन दंतन के अतिशय करिके ही विजय कर लीनी है ।। और या प्रियाजी कूं जो श्रीमुख है सो हास्य के लेश कूं धारण करेगो ।। यह विचारि के मधु जोर ही सो तो कटु भावकूं हू प्राप्त होय जातो भयो है ।। और प्रियाजी की दृष्टि में जे विभ्रम है कटाक्ष है सो देखेंगे ही या विचारसूं पुष्पायुध जो कामदेव है सो विश्वकूं ही जय कर लेतो भयो है ।। और कोमल जाके अंग है ऐसो प्रियाजी के चरण कमलों में विलास करिवे कूं गती ने जब उत्साह कियो है तब ही हस्ती राज जे रहे सो गर्व रहित होय जाते भये है ।। सो विधाता के चित्त में यासूं अधिक कहा है ।। और श्री मुख में तो हास्य कूं लवहू नहीं प्रगट्यो है तासूं प्रथम ही सुधा को जो माधुर्य है सो दोलायित ही होय रह्यो है ।। और प्रियाजी को वक्षस्थल हूं उछलित नही भयो है तोहू सुमेर पर्वत को जो शिखर है सो तो गमना गमन के परिश्रम सूं हू प्राप्त होय जातो भयो है ।। और कामदेव के वाण को जाने कब हो प्रियाजी के नयन कटाक्ष सूं बाहिर प्रगट होयगो ।। परंतु विश्व कूं तो वाके स्मरण सूं प्रगट भये संकल्पने ही विजय कर लियो है ।। यह पुर में प्रगट ही डी डीम शब्द होतो भयो है ।। और सो प्रियाजी मंद मुसकान वारी होयगी परंतु सुधा तो आगे हो विचारि के नितंब जैसे कटु होय जाती भई है ।। और प्रियाजी को मिलाप करेगी ।। तासूं प्रथम ही विचारि के कोकिला कलके प्रगट भये पंचम स्वरा ने आंजली बाँध लीनी है और प्रियाजी अपने कांती भर्ता में दृष्टि कूं मिलाप करेगी ।। या विचारसूं सपत्नि जन तो प्रथम मंदिर हित ही होय जाती भई है ।। और

या प्रियाजी रमण मंदीर कूं देखेगी ।। या विचार सूं श्रृंगार लीला रस प्रथम ही पुलकित होय जाते भये है ।। और प्रसिद्ध या प्रियाजी में अपनी चतुरता कूं सफल करूँगी ।। या विचार सूं प्रगट भये हर्ष के भारसूं चातुर्यता जो है सो नेत्र जलकूं वर्षा कर रही है और नवीन जो जोवन है सो तो या प्रियाजी में हों परम तरूणताकूं प्राप्त होवुंगो सो महा हर्ष है ।। या विचार सूं अत्यंत आनंदित होयके रोमांच नामवारे कंचुक कूं हू धारण कर रह्यो है ।। और रंभा अपसरा के कटु भाव कूं और कामकी स्त्री रती के निंव भावकूं और हिमालय की कन्या पार्वती के विषभाव कूं और क्षीर समुद्र की कन्या लक्ष्मी के अत्यंत क्षार भावकूं और उर्वशी अप्सरा के तृणभाव कूं और पुलोम की कन्या के तुच्छता कूं प्रगट करि रह्यो जो वा कमल नयनी कूं अनिर्वचनीय स्वरूप है सो मेरे चित्त में प्रकाशमान होय रह्यो है ।। और वा प्रियाजी को अधर रस है सो ईक्षा की तो समृध्य रूप है ।। और सुंदर मधुकी तो विविधी निधीन की सिद्धिरूप है और सीताकूं तो साम्राज्य रूप है ।। और कवि के जे वचन है विनको तो परम पद को लाभरूप है और क्षीर सागर कों तैसे अमृत के अधीक द्रव कूं प्रगट करवे में है वेग जाको ऐसे सुधा को तो मंद हास्यरूप है ।। ऐसे या प्रकारसूं वा प्रियाजी को अधर रस विलास कूं प्राप्त होय रह्यो है ।। और द्राक्षा के राक्षस भावकूं के कठोरता कूं कहेत और स्वेत मिसरी है वाके निंवता कूं प्रगट करत और वाणांदिक विने किये जे उत्तम काव्य हैं विनके इंद्रयव भाव कूं अत्यंत ही सूनचा करत और अमृत द्रव के काल कूट विषभाव कूं उद्घोष करत जो कोमल अवयव वारी प्रियाजी के दंत छंद अधर में माधुर्य कूं अद्वैत रस है सो अत्यंत ही बुद्धि कूं प्राप्त होय रह्यो है ।। और हिमकर कहा चंद्रमा कूं देह त्याग में लालसा वारो करत और दर्पण कूं प्रज्वलित होय रही अग्नि के गोद में प्रवेश की अत्यंत इच्छावारो करत और प्रफुल्लित होय रहे कमल कूं सन्यासाश्रम धर्म के ग्रहण की अभिलाखा वारो ही करत जो मुग्ध नयनी वा प्रीयाजी को श्रीमुख मंडल है सो सगरे उपमानन कूं हू आत्यंत ही विजय कर रह्यो है ।। और कमलन कूं जो रात्री में प्रफुल्लित न होयवे सूं व्रत है वाकूं हितरूप और चंद्रमाकूं जो दिन में उदय को नाश है ताकूं विशेष सूं सुख देवेवारो और सुंदर दर्प्पणन कूं चिर पर्यंत कलुषता मलीनता के दूर करिवे लिये जल सिंचन करवेवारो है ।। ऐसो वा मृगनयनी को मुख बिंब है ।। सो चारो ओर

प्रकाशमान होय रह्यो है ।। सो मेरी प्रियाजी चरणन के धारण करिवे सूं कल्पवृक्षन के नवीन पत्रन की शोभा कूं कृतार्थ कर रही है ।। और शोभायमान पुष्ट जे स्तन है विनसूं सुवर्ण पर्वत मेंरु की जे शोभा है, वाकूं दासरूप विचार रही है ।। और श्रीमुख की प्रसन्नतासूं चन्द्रमाकूं हू दया सूं दास वर्गन में लिख रही है ।। और अपने स्वरूप सूं स्वर्ग लोक संबंधी स्त्री समूहन की जो शोभा है वाकूं नितंब रूप कर रही है ।। ऐसी जो सो मेरी प्रियाजी है अत्यंत ही शोभायमान होय रही है ।। और चरणन कूं प्रफुल्लित जे कमल है ।। विनके कुचि के ऊपर स्वईच्छा सूं धारण करत और श्री विग्रहकी कांति सूं तप्त जे सुवर्ण कूं वर्ण हैं वाके दंड कूं सर्व प्रकार सूं करत और स्तनों के उन्नति सूं वा सुमेरू को हू निरादर करत और देवतान की स्त्रीन को जो मंजुभाव है के मनोहरता है वाके नाशरूप पातक में तत्पर जो सो ऐसी परम सुंदरी मेरी प्रियाजी है सो मेरे नयनो के सन्मुख ही खेल रही है ।। और देव स्त्रीनकूं जो चातुर्य्य है और पार्वती को जो सौंदर्य है और लक्ष्मी कूं जो पतिवृता भाव है और रती कूं जो सौभाग्य है यह सगरे पर्वत रूप है ।। सो ऐसे पर्वत जा सो मेरी प्रियाजी के चरण नख संबंधी शोभा के कणरूप हूं महासागर में अत्यंत ही डूब जाते भये हैं ।। ऐसी या मेरी प्यारी जी कूं अपरमीत हू वृहस्पति होय सो वे कहां व्याख्यांन करिवे कूं स्तुती करिवेकूं समर्थ होयगे ।। किन्तु कदाचित हू नहीं होयगे ।। जब हरिण नयनी प्रियाजी को श्रीमुख चंद मंद मुस्क्यान वारो होय है तब ही अमृत हू रोमांवली वारो होय जाय है ।। और दूध है सो हर्ष के आंसून कू वर्षा करत भयो है ।। और चंद्रिका हू नृत्य कूं करत भई है ।। और कोकिला हू हर्षसूं वाणी कूं ऊँचो स्वरा सूं प्रगट करत भई है ।। और उग्र जे व्याधि है और अत्यंत प्रज्वलित जो अग्नि है ।। और क्रूर जाकी धारा है ऐसो जो वज्र है और प्रवल जो कालकूट विष है और जो दुर्ज्जन पुरूषन को वचन है सो यह सगरे तैसे और हूं जे कराल काल कूं हू भ्रु भ्रंग सुं हू भक्षण करिवे में समर्थ है, पापी है विन सगरेन कूं प्रियतम के विरह में महा कठोर रूप जो या प्रियाजी को जीवन है वा जीवनरूप महा कठोर प्रस्वेद ही सुधा तो वेग सूं ही विनकूं मारे है ।। और हू हास्यवारो और मुग्ध है अधर जाको ऐसी या प्रियाजी के श्रीमुख की मेरे में कितनी समता है या विचार सूं कमल है सो अपने में रोम हर्ष कूं वारंबार धारण करे हैं ।। और प्रियाजी के

नयनन की समता मेरे में कितनी है या विचारसूं उत्पल है ।। सोहू अपने में रोम हर्ष कूं धारण करि रह्यो है ।। और श्री हस्तकी मेरे में समता कितनी है या विचार सूं कल्पवृक्ष कूं नवीन जो दल है सो रोमावली कूं धारण कर रह्यो है ।। और जे धानकी समता मेरे में कितनी है या विचार सूं स्वर्णमय जो रम्भा है सो रोमावली कूं धारण कर रही है और केशन की समता मेरे में कितनी है या विचार सूं भ्रमर को जो समूह है सो रोमावली कूं धारण कर रह्यो है ।। और कल्पवृक्ष के नवीन दल कूं कमल भाव होय तो तब वा मृगनयनी के चरणन की उपमा होय और गुछानकूं श्रेष्ट सुवर्णमय शोभायमान कलशभाव होय तो तब वा प्रियाजी के स्तनों की उपमा होय और नागन कूं धनुष भाव होय तो तबही प्रियाजी के भ्रुअ की उपमा होय और निर्मल कमलन कूं चंद्रभाव होय तो तबही प्रियाजी के श्रीमुख की उपमा होय और तीनों जगतो में जे विजरी है विनकूं लक्ष्मी भाव होय तो तब ही प्रियाजी कूं जो विग्रह है सो किनकी वाणी के गोचर हैं ? किंतु वाणी के अगोचर है ।। और सर्वोपमातीत है । और यदि चन्द्रमाकूं कमल होय तो तब ही प्रियाजी कों श्रीमुख रूप होय और कुवलय समूह के बाण होय तो तब प्रियाजी की दृष्टिरूप होय और नागन के धनुष होय तो तवही प्रियाजी के भ्रुअरूप होय और कल्पवृक्ष के पत्रन के पद्म होय तो तब प्रीयाजी के श्री कररूप होय और अमृत के समूह कूं नवीन स्वरूप होय तो तबही प्रियाजी के अधररूप होय सो या प्रकार सूं सुंदर जाको स्वरूप है ऐसी प्रियाजी कूं जो श्री विग्रह है सो किनकी वाणी के गोचर है किन्तु वाणी के अगोचर है और सर्वोपमातीत है ।। और वा प्रियाजी के श्रीमुख मंडल कूं अपने समान करवे में जे निश्चय करत भये हैं ।। विनमें चन्द्रमा के मुखमें तो विधाता कलंक की मिस सूं कज्जल कूं कारो लेप कूं करत भयो है ।। और कमलों के मुखो पर हू पराग समूह के मिससूं धूल के समूह कूं करत भयो है ।। और कुवलय समूह के वांण होय तो तब प्रियाजी की दृष्टि रूप होय और नागन के धनुष होंय तो तब ही प्रियाजी के भ्रूअ रूप होंय और कल्प वृक्ष के पत्रन के पद्म होंय तो तब प्रियाजी के श्रीकर रूप होंय और हस्ति के कुंभों के दो पर्वत होंय तो तब ही प्रियाजी के कुच रूप होंय और अमृत के समूह के नवीन स्वरूप होंय, तो तब ही प्रियाजी के अधर रूप होंय सो या प्रकार सूं सुन्दर जाको स्वरूप है ऐसी प्रियाजी कूं जो विग्रह है सो किन

की वाणी के गोचर हैं और वा प्रियाजी के श्रीमुख मंडल कूं अपने समान करवे में जो निश्चय करत भये हैं और वा प्रियाजी के और दुर्बद्धि सुन्दर दर्पण के मुख में तो या प्रियाजी के मुख में के विना प्रगट ही धूल के समूह कूं सो बुद्धिमान विधाता धारण कूं करतो भयो है ॥ और है अमृत बड़ो आश्चर्य है के तुम बारंबार मद सूं ही गर्जना करि रहे हो ॥ और स्वयं कहो हो के मेरे समान और मधुर नहीं है और ऐसे द्राक्षादि हू गर्जना करें हैं परन्तु या अत्यन्त प्रिया प्यारीजी के वदन कमल के दर्शन में तो यह गर्व अत्यन्त ही शांत होय जाय है ॥ और अपने प्रिय के भीतर बाहिर न दूर होयवे वारी अमृत समुद्र की लहर कूं वेग ही धारण करत और सखीगणन के भीतर बाहिर हू न दूर होयवे वारी सघन मलय संबंधी चंदन लेप की रचना कूं धारण करत और ए संपत्नी गणन के भीतर बाहिर तो न दूर होयवे वारे शल्य कूं धारण करत जो त्रिलोकी को निष्कर्ष रूप मृग नयनी को ऐसो स्वरूप हैं सो अजय कूं ही प्राप्त होय रह्यो है ॥ शोभायमान और कछुक नम्र होय रह्यो जो मुख कमल है वामें प्रगट होय रह्यो जो विलास है सो उत्तर अधिक शोभायमान मनोहर जामें और आनन्द सहित मुसकान वारो है और ऊँचे होय रहे जे भ्रूअ हैं विनसूं शोभायमान है ॥ और लीला तरंगन सूं अद्‌भुत है और चंचल होय रहे हैं अंचल जाके ऐसो जो वा मृगनयनी कूं अभिप्राय सहित देखनो है जो बल सूं हू मेरे कंधान में अत्यन्त दृढ़ और दीर्घ रस्सी कूं धारण करिके मोकूं खेंचि रह्यो है ऐसो सो अभिप्राय सहित वामें देखनो है मोकूं रक्षा करे ॥ और हे देवाः हरी जो भगवान हैं वानें हाथ सूं दियो जो कछुक अमृत है वाकूं पान सूं अलं है ॥ जासूं हों निश्चय करूँ हू के वाके पान सूं तुम कूं गुण कूं लवलेश हू नहीं भयो है ॥ और वा प्रिय के मुख समुद्र में जो मंद हास्यमय जो अमृत उदय होय है सो तो दृष्टि सूं पान कियो हू मृत्यु कूं हर लेवे है । सो तासूं ईतर अमृत ऐसो नही है के मृत्यु कूं नहीं हरे है ॥ मृत्यु कूं हरिवेवारो तो केवल यही है ॥ डर रह्यो जो मुग्ध हरिण बालक है तिस जैसे है नयन जाके है ऐसो प्रिय कमल है सो जल में डूबो रहे है ॥ और पूर्ण चन्द्रमा अस्ताचल सूं अत्यंत ही गिर्यो है सो तिहारे श्रीमुख के समताकूं प्राप्त होयवे लिये किस-किस ने बारंबार दीर्घ यत्नन सूं कहां-कहां नही कियो है ? किन्तु बहुत यत्न उपाय किये है तोहू समान नही भये है ॥ हे सुन्दरी प्रिये तुम्हारी दृष्टि की

समानता कूं प्राप्त होयवे लीये कमल ने निश्चय कियो है तबही विधि ने पराग के मिस सूं वाके मुख में रज दीनी है ॥ और हे मदिरेक्षणे मतवारे नयनोवारी प्यारी तिहारे श्रीमुख के सनमुख कमलनी के दल जैसे निर्मल जो दर्प्पण है सो चंद्रमंडल के सन्मुख तारा जैसे होय और वारिज कमल के आगे कुमुद जैसे होय तैसे ही देख्यो है ॥ और प्रियाजी की तनुरूप जो लता है सो अत्यंत कंपायमान होय जायगी ॥ या विचार सूं विसनीपत्र जो कमल पत्र है सो तासूं हू पंखा नहीं कियो जाय है ॥ और श्री अंग फुट जायेंगे या प्रकार सूं मलय चंदन के चूर्ण सम्बन्धी जल सूं सिंचन नहीं कियो जाय है ॥ और याके अत्यंत भारसूं पराभव होय जाय या प्रकार के डरसूं या प्रियाजी के वक्ष स्थल में नवीन पल्लवकूं हू आरोपण नहीं कियो जाय है ॥ सो का प्रकार सूं कोमल तनुवारी प्यारी के समाधान होय हे सुनयने देवी प्रिये यदि चन्द्रमा के कलंक और कमल के रज के स्पर्श कूं विचार के निकट रहिवे वारो भ्रुअ कूं कुटीलता और पसर रह्यो कटाक्षन को रागादि दिन रात्र नही बजे तो तिहारो जो श्रीमुख है सो चिरकाल सूं तिहारे दास्य में उत्साह वारे चंद्रमा के मुख में और तैसे कमल के हू मुख में चरणन कूं धारण ही कर देवे ॥ और अत्यंत शोभायमान और अतुल है सौन्दर्य जाको ऐसे उदय भये वा प्रियाजी के श्रीमुख कों दरसन करिके लज्जा कूं प्राप्त होय रह्यो जो चन्द्रमा है सो अंक के मिस सूं विष कूं अपने उदर में करिकें ईहां प्राणन कूं त्याग करिवे की इच्छा करत भयो है ॥ तब वा विष में निरंतर विवरकूं बहुत प्रकार सूं कर रही जो वा चन्द्रमा की स्वरूप संबंधिनि सुधा देवनी ही सो विष स्पष्ट ही नाश कर दियो है ॥ नही तो चन्द्रमा के प्राण नहीं होते ॥ और हे तन्वि कोमल अंगवारी प्यारी कमलन सूं कहा है और पूर्ण चन्द्रमा सूं कहा है के दर्प्पण सूं कहा है हम तो ऐक वा तुमारे धन्य श्री मुख के आत्मा कू हूं स्तुती करे है के जो तिहारे श्री मुख कूं आत्मा स्वरूप केवल यह एक ही वा तुमारे श्रीमुख के संग स्पर्धा करिवे कूं समर्थ है ॥ औरन की तो गणना हूं नहीं है ॥ हे प्रिये सुन्दर भ्रुवारी जो तुम हो सो तिहारे शोभायमान सुन्दर श्रीमुख को दर्शन करिके कमल तो चिरकाल पर्यंत जलो में ही डूब जाते भये है ॥ और दर्प्पण ने तो अपने मुख में धूल ही धारण करी है ॥ और सो चन्द्रमाहूं दूर ही स्थित भयो है ॥ और करोडन चन्द्र जैसे जाको प्रकाश है अथवा करोडन चन्द्रमा कूं हू प्रकाश करिवे वारो

जो वा प्रियाजी को श्रीमुख है वाकूं को है जो अपने स्वरूप सूं उपमा करिवे कूं समर्थ होय ।। तामें औरन की बात तो दूर है वा श्रीमुख कूं जो आत्मा है सोहू वा श्रीमुख कूं उपमा करिवे में वेगसूं तो कक्षा कूं नहीं बांधे है तो औरन की बात कहा है ।। और हे प्रचुर सुकृतात्मन् अधिक सुकृत स्वरूप प्रिया मुख प्रियाजी को जो श्रीमुख जो हों हू ऐसे मेरो जगत में जो पूर्ण चंद्रादि है सो सगरो ही मेरो दास है ।। या प्रकार सूं तुम गर्व कूं नहीं प्राप्त होवो जासूं तुम ही या प्रियाजी के श्रीमुख को दास हो ।। यदि केवल सों पूर्ण चंद्रादि तैसे दास हों तो और तुम तैसे नहीं होते तो, तब तुमारे बल कूं हम विचारते ।। अब कैसे तुमारे बलकूं जाने ।। और जो चन्द्रमा ने आकाश में अत्यंत ही अपनो स्वरूप ऊँचौ लटकायो है और पद्मन ने अनंतवार जल में जो अपनो स्वरूप डुबायो है और दर्पण ने जो अपनो स्वरूप अनंतवार धूल सूं धूसर कियो है सो विनकूं सगरोत फल कूं प्रगट करतो भयो है ।। फल लों कहा के जो वा प्रियाजी के श्री मुखरूप धाम कूं वे सगरे प्रवेश कर जाते भये है तासूं वे सगरे अत्यंत अधिक शोभायमान होय रहे है ।। चंद्र-दिवराक्षि है प्रफुल्लित कमल कुमुद नयने प्रिये सो तैसे अतुल अनिरवचनीय शोभावारे तिहारे श्रीमुख के स्तुति करिवे कूं निश्चय सूं हम कछु हू समर्थ नही है ।। के जो पद्म वा श्रीमुख के गुणन कूं धारण करिके मेरे हृदय में प्रफुल्लित होय रह्यो है ।। और जो मधु के धारान सूं हर्ष के अश्रुन कूं हू अत्यंत वर्षा करत भयो है ।। और या श्रीमुख की स्पर्धा सूं प्रकर्ष सूं उदय भयो है अंक जामें ऐसे राका के चंद्रमा कूं हू नियम सूं हू नही देखे हैं ।। और हे सुन्दरी तिहारे अत्यन्त सूक्ष्म मध्य कूं विचार के सो मिथ्या पदार्थो में शशविषाण लिखन है वा अपने लेख कूं लोप करे है ।। और महत प्रमाणों में जो परमाणु को अमहत्व लिखन है वा अपने लेख कूं हू मिटावे है ।। और हे सुन्दर तिहारे अत्यंत सूक्ष्म मध्य कूं विचार के सो चरक नाम वैद्य है शशविषांण के अभाव में और परमाणु के हूं अत्यंत महत्त्व में औषध कूं लिखे है ।। और आयत कहीये विस्तारवारी है दृष्टि जाकी ऐसो तिहारे अत्यंत सूक्ष्म मध्य कूं और बड़े पुष्ट और ऊँचे स्तन युगल कूं विचार के सो धन्वन्तरी देव हू वेगसूं परमाणु के परम विपुलरूप कार्य में और पर्वतन के परमाणरूप कार्य में यह औषध बलवारो है ।। जय कूं प्राप्त होय रह्यो है, ऐसे लिखे है कहा के तिहारो मध्य महा सूक्ष्म है सो परमाणुन सूं हू सूक्ष्म

है विनकूं हू महत्व करिवे वारी है ।। और स्तन है सो माहा पुष्ट ऊँचे है ।। पर्वतन कूं अणुरूप अपनी अपेक्षा सूं करवे वारे है यह भाव है ।। हों तो यह जानु हूं के सुधा के समुद्र के मधुरता संबंधी द्राव के पिष्ट कूं चूर्ण कूं चन्द्रमा में धारण करिके और अर्बुद कामन की निपुणता के सगरे सार कूं पद्म में धारण करिके और विनसूं शत्रुन की जे स्त्री है विनके मुख की जो शोभा है विनके हू चूर्ण कूं चन्द्रमा में धारण करिके और अर्बुद्ध कामन की निपुर्णता के सगरे सार कूं पद्म में धारण करिके ओर विनसो शत्रुन की जे स्त्री है विनके मुख की जे शोभा है विनके हू चूर्ण कू लेकर के विधाता वा प्रियाजी के श्रीमुख को प्रगट करतो भयो है और कमलन के गुणन सो श्रीमुख के दास्य सहित चरण कमलन कूं रचना करत भयो है और हे चंचदि दीवराक्षी प्रफुल्लित कुमुद नयनी दर्प्पणन के मरण कू निवर्त करत के विनकूं जीवनदान करत और पद्मन को जो न आश्रय है वाकूं दूर करत के वाको आश्रय दान करत और मेरे दोनो नयनन को जो आंसून सों वृक्षनकूं हूं सिंचन करनो है वाकु दूर करत के विनकूं अपने दर्शन दान सों आनंदित करत और दुःखन कूं नाश करिवे वारो जो ऐसो तिहारो श्रीमुख है वाकू फेर हों देखुंगो सही यह बड़ो खेद है ।। और हे तन्वि परम कोमल श्री अंगवारी प्यारी अपने श्रीमुख सों निश्चय सूं पूर्ण चन्द्रमा कूं हू ऊँचो आकाश में ही निरंतर फेंक्यो है ।। और कमलनकूं तो प्रायः अत्यंत गंभीर ही जलो में डुबावो हो और कपोल स्थलन सो दर्प्पण के मुख में बहुत ही धूल को डारो हो ।। सो या प्रकार ऐसी कठिन कठोर हू तुम प्रिय में का प्रकार सूं कोमल हो ।। और हे सुंदंति जो सो भूमि रजरूप सूं दर्प्पणन के मुख कूं भक्षण करे है और त्रिलोकी को हूं पवित्र कर रहे जल कूं हू मलीन करिके कमलन कूं हू कंपायमान करे है और आकाश कूं भेद न करिके जो अंक मूर्ति सूं चन्द्रमा की कूर्चक प्रवेश करे है ।। सो तिहारे मुखकी स्पर्धा वारे दर्प्पण कमल चन्द्रमा कूं यह फल मिलनो युक्त नही है का ? किन्तु युक्त ही है ।। अब दर्प्पण कूं कहे है मुकुर के दर्प्पण जो तुम दूर में विराजमान हू मेरी वा प्यारी कूं कबहू तो मेरे निकट ही प्राप्त करो हो ।। और वाके विन कपोलन कूं जो मेरी स्मरण दशा कूं प्राप्त करो हो और यामें अत्यंत उत्साहवारे मोकूं निश्चय सूं अपने में जो दर्शन योग्य वा मुख कूं दिखाओ है ।। और या प्यारी के अथवा और प्यारी कूं बारंबार मेरे निकट प्राप्त कर रहे जो तुम हो ऐसे

तुमारे आगे प्रणाम होय ॥ तिहारे उपकार कूं प्रत्युपकार हम नहीं कर सके हैं ॥ और कान्ती रूप है जल जामें ऐसी सो मेरी प्रिया सरसीरूप है ॥ और वामें चंचल जे नयन हैं सो तो पद्मरूप है और रोमावली है सो शैवाल है और श्रीमुख है सो रमणीक चन्द्र बींब है ॥ सो अत्यंत गंभीर सरसीरूप मेरी प्यारी है ॥ जामें कुचन के मिससूं भीतर अधिक दर्पवारे हस्ती के कुंभ युगल ही उदय होय रहे है ॥ और हे मुग्धे तिहारे या अधर कूं द्राक्ष, मिश्री आदि सूं तुल्य को करे है ॥ जासूं जा तिहारे अधर कूं रचना करिके विधाता सुधा कूं निन्दा करत निरादर करत द्राक्षा आदिकन कूं तो वमन ही कर देतो भयो है ॥ और हे विधे जो तुम सुन्दर जाके भ्रुअ हैं ऐसी मेरी प्रिया के अधर रस कूं रचना करिके हू अमृत की श्रष्टि में हू प्रवृत्त भयो है और द्राक्षादि की रचना में हू प्रवृत्त भयो है ॥ और तामें तुमकूं लज्जा हू नहीं भई है तासूं मूर्खन के गणन में वृथा ही वर्णन करी है ॥ बहुत प्रतिष्ठा जाकी ऐसे तुमकूं और वा तुमारे हाथ कमलन कूं हूं दूर सूं ही नमस्कार करूं हौं ॥ और चंचल नयनी प्रियाजी के मुख कमल में जाकी उत्पत्ति है और द्राक्षा के द्रावन सूं रसन सूं याके पाद शुद्धि है ॥ और निरन्तर दुग्धन सूं ही जाकी गंडुष की सिद्धि कहा के कुल्ला की सिद्धि है और अमृत के समुद्र में जाकूं स्नान है और स्वाद के वृंद और प्रेम जाके चरण कमलन कूं प्रणाम करें हैं ॥ ऐसो जो यह अनिरवचनीय रसमय प्रियाजी कूं अधर रस है सो सगरे रसन सूं अधिक चक्रवर्ती रूप है ॥ और सर्वोत्कर्ष सूं ही विराजमान होय रह्यो है और वा प्रियाजी के नाभि के निकट जो श्रीअंग शोभायमान होय रह्यो है सो अपने स्वरूप सूं सुवर्ण कूं हू विजय करिवे वारो है ॥ और जाकूं दर्शन अत्यन्त दुर्ल्लभ है और जो अपने स्वरूपन सूं जिन स्पष्ट कंपायमान होय रहे पत्रन कूं विजय करतो भयो है ॥ विनकूं जा विष्णु के आश्रय वारो करत भयो है ॥ और वा विष्णु वारे पीपल कूं हू हस्तीन कूं भक्ष्य रूप ही कर देतो भयो है ॥ और हे प्रिये तुम तो मुख्य हू मोकूं नर्म कहा के रससुख कूं देवेवारी हो ॥ तासूं नर्मदा रूप हो और तिहारी यह केशन की जे पंक्ति है सो यमुनाजी रूप है ॥ और मुखारविंद है सो पूर्ण चन्द्रमा है और जे नयन युगल हैं ये तो सारस रूप हैं ॥ और जो तिहारी वाणी है सो अमृत की धारा है ॥ हे सुदन्ती तिहारी जो भुजा रूप लता है और परम कोमल मृडाल स्वरूप है, और जे हार है सो गंगा को प्रवाह है ॥

यद्यपि हू ऐसे है तथापि तुम मेरे ताप को कारण काहे को होवो हो यह बड़ो आश्चर्य है ॥ और परम कोमल वा प्रियाजी के जो श्री मुख है सो जाको देश है ॥ और अधर दल जो है सो तो जाकी राजधानी है और क्षीरसागर जो है सो जाके चरण प्रक्षालन के अर्थ जल है और शक्ति है जो दासी है और मधु आदि हैं सो जाके भृत्य वर्ग हैं और अमृत है सो जाको निर्दोष मन्त्री है और द्राक्षा, ईख खांड के वर्ग जे हैं वे जाकी सेना हैं ऐसो सो अनिर्वचनीय रसमय सार्वभौम जो अधर रस है सो सर्वोपर विराजमान होय रह्यो है ॥ और शोभायमान चन्द्रमा के समूह जैसे जे नवीन दल हैं विनसूं शोभायमान जो रंभा के दोउ कंधति सजे से उज्ज्वल कोमल शोभायमान है मध्य जाको और सुन्दर चूर्ण जाके दो पर्वत के मध्य में श्रेष्ठ मनोहर है गंगा को प्रवाह जामें शोभायमान मुख रूप है चन्द्रमा जामें और केश रूप सघन है अंधकार को समूह जामें जो अनिर्वचनीय तत्व है वाको हौं कब दर्शन करूंगो ॥ और वा प्रियाजी को जो गमन की मिस सूं आगे उठनो है और मार्ग की संकीर्णता कूं प्रगट करिके जो विन गलीन में अत्यन्त सघन आलिंगन दान रूप प्रसाद है ॥ और कोप के प्रगट करिवे सूं जो अपने भीतर के भाव को प्रगट करिवे की चेष्टा है वाकूं बारंबार स्मरण करिके विदीर्ण भये हू मेरे चित्त कूं विधाता ही संधान करत भयो है ॥ और ऐसे कोमल भुजान सूं कोमल शाखा वारी और श्री करन सूं कोमल दलवारी है ॥ और दंत कांति सूं सुन्दर पुष्प वारी और रोम लता सूं शोभायमान भ्रमरवारी और लावण्यता रूप है, जल जामें सार रूप है, सुभग सुन्दर भाग्य जाको ऐसी जो शोभायमान मल्लिका रूप सुवर्ण की वल्ली मेरी प्रिया है सो मेरे नयनों में दर्शनादि रूप फल कूं दान करत भई हैं ॥ और हे सुतनु, सुन्दरता में जो मेरे संग स्पर्धा कूं करे हैं सो प्रगट होयके मेरे आगे जावे हों वाकूं दर्प नारा करुंगो ॥ या प्रकार सूं तिहारो श्रीमुख देवतान की सुन्दरीन के मुखबिंब में पत्र कूं देतो भयो है सो आकाश में पूर्णमासी को जो चन्द्र है सो यह पत्र रूप है ॥ और चंचल नयनी के मुख कमल में जाकी उत्पत्ति है और द्राक्षा द्राव में पाद शौच की इच्छा है ॥ और जाकी गंडुषा करिवे कूं कुलवा करिवे कूं दूध चंचलता होय रही है ॥ और सुधा को जो समुद्र है सो अपने में जाके स्नान कूं वांछना करे है सो ऐसो स्वादन कूं चक्रवर्ती जो यह अधर में विराजमान विलक्षण रूप है सो मेरे भाग्यन सूं सखीन के

संग विहार कर रह्यो है और हे चन्द्रन समीरन पद्मा के हैं चन्दन और शीतलमंद सुगंधित पवन और पद्मा जो मोकूं जीवन रूप बलवान हू शत्रु मारवे कूं समर्थ नहीं भयो है तो ऐसे वियोगी मेरे में तुमारी का समर्था है ।। और जामें निरन्तर अत्यन्त उत्साह नाम वारो सूर्य विराजमान होय है तासूं सगरे सुख रूप पथिकन के प्रसाथान कूं रोकवे वारो जो उदासीनता रूप चन्द्र कूं लय है सो शोभायमान होय है ।। ऐसो जो अन्. स्त्रीन के जे गुण रूप दुष्ट राजा हैं विनको मन रूप घर में जो प्रवेश है वाकूं हू दूर करिवे वारी जो वा प्रियाजी के श्रीमुख अनिर्वचनीय अभिलषित अमावस्या है सो सर्वोपर विराजमान होय रही है और जाने या प्रियाजी को श्रीमुख निरख्यो है और या चन्द्रमा औषधीय है ऐसो जो कथन है सो न होवनो योग्य है ।। यासूं औषधि जड़ है विनकी पति हू जड़ होय है और यह तो महा चैतनन सूं चैतन्य है तरल है, सर्वेश्वर है और या चन्द्रमा ने या प्रियाजी को आश्रय लियो है सो या चन्द्रमा कूं राका हू पूर्णमासी के हू अत्यन्त उज्ज्वल प्रकाशवारी रात्रि हू तामसी कलि निशां अधियारी कलहवारी रात्रि स्फुरे है ।। और जा चन्द्रमा ने पूर्णमा की है अंग अंग में रुचि जाकी ऐसी प्रकाशमान होय रही सो प्यारीजी जो क्षणभर हू नहीं देखी है सन्मुख होयके, सो या चन्द्रमा की चन्द्रिका हू निश्चय सूं कौमुदा नही होयगी के पृथ्वी में हर्ष कूं करवे वारी नहीं होयगी ।। और जे वेगि सूं भूमि कूं हू विदारण कर देती भई है ।। ऐसी जो परम कोमल वा प्रियाजी के हर्ष के आंसूं हैं विनसूं प्रगट भये महा सरोवर में प्रगट भयो है कणिका समूह जिनको ऐसो जो फणिन को स्वामी शेष नाग है सो सहसा ही श्वेत सहस्र दल रूप होय जाय है और हे काठीन्य जो तुमने दुष्टन के वचन रूप अग्नि में कछुक चिर निवास कियो है और हिमों में और वृज की भूमि में निवास कियो है और शेष नाग ने जो सदा निवास कियो है सो औरन सूं न होयवे वारो पातीवृत थका तुमकूं यह फल प्राप्त भयो है ।। के जो वा प्रियाजी के दोनों कुच कलीन के परिरंभ रूप अमृत को पान करि रह्यो है ।। और वा प्रियाजी के दृष्टि रूप अंचल में तो चपलता नहीं है किन्तु वा प्रियाजी के वाके वचनन में तो अनिर्वचनीयादि कथा है सो हम और कहा करें के जासूं सो प्रियाजी लज्जा करिवे में हू लज्जा करें हैं ।। और सो मृगनयनी मेरी प्रियाजी मेरे परदेश पधारिवे में अपने इन्द्रीयन के असन्नीकृश ग्राही भाव कूं के न निकट

रहिवे वारे के दूर रहिवे वारे हू पदार्थ को जो ग्रहण करनो है के अपने प्रत्यक्ष कर लेनो है खेंच लेनो है ऐसे भाव कूं भली प्रकार चेष्टा करि रही हैं ।। और डर्यो जो हरिण को बालक है तिस जैसे हैं चंचल नयन जाके ऐसी वा प्यारीजी की जो सो रोम पंक्ति है सो सौंदर्य रूप जल जामें ऐसे नाभि रूप सरोवर की सो प्रवाह की पदवी जैसे ही है ।। और स्मरण में प्रफुल्लित है श्रीमुख जाको हे ऐसी प्रिये यमल के संग ही प्रगट भये दो के तारतम्य कूं जैसे होय तैसे ही चन्द्रमा और तिहारे श्रीमुख के तारतम्य कूं केवल चतुरवर ही जानें हैं ।। हे प्रिये हम तो यह निश्चय करें हैं के अपने अलाप के और कोकिला के शब्द कूं जो भेद है वाकूं जानिवे में तुम समर्थ नहीं हो ।। और काम को जो साम्राज्य है सो वाम नयना जे हैं के सुन्दर दृष्टि वारी स्त्री हैं और विनमें हू जे नवीन हैं वे साम्राज्य हैं और विन नवीना में हू जे रसकला और सौन्दर्यता विहार की भूमि रूप वृज सुन्दरी हैं वे ही साम्राज्य रूप हैं ।। सो इनमें हू प्रफुल्लित कमल समूहों कूं विजय करिवे वारो है ।। सो साम्राज्य रूप है और वा प्रिया में हू वाको जो श्रीमुख है सो साम्राज्य रूप है ।। वामें हू जो अनिर्वचनीय कछू हू स्नेह भर्यो मंद मुस्कान पूर्वक अवलोकन है सो काम को साम्राज्य रूप है ।। और नवीन अनुराग रूप पुष्प के प्रागट्य कूं प्राप्त होयकें, के पुष्प वारी जब प्यारीजी भई हैं तब रमण शैय्या सुन्दर विराजमान है ।। सो जब प्रेम सहित फरक रहे हैं अधर जामें ऐसे होयके मैंने संज्ञा सूं चुम्बन याचना कियो है ।। तब मंद हास्य सूं पूर्ण होय रह्यो है गंड फलक जामें ऐसे श्रीमुख कूं वस्त्र के अंचल सूं आच्छादन करिके मंद मंद चंचल होय रहे हैं कुण्डल कर्ण फूल जाके ऐसी वा परम कोमल अंगन वारी प्यारीजी ने शिर कूं कंपायान कियो है ।। सो वा समय की शोभा को भाव कहा कहूं ।। और प्राण और प्रिया कूं जे सदृश कहें हैं सो मूढ ही हैं जासूं प्रिया तो जब कंठ में प्राप्त होय के रमण के अर्थ होय है और प्राण तो कंठ में प्राप्त होय के मरण के कारण होय है सो इनकूं सादृश कैसे होय सके ।। और अत्यन्त स्थिर प्रिय को है या प्रकार कूं जब प्रसंग चल्यो है तब सखी जनों ने सामान्य सूं मेरो हू नाम कह्यो है ।। इतने में ही खेद कूं प्राप्त होय रह्यो है जो श्री विग्रह जामें और संवलित होय रही है वाणी जामें ऐसी होयके स्वासन कूं देवत ही सो प्रियाजी मोकूं वाणी सूं तो निन्दा ही करत भई हैं ।। और हृदय सूं तो सराहना ही करत

भई हैं ।। के या मेरे प्रिय विना अत्यन्त स्थिर अन्य को होय सके है और श्रीहस्त में चोली कूं धारण करिके चंचल होय रहे जे करकंकण हैं विनके शब्दन सूं मनोहर जैसे होय तैसे ही चिर पर्यंत अपने केशन के समूह कूं पोंछ रही जो चंचल दृष्टिवारी मेरी प्यारी है वाकूं जे शोभायमान केतकी के दल जैसे है श्री शोभा जाकी ऐसे वा हू मूल सूं जो स्तन रूप अल्प विकसित कली के छिपावने की जो विधि है वाकूं विस्मरण करिवे कूं मेरो चित्त नहीं होय है के सो मोकूं नहीं विस्मरण होय है ।। और विविधा जो विधाता है सो वा प्यारी के श्री विग्रह के समवायी कारण को सौंदर्य कूं हू करत भयो है ।। और या श्री विग्रह में परम चतुर मेरे मनकूं करत भयो है ।। और जा कली में प्रगट भये जीव के आगे सगरे गुणन सूं जगत हू न्यत्र भाव कूं हीन भाव कूं प्राप्त भयो है ऐसे वा काल कूं या प्रियाजी को जन्म काल रूप करत भयो है ।। और यदि प्रियांजी प्राण रूप हैं तो यह प्रेम को विस्तार काहे कूं है ।। और यदि विन प्राणन सूं भिन्न है तो यह अभेद कूं निश्चय कैसे है तासूं हे प्रिये यदि तुम मोसूं न तो भिन्न और न अभिन्न हो तो कहा होवो हो ? हे कुवलय दल द्रोही नयने कुमोदिनी के विशाल दल कूं हू विजय करिवे वारे जाके नयन हैं ऐसी प्रिये तासूं मेरे तो तुम ही तुम हो ।। और कोऊ कछु कार्य कारण सूं हू अन्य मिले तो वाके आगे हमारो ही कुशल पूछे है ।। और जब अहित कूं सूचना करिवे वारो दक्षिण भुजा नेत्र आदि कूं फरकनो होय तब हू मेरे ही सुख कूं वांछा करे है ।। और मेरो दियो उचित द्रव्य प्रसादी वस्त्रादि है विनकूं जब उपयोग करनो है के अपने काम में लगावनो है तब तो उद्वेग सहित ही मोकूं स्मरण करे है और मेरे संबंधी जो आवे विनमें सुन्दर स्वरूप वारी प्यारी विलक्षण ही जो आदर करे है ।। सो सगरे ही मेरे चित्त कूं अत्यन्त ही मोहन करें हैं ।। और तैसे रस कूं प्रकृष्ट फल रूप सिद्धांत रूप के मर्यादा रूप जो निधुवन कूं रमण को प्रकार है वामें अपने प्रिय में निषेध के अर्थ जो वा प्रिय कूं श्रीहस्त के सहित चंचल होय रहे नख समूहन के कांति कूं चिक्य चाक्य भयो है ।। वासूं हौं तो यह विचार करूं हूं के राहु कूं विजय करिवे अर्थ इहां कहां निरविधि क्रोध सूं औषधि पति चन्द्रमा हू शरीरन के समूह कूं रचतो भयो है ।। और जा समय में चंचल होय रह्यो है नयनन को अंचल जामें और भीतर हर्ष सूं प्रफुल्लित होय रहे कपोलों में उदय होय रही है पालि

कहा रोमावली जामें और मंद मंद हास्य जामें और नम्र होय रह्यो और जामें ऐसे होयके सो विशाल नयनी मेरी प्रिया जो कछुक अनिर्वचनीय कहेत भई है ।। सो कोऊ अनिर्वचनीय समय गुजर ही गयो है सो धन्य ही हैं ।। और अपराध के करवे सूं हों जब पीछे हू विराजमान होय रह्यो हतो सो आगे दर्प्पण में मेरी प्रति छाया कूं के प्रतिबिम्ब कूं हू देखिके दूर सूं हू मेरे अर्थ थोरो सो नमायो है मस्तक जाने ऐसी सो अरुण नयनी के किंचित कुपिता मेरी प्रियाजी पटके अंचल सूं बारंबार अपने दोनों चरणन कूं जो छिपावती भई हैं सो मेरे मन कूं बहुत व्याकुल करें हैं ।।५६।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले नवम् स्तरंग समाप्तम् ।।९।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग दशम ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ दशम् स्तरंग लिख्यते ।।१०।।

श्लोक -- **एवं प्राणांदिनाथेन गछता पथिताद्रशा ।। शिविरेतत्रापि शय्यायां भोजनादिषु ।।१।।**

याको अर्थ -- कल्याण भटजी कहे हैं के या प्रकार मार्ग में चलते तेसे प्राणपति श्रीजी ने तहां-तहां शिविर में के देश में तंबु में और शय्या में के भोजनादि में और क्षण-क्षण में होय रहे तिस-तिस कार्य में और दिनमें के रात्रि में जिन-जिन प्रकारन सूं विन वांम लोचना सुंदर नयनीन कूं स्मरण करत भये है ।। विनमें कितने एक प्रकारन कूं हों वर्णन करत भयो हू सो श्री प्राणनाथ की कृपा के विना तो बड़े प्रसिद्ध तैसे ब्रह्मादिकन सूं हू वे प्रकार नहीं जाने जाये है ।। और विनकूं प्रभु हू स्वयं सर्व प्रकार सूं गुप्त ही राखे है ।। ऐसो है मेरो अत्यंत धृष्ट आत्मा, भगवद भक्तों के द्रोह में निरंतर जिनको ह्रदय आशक्त है ऐसे अत्यंत दुष्ट पापी जनन सू वेष्टित होय रहे या प्रकार के या घोर कलियुग में तुम स्वयं तो तृण कूं हू टेडो करवे में समर्थ नही हो ।। तथापि ऐसे निमर्याद होयके सो इन रसात्मक प्रकारन कूं प्रगट करत ही कहा महाप्रभुन सूं नहीं

डरे है ।। और महाप्रभुन के भक्तन सूं हू नही डरे है ।। विन-विन दुष्टन सूं हू नही डरे है ।। तासू तुम अत्यंत मूढ़ बुद्धिवारे हो ।। जासूं यह जे रसात्मक प्रकार है सो यह तो महाप्रभुन के सर्वस्वरूप है ।। और तैसे श्रीजी के भक्तन के हू सर्वस्वरूप है ।। और सर्व प्रकार सूं ही सदैव गुप्त ही राखवे योग्य है ।। प्राणन सूं अधिक माने है ।। और लोक तो प्रायः सगरे ही अशुद्ध है ।। लौकिक है भ्रष्ट है ।। तासूं श्री गोकुल के ईश्वर पूर्ण परमेश्वर भक्तन के प्रेम के ही वश कृपासागरन के हू सागररूप जे मेरे प्रभु है वाकी जे रसरूप महाविशुद्ध लोक वेदातीत लीला है विनमें सर्व प्रकारसूं ही अधिकारी नही है ।। तासूं ऐसे लोकन के आगे ऐसे रसात्मक अलौकिक प्रकार तो तुमकूं प्रगट करिवे युक्त नहीं है ।। जासूं जे सुन्दर नयनवारी विदग्धा सुंदरी है वेहू अपने विलासन कूं और अपने स्वरूप कूं विदग्ध पुरूषन के आगे ही प्रगट करे है ।। न के वाके अयोग्य क्लीव नपुंसक पुरूषन के आगे प्रगट करे है ।। विनके आगे तो कदापि हू नही करे है ।। सो कोउ चतुर पुरूषन ने हू या प्रकार के अर्थ कूं अपने हृदय में धार के कबहु ऐक पद्य कह्यो है ।। कहा के न देख्यो भयो ही यह मणि केवल खनि में हूं जीर्ण होय जाय तो भलो ही है ।। और व्यौपारीन के विचार गोचर होय के मूल्य की हानि सूं कष्ट कूं नही पावे ।। सो कष्ट महा अयुक्त है ।। और हे अन्तःकरण तुमने हूं या प्रकार के अर्थ कूं विचार के कबहु मनोहर पद्य कीये हैं सो हू तुमकूं हो स्मरण करावू हूं ।। के -

रहन वरखिधसे किम मन गुणान्कितु सर्वस्य लोकोभिन्न दति परस्यै वेतिन वेत्सितत्र वीजंकिं ।।१।।

न स्पष्ट भीक्ष्यं माणां अपि सर्वपति विराजि रूपत्वात् एतन्मन सा सत्वर मुहमीसं पातयं त्यस्य ।।२।।

भावत्काः परकीया स्त्वेत छिपरीत अपत्वात् सचदुसः मादधतोलं मिलंति सानंद पुल कुलं ।।३।।

के हे रत्नवर तुम काहे कूं खेद कूं प्राप्त होवो हो ।। यदि तुम कहो के मेरे गुणन कूं लोक नहीं सराहना करे हैं ।। इतनो मात्र नही है, किंतु सर्व के गुणन कूं लोक नहीं सराहना करे हैं ।। तासूं हो खेद कूं प्राप्त होवु हू ।। सो हे रत्नवर यामें तुम कारण कूं नहीं जानो हो कां ? लोक यासुं और के

गुणन कूं सराहना नहीं करे हैं, के जासूं वे गुण परके ही है, के और के ही है ।। अपने नहीं है सो यामें यह कारण है और जासूं या गुणवारे को जो रूप है सो सर्वोपर ही विराजमांन है तासू यह तो मनसूं ही स्पर्श के योग्य नहीं है, यह विचारे हू है ।। देखे हूं है, तथापि अपने संबंधी है वे तो जासूं सहन नहीं कर सके है ।। तासूं वाकी निंदा होय, याके अर्थ विन गुणन कूं तो खेंच नहीं शके हैं ।। तासूं वेग सूं ही याकी पाग कूं तो गिराय ही देवे हैं ।। और जे तो परकीय हैं वे तो जासूं या गुणीसूं विपरीत रूप वारे हैं, के अपने में तेसे गुण नहीं है ।। तासूं वा गुणी कूं चाटुका हू सहित अत्यंत समाधान करत हू आनंद रोमावली के सहित ही मिले है ।। तासूं यह श्री प्राणनाथ के रसलीला के प्रकार प्रगट करवे योग्य नहीं है ।। अथवा या रस प्रकारन के वर्णन में तिहारो दोष नहीं है, जासूं वा रसात्मक प्राण पति के और आपके तैसे भक्तन के जे ही तैसे रसात्मक गुण है वे ही तुमकूं वर्णन करवे अर्थ तरल करते भये हैं ।। हे अंतःकरण तुम तो श्री प्राणनाथ की कृपामयी अनिरवचनीय अत्यंत दुर्ल्लभ तलस्तंभ करि, विद्याकूं प्राप्त भयो है ।। कहां के समुद्र में जो प्रवेश करे है सो वाकूं समुद्र बाहिर निकार डारे हैं यह वाको स्वभाव है ।। और बीच में स्तंभ न होय तो वा समुद्र कूं भीतरी पदार्थ कूं ज्ञान होय ।। और तुमकूं तो प्रभुन की कृपामयी ऐसी विद्या प्राप्त भयी है के जो समुद्र के तल में ही प्राप्त होय के वहां स्तंभ न करिवेवारी है ।। और वा विद्या के विना हूं जे अपने कूं विना अगाधि देशन में प्रवेश करायवे की इच्छावारे हैं । विनके सगरे अंगन कूं जे अपने मों अत्यंत लीन करिवेवारो है ।। ऐसे जे श्री गोकुलेश रस सागर के तिस-तिस विगाढ़ परम भावरूप अगाधि प्रदेश है विन-विन में हूं तुम तो वा तल स्तंभ करी विद्या सूं बारंबार ही प्रवेश करत भयो है ।। और वा श्री गोकुलाधिपति रस सागर के महा अगाधीय तिस-तिस विगाढ़ भाव रूप प्रदेशनसूं वाहिर निकसे भये तुमारे अंगन सूं प्राप्त भये विन जलके कणिकान सूं सिंचन किये भये अन्य जीवहूं जो और प्रकारसूं दुर्ल्लभ शैल्य है के शीतलता है ऐसी शीतलता कूं भली प्रकार ही प्राप्त होयेंगे ।। और जिनकूं यह तल स्तंभ करि विद्या प्राप्त नहीं भई है वे हू अब तुमसूं वाकूं प्राप्त होय के तुम जैसे ही बारंबार वा श्री प्रभु के विगाढ़ परम भावरूप अगाधि प्रदेशन में प्रवेश करेंगे ।। यासूं जो यह प्रभुन को रस चरित्र तुमने प्रगट कियो है सो विश्वकूं मंगलरूप है ।।

और सगरे शोक कूं हरिवे वारो है, के सगरे अभीष्टन कूं सिद्ध करिवेवारो है ॥ अहो यह विश्व महारूक्ष हतो सो वाकूं अत्यंत कृपालु तुमने वा श्री गोकुलपति के रस सागर संबंधी धारा बूंदन रूप पुष्प तैलन सूं अभ्यंग करायो है ॥ और जे प्रभु हजारन अंर्बुद और लाखन खर्व हू अपराधन कूं विन उपाधि के ही क्षण में हू क्षमा करिके निरूपाधिक अपने स्वरूप को दान करि रहे जे प्रभु श्री गोकुलपति हैं विनसूं ऐसी वाकी लीला रसको गान करिवेवारे तुमकूं कहा डर होय प्रत्युक ऐसे अर्थ के करिवेसूं विनकूं तुमारे में तो यह के प्रसन्नता हू होयगी ॥ जासूं जा लीला रसगान में वा प्रभुन की प्रियान के और वा प्रभुन के प्रेम सिंधुन के हू सिधुरूप तैसे रसात्मक गुण पद-पद में अधिक प्रगट होय है, तासूं प्रभुन सूं तो डर होयवे कूं नहीं है ॥ और कबहु सो गीत गोविंद के **''स्थल कमल खंडनं मम शिरसी मंडनं धेही, पद पल्लव मुदारं''** ॥ ''हे प्रिये स्थल कमल के हूं गर्व कूं खंडन करिवेवारो भूषणरूप जो अपने रसदान के परम उदार परम कोमल चरण पल्लव है सो मेरे सिर पर धारण करो'' या वाक्यकूं पढ़कर श्री प्राणपति मोकूं कहेते भये हैं के जयदेव ने यह वाक्य अपने पुस्तक में लिखकर तिस समय में दुर्ज्जनन सूं और भगवान सूं हूं डर के वाकूं मिटाय दियो ॥ जब सो जयदेव भोजन करिके फेर आवतो वा पुस्तक में प्रभून के लिखे भये तिस ही वाक्य कूं देखतो भयो है ॥ और विचार करतो भयो है के मेने तो लिखके जो मिटाय दियो सो यह कोन ने फेर लिख्यो तब प्रभुनने कह्यो के ''यह वाक्य मैंने ही लिख्यों है जासूं मेंने श्री स्वामिनिजी सूं जो प्रार्थना करी है तिस अर्थ कूं जतायवे वारो तेसो वाक्य तहां युक्त है सो मैंने किये प्रकार में तैसे वर्णन करिवेवारे तुमसूं कहूं सो हू भय नहीं है ॥ ऐसे वा जयदेव के प्रति भगवान कहेते भये हैं तब सो हू निर्भय होयके गायन हू करत भयो है ॥ सो वा श्रेष्ट भक्तन में भगवान तब अत्यंत प्रसन्न होते भये हैं, या प्रकारसूं मेरे प्राणपति श्रीजी ने कह्यो हतो'' सो हे अंतःकरण सो श्री गोकुलाधीश कृपानिधि प्रभु तेसे तुम भक्त भ्रत्य में कहां अत्यंत प्रसन्न होयेंगे ? अपितु प्रसन्न ही होयेंगे ॥ और जामें हो तिस श्रीजी के वे भक्त तिस श्रीजी की प्रसन्नता के कणिका कूं क्षणमात्र हू देखे हैं के यामें प्रभुन की कृपा क्षण मात्र भई है यामें कदाचित हूं क्रोध नहीं करे हैं ॥ अपने संबंधीन में जैसे होयके अपने आत्मा में जैसे होय तैसे विनमें सर्वदा प्रसन्न ही होय है ॥ यासूं भक्तन

सूं हू भय नहीं है ॥ और तुमकूं दुष्टन सूं तो थोरो सो हू भय नही होय है ॥ जासूं विन दुष्टन के मुख भंग में निपुण है प्रताप और यश जिनको ऐसे वा श्रीमद् गोकुलनाथ प्रभुन कूं जो तुम दास्य जीवन हो के वा प्रभुन कूं दास्य है जीवन रूप जाकूं ऐसे तुम हो सो तुमकूं दुष्टन सूं कैसे डर होय ॥ और मलेच्छ चक्रवर्ती जहांगीर कूं प्रिय दुष्टन कूं सार्वभौम जा चिद्रुप नामवारो महापापी हतो सो भगवत धर्म जो माला तिलक है वाकूं हू जो खंडन करिवेवारो हतो ॥ ऐसे दुष्ट कूं विष रहित सर्प जैसे होय तैसे करिके वा दुष्ट सूं हूं सगरे विश्व कूं जो श्री गोकुलाधीश प्रभु रक्षा करत भये हैं, सो रसिकराय भगवान श्री गोकुलेशजी ऐसी रसमय अपनी लीला समुह कूं गान करिवेवारे तुमकूं दुष्टनसूं न रक्षा करेंगे कहा ? किंतु अवश्य ही रक्षा करेंगे ॥ और लज्जा है अमूल्य भूषण जामें, और अत्यंत शोभायमान होय रह्यो है भयरूप वस्त्र जामें, और बार-बार उदय होय रह्यो जो स्पहा चाहना है सो चंडातक है वाकी मनोहरता सूं है चमत्कार जामें, और मानरूप अंगिया सुद्रढ़ गूढ़ होय रहे हैं आनंद विनयरूप कुच कलश जाके, और गंभीरतारूप तैसे शोभायमांन होय रहे हैं प्रछदपट सूं के चादर पटा सूं के ऊपर के वस्त्र सूं सुन्दर आछादित है ऐसी जो विन गोकुल संबंधी चन्द्रमुखीन की प्रीति रूप वधू है वाकूं सो प्राणनाथ को हू हृदयरूप जो वर है, सो व्याह करत भयो है ॥ सो तिस-तिस भक्तन के चरण नख चंद्र संबंधि अंशुमय किरणमय चंद्रिका सूं अत्यंत प्रकाशित होय रह्यो जो प्रीय संबंधी रसलीला को गानरूप मार्ग है वामें आगे पधार रही जो विन भक्त सुंदरीन की प्रीतिरूप जननी है, तुम तो वाकी चरण पंक्ती के पीछे-पीछे ही चलि रह्यो है और तासूं वेग ही वा प्राणनाथकूं प्राप्त होय रह्यो है ॥ तासूं खल दुष्टन की जे दुष्टता है सो तो खलतारूप के प्रकाश की लतारूप मिथ्यारूप ही होयगी ॥ और क्रर्णामृत कूं प्रगट करिवेवारे लीला, शुक कूं जो रस प्रकार प्रगट करवो निरंतर योग्य भयो है, और गीत गोविंद कूं प्रगट करत जयदेव कूं जो रसकूं प्रगट करवो मनोहर है, उचित भयो है ॥ और भ्रमरगीत, वेणुगीत के श्रीमद् गोपिकागीत कूं और वा रासपंचाध्यायी कूं हू प्रगट करिवे वारे शुकदेव कूं हू जो रासवर्णन श्लाधनीय भयो है और सोही रसरूप है या प्रकारसूं तहां-तहां तैसे-तैसे गांन कर रही जो श्रुती है वाकूं जो योग्य भयो है और वा प्रभुनकी रसलीलाकूं मधुर लौकिक भाषासूं वर्णन कर रहे जे परमानंद हैं के सूरदास

है विनकूं हू जो योग्य भयो है ॥ और व्यासकूं और वाके पिता वैशंपायन कूं हू योग्य भयो है और विविध प्रकार के भाषा गीतकूं रचना करिवेवारो जो भक्तराज नारायणजी है और बहुत रसग्रंथ कूं रचना करिवेवारे मावजी भट है, तैसे अत्यंत भजन कर रहे जे वे वे भक्त हैं विनसूं तैसे गानसूं प्राप्त होयवे वारो जो अतंयत दुर्ल्लभ अमूल्य विनको अनुग्रहरूप वस्त्र हैं सो पहरिवे में दुर्जनरूप यूका के भयसूं कहा त्याग करिवे योग्य है ? किंतु कदापि त्याग करिवे योग्य नहीं है ॥ तासूं हे तात आत्मन वा प्राणपति श्री गोकुलपति के ही रस प्रकार वर्णन में हूं तुम प्रवृत्त होवो ॥ जासूं तैसे कृपापात्र महेद भक्तन ने दिये भये अनुग्रहरूप वस्त्रन सूं तुम सगरे लोक कूं चाहना योग्य होवोगे ॥ और विन अनुग्रहरूप वस्त्रन कूं दाता हू सगरे लोकन कूं स्पृहा योग्य होयगो, के ऐसो अनुग्रह करिवे वारे विन महद भक्तन कूं हू सगरे लोक चाहना करेगे और वा रस लीला के प्रगट करवे सूं अनुभव रूप वस्त्र कूं देवे वारे महद भक्तजनों के प्रति तुमहूं स्पृहा योग्य होवोगे ॥ के वे महेद भक्त तुमारे ही स्पृहा करेंगे ॥ सो कल्याण भटजी कहे हैं के ऐसे या प्रकार दुर्ज्जन के समुह सूं डर रहे अपने कूं चिर पर्यंत भलो समाधान करिके जा रसकूं हों प्रेमसूं परोसूं हू ॥ हे श्री प्राणपति कृपापात्राः सो तुम हू वा प्रारंभ किये ही श्री गोकुल चंद्र के लीलारूप अमृत कूं पान करोगे ॥४२॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले दशम स्तरंग समाप्तम् ॥१०॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग एकादश ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ एकादश स्तरंग लिख्यते ॥११॥

श्लोक -- **अथ क्वचित्स पथ्ये वसरसां सरसी प्रभुः ॥ विक्ष्यताः कमलान्यस्यास्तासां पाणी पदौमुखं ॥१॥**

याको अर्थ -- अब कबहू सो प्रभु मार्ग में ही सरस सरसी कूं देखके विन गोकुल चन्द्रमुखीन कूं और या सरसी के कमलन कूं विनके श्री हस्त चरण

और मुख कूं और वा सरसी के इन्दीवर कहा के कुमोदिनी कूं देखिकें नयनन कूं और भोंरान कूं देखिके विनके केसन के समूहन कूं और वा सरसी के मृणालीन कूं देखके विनकूं भुजान कूं और चकोरी चकोरन कूं देखके मनोहर कुचन कूं शैवाल कूं देखके रोम लता कूं और आवर्तन कूं देखिके रसिकराय श्रीजी विन गोकुलेन्दु मुखीन के तिस तिस महा रस रूप अवयवन कूं स्मरण करत और घोड़ा की खलीन कूं के वाक कूं के कडआल कूं अत्यंत खेंचिके आगे पधारवे में न इच्छा वारे होयके अत्यन्त हर्ष के आंसू रूप मधु कूं वर्षा करि रहे जे अत्यन्त हर्ष सूं प्रफुल्लित होय रहे अपने नयन कमल हैं विनसूं वा सरसी कूं और वाके प्रथम कहे विन अंगन कूं अपने भाव रूप बहुत मान सूं पूजन करत ही के अपने निज भक्तन के भाव सूं विनकूं तैसे तैसे प्रेम पूर्वक अवलोकन करत ही तहां विराजमान होते भये हैं ॥ तब कितने एक जे वा प्रभुन के परम चतुर रसिक भक्त हैं सो तहां प्रभुन के तैसे विराजवे सूं गूढ़ हू भाव कूं जानके विज्ञापना करत भये हैं के हे महाप्रभो यह स्थल तो रसोई के योग्य ही प्रतीत होय है ॥ तट संबंधी वृक्षन की छाया हू चारों ओर सूं विस्तार वारी विराजमान है और या सरसी कूं जल हू निर्मल है शीतल है और कमलन सूं मनोहर है तासूं इहां आरोगें और विश्राम करिकें फेरि आगे पधारें ऐसे योग्य प्रतीत होय है ॥ तब सो प्रिय श्रीजी हू वैसे विन भक्तन के वाक्य कूं अनुसरण करिकें वाजीराज सूं घोड़ा राज सूं उतरते भये हैं । और तब भक्तजन वेगि सूं वा भूमि कूं अमूल्य अत्यन्त मनोहर रत्नखचित कंबलन सूं अस्तीर्ण करत भये हैं ॥ तब वा सरसी के देखवे सूं उच्छलित भयो जो विन विन अत्यन्त प्रियाजी में श्रीजी को प्रेम है वा प्रेम के भार सूं निश्चय सूं अत्यन्त श्रांत भये श्रीजी विराजवे में समर्थ न होयकें वा सरसी कूं और वाके संबंधी तिस प्रथम कही वस्तुन कूं हू चारों ओर सूं सहित अभिप्राय के निमेख रहित ही देखत तहां विराजमान होय जाते भये हैं ॥ तब श्री गोकुल की दिशा सूं भली प्रकार आय रह्यो जो पवन है वाकूं दूर पर्यंत आगमन सूं भये श्रम से मंद गति वारो है और तहां की के श्री गोकुल की जे सुन्दरी हैं विनके सुगंधित श्री अंगन के स्पर्श सूं उछल्लित होय रही और प्रसरवे वारी सुगंधी वारो है और वे सुन्दरीन कूं प्राप्त भयो जो ताप है वाके सहन में न समर्थ होयवे सूं बारंबार तहां तहां नंदी गणों में स्नान जाने कियो है तासूं अत्यन्त शीतल है ॥ और पीछे चलि रहे जे भौंरा

हैं विनके मनोहर बहुत प्रगट गुंजार शब्दन सूं विन सुन्दरीन के कहे उपालंभ के वचनन कूं कहे रह्यो है ।। ऐसे वा पवन कूं कल्पना करत और अपने गोकुल सुन्दरीन के संबंध सूं प्रगट भई प्रीति सूं या पवन कू व्यवधान रहित आलिंगन करवे अर्थ चाहना करत रसिकराय श्रीजी पहेरे भये वस्त्रन कूं ड्ढ़ो करत भये हैं ।। तब तैसे करवे सूं वा आगे सूं हू अधिक ताप प्राप्त भयो है ।। वा ताप कूं सहेन करिवे में न समर्थ होयके तब सरस कियो है चित्त जाने ऐसी वा सरसी कूं स्नान के मिस सूं प्रवेश करते भये हैं ।। अहो श्री प्राणपति के तादृश भाव सूं तैसे गोकुल सुन्दरीन के सदृश जो वो सरसी है वाकी प्रीति सूं श्री गोकुलाधीश प्रभुन में जो हर्ष भयो है वाके वर्णन में अत्यन्त पंडित हू को समर्थ होय सके ? अपितु समर्थ नहीं है ।। और जे श्रीजी अपने श्री अंग संबंधी ताप सूं वा सरसी कूं और कमलादिकन कूं हू रक्षा करत भये हैं ।। और विन सरसी और कमलादिकन सूं वा अपने श्री अंग कूं शीतल करत भये हैं ।। और वा ताप कूं हू भीतर प्रवेश कराय देते भये हैं ।। और वा सरसी के तरंगन कूं अपनी प्रियान के भुजा रूप और कमलन कूं विनके मुख रूप और कुमोदिनी कूं विनके नयन रूप और शैवाल कूं कोश समूह रूप संकल्प करत के विचारत क्षण पर्यन्त वामें रमण करत भये हैं ।। और वामें नयनन कूं हू विनोद करावते भये हैं ।। तब प्रिय श्रीजी के हृदय में विन सुन्दरीन के दरसन अर्थ उदय भई जो उत्कंठा है सो तिस वृद्धि कूं देती भई है ।। के जो वृद्धि दूर में विराज रही हू विन सुन्दरीन कूं आकर्षण करिके जैसे होय तैसे ही दर्शन करायके फेर दूर होती भई है ।। और वा सुन्दर शीतल जल में सो स्थित है सो श्रीजी में वा समय के हर्ष सूं और स्वेद तैसे रोम हर्ष और कंप कूं दर्शन विषय के प्रत्यक्ष करत भई है ।। तब बांधे हैं अंजली जाने ऐसे तीर में स्थित जे अपनी भक्त मंडली है विनने करी जो हरपति भट जी ने भक्ति सूं सिद्ध किये अनन्त शाक, भात दार आदि सामग्री, के तैसे भोजन लीला रूप अमृत वर्षा की प्रतीक्षा है वा प्रतीक्षा सूं और यदि हों नहीं आरोगुंगो तो या वृत्तांत के सुनवे सूं जे मेरे प्राणन सूं हू अधिक प्रिया है वे हू कदापि भोजन नहीं करेगी ।। सो या प्रकार सूं प्राप्त भये सहसा भय सूं और यदि हों उपवास करूंगो तो तामें यदि मेरी वे प्रिया बड़े यत्नन सूं कछुक भोजन करे हू तथापि तासूं विनकूं प्रसन्नता और पुष्टि और प्राणन की स्थिति नहीं होयगी ।। और यदि हौं आरोगुंगो तो

यद्यपि वे मेरी प्रिया उपवास हू करे तो हू प्रसन्नता और पुष्टि और प्राणन की स्थिति हू जैसे मूल के सिंचन सूं लतान कूं होय है तैसे विनकी हू निरन्तर होयगी ही ।। या प्रकार सूं प्राप्त भये बोध सूं और इन मेरी प्रियान ने और मैंने जो भाव आज दिन पर्यन्त दुर्ज्जनन सूं बड़े यत्न सूं छिपाय के राख्यो है सो यदि हौं न आरोगुंगो तो वे हू भोजन नहीं करेगी ।। तासूं सो भाव प्रगट ही होय जायगो ।। तासूं वे दुर्ज्जन निन्दा ही करेंगे सो विनमें प्रसरी भई वा निन्दा कूं सुनके सो सगे सज्जन हू अत्यन्त क्लेश कूं प्राप्त होंयगे के अथवा प्राणन कूं त्याग कर देवेंगे । या प्रकार सूं प्राप्त भये कंप सूं तैसे अस्मदादि जाकूं जानि नहीं सके हे ऐसे और हू प्राप्त होय रहे विभावन सूं विज्ञापना किये भये सो महाप्रभुजी वा सरसी कूं बाहिर पधारवे में और हू तिस तिस करवे योग्य कृत्यों में और भोजन विश्रामादि में हू अत्यन्त प्रवृत्त होते भये हैं ।। तब श्री अंग कूं सेवक श्रीकृष्णदास प्रेम विनय आदर सहित वेग सूं पके भये तांबुली के विन दलन कूं ले आवतो भयो है के जिन दलन कूं सो रस सागर श्रीजी अपने वियोग सूं पीरे भये विनसुन्दरीन के कपोल हैं ऐसे कल्पना करत भये हैं ।। और हर्ष सूं सहित ही विनकूं देखते भये हैं ।। और श्री कर सूं तैसे स्पर्श हू करते भये हैं ।। और तैसे तैसे ही विनमें नखन कूं हू सो श्रीजी व्यापार करत भये हैं ।। के नख दान हू करत भये हैं ।। और श्रीमुख के निकट विनको आकर्षण हू करत भये हैं ।। और उल्लास वारे अधर सूं विनकूं बारंबार चुंबन हू करत भये हैं ।। और आरोगवे के मिस सूं बारंबार श्री दंतन सूं अत्यन्त दशन हू करते भये हैं ।। और तैसे तिस कपोलों के भाव सूं तैसे चरण हू करते भये हैं के जैसे विनके कपोलों में तहां रोम हर्ष होय जाय ।। याके अनन्तर प्रतीक्षा करत जो निद्रा है सो हू अपने अवसर कूं प्राप्त करवे सूं वा प्रिय कूं सेवा करवे अर्थ हर्ष सूं निकट प्राप्त होती भई है ।। सो वा भाव सूं अपने निकट आय रही वा निद्रा कूं यह रसिक शेखर प्राण वल्लभ श्रीजी जाने के भक्त जनों ने प्रीति सूं रचना करी जो शुभ सुखदायक अत्यन्त कोमल मनोहर भाग्यवती शैयाजी हैं वामें वाको आदर करत भये हैं ।। तब सो जाग्रत दशा हू वेग सूं वेष कूं धारण करिके वा श्री गोकुल कूं और विन सुन्दरीन के समूह कूं और विनके रमण सागरन कूं और वा रस लीला के समूह कूं और विनके रमण सागरन कूं और वा रस लीला के स्थल कूं और अमृत कूं हू विजय करिवे

वारे विन सुन्दरीन के और वा श्रीजी के सो संवाद और तिस तिस चुंबन आलिंगनादिक और नर्म हास्य मंद हास्यादिकन कूं और मान और मान निवारण कूं और बारंबार तैसे तैसे विविध बंध सूं प्रवृत्त भये सुरत रसन कूं और तैसे तैसे आपस में प्रिया प्रिय के विनियोग समाधान के वचनन कूं और तैसे तैसे बारंबार अपने वृत्तांत के वर्णन कूं तैसे और और रस सामिग्री कूं हू तहां श्रीजी के निकट उपस्थित करत भई है के जिन सूं बड़े भाग्यवारे जाके श्रीचरण कमलन कूं वन्दना करें हैं, सो ऐसे यह रसिकराय प्रभु श्रीजी अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं ॥ तब स्वाभाविक जे प्रभुन के तैसे दृष्टि के विलास हैं और अमृत के समूहन कूं हू विजय करिवे वारो जो मंद हास्य है और कोकिला के हू पंचम स्वर कूं हू निरास करिवे वारो जे वचन है विनकूं अत्यन्त पान करिवे कूं इच्छा वारे और वाके विलंब क्लेश कूं प्राप्त होय रहे जे वा श्रीजी के कृपा प्रेम के पात्र भक्तवृन्द हैं विनसूं भय पाय के सो निन्दा दूर होय जाती भई है ॥ तब तिस तिस आनन्द के दान सूं विन विन मनोरथन कूं भले प्रकार पूरण जाने कियो है ऐसी या निन्दा कूं दया सहित स्मरण कर रहे जे प्रिय सो श्रीजी हैं विनकूं फेर हू सो अत्यन्त उत्साह वारी जाग्रत अवस्था गाढ़ आलिंगन कूं करत भई है ॥ और तैसी भावना के उत्पन्न करवे सूं तिस तिस आलिंगनादि मनोरथ कूं तिस सूं हू अधिक सिद्ध करिके यह जागृत अवस्था वा श्रीजी कूं प्रसन्न करती भई है ॥ और यह श्रीजी वा निद्रा अवस्था में तो प्रिय जो गमन करें हैं वाकूं उठके पोंहोंचायो जाय है ॥ ऐसो आदर वाको करते भये हैं । और जो सनमुख आवे हैं वाकूं उठिके मिले हैं ॥ या प्रकार सूं प्राप्त भई जाग्रत अवस्था में हू आदर कूं करते भये हैं ॥ याके अनन्तर अंग वारे ग्रामवासी जे भक्तवृन्द हैं विनके तैसे भाग्यवान के समूहन सूं प्रेरणा कियो भयो जो सो वाजीराव घोड़ा राज को सेवक है सो महाप्रभुन के प्रस्थान कूं प्रतीक्षा करत करत परम चंचल घोड़ा रत्न कूं सजाय के आगे स्थित होतो भयो है ॥ तब प्रिय श्रीजी के आरोहण के उत्साह सूं बल सूं ही द्रेषण शब्द कूं कर रह्यो जो सो अश्वराज है प्रभु की यात्रा की प्रतीक्षा कर रहे जे प्रेम दया के पात्र भक्तन के समूह हैं विनमें प्रभु जे श्री गोकुलेश्वर हैं सो कृतावधान कूं भाव कूं प्राप्त कियो है के सगरे भक्तन कूं निश्चय होय जातो भयो है ॥ के प्रभु तो पधारवे में तत्पर होय रहे हैं ॥ तब मंद मुसकान वारो है श्रीमुख जाको ऐसे सो कृपासागर

श्री गोकुल प्राणनाथ श्रीजी प्रेम कूं वर्षा कर रही अपनी दृष्टि सूं विन भक्तन कूं आर्द्र करिके वा अस्वरत्न के ऊपर चढ़िके आगे पधारते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले एकादशम तरंग समाप्तम् ॥११॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग द्वादश ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ द्वादश स्तरंग लिख्यते ॥१२॥

श्लोक -- **ततो जय जया रावो भक्तवृन्द मुखोग्दतः ॥ पूर्वामांस नित रास चतुर्दश विष्ट्यं ॥१॥**

याको अर्थ -- जब प्रभु अश्वराज पे विरामान होयके आगे पधारे हैं तब भक्तन के मुख सूं उदय भयो जो जय जय शब्द है सो चौदह लोकन कूं व्याप्त होय जातो भयो है ॥ और खुर के पुटन सूं खुदी जो भूमि है वासूं उठी जे रेणु है सो वेग की विपुलता कूं शिक्षा करवे अर्थ मानो आये भये जीवन के अणुरूप चित्त जैसे होय तैसे जाके चरणन में बढ़ि रही है ॥ और जो अपने दांतन की जे उज्ज्वल किरण हैं विनसूं इन्द्र और सूर्यादिक के अश्वन के ऊपर हू हंस रह्यो है ॥ और वेग में वा गरुड़ के ऊपर हू जो हंस रह्यो है ॥ ऐसो जो सो अश्वराज है सो वा प्रभुन सूं विराजमान होयके और वा प्रभुन की अभिलाखा अनुसार चरणन कूं मंद और तीक्ष्ण रूप सूं धारण करत और अथवा मंडलन कूं करत पेर वेग सूं चलत के कोमलता सूं चलत ही भक्तन के नयनों में अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करत भयो है ॥ और पधार रहे प्राणपति श्रीजी के हृदय मेंवा समय में उछल्लित होय रही जो श्री गोकुल चन्द्रवदनीन के दर्शन की अत्यन्त इच्छा है सो वा श्रीजी सूं वेग ही घोड़ा कूं पीछे वगदाय के पीछे ही श्री गोकुल के प्रति ही चिर पर्यन्त चलावती भई है ॥ परन्तु श्रीजी के संग चलिवे वारो जे तैसे महद हते विन विन सूं जो प्रबल संकोच है और तिस तिस देश में रहिवे वारे जे स्त्री पुरुष रूप विविध भक्त हैं विनके प्रति

जो दर्शन देवे की इच्छा है सो बल सूं ही वा पीछे बगदवे सूं बगदाय के आगे चलावती भई है ।। और यदि वे कोऊ बुद्धिमान वा घोड़ा राज के वेग में मन की उपमा कूं के पवन की उपमा कूं यदि देवे तो याके मुख कूं स्वभाव सिद्ध हू कोमलता तिरोभाव कूं प्राप्त होय जाय तासूं याके उपमा देवे में सगरी जन ही मौनवारी होय रही है ।। याकी उपमा के योग्य पदार्थ के न होयवे सूं वाके विचार रहित होय रही है दृष्टि जिनकी ऐसे होय जाते भये हैं, और दौड़ रहे वा अश्वराज के संग जो सगरे लोकन की दृष्टि गमनागमन कूं करत भई है सो वामें इन दृष्टिन कूं सामर्थ नहीं है ।। किन्तु यह घोड़ा पर श्रीजी के चढ़िवे कूं ही सामर्थ है ।। और कहूं ही प्रेम के आवर्त में पधारे भये ही प्रिय श्रीजी बहुत प्रकार सूं स्वयं मंडलाकार होवत वा घोड़ा कूं हू मंडलाकार करत भये हैं ।। और जो या घोड़ा की मंडलाकार होयवे वारी क्रिया अपने भक्तन के प्रति दिखाई है सो वाकूं हू यह पवन वात्यामय चक्र कूं करत ही वाको ही अभ्यास करें हैं ।। और याके अनन्तर कितने एक जे श्रेष्ठ भक्त हैं सो प्रिय श्रीजी आज इहां पधारेंगे ऐसे शब्द कूं ही सुन सुन के करुणासागर श्रीजी कूं बारंबार प्रणाम करत और कितनेक तो तहां तिस तिस बाजेन के समूहन कूं सुनिके प्रणाम कूं करत तहां कूं प्राप्त होयके श्रीजी कूं दर्शन करत भये हैं और आपके भक्तजन बारंबार या प्रकार सूं कह रहे हैं के जय श्री गोकुल मंगल हे गोकुल के मंगल आपकी जय हो ।। और जय करोड़न काम की सौन्दर्यता कूं लवण जैसे करिवे वारी है छवि जाकी है ऐसे प्रभो तुमारी जय हो ।। और अत्यन्त जो सुन्दर हैं वे हू अपने शिरोरत्नन सूं के मुकटन सूं जाके चरण कमलों की पूजा करें हैं ऐसे प्रभु तुम जय कूं प्राप्त होवो और प्रेमवारी स्त्री जनों के समूहों के जे हृदय के ताप हैं विनकूं शांत करिवे वारो है देखनो जिनकूं हे ऐसे प्रभो तुम जय कूं प्राप्त होवो ।। और हैं मानिनी के मान रूप सर्वस्व कूं लूटवे वारे नयन कमल जाके ऐसे प्रभो, और प्रवृत्त कीनी है प्रेम रस की वर्षा जाने, ऐसे भाद्रपद रूप प्रिय और प्रेम सहित मंद हास्य रूप अमृत के प्रवाह सूं स्वच्छ कियो है स्वर्ग जाने, हे ऐसे प्रभो और श्रृंगार सार सर्वस्व स्वरूप और रस के आवर्त भ्रम रहे हैं श्री विग्रह में जाके, हे ऐसे प्रभो और हे गोकुल माणिक्य तुम जय कूं प्राप्त होवो ।। और हे हमारे प्राणवल्लभ तुम जय कूं प्राप्त होवो ।। और हे श्री गोकुलाधीश तुम जय कूं प्राप्त होवो और

हे श्री गोकुल प्रिय तुम जय कूं प्राप्त होवो इत्यादि प्रकार सूं भक्तजनों ने कहे अधिक शब्द हैं बिनकूं प्रणाम करत तहां श्रीजी के निकट प्राप्त होते भये हैं ॥ कितनेक तो जय शब्द के कोलाहल कूं और कितने एक भक्त तो बंदीजनों ने करी स्तुति कूं प्रणाम करत वा श्री गोकुलपति के निकट ही तहां प्राप्त होते भये हैं और वे भक्तजन अपने अपने मनोरथ के अनुसार अथवा प्रभुन के आगे अपने अपने चित्त कूं विज्ञापना कर रहे हैं सो विन विन भक्तन के मुख द्वारा फतेपुर सीकरी नाम सूं प्रसिद्ध गाम में निवास करिवे वारी श्री राधाबाई प्रेम लज्जा हर्ष आर्ति स्पृहा की आधिक्यता सहित ही त्रिलोकी में मणि रूप श्री आपके स्वरूप सूं अपने घर को अलंकृत करवे की विज्ञापना करत भई है ॥ के त्रिलोकी में मणि रूप या स्वरूप सूं मेरे घर को श्रीजी आप अलंकृत करें ॥ तब सो रसिकराय प्रिय श्रीजी हू वा श्री राधाबाई के मनोरथ विज्ञापना अनुसार तैसे वाके घर में पधार के महाभाग्य वारी अधिक स्नेह वारी और अपनो देह इन्द्रीय धन प्राण मन आत्मा कूं हू निवेदन करिवे वारी वा राधाबाई कूं अपनी दासी बनायके हर्ष सूं वाके प्रति अपने रसात्मक स्वरूप कूं अर्पण करत ही वाके ऊपर अनुग्रह करत भये हैं ॥ **सो प्रथम राधाबाई कूं जो रसदान अनुग्रह है सो कृपा के समूह सूं गुजरात आदि देशवासी भक्तन में करवे योग्य जो रस वर्षा है वाकूं यह मंगलाचरण ही भयो है ॥** याके अनन्तर प्रिय श्रीजी त्रैलोक्य मणी रूप अपने स्वरूप सूं मार्ग में छोटे बड़े विन विन गामन कूं पवित्र करत हिंडोन नगर कूं सो श्रीजी अलंकृत करत भये हैं ॥ तब आप में बड़े अनुराग सूं व्याप्त होय रहे तहां के निवासी स्त्री पुरुष सगरे हू आपको आगे लेवे कूं आवते भये हैं ॥ और तहां स्वच्छता सूं धोये हैं वस्त्र जाने ऐसे तहां के रजक कूं श्रद्धा सहित भलो है भलो है ऐसे कहिके अत्यन्त अनुग्रह करत भये हैं ॥ और विन रजकन कूं हू रजक के प्राणन कूं निकासवे वारो जो अपनो अस्पर्श प्रकार सूं अवतारांतर मथुरावासी कृष्ण है वासूं हू बहुत अत्यन्त प्रिय होते भये हैं ॥ सो योग्य है और तब कृपासागर श्रीजी मंद हास्य पूर्वक संभाषणादि सूं विनके जन्म की साफल्यता कूं सिद्ध करिके तहां एक रात्रि विराजके उजीरपुर कूं आयके और विछोडोनापुर कूं पवित्र करिकें सगरे जीवन की ही दुर्गति कूं नाश करिवे वारे सो श्रीजी शत्रुन सूं हू दुःख सूं लेवे योग्य जो दुर्ग रणथंभोर है वाकूं प्राप्त होते भये हैं ॥५२॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले द्वादशम तरंग समाप्तम् ।।१२।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग त्रयोदश ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ त्रयोदश स्तरंग लिख्यते ।।१३।।

श्लोक -- **तत्रया भक्त नारीषु वर्या प्रेमवती भृशं कोटि कंदर्प लावण्य संपूर्ण पुरुषोत्तमे ।।१।।**

याको अर्थ -- या रणथंभोर दुर्ग में रहिवे वारी जो सेवक जैसे होय तैसे अनुभाव और सो सो गुण और तैसे माधुर्य जाकूं सेवा कर रहे हैं ऐसे कोटि कंदर्प लावण्य संपूरण पुरुषोत्तम महाराजाधिराज श्री गोकुलपति में अत्यन्त प्रेम वारी और सगरे भक्त स्त्री गणों में श्रेष्ठ जो लाड़बाई नाम सूं प्रसिद्ध है सो श्री गोकुलपति संबंधी अपार अंगाध्य श्रेष्ठ प्रेम रूप समुद्र के अर्बुद तरंगन सूं लोलित होयके के अत्यन्त भीतर बाहिर ही आर्द्र होयके दीर्घ उत्साह रूप महारज्जु आकर्षण करी भई जैसे होय तैसे ही वा श्रीजी के चरण कमलन के मूल कूं ही प्राप्त होयके अंजुली कूं बांधिके आदर सूं प्रणाम करिके दीनता प्रेम विनय आनन्द लज्जा चाहना आदि सहित ही आपके कृपापात्र सेवक भक्त के मुख सूं श्री महाराजा श्रीजी कूं दुर्ग के तल देश में जो अपनो घर है वाके अलंकृत करिवे कूं विज्ञापना करत भई है ।। के हे करुणा सागर, हे प्रभो श्री आप मेरे घर कूं अलंकृत करें ।। तब वाके ऊपर प्रसन्न होयके भगवान श्रीजी वाके घर कूं पधार के कितने एक दिन प्रेम सूं तहां विराजमान होते भये हैं ।। तब वहां वा रसिक प्रवरी के लाडबाई के विविधि मनोरथन कूं तैसे पूर्ण करत भये हैं के जैसे सो अपने कूं निरन्तर ही कृतार्थ मानती भई है ।। और दुर्ग तो अत्यन्त ऊँचो है वाके ऊपर हू जाकी स्थिति नही है जासूं तहां प्रिय श्रीजी को पधारनो उचित नहीं होय है तासूं जाको हृदय अत्यन्त व्याकुल हतो और सदैव ही सो कमल नयनी अपने कूं सर्व सूं हू नीचे ही वर्तमान मानती भई है ।। सो ऐसी लाडबाई जब प्रभुन ने वाको मनोरथ पूर्ण कियो है तब तो सो

सर्व के ऊपर हू अत्यन्त प्रकाशमान अपने कूं मानती भई है ।। और मन और कर्म सूं और वाणी सूं धारंण कियो है दास्य सूं महारस जाने ऐसी वा लाडबाई कूं या प्रकार सूं सर्व के ऊपर ही विराजमान होय रही करके वा परम कोमल श्री विग्रह वारी लाडबाई सूं बहुत प्रकार सूं बारंबार सेवा करे भये ही वाकूं तैसे तैसे समाधान करिकें तासूं प्रिय श्रीजी आगे प्रस्थान करत भये हैं ।। परन्तु भीतर तो श्रीजी में श्रीमद् गोकुल संबंधी चन्द्रवदनीन को जो रस है सो तो सदैव ही उच्छल्लित होय रह्यो है ।। अहो श्री गोकुलेन्दुमुखी सुन्दरी गणों के समूह में जो श्रीमद् गोकुलेश श्रीजी सो कोऊ अनिर्वचनीय हू प्रेम सर्वदा ही वृद्धि कूं ही प्राप्त होय रह्यो है ।। जासूं विन गोकुल संबंधी चन्द्रवदनीन के सदृशता के कणिका वाके कणिका के लेश के अंश को हू अंशमात्र जामें परम प्रेम देखे हैं सो तिस अंशमात्र वारी में हू सो या श्रीजी कूं हू वाके वश हू कर देवे है और जिनमें विनकी सदृशता के कणिका का कण लेशांश को शंक नहीं है ।। यदि अन्य गुणन सूं पूर्ण हू होय तथापि विनमें सो परम प्रेम श्रीजी कूं कटाक्ष के लेश कूं पात हू नहीं कर देवे है ।। और श्रीजी में सो अनिर्वचनीय तैसी कादंबिनी रूप के बिजुरी रूप सो गंभीरता हू अत्यन्त जय कूं प्राप्त होय रही है ।। जासूं जो गंभीरता प्रकाशमान होय रह्यो और अपनी लीला रूप कांतीन सूं दशों दिशान कूं नित्य ही प्रकाशमान कर रह्यो जो मध्यान कूं सूर्य रूप गोकुलेन्दु मुखीन में श्रीजी को परम प्रेम है वाकूं अयोग्य जीवन की जो संगति है, मिलाप है सो अलौकिक रस आस्वाद रूप सूर्यगण के संग द्रोह करिवे वारी वर्षा रितु है वामें वाकूं अत्यन्त ही आच्छादन कर लेवे है ।। और वा रसमय प्राणनाथ के तैसे जे विहार हैं सो जय कूं प्राप्त होय रहे हैं ।। जे कितने एक तो कृपा के समूहमय हैं ।। प्रायः तैसे तैसे तुल्य ही हैं जिनको भेद जानवे में नहीं आवे है और जिनके स्वरूप कूं तारतम्य अत्यन्त जे निपुण चतुर जन श्रीजी के कृपापात्र हैं वे ही जानें हैं ।। ऐसे श्रीजी के विहार हैं ।। सो वे सर्वोत्कर्ष सूं ही विराजमान होय रहे हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरदि विहारभये चतुर्थ कल्लोले त्रयोदशम तरंग समाप्तम् ।।१३।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग चतुर्थदश ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चतुर्थदश स्तरंग लिख्यते ।।१४।।

श्लोक -- **अथ पुर्प्यामज्जयिन्यां कुत्रचित्कोपि वैष्णवः ।। महाधन स्तारण शाहु नामानि वसनितं ।।१।।**

याको अर्थ -- याके अनन्तर कहूं उज्जयिनी पुरी में महा धनी तारण शाह नाम वारो निवास करत हतो सो वाके महाधन कूं प्रभुन की भेंट करायके सफल करिवे में उत्साह वारो और वा तारण शाह कूं हू कृतार्थ करिवे में इच्छा वारो जो प्रभुन कूं अत्यन्त भक्त करुणा सागर पछा त्रिवाड़ी है, सो डेरा तंबु के अधिकारी जनन सूं सूंधे द्वारिका के मार्ग कूं छुड़ाय के मालव देश में जाने वारे मार्ग में राय दुर्ग नाम वारे राजा को जो रामपुर ऐसे प्रसिद्धपुर है वाके निकट श्री महाप्रभुन के डेरा तम्बून कूं लगावतो भयो है ।। तब विन विन भक्त जनन के रस में आविष्ट है मन जाको ऐसे सो प्रिय श्रीजी अपने प्रवेश सूं वा डेरा कूं अलंकृत करते भये हैं ।। अहो रायदुर्ग राजा कूं अत्यन्त मन करिकें कृतार्थ कर रहे हैं सो राय दुर्ग राजा तो कहूं और ठौर में स्थित हतो ।. दरशन के अर्थ प्रभु कूं नहीं प्राप्त भयो परन्तु याकी कृतार्थता में थोरो सो हू संदेह नहीं है जासूं जैसे मैंने वाकूं शोक दियो है तैसे और हू महेद भगवदी उछल्लित कृपा सूं ही वाको शोक करते भये हैं ।। तब सो भाग्यवान दो तीन भक्तन के संग विहार करत ही श्री कोऊ जन सूं वा पुर को नाम पूंछत भये हैं तब सो तो वितने सूं ही अपने कूं और वा अपने पुर कूं हू कृतार्थ मानत ही हाथन कूं बांध के प्रेम सूं प्रणाम करत वा पुर के नाम कूं विज्ञापना करत भयो है ।। तब ईश्वर श्रीजी यह मार्ग द्वारका को है इहां सूं हम कितने एक दिन सूं द्वारिका को दर्शन करेंगे या प्रकार वचनामृत की धारान सूं वाकूं कृतार्थता के सार्वभौम भाव में अभिषेक करत भये हैं ।। तब सो हू बड़े आदर सूं विज्ञापना करत भयो है के यह मार्ग तो द्वारका को नहीं है ।। सो मार्ग तो आपके जनों ने त्याग कर दियो है ।। और हे कृपासागर जासूं श्री आपुकी तो चरणरज हू

ब्रह्मादिकन कूं दुर्ल्लभ हैं, ऐसे आपको यह मार्ग तो हमारे पुर के कृतार्थ करवे कूं हू बलवान हमारे भाग्यन ने ही ग्रहण करायो है ॥ तब मंद मुसकान रूप अमृत के सिंचन सूं वाके नयनन कूं अत्यन्त शीतल करिकें सो रस सागर श्रीजी पछा त्रिवाड़ी कूं बुलावते भये हैं ॥ **इतस्ततो धनार्थ यतत्पारेभ्राम यद्य, त्वयंभाकिमेतं युज्यं सेवो द्युयं जानिथ केवलं विप्रमेयेहमं यत्तद्रपि किं घटते एवयिं ॥ प्रस्थितो हं धनार्थन द्वारकाद्यर्थमेवतु ॥** अपनी इच्छा सूं जो तुम मोकूं धन के अर्थ इत उत जो भ्रमाय रहे हो सो तुमकूं कहा योग्य है ? **सो तुम मोकूं यामें केवल विप्र जो जानते हो ? सो कहा अणुमात्र हू बने है ? हों तो धन के अर्थ नहीं पधार्यो हूं किन्तु हों तो द्वारिका के अर्थ ही पधार्यो हूं ॥**

सो या प्रकार श्रीजी इत इत्यादि वाक्य सूं भक्तन के आनन्द दानार्थ ही अपनी शुभ यात्रा कूं सूचना करत और यूंय इत्यादि सूं तो अपने में रसिक श्रेष्ठन की सार्वभौम भाव सूं वृद्धि वारे सगरे ब्राह्मण श्रेष्ठन के शिरोमुकुट भाव कूं हू दृढ़ करत सगरे जनन ने न्योछावर कियो है प्राण देह इन्द्रीय आत्मा, अंतःकरण, सर्व धनादि जा पर ऐसे सो जगन्मंगल रूप महाराजा श्रीजी सुधे ही मेवाड़ के मध्य में कुंकड़ेश्वर के मार्ग सूं प्रस्थान करत भये हैं ॥ यद्यपि श्रीजी द्वारिकानाथ के महात्म्यादि के अर्थ के अपने तिस तिस तादृस भक्तन के दर्शन मिलन के अर्थ हू पधारत वा उज्जयन पुरी कूं न पधारके वेग सूं और पधारते भये हैं ॥ तथापि आपको जो भक्तराज पछा त्रिवाड़ी है वाके कृपा समूह सूं और प्रथम कहे प्रकार सूं जो प्रभुनने अपने मन में वाकूं अनुसंधान कियो है तासूं वा तारणां नाम वारे शाह के कृतार्थता में तो सन्देह नहीं है ॥ जासूं यह प्रभु हू कबहू कहुं कहुं जीव में अपनी कृपा के गोचर क्षिणु विलंब कूं करके हू के अपनी कृपा में क्षण विलंब करिके हू वाकूं कृत्य कृत्य करें ही हैं ॥ जासूं कृपा तो भक्तन के अर्थ ही है ॥ वाको विषय तो सो भक्त हू है ॥ और जो वा समय में प्रभु ने प्रतीक क्रोध कियो है, वास्तव में तो सो क्रोध नहीं है क्रोधाभास है ।. वासूं और अपने स्वरूप कूं जतायवे सूं हू श्रीजी यह जतावते भये हैं के तुम सरीखे महद भगवदीयन की कृपा सूं ही ऐसेन को कृतार्थता कहा सिद्ध नहीं होय है ? किन्तु अत्यन्त ही कृतार्थता विनकी सिद्ध होय ही है ॥ सो तामें फेर मोकूं तहां बल सूं काहे कूं ले जावो हो ॥ या प्रकार हू अधिक सूचना करत भये हैं ॥२२॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले चतुर्थदशम तरंग समाप्तम् ॥११॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग पंचदशमो ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पंचदशमो स्तरंग लिख्यते ॥१५॥

शलोक -- **अथोऽज्जटस्योदयाख्य पुरस्य संविधस्थितं ॥ शीत निर्मल पानीयं ॥ लहरीभिः हीरत्मनः ॥**

याको अर्थ -- याके अनन्तर सो रसिक शिरोमणि श्रीजी उज्जट संबंधी उदयपुर नाम पुर के समीप स्थित जो सरोवर है वाके निकट पधारते भये हैं ॥ अब वा सरोवर को वर्णन करें है के जाको पानी शीतल और निर्मल है और जो लहरीन सूं मन कूं हरे है ॥ और तट में लगे जे वृक्ष हैं विनमें स्थित पक्षीगणन के शब्दन सूं मानो समीप पधारवे में मंगल शब्द कूं हू कर रह्यो है और शब्दायमान जे पक्षीगण हैं विनकी अनेक प्रकार की क्रीड़ा सूं सुन्दर है ॥ और कमलों की प्रफुल्लितता के मिस सूं प्रसन्न तासूं हंसि रह्यो है और जाके तल को जे पाथरन की पंक्ति है सो हू प्रगट होय रही है ॥ और कीच जामें रंच हू नहीं है और मतवारे होय रहे हैं भौंरान के समूह जामें ऐसे जामें कमल हैं ॥ और तट में बांधे जे पत्थरन की शिला है तासूं हू मनोहर है और प्रिय श्रीजी के तैसे संगम सूं जो हर्ष है तासूं होय रहे पुलकन सूं विस्तार वारे होय रहे हैं सघन लहेरी रूप कंचुक जामें ऐसो सो सरोवर है ॥ और वा सरोवर के मध्य में विराजमान सुन्दर मनोहर आराम है, के बगीचा है जो अत्यन्त कलिका वारे और पुष्पन वारे और फलन वारे होय रहे वृक्षन सूं अपने विभव अनुसार प्रभुन की सेवार्थ अत्यन्त उत्साह वारो है ॥ और या प्रभुन के निवास कूं बड़े आदर सूं अपने में इच्छा करि रह्यो है और श्रीजी यामें पधारे हैं तासूं निमर्याद परमानन्द के सागरन कूं प्राप्त होय रह्यो है ॥ तब या प्रकार बगीचा में विराजमान होय रहे या प्रभुन कूं अपनी सुगंधी और परम शीतलता कूं हू भेंट रूप सूं आपुके निकट प्राप्त करत और या बगीचा में या प्रभुन की क्षणमात्र

हू स्थिति कूं चाहना करत जो दक्षण पवन है सो तहाँ वेग सूं प्रभुन की सेवा करत भयो है ।। और या बगीचा में रहिवे वारे पक्षीगण हू या प्रभुन के त्रैलोक्य मोहन वा अद्भुत स्वरूप को दर्शन करिके कछु हू कहवे में न समर्थ होयके या प्रभुन की स्थिति कूं तहां ही इच्छा करत भयो है ।। इन सगरेन में अत्यन्त भाग्य वारो तो दक्षिण पवन ही है ।। जासूं जा पवन कूं हर्ष सहित अंगीकार करिके सो श्रीजी पदन को गान करते भये हैं ।। के प्रफुल्लित होय रहे जे कमलों के वन हैं विनकी सुगंधी रूप सर्वस्व कूं लूटवे वारे और पीछे चल रही जो भौंरान की पंक्ति है वासूं श्रृंखलीत होयके मंद मंद पवन चलि रहे हैं ।। और तैलंग देश की सुन्दरीन के ऊँचे जे स्तन हैं विनके ऊपर को जो कोमल वस्त्र है वाके आंदोलन में जे पंडित हैं ।। और कर्णाट देश की जे सुन्दरी हैं विनके कर्ण पुर में प्रेम वारे के निरन्तर रहिवे वारे जे कमल हैं विनकी सुगंधि सूं पुष्ट है मध्य जिनको और चौल देश की सुन्दरीन के जे वस्त्र के अंचल कूं जो प्रांत हैं वाके ग्रहण में जो अभ्यास रूप पुण्य और निपुणता है जासूं जे पूर्ण है ।। और मलय पर्वत की जो भूमि है विनके चारों ओर विचर रहे जे ऐसे पवन हैं सो मंद गति सूं चल रहे मृगनयनीन की स्तन मंडली कूं आलिंगन करिकें और गंड स्थली के कपोलन कूं आछी रीति सूं चुंबन करिकें और विन सुन्दरीन की अधर माधुरी को हू पान करिके और सुन्दरीन की वक्षस्त कुटी कूं के हृदय स्थल कूं बारंबार ही उल्लेखन करिके और विन सुन्दरीन के वस्त्रन के अंचल कूं आकर्षण करत और अंगन कूं पुलक वारो करत और दृष्टि कूं मिलन करत जो ऐसो दक्षिण पवन है सो मुनीन के हू चित्त में उत्साह कूं विस्तार करे है ।। लवंग लता के संग में दयालू जो दक्षिण पवन रूप व्रज है सो मानिनी के मान रूप पर्वतन कूं उन्मीलन ही करे है ।। सो मूल सूं ही निकार डारे हैं ।। या प्रकार दक्षिण पवन के स्वरूप कूं कहेत भये है और पीछोल नाम वारो यह सरोवर है वाके महिमा कूं ईश्वर वर्षन के अयुत सहस्र अर्वन खर्वन सूं हू कछु कहिवे में समर्थ होय सके ? अपितु कोऊ हू समर्थ नहीं होय है ।। जासूं जा सरोवर में तैसे रसिकराय प्राणाधीश श्रीजी हू निवास करिवे में हू बहुत प्रकार सूं रुचि कूं करत भये है ।। निश्चय सूं उज्वल मल रहित उच्छल्लित कल्लोलन के समूह वारे शीतल विशाल और महद तिस तिस गुणन सूं मिले भये कोमल मनोहर या सरोवर में विन गोकुल सुन्दरीन के हृदय रूप

कूं श्रीजी विचारते भये हैं के यह सरोवर तो मेरी प्रियान के हृदय जैसे है ॥ जासूं विन सुन्दरीन कूं हृदय हू प्राणनाथ के तैसे तैसे मनोहर रस रूप उज्ज्वल निर्मल शीतल विशाल आनंद सागर रूप तिस तिस गुणन सूं मिल्यो भयो सदैव द्रवीभूत ही होय रह्यो है ॥ और या सरोवर की कमलनयनीन को हू बड़ो भाग्य है जो या सरोवर के जल में स्थित होय के अत्यन्त दुष्कर तप कूं निरन्तर करत हैं ॥ सो तप हू विनकूं सर्व के ऊपर विराजमान महा श्रेष्ठ फल को दान करत भयो है ॥ जो इन कमलनीन के दलन कूं यह श्रीजी और आपके सेवक भृत्य हू तब तहाँ भोजन को पात्र रूप बनावते भये हैं ॥ तब श्रीजी तहां विश्राम करिकें और सेवक दास याके जल कूं ग्रहण करायके अत्यन्त प्रसन्न मुख रस सागर श्रीजी आगे प्रस्थान करत भये हैं ॥ सो बहुत प्रकार सूं श्रीमद् गोकुल में सो प्रसन्न मुख करुणा सागर सुन्दर श्रीजी मेरे आगे तैसे और हू अपने सेवक वैष्णवन के आगे तैसे या सरोवर कूं बारंबार प्रशंसा करत भये हैं ॥ तासूं या सरोवर कूं जानें सर्व प्रकार सूं बनवायो है और जिनने यामें कहूं हू ध्यान कियो है और जाने याको जलपान कियो है के स्मरण करे हैं के याको जे दरशन करे है के याको जे स्पर्श करे है के यामें निवास करे है और याके संबंधी हैं विन सगरेन की मनोहर कृतार्थता कूं सो प्रभु श्री गोकुलपति रंजित करते भये हैं ॥ याके अनन्तर नाई नाम वारे ग्राम कूं अपने स्वरूप सूं शोभायमान करत भये हैं ॥ जा गाम को अधिष्ठाता खीरा नाम अपनो सेवक हतो सो खीरा हू प्रायः वा गाम में ही रहे हैं ॥ तासूं या प्रभुन कूं अपने घर में पधराय के निरन्तर सेवा करत भयो है ॥ तब खीरा नाम भक्त प्रवर के ऊपर अनुग्रह कूं करिकें सो श्री महाप्रभुजी आगे प्रस्थान करत भये हैं ॥ तब झाडोल देश के राजा झाला हरिदास ने सुन्यो के श्रीजी इहां पधारे हैं तब सो अत्यन्त प्रसन्न होयके अपनी सेना संबंधीन सूं सहित दूर सूं हू आगे लेवे कूं आवतो भयो है ॥ तब दूर सूं दरशन करकें श्रीजी के आगे प्रणाम कूं करत भयो है ॥ सो प्राप्त भयो है हर्ष रूप सागर जामें और निवर्त होय गयो है सगरो ताप जाको ऐसो सो झाला हरिदास अत्यन्त कृपालु प्रभुन सूं देख्यो और प्रेम सहित बुलायो भयो श्री आपके समीप में जायकें श्री आपके कृपापात्र भक्तन के मुख सूं अपने घर में पधारवे कूं विज्ञापना करत भयो है ॥ तब अदय दान में दक्ष और महोदार चरित्र वारे महाप्रभु अपने प्रवेश सूं याके

घरन कूं पवित्र करत भये हैं ।। और यह झाला हरिदास बहु विधि करी भई सेवा सूं श्रीजी कूं अत्यन्त प्रसन्न करत भयो है ।। और यह श्रीजी हू याके सगरे मनोरथन कूं पूर्ण करते भये हैं ।। और तहां द्विवेदी गोविंद और गदाधर यह प्रभुन में अत्यन्त भक्ति और अनुराग वारे हते ।। और अंतरंग और सरस और अत्यन्त गूढ़ भाव वारे हते सो प्रभुन कूं पहौंचावने अर्थ पीछे चलते भये हैं ।। तब रसिकराय श्रीजी हू कृपा सूं मिश्रित अत्यन्त सरस दृष्टि सूं विनके ऊपर अनुग्रह करत भय हैं ।। पाछे वासूं आगे हू प्रस्थान करत भये हैं ।।२१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले पंचदश तरंग समाप्तम् ।।१५।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग षटदशमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ षटदशम् स्तरंग लिख्यते ।।१६।।

श्लोक -- **पानौरा संज्ञक ग्राम समीपं प्राप्तमोश्वरः ।। हरिपालो भिल्लपतिः प्रत्युघातो निजै सहः ।।१।।**

याको अर्थ -- पानौरा नाम कूं जो ग्राम है वाके समीप प्राप्त भये श्री महाप्रभुन कूं सुनिके अपने जनों के संग भिल्लपती जो हरिपाल है सो प्रभुन के आगे पधरायवे कूं जातो भयो है ।। सो हरिपाल बड़ो बलवान है और शत्रु जाको निवारण नहीं कर सके और बड़े बलवान हू जाकूं जय नहीं कर सके हैं ऐसो हरिपाल और पूजा राणा जाको पिता है सो पूजा राणा श्री विट्ठलनाथजी श्री गोस्वामीजी को सेवक है ।। और बल वारेन में मुख्य है, पूर्ण नेष्टा वारो है, और शत्रुन सूं अत्यन्त ही दुर्ज्जय है ।। एक समय में मलेच्छन कूं सार्वभौम जो अकबर है वाकी कृपा सूं जहां कहां प्रसरी जे मंत्री भाव कूं प्राप्त होयके असंख्य बल वारेन सूं शोभायमान चतुरंगिनी सेना कूं आकर्षण कर रहे वा सेना के संग अपनी सीमा में आये के महा सूर वेंगवारे क्षत्रीय श्रेष्ठ के आगे जाय रहे टोडरमल राजा कूं जो पूंजा राणा आगे होयके रोकतो भयो है ।। और कहतो भयो है के ''ओ शत्रुग्र जन जामें गमन नहीं कर सके है है ऐसो यह

मेरो विषम घट है । जो मोकूं कर देवे है वो और दूसरो, वह जो श्रीमद् वल्लभ प्रभुन कूं सेवक है विनसूं दूसरो और को बलवान इच्छा वारो है जो इहां सूं चल्यो जाय ? तब सो महाबुद्धिमान प्रसिद्ध टोडरमल हू जाकूं दुर्जय और महाबलवान जानके अत्यन्त डरके कहेवे लगो के हौं तो विन श्रीमद् वल्लभ प्रभुन कूं सेवक हूं सो ऐसे मोकूं काहे कूं रोको हो ।। ऐसे सुनिकें तब सो पूंजा राणा कहेत भयो है के जब ऐसे है तो तुम सेना संबंधीन सहित अब सुख सूं जावो ।। तब जा पूंजा राणा कूं सहायक पायके सो राजा टोडरमल वा विषम तैसे घट कूं उतरतो भयो है ।। और विनके ताप कूं बहुत प्रकार सूं हृदय में विचारत तात पाद श्री गोस्वामीजी कूं प्राप्त होयके आपके आगे कहेत भयो है के हे प्रभो जा घाट में सो पूंजा राणा मोकूं रोकतो भयो है सो दुःख सूं उतरवे योग्य वा घाट सूं हौं तो श्री आपके प्रसाद सूं जीवत ही आयो हूं ।। जासूं जो पूंजा राणा श्री आपको दास और मो सदृश और बड़े बलवान हू जाकूं जय नहीं कर सके हैं सो ऐसो बलवान पूजा राणा को पुत्र हरपाल जब अत्यन्त प्रेम सूं और भक्ति सूं जब आगे आयो है वाकूं सो प्रिय कृपासिन्धु श्री महाप्रभुजी अपने स्वरूप को दरशन करावत और प्रेम समुद्र के समूहन सूं सिंचन कर रही कृपा दृष्टि सूं वाकूं देखते भये हैं ।। तब सो हरपाल हू नयनन सूं हर्ष के अश्रुन कूं वर्षा करत और बारंबार दंडवत प्रणामन कूं करत हाथन कूं बांधके स्वयं कहिवे में न समर्थ होयके श्री आपके कृपापात्रन के मुख सूं घर कूं पवित्र करवे लिये ही विज्ञापना करत भयो है ।. तब दीनबंधु प्राणनाथ श्रीजी वाके घर में पधारके तीन दिन वहां विराजमान होते भये हैं ।। और वाके मनोरथन कूं हू पूर्ण करते भये हैं ।। और सो हरपाल हू प्रभुन के दर्शन के कृत्यन कूं हू स्वयं दास धर्म सूं क्षण क्षण में करत ही अपने जन्म कूं सुफल ही करतो भयो है ।। और सो भाग्यवान हरपाल रात्रि में सगरे अपने सेवक संबंधीन सहित ठाड़ो होयके जागत ही प्रभुन के कटक में पहेरेदारी कूं करत भयो है ।। और प्रभुन ने दीनबंधु भाव इहां प्रगट कियो है ।। जो याके या अत्यन्त बड़े गुण सूं याके प्रति प्रभुन ने हर्ष सूं अपने स्वरूप योग्य जे प्रसाद किये हैं सो महासागर रूप है ।। तासूं वाके शरीर में कैसे समाय शके ? जासूं वे महासागर रूप प्रसाद तो त्रिलोकी के हू तन में नहीं समावते भये हैं । तब प्रभु तहां सूं प्रस्थान कूं करत भये हैं ।। सो आपके प्रस्थान के समय में सगरे जन ही आदर सूं

हैं ।। तब शोभायमान मंद हास्यवारो प्रभुन के पीछे पोंहोचावन कूं चलते भये हैं ।। तब शोभायमान मंद हास्यवारो होय रह्यो है श्रीमुख जिनको ऐसे सो श्रीजी कृपा के भार सूं आरद्र होय रही दृष्टि सूं विन सगरेन कूं अत्यन्त कृतारथ करत पीछे घर में पठावते भये हैं ।। सो घर में आय रहे सो सगरे जन अपनी समर्था के अनुसार अमूल्य धन, वस्त्र, भूषण तैसें और हू वस्तु कूं आदर सूं या श्रीजी के चरणन में उपायन भेंट करते भये हैं ।। और प्रणामन कूं करिकें घर संबंधी पुत्र, स्त्री, धन, देह आत्मादिक प्रेम सहित या श्रीजी के ऊपर हू वारते भये हैं ।। तब श्री आपके चरणों में बारंबार प्रणाम करिके वे सगरे अपने घरन के प्रति आवते भये हैं ।। और न दूर होयवे वारे मन सूं तो आपके पीछे ही जाते भये हैं ।। और हरपाल तो उपायन के समय में अपने अनुसार यद्यपि उपायन योग्य पदार्थ हते तथापि यह प्रभुन के योग्य नहीं हैं यह विचारकें लज्जित होयके कहूं छिपके ही ठहेरतो भयो है ।। प्रभुन के निकट हू आयवे में समर्थ नहीं होतो भयो है ।। तब वा हरिपाल को जो अधिकारीन में श्रेष्ठ वाछर नाम कूं अधिकारी हतो सो वाके बांधन के समूह कूं और हू तिस तिस वस्तु कूं प्रभुन के चरण कमलों के समीप भेटान कूं करत भयो है ।। तब भावग्राही श्री महाप्रभुजी वाके ऐसे भाव सूं अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं ।। और तैसे भाव वारे हरपाल कूं निकट में बुलावते भये हैं ।। निकट आये वाकूं कृपासागर श्रीजी बहुत प्रकार सूं समाधान करत भये हैं के सगरे वस्तुन सूं अधिक मनोहर है सो भाव ही है ।। जा भाव के ऊपर मेरु के शत अर्बुदन कूं हू वार में और रोहण पर्वत के अर्व शतन कूं हू बारवे में बुद्धिमान लज्जा कूं ही प्राप्त होय है । और तिहारो सो भाव तो प्रकर्ष की परमकाष्टा कूं ही प्राप्त भयो है ।। सो ऐसो भाव तुमने भेट कियो है ।। सो काहे को लज्जा करो हो ? सो नम्र होय रहे वा हरपाल कूं ईश्वरेश्वर सो श्रीजी इत्यादि वचनामृत समुद्रन की पंक्ति सूं सिंचन करत वाकूं आदर सहित विदा करते भये हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले षोडश तरंग समाप्तम् ।।१६।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग सप्तदशमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सप्तदश स्तरंग लिख्यते ।।१७।।

श्लोक -- **राणा देशे अथ प्रविष्टस्तत्र त्यान्दर्शनादिनां अलंकृतार्थच्छ्लि पूतली घट्ट वर्त्मना ।।१।।**

याको अर्थ -- राणा देशे में प्रवेश करिके श्रीजी तहां के निवासी जीवन कूं अत्यन्त कृतार्थ करत ही वा अपने दास हरपाल राणा कूं अत्यन्त प्रसन्न करिके छाली पुतली घाट के मार्ग सूं राणा के देश सूं आगे प्रस्थान करते भये हैं ।। तब यह प्रभु श्रीजी मार्ग के क्रम सूं आगे आये भये हू ईडर कूं नहीं पधारते भये हैं ।। तब ईडर पुर को अधिष्ठाता नारायणदास नाम सूं हतो सो यद्यपि बड़ो हू हतो तथापि भाग्य रहित अर्क वृक्ष रूप हतो ।। श्री गोकुलेश रूप मेघ चारों तरफ कृपामय जल कूं वर्षा करत हू जा नारायणदास रूप अर्क वृक्ष अभागी कूं सरस न करते भये हैं ।। प्रत्युत अत्यन्त लज्जा सूं चिर पर्यन्त पीत रूप के शुष्क रूप ही कर देते भये हैं ।। और वा नारायणदास को जो पुत्र है सो तो और वृक्षन के समूह जैसे बड़ो भाग्यवारो है ।। जासूं श्री गोकुलपति के समीप गयो है ।। सो वा श्री गोकुलपति के निकट तासूं निरन्तर सरस भाव कूं हू प्राप्त भयो है ।। और वीरभद्र ऐसो जाको नाम है ऐसो सो सदैव ही दुष्ट चित्त वारे पिता सूं न्यारो ही रहेतो हतो सो जब सुनतो भयो है के प्रभु पधारे हैं तब ही करुणासिंधु प्राणनाथ श्रीजी के आगे दूर सूं ही संबंधीन के सहित ही जातो भयो है ।। तब सगरे बंधु सहित आप श्री के चरणन में गिरिकें दंडवत प्रमाम करतो भयो है ।। तब बड़े आदर सूं अर्चना करिकें आपके भक्तन के मुखन सूं विज्ञापना करायकें ईडरपुर सूं एक दिशा में पर्वतन में स्थिति जो अपनो वीजा नगर है वामें प्रभुन कूं पधराय ले जातो भयो है ।। तब चौदह लोकन के नियंता जे श्रीजी हैं अपनी कृपा समूह सूं जे अपने घरन में पधारे हैं ।। विन प्रभुन कूं तैसे तैसे सो वीरभद्र सेवा कूं करत भयो है ।। और अपनी जे षोडश स्त्री हैं सो रस रूप अवस्था गुणन सूं और मधुरता शील और विदग्धता

सूं जिनोने अपसरान कूं हू विजय कियो है ऐसी विन सगरीन कूं स्वयं जायके जहां रस सागर श्रीजी विराजमान हते तहां ले आवतो भयो है ।। और प्रिय श्रीजी के चरण कमलों में विनकूं दंडवत जैसे प्रणाम करावत भयो है ।। और श्री आपके दास्य में विनकूं लगावतो भयो है ।। और विज्ञापना हू करत भयो है के हे करुणासागर प्रभो इन सगरीन कूं अपनो नाम सुनायके इनको पूर्ण कांम करोगे ।। सो या प्रकार की विज्ञप्ती में के अभिप्राय कूं निश्चय करिकें श्रीजी प्रसन्न होयके विनकूं नाम दे करिके आदर सूं स्वीय भाव सूं स्थापन करावते भये हैं । और बड़े भाग्यवारी विनकूं कृतार्थ हू करत भये हैं ।। या प्रसंग में श्रीमद् गोकुल में प्राणवल्लभ श्रीजी अपने दासन में परमाणु रूप मोकूं अपने श्रीमुख सूं यह आज्ञा करत भये हैं के वा वीरभद्र को नाम देवे की विज्ञापना कूं सुनिकें तब में वाकूं कहेत भयो हौं के इनकूं नाम तब देवुंगो जब तुम निकट रहोगे ।। तो तब सो वीरभद्र कहेत भयो है के हे महाप्रभो आप विराजमान हो, तैसे अपने नाम को दान कर रहे हो वामें का चिन्ता है ।। तब मैंने कह्यो के सो तो सत्य है तथापि योग्यता नहीं है ।। यह वचन सुनिकें सो तैसे ही करत भयो है ।। सो यह राजपुत्र अवश्य ही अत्यन्त ही दुष्ट होय है तब मेरो यह अभिप्राय हतो ।। या प्रकार सूं मेरे आगे तैसे और हू भक्तन के आगे अपने अपने वचनों के समूह सूं सो सुन्दर और हू कहेत भये हैं के जो स्त्रीन के प्रति तो नाम दान करावे और अपन कोऊ कारण सूं नहीं लेवे सो अधिक कृपा सूं सुहृदय वारे में हों लौकिक मिश सूं कह्यो भयो हू जासूं जो जन मेरे सूं नाम नहीं हू लेवे परन्तु जो नाम ले रह्यो है वाके निकट यदि ठहेर जाय तो तथापि सो सर्व प्रकार सूं कृतार्थ ही होय जाय ।। और सो वीरभद्र तो अभिप्राय कूं जानके सो बुद्धिमान मोकूं लौकिक रीति कूं दिखावत ही कहेत भयो है के तैसे आपु में कहा चिन्ता है ।। यह कहिके हू या अभिप्राय कूं हू प्रगट कहत भयो है, के इहां ठहेरे भये मोकूं स्वयं हू उद्धार हू करोगे जासूं तुम महा कारुणिक हो, महा प्रभु हो ।। यासूं अयोग्य हू मेरे विज्ञापन सूं अयोग्य हू मेरे कूं महा कारुणिक भाव ही है ।। और हे भटजी वा वीरभद्र ने जो कह्यो तैसे नाम देवे वारे आप में कहा चिन्ता है या वचन कूं और वाके अभिप्राय कूं सत्य ऐसे कहवे सूं मैंने अंगीकार कियो और कह्यो तिहारो कहनो सत्य है ।। तथापि लौकिक मिश सूं योग्य है, ऐसे योग्य नहीं है ऐसो जो मैंने कह्यो

है मेरे नाम को सो सगरे दोषन कूं हू दूर करवो है लक्षण जाको ऐसी जो महिमा है वाकूं या जगत में प्रचार करिवे कूं कह्यो हतो या प्रकार सूं श्रीजी मोकूं श्री गोकुल में सुनावते भये हैं ।। अब हे भक्तो प्रसंग कूं सुनो ।। तब सो वीरभद्र प्रभुन के आगे विज्ञापना करत भयो है के हे प्रभो इहां कछु आप आरोगें ।। यदि प्राणनाथ के आरोगवे में विलंब होय तो दासन कूं हू वाधा करे है ।। सो भोजन के समय में बहुत विलंब होय गयो है ।। और कूं हू झूठन की अभिलाखा है, या प्रकार हाथन कूं बांध के बारंबार अत्यन्त प्रणामन कूं करत और कहेत जो सो वीरभद्र हतो तब वाकूं सो कृपालु श्रीजी अनुमोदन करत भये हैं तब इहां हरिपत भटजी ने महाराजा श्री गोकुलपति के योग्य रसोई वेग ही तैयार करी है ।। तब श्रीजी के दरशन कूं बड़े प्रेम सूं वा पर्वत के अत्यन्त स्निग्ध सुन्दर मनोहर जे पाषाण हे सो प्रायः द्रवीभूत होयके हू ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्ल्लभ है कणिका जाकी और विजय कियो है शत करोड़न अमृत के समुद्रन कूं जाने ऐसो जो या श्री गोकुलपति की अपने में भोजन लीला है वाकूं दर्शन के अर्थ अपने कूं बड़े यत्न सू स्तब्ध कर लेते भये हैं ।। अहो श्री गोकुलपति के सेवकन कूं कैसो संगम है जो जासूं वे पाषाण हू अत्यन्त कोमलता कूं प्राप्त भये हैं ।। सो वे पाषाण श्रेष्ठ भाग्य वारे हैं ।। और सुन्दर हैं जिनमें हमारे देखत ही सगरो ही रसोई की सामिग्री प्राप्त भई है यह विचारके श्रीजी के भक्त हू इन पाषाणन कूं या मिस सूं रसोई में साधन रूप करते भये हैं ।। विनमें कितने एक भक्त तो विन पाषाणन कूं भोजन को पात्र रूप करते भये हैं ।। और जिन पाषाणन कूं सो त्रिलोकी कूं तिलक रूप करुणा समुद्र श्रीजी कितने एक क्षण पर्यन्त अपने आसन रूप सूं अलंकृत करत भये हैं ।। ये पाषाण तो अत्यन्त धन्य हैं और शत चिन्तामणि सूं अधिक हैं ।। तब तहां प्रिय महाराज श्रीजी कूं भक्तगण नाना विधि भावन सूं विविधि प्रकारन सूं सेवा करत भये हैं ।। और यह रसिकराय श्रीजी हू विन सगरेन के सगरे मनोरथन कूं पूर्ण करत भये हैं ।। या प्रकार विन भक्तन के और विशेष सूं विन स्त्रीगणों के सगरे जन्म कृत्य कृत्य करिकें सो कृपासागर श्रीजी या गाम सूं आगे पधारते भये हैं ।। सो पर्वत में निवास करिवे वारो जो राजा विरमदेव है वाकी जे स्त्री गण हैं विनने प्रणाम के समय में नम्र किये सिर को जो घिसायो है तासूं विनके

सिन्दूर कूं जो समुद्र है तासूं पूर्ण होय रह्यो जो अपनो चरण युगल है वाकूं सो हमारे प्रिय श्रीजी लाल कमल की शोभा कूं प्राप्त करते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले सप्तदशम तरंग समाप्तम् ॥१७॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग अष्टदश ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्टदश स्तरंग लिख्यते ॥१८॥

श्लोक -- **ततो मार्ग क्रमेणैव तदुपि स्थानमात्मना भूषयामासनिंत रात्रै लोक्य मणिना प्रियः ॥१॥**

याको अर्थ -- वाके अनन्तर मार्ग क्रम सूं पधारत प्रिय श्रीजी जहां निवास करत गदाधर भगवान अपने भक्तन कूं सर्व प्रकार सूं कृतार्थ करें हैं, या स्थान कूं हू गदाधर द्विवेदी के वचन सूं त्रैलोक्य मणि रूप अपने स्वरूप सूं शोभायमान करत भये हैं ॥ तहाँ ईश्वरन के ईश्वर जे श्रीजी हैं सो जो उचित कर्त्तव्य हतो वाकूं आछी रीत सूं विधान करिकें कृपा के सागर श्रीजी फेर दुधालीया नाम ग्राम कूं पावन करत भये हैं ॥ तहां की एक धनाईबाई शुद्ध प्रेम भक्ति वारी स्त्रीन में हू श्रेष्ठ हती सो वा ग्राम सूं श्री गोकुल में जायके श्रीमद् प्रभु श्रीजी के चरण कमलन कूं सेवा करत कितनो एक काल तहाँ सो बुद्धिमती निवास करत भई है ॥ जब श्रीजी श्री गोकुल सूं प्रस्थान करत भये हैं तब तहां प्रयोजन के न होयवे सूं परम चतुर धनाईबाई हू श्रीजी के संग ही प्रस्थान करत भई है ॥ और जा दिन में धनाईबाई कूं श्री आप आज्ञा करत भये हैं ॥ के तू आगे नहीं जाय है का, जासूं हमकूं तो तिस तिस कार्य के वस सूं और भक्तन के अनुरोध सूं मार्ग में बहुत ही दिन गुजर जायेंगे ॥ तब ऐसी श्रीजी की आज्ञा कूं सुनिकें प्रणाम करिकें निरन्तर हाथन कूं बांधके सो कहेत भई है के हे प्राणनाथ करुणासागर यदि आप श्री मेरे घर में पधारवे कूं प्रतिज्ञा करो तब हों आप श्री सूं प्रथम अपने घर कूं जावुं ॥ तब हंसत हंसत श्रीमुख सूं तैसे होयके तिहारे घर में पधारेंगे ही ऐसे वचनामृत कूं वा धनाई बाई कूं पान करावते

भये हैं ।। तब सो बड़ी बुद्धिवारी धनाई बाई अपने गाम कूं वेग ही जायके अपने मनोरथन के अनुसार श्री आपके योग्य नवीन मंगलमय घर कूं बनावती भई है ।। और हीरा मोती माणिक्यन के बंद सूं खचित सुवर्णमय रस लीला कूं निकेत मंदिर कूं बनावती भई है ।। जो रस लीला मंदिर सुवर्णमय और हीरा मुक्ता माणिक्यन सूं खचित पर्यंक शोभायमान है ।। और जामें बड़े अमूल्य सुन्दर बिछौना बिछाये हैं । और मुक्तान की लटक रही लरीन सूं मनोहर जे वितांन चंदुवा की पंक्ति है विनसूं शोभायमान है और इन्द्र गोप के स्वरूप जैसे लाल गोल आसन सू और तैसे रंग वारी परम कोमल तूल सूं और तैसे मनोहर महोपधान बड़े तकिया सूं मिल्यो है और रस के उपयोगी सामिग्री सूं पूर्ण है ।। तब पधार रहे अपने प्राणप्रिय श्रीजी कूं सुनके हर्ष सूं प्रफुल्लित होय रह्यो है श्रीमुख जाको ऐसी सो धनाईबाई वा पुर में वीरभाण मसाणी ऐसे शब्द सूं प्रसिद्ध जो अपनो भैया है वाकूं प्रभुन के आगे पधरायवे कूं पठावती भई है ।। और वीरभाण हू आगे जायके प्रभुन के श्रीचरण कमलों में दंडवत् जैसे प्रणाम कूं करिके प्रेम विनय उत्साह सहित विज्ञापना करिके प्रभून कूं घर में पधरावतो भयो है ।। सत्य प्रतिज्ञा वारे ईश्वरेश्वर रसिकन के शिरोमणि और अगाध्य कृपा के समुद्र श्री महाप्रभु अपने प्राणनाथ श्रीजी को दरशन करिके हर्ष के आंसुन कूं वर्षा करत सो धनाईबाई बहुत वार प्रणामन कूं करिके अपने भावों के अनुसार तहां निरन्तर ही सेवा करत भई है ।। और सर्वस्व कूं नोछावर कर देती भई है ।। और अपने कूं और अपने संबंधी सगरेन कूं हू प्रभुन के श्री चरणों में निवेदन करत भई है ।। तब कृपानिधि श्री प्राणनाथ श्रीजी हू विनको नाम दान करत अनुग्रह ही करते भये हैं ।। और सो यह कृपानिधि बड़े यश वारे श्रीजी कछुक काल वाके घर में विराज के विविधि प्रकार के और बहुत जे मनोरथ रूप वृक्ष हे विनकूं अपने विविधि प्रकार के अत्यन्त विहारन सूं पुष्टित और फलित हू करते भये हैं ।। तब सो धनाईबाई हू वा प्राणप्रिय श्रीजी के प्रति अपने सर्वस्व कूं हू निवेदन करिके ही निरन्तर श्री आपके संग ही निवास करत श्रीमद् गोकुल में हू आयके चिर पर्यन्त निवास करत भई है ।। तब वा दुधालिया ग्राम सूं प्रस्थान करिके सो प्रिय श्रीजी मार्ग के क्रम सूं आगे आये साद्दरड़ु नाम गाम कूं प्रभुजी अपने सूं शोभायमान करत भये हैं ।। तहां भाग्यवान परम भक्तवर कर्णदास श्रीजी के आगे आयके प्रणाम कूं करिके आपके कृपापात्रन के मुख

द्वारा आपकूं विज्ञापना करायके प्रभुन कूं अपने घर में पधराय ले जातो भयो है ।। तब सो उछल्लित प्रेम सूं अपने मनोरथन के अनुसार प्रभुन कूं अत्यन्त ही सेवा करत भये हैं ।। वा कर्णदास के ऊपर हू सो प्रिय कृपा महासागर श्रीजी अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं ।। और तब आगे स्थित जे भक्त हैं विनके भाग्यन सूं आकर्षण किये भये सो श्रीजी या ग्राम सूं आगे प्रस्थान कूं करत भये हैं ।। और या समय में अपनी वात्सल्यता सूं भक्तिवारेन में मुख्य जो सो कर्णदास है सो तहां के बसवे वारे भूमि कवर सेरेव्हल जात वारे राजपुत्र निर्दोष गोविन्द नाम वारे कूं बुलाय कें कहेतो भयो है के घोड़ा पर चढ़िवे के समय सदैव प्रेम सहित राधावर शब्द में जा भगवान कूं तुम अनुसंधान करो हो सो परमेश्वर साक्षात ही इहां पधारे हैं सो वाकूं प्रेम सूं सगरे अर्थन सूं और सगरे गुणन सूं पूर्ण और करुणा के सागर भगवान श्री गोकुलाधीश में ही दर्शन करो ।। और वा श्री गोकुलपति के भक्तन कूं कोली नाम वारे दुर्ज्जन समूह सूं होयवे वारे भय सूं मिल्यो जो मार्ग है वामें रक्षा करत श्री गोकुलपति कूं तुम अनुसरण करो ।। तब सो भाग्यवान तो या कर्णदास के वचन कूं सुनिके याकूं भक्ति सूं प्रणाम करिके जायके परम सुन्दर निर्दोष करोड़न सूं कमनीय वा श्री गोकुलपति कूं दर्शन करत भयो है के दंडवत प्रणाम कूं हू करत भयो है ।। तैसे प्रभुन कूं विनय सहित विज्ञापना हू करत भयो है ।। के हे विभो हौं आपके दासन को हू दास हूं ।। सो या मार्ग में आपके दासन कूं सेवा करिवे की इच्छा सूं हौं आप के पीछे चलिवे वारो हूं ।। हे प्रभु जे कोली जात वारे दुष्ट हैं वे आपके प्रताप सूं बहुत ही डरपें हैं विनकूं दंड देवे में हौं अत्यन्त समर्थ हूं या प्रकार सूं विज्ञापना करके बहुत से असवारन सूं मिल्यो भयो सो दासानुदास जैसे आपके सेवकन कूं हू बहुत प्रकार सूं प्रेम सूं सेवा करत और अपने जन्म कूंसफल जानत ईश्वरन के हू ईश्वर वा श्रीजी कूं अनुसरण करत भयो है ।। तब या ग्राम सूं आगे सो जगदीश्वर श्रीजी मोढास नाम ग्राम कूं प्राप्त होते भये हैं .। तहां असंक्षात उत्तम भक्त प्रभुन की सेवा में प्राप्त होते भये हैं ।। तामें विष्णुदास और सारंगधर व्यास और माधवदास तैसे और हू भक्त वा श्रीजी कूं प्रणाम करिके कृत्य कृत्य होय जाते भये हैं ।। और तहाँ को विचारवान पूजा रावल नामवारो जो राजा हतो सो प्रभुन के आगे दंडवत प्रणाम कूं करिके और सेवा हू करिके पूर्ण मनोरथ वारो होय जातो भयो है ।। और श्रीजी हू

वाको नाम उपदेश करिके कृतार्थ करत भये हैं ।। तब राजा श्री आपके चरणन में तीषरड्डु नाम ग्राम कूं भेट करत भयो है ।। तब श्रीजी हू कृपावस सूं वाकूं अनुमोदन करत भये हैं ।। याके आगे सूं प्राणप्रिय श्रीजी सावली नाम ग्राम कूं पवित्र करत भये हैं ।। तहां एक रमणीय कुंड हतो जाको जल बहुत शुद्ध है और वा गाम में वैष्णव कोउ कबहू नहीं नजर आयो और काहु ने कछु भगवद्नाम सुन्यो नहीं हतो ऐसो सो बहिरमुख गाम हतो तहां हू श्री आपकी कृपा शक्ति सूं प्रेरणा कियो भयो महता कुंवर श्री आपकी शरण कूं प्राप्त होतो भयो है ।। और वाकूं श्रीजी हू अपने नाम उपदेश सूं कृतार्थ ही करत ही करत भये हैं ।। तब खल्हेण नाम ग्राम में पधारते भये हैं ।। तहां श्री गोस्वामीजी के असंख्य ही सेवक गायन करत और आदर सहित प्रणामन कूं करत हर्ष सूं पूर्ण होयके अपने जन्म कूं सफल मानत ही प्रभुन के सन्मुख ही आवते भये हैं ।। तब विनमें अपने तात श्री गोस्वामीजी के संबंध सूं दयालु होयके श्रीजी कृपा सूं प्राप्त होयवे वारे अपने दुर्ल्लभ स्वरूप कूं प्रकाश करिके विन सगरेन कूं और विनकी स्त्रीन कूं हू अत्यन्त अपनो ही करत भये हैं ।। और इन वैष्णवन में भाग्यवान कितने एक वैष्णवनं के घरन में हू श्रीचरण कमल के धारण करवे सूं विन घरन कूं और विनके सीरन कूं हू कृपा सागर श्रीजी अत्यन्त सुगंधी वारो करत भये हैं ।। या प्रकार तब तब तहां तहां विन विन भक्तन सूं तैसे तैसे रस सागर कृपानिधि श्रीजी लीला कूं करत विन विन जीवन कूं कृतार्थ करत और कठिन जीवन कूं दृवीभूत करत और शुष्क जीवन कूं अत्यन्त सरस करत शीतल होय रहे जीवन कूं के श्रीजी के विरह रस सहित जीवन कूं अत्यन्त पावन के विरह रस कूं दान करत और जे अत्यन्त विरह सूं तप्त हैं विनकूं अपने श्री अंग के संयोग सूं अत्यन्त शीतल करत और जे प्रसर रहे हैं विनकूं संकुचित करत और जे संकोच वारे हैं प्रसारण करत और जे चल रहे हैं विनकूं स्तब्ध करत और अत्यन्त चंचल करत और सगरे भक्तन में सदैव मर्यादा रहित और अविधि रहित श्रृंगार सार सर्वस्व रस के और करुणता के समुद्रन कूं सदैव ही वर्षा करत और परमानन्द रूप महामणीन के पर्वतन कूं जिनके योग्यता रूप हाथ हू नहीं हैं ऐसे जनन सूं लुटवावत और ऊपर साधन रूप चरण रहित जनन कूं चढ़ावत और जे आंधरे हैं, अलौकिक ज्ञान रहित हैं विनकूं अपनी लीला दर्शन करावत और जिनके हाथ नहीं हैं के अयोग्य हैं विनसूं अपने सेवकन

कूं करावत और जे मूक हैं आपके स्वरूप कूं वर्णन करवे में समर्थ नहीं हैं विविस हू अपनी स्तुति करावत और जे पंगु हैं साधन रहित हैं विनकूं हू पर्वतन पे चढ़ावत के परम अत्यन्त स्वरूपानन्द संबंधी हर्ष दान करत और जे वधिर हैं अयोग्य हैं विनकूं अपनो यश सुनावत, और जे दरिद्री हैं विनकूं धनी करत वा प्रकार सगरे जीवन कूं कृतार्थ करत और सगरे जीवन के प्रति अपनी अपनी अभिलाषा अनुसार सर्व रस को दान करत श्री करुणा सागर प्राणनाथजी महानगर कूं वड़नगर कूं प्राप्त होते भये हैं। सो या वड़नगर कूं हू तैसे रसात्मक प्राणपति शोभित करवे कूं इच्छा करत भये हैं और या प्राणप्रिय के दर्शन अर्थ सगरे ही जन या वड़नगर सूं बाहिर ही प्रिय श्रीजी के आगे आवते भये हैं ॥ कामदेव सूं हू सुन्दर है श्री अंग जाको ऐसे पधार रहे वा प्राणपति कूं सुनके सर्व भक्त स्त्रीगण अपने अंगन में भूषण कूं धार करिके मिलि मिलि के अपने अपने घरन सूं निकसती भई हैं ॥ सो नम्र प्रेमी जीवन के अर्थ कल्प वृक्ष रूप औरजनों के जो जीवन रूप और कामदेव सूं हू सुन्दर है कांति जिनकी ऐसे प्रिय जब पधार रहे हैं तब वेग सूं मत्त गज गामिनी जे परम सुन्दर स्त्री जन हैं श्रीजी के दर्शन अर्थ जो विनकूं बाहिर निकसवो है तासूं सो पुर बहुत शोभायमान होतो भयो है ॥ तामें और धारण किये हैं सगरे देह में भूषण जो सुन्दर जामें और वेग सूं मेरे प्रिय श्रीजी की है दर्शन की लीला सों जाकूं ऐसी जो कोऊ एक सुन्दर नयन वारी हैं सो नयनन में अंजन सूं रंजन कूं करत के काजर कूं लगावत विलंब होयवे सूं विन नयनों के विस्तार कूं आक्षेप करत भई हैं के हां हां आज तुमारो विस्तार तो काजर लगायवे में हू प्रिय के दर्शन में बिलंब करे है सो युक्त नहीं है ॥ और भारी जे नितंब और कुच कुंभ हैं विनके भार सूं शिथिल होय रह्यो जो वेग सूं चलनो है तासूं विरक्त होय रही और तासूं चारों ओर प्रसर्यो है क्रोध जामें ऐसी सुन्दरी हैं सो जो और चरणन कूं व्याकुल भ्रूअ सूं देखत भई हैं के प्रिय के दर्शन मे तुम काहे कूं दुःख देवो हो के तुम तो वेग सूं चलो तैसे प्रिय के दर्शन के साहस सूं श्रृंगार कूं न करिके हू घर सूं निकसी भई हैं और सुन्दरी पुर वासी जनन सूं भर रहे मार्ग में विस्तार वारे और खुले हैं के राजा के और मंद है चलनो जाके ऐसी सो सुन्दरी चपल होय रहे हैं नयन जाके, ऐसी होय जाती भई हैं ॥ के दर्शनार्थ देहानुसंधान सूं रहित होयके विकल होय रही है के कब

दर्शन होय तामें चन्द्र सूं है सुन्दर मुख जाको ऐसी कोई ध्यान के अर्थ उद्यम वारी भई है तब गुरु जनन सूं नगर कूं पधार रहे सो ध्यान किये विना गुरु जनों के भय सूं बाहिर नहीं निकस सके है ॥ तब या श्रीजी में जो याकी प्रीति है सो प्रीत ही नयन रूप कलसान सूं स्नान जितनो जल चहिये वितने जल कूं वेग सूं देवत और तापमय अंग वस्त्र सूं वा सगरे कूं वेग सूं पोंछत ही सगरे सखीगणन सूं हू यह प्रीत रूप सखी श्रीजी के दर्शन में वाधक कूं वेग सूं निवर्त करवे सूं या सुन्दरी कूं अत्यन्त ही प्रिय होय जाती भई है ॥ और लग्यो जो गुरुजनन कूं भय रूप कंटक है तासूं कछुक कमती होय रह्यो है वेग जिनको ऐसे मंद गति वारो होय रहे हैं चरण जाके ऐसी जो कोई एक सुन्दरी हैं सो अपने भाग्यन सूं मन सूं हू आगे प्राप्त करि है के मनोरथ सूं हू अधिक सुख कूं प्राप्त भई हैं जासूं याकी सशंक मंदगति है तासूं याके मध्याभाव सूं वश किये श्रीजी याकूं बारंबार हू देख रहे हैं ॥ सो सुन्दरी वा प्रिय को दर्शन करिकें जे गुरुजन यामें भय कूं करत भये हैं ॥ विनकूं यह अत्यन्त ही सराहना करत भई है ॥ जासूं वा प्रिय को मन या रसिकवर प्रिय के स्वरूप सागर में मग्न होय रह्यो है सो गुरुजनों के भय सूं मिल्यो होय जो निश्चय सूं युक्त है, योग्य है ॥ जासूं मध्य भाव रसिकराय कूं अधिक सुखकारी है ॥ और तैसी नायका कूं विशेष रसदायक है सो तो अनुभवैक वैद्य है ॥ और अपने प्रिय के दर्शन अर्थ अत्यन्त उत्साह वारी हू जो कोई एक सोतन है के कोमल अंगन वारी सुन्दरी है तैसे लोगन के सम्रद्ध में प्रिय को दर्शन करिवे में समर्थ होय सके ? अपितु नहीं होय सके ॥ परन्तु भाग्यवान वारे जो या सुन्दरी के पक्ष में है वे यदि याकूं सर्व सूं ऊपर विराजमान होयवे वारे मार्ग सूं नहीं प्राप्त करे तो कदापि नहीं होय सके है ॥ सो या सकुमारी के भाग्यन सूं प्रगट होय रही चपलता सुन्दरता सूं वश भये श्रीजी दूर सूं हू याकी ओर देख्यो है ॥ तासूं सर्वोपर मार्ग सूं या प्रगल्भा सुन्दरी कूं प्रिय को दर्शन भयो है ॥ सासू ने जो रोकनो है, सो दृढ़ी निडर होयके कि दृढ़ सांकल है सो जाकूं को का उपाय सूं हू के बड़े यत्न सूं टूट पर्यो है ऐसी जे कोई सुन्दरी है सो सगरे लोकन सूं पीछे ही चली है ॥ तासूं सो प्राणप्रिय के दर्शन अर्थ प्राप्त होय ? किन्तु नहीं होय सके ॥ परन्तु यदि गमन योग्य जो मारग है वाको जो भेद है दूसरो मार्ग है सो यदि लोगन में कियो जोनत है के प्रणाम

है वामें श्रीजी के घोड़ा कूं वन्दन ही करे तो कैसे दर्शन कूं प्राप्त होय सके ? कहा के जब श्रीजी मार्ग में प्राप्त होयवे लगे हैं फेर वामें स्थित लोगन ने प्रणाम जो करी है तासूं घोड़ा हू चलिवे में स्थिर होय गयो है ।। सो सर्व सूं पीछे चली हू सो सुन्दरी श्रीजी को दर्शन आछी रीति सूं हू कर लेती भयी है ।। और कोई एक कमल नयनी प्राणेश्वर श्रीजी के पीछे वेग सूं दौड़ रही है ।। अत्यन्त ऊंचे और अत्यन्त पुष्ट अपने वक्षस्थल में प्रगट होय रहे जा कुच रूप कनक कुंभन कूं वेग सूं चलिवे में वाधा करिवे सूं निन्दा परायण होती भई फेर जब श्रीजी विनकूं बारंबार ही देखते भये हैं ।। तब तो विन कुचन के कुंभों के ऊपर अपने स्वरूप कूं हू वारती भई है के यह महा धन्य है जिन पर श्रीजी रीझ रहे हैं तैसे और एक सुन्दरी प्रिय के पीछे दौड़ रही है सो वेग सूं चलिवे के वेग में वाकूं मुक्तामय मनोहर हार जब टूट जातो भयो है तब शोभायमान होय रही और सुन्दरीन के बीच में वा सुन्दरी की श्रीजी में प्रीति रूप जो सैरन्ध्री है सो वेग सूं वा चन्द्रमुखी कूं ऊँचे स्तन देशों में सात्विक भाव सूं प्रगट भये पसीना संबंधी जल के बिन्दुन की पंक्ति रूप तिस हार सूं शोभायमान करत भयी है ।। और तैसे अलौकिक शोभा वारी होयवे सूं अत्यन्त प्रफुल्लित होय रहे वा श्रीजी के नयनन सूं वा चन्द्रमुखी कूं बारंबार पूजन करावती भई है ।। के अपने में ऐसी भाववारी वा सुन्दरी कूं श्रीजी बारंबार ही देखते भये हैं सो सुन्दरी धन्य है ।। और तैसे सुन्दरी कहैं हैं के हे स्फुरते वामें हू है फरक रही मेरी वाम दृष्टि यदि या तिहारे शुभ शकुन सूं श्रीजी मेरे द्वार कूं पधारेंगे तो हौं तब जाला सूं चिरपर्यन्त तुम सूं ही वा श्रीजी कूं भली प्रकार देखूंगी ऐसे निश्चय कूं करिके जो सुन्दरी वा श्रीजी के पधारवे की प्रतीक्षा सूं ही बड़े उत्साह सहित स्थित होती भई है ।। सो तब वाके द्वार में ही स्वयं प्राप्त भये हू श्रीजी कूं यद्यपि सो सुन्दरी वाम दृष्टि सूं ही दर्शन करती भई है तथापि वाकूं अल्प हू क्षति न होती भई है ।। तासूं सो परम चतुर सुन्दरी वा वाम दृष्टि सूं हू जो अपने कूं वा श्रीजी को दरशन करावती भई है, सो का क्षति होय के याकी वाम दृष्टि सूं अत्यन्त प्रसन्न होयके श्रीजी वा सुन्दरी कूं देखते भये हैं । के यह सुन्दरी तो परम चतुरा है ।। और चन्द्रमा कूं हू निन्दा करिवे वारो है सुन्दर रूप जाको ऐसे श्रीजी के श्रीमुख में जे सुन्दरी नयनों कूं धारण करती भई है ।। सो सुन्दरी काम के हजारन बाणन सूं भेद कूं प्राप्त होय

रहे तासूं व्याकुल होय रहे मन कूं धारण करती भई है के वाको मन काम के हजारन बाणन सूं व्याकुल होय जातो भयो है ।। और शत्रुन कूं हू मित्र रूप करिवे वारी है स्थिति जाकी और स्वजन हू जाके सन्मुख होयके दुःख सूं हू देख सके है सो पुर कूं प्रवेश कर रहे जगत्पति श्रीजी की ऐसी कांचित के अनिरवचनीय श्री विग्रह को अलौकिक कांति प्रगट होती भई है ।। और नम्र होय रहे जे प्रेम वारे सज्जन हैं विनोंने सभ्रम सूं जाको सत्कार कियो है ऐसे बड़े यश वारे प्रियवर श्रीजी हैं ।। तैसे बड़े वेग सूं पवन कूं हू जाने कंपायमान कर दियो है ऐसे श्रेष्ठ घोड़ा कूं नचावत और अधिक कुमोदिनीन सूं जैसे होय तैसे मृगनयनीन के चंचल नयनों के प्रसरण सूं अद्‌भुत होय रह्यो जो सो पुर है वाकूं धीरे धीरे देखत और नाना प्रकार के रूप वारे तोरणन सूं होय रही शोभा जामें और ऊंचे होय रहे मनोहर रंभान के स्तंभन सूं हू अधिक होय रही शोभा जामें ऐसे वा पुर कूं घर घर में श्रेष्ठ भक्तन की जे गज गामिनी हैं विनके मुख बिंबन के संगम सूं शरद ऋतु संबंधी चन्द्रमा रूप है कपाटिका जामें ऐसे सिद्ध होय रहे हैं जाला जामें ऐसे वा पुर कूं निश्चय सूं मानते भये हैं ।। के घर घर में ही सुन्दरी गण जाला में मुख कूं धारण करके जो श्रीजी को दर्शन कर रही हैं सो शरद तासूं ऐसे प्रतीत होय है के या वडनगर के जे जाला हैं सो शरद चन्द्रमा जामें कपाट रूप होय रह्यो है ऐसी है ।। और बहुत है गुण जिनमें और उदार है बुद्धि जिनकी और आद्रत किये हैं सगरे बुद्धिमान जिनोंने ऐसे जनन सूं जो चारों ओर सूं वेष्टित है और देवतान की पुरी कूं विजय करिवे वारी है संपदा जामें ऐसे वा पुर कूं सगरे लोक जाके आगे प्रणाम करें हैं ऐसी सो प्रिय श्रीजी प्रवेश करत भये हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले अष्टदशम तरंग समाप्तम् ।।१८।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग एकोनवीश ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ एकोनवीश स्तरंग लिख्यते ।।१९।।

श्लोक -- **अथ श्री विठ्ठलहरेः ।। सवकेन सुबुद्धिना देवजी महथारव्येन नीतः प्रेयान्स्व मंदिरः ।।१।।**

याको अर्थ -- तब श्री विठ्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी को सेवक जो देवजी मेहता है सो प्रिय श्रीजी कूं अपने मन्दिर में पधरावतो भयो है ।। और तहाँ हर्ष लीला समुद्रन कूं दान करिके जे भक्त विरहाग्नि सूं तप्त हते विन विनकूं सिंचन करत महाराज श्रीजी विराजमान होते भये हैं ।। और श्रीजी के स्वरूप माधुरी रूप रज्जुन के समूहन सूं भीतर बाहिर दृढ़ बांधे हैं और अत्यन्त खिंचे भये पुरुष और स्त्रीगण हू तहां आय आयके बहुत प्रकारन सूं प्रणाम कर करके और कृपासागर श्रीजी के चरणकमल संबंधी भूमि में विविध प्रकार की भेट सुवर्ण माणिक्य मुक्ता वस्त्राभूषण अमूल्य तिस तिस वस्तु कूं और अनार, केला आदि कूं हू समर्पण करिके बड़े प्रेम सूं मिले भये वे सगरे ही दासी भाव कूं प्राप्त होते भये हैं ।। और सो श्रीजी विन भक्तगणों के प्रेम सौंदर्य भक्ति आदर नम्रता कूं और सेवा विनय संतोष दासी भाव तैसे तत्परता और कोमलता कूं और रस कूं और तैसे और और हू गंभीरता आदिक तिस तिस बहुत गुणन कूं विचार रूप तुला में चढ़ाय के विनकूं तोलत हू व्यग्र होयके श्रीजी निश्चय सूं हृदय रूप हाथ सूं विनकूं विशेष सूं नहीं देखते भये हैं के कितने प्रमाण हैं, विनको प्रमाण होय तो देखे ।। और विनमें कितनीक जे भाग्यवारी है जे प्रिय श्रीजी में प्रेम वारी है सो अपने पतिन कूं बहिरमुख मानके विनकूं हृदय सूं त्यागकें एकान्त में रसपति श्रीजी कूं प्राप्त होयकें आपके हास्य भाव कूं अपने में सिद्ध करत भई है ।। और अपने नयन कूं कंठ पर्यन्त ही श्रीजी के स्वरूप रूप निस्तुष सुधा सार के हू सार रूप समुद्रन के समुद्रन कूं पान करावत भई है ।। और कानों कूं या श्रीजी के प्रिय वचन रूप और हाथन कूं श्री आपके चरण सवाहन रूप निस्तूष सुधा सागर के हू सार रूप समुद्रन के समूहन कूं

पान करावती भई है ॥६५॥ तैसे और हू जे भाग्य वारी हैं वे श्रीजी के गुणन सूं वस होयके द्वार को मन्दिर के महल के अग्रभाग में गवाखा जाली के बिंबर आदिकन में अपने मुख कमलन कूं प्रकाशमान करके वा श्रीजी के रूपामृत को पान करत भई हैं ॥ और जे तहां भलीबाई और राजबाई हतीं यह दोनों तो सगरी मृगनयनीन में अत्यन्त श्रेष्ठ हतीं ॥ और सम्पूर्ण सर्वात्म भाव सूं सेवा रस कूं जे धारण कर रही हैं विनमें हू जे अत्यन्त श्रेष्ठ हती और रूप शील गुण प्रेम लज्जा और श्रीजी में आशक्ति सूं अत्यन्त मिली भई ॥ और पवित्र आचार वारी धन्य जन्म वारी तैसे प्रेम लक्षण वारी और सगरे जगत कूं तृण जैसे मानत और क्षणभर हू या श्रीजी को वियोग कूं न सहेन करिवे वारी वे दोनों हू बड़े हर्ष सूं सर्वात्म भाव सूं इहां प्रियवर श्रीजी कूं अनुसरण करती भई है ॥ सो इनकी श्रीजी में आशक्ति कूं सूचना करत भटजी एक प्रसंग कहें हैं के प्रभुन के निकट रहिवे वारे मालजी पंचोली काश्मीर सूं जब प्रभु श्री गोकुल में पधारे हैं वाके अनन्तर कबहू प्रभुन सूं पूछतो भयो है के हे श्री गोकुलेश महाराज पुरुषोत्तम यदि राजबाई भलीबाई के जीवन में के प्रगट बिराजमान अवस्था में इनकूं उहां छांड़िके श्री आप का काश्मीर पधारते तो इनकी का दिशा होय जाती ? यह सुनिके वाके प्रति प्रभु कहत भये हैं के इनकूं छांड़िके काश्मीर कूं हम जाते हू नहीं ॥ सो या प्रकार को इनको वृत्तांत है सो बड़ो विस्तार वारो है सो और ग्रन्थन में प्रगट कह्यो है ॥ भाग्यवारे जीव तहां सूं ही जानेंगे ॥ जा आगे को वृत्तांत सुनो ॥६६॥ के कितनी एक अपार सुन्दरी अधिक होय रहे भाव के भार सूं तैसे प्रताप कूं सहेन करिवे में न समर्थ होयके आपस में या प्रकार सूं विचार करत भई है ॥ के जे हमारे भक्ति रूप सूं प्रसिद्ध है, सो वे तो महापापी हैं और कठोर चित्त वारे और जासूं विनकी दृष्टि अपने दोष सूं आच्छादित होय रही है तासूं या रसिकवर श्रीजी कूं जो जाके समान हू और नहीं है ॥ और जासूं अधिक हू और नहीं है ॥ और जाके ऊपर करोड़न अर्बन प्राण वारणे करे ऐसे जाकी चरण कमल संबंधी रज को अणुं है ऐसे जो यह रसात्मक और सगरे गुणन सूं पूर्ण कृपासागर स्वरूप है वाकूं प्राप्त होयवे में यह समर्थ नहीं है ॥ जासूं यह आंधरे हैं, और मत्सर वारे हैं तैसे अहंकारी हैं ॥ और कहें हैं के जगत में अत्यन्त कठिन है ॥ और वा वज्र सूं हू लोहा कठिन है ॥ तासूं हू वज्र कठिन है ॥ और

वा वज्र सूं हू जे नगर है, नगरवासी पुरुष हैं वे महा कठिन हैं ।। और कहे है के जो कालिमा के श्यामता पापन के खंभु होवे है, और जो कालिमा अद्यतम के समूह होवे है और जो अपयश के समूह होवे हैं और जो कलंक के समूह में है, और जो कालकूटों में है, और जो कालिमा पिशुन को पुरुष के भीतर है, और कालिमा पंक में हू निश्चय करी है सो सगरो कारोपनो जे श्री गोकुलनायक श्रीजी सूं विमुख पुरुष है विनके ही मुख में आछी रीति सूं प्रगट होय रही है ।। और कहे हैं के प्रथम तो यह होय के जन्म हू मति होय, और यदि जन्म होय तो वामें संग न होय, यदि संग हू इहां होय तो दुष्टन को संग न होय ।। और यदि दुष्टन को संग होय तो जिनकूं श्री गोकुलेशजी के संग द्रोह करिवे सूं सगरो सर्व विस्मरण होय गयो है विनके संग तो कबहू संग न होय ।। और कहे है के अपने तन में प्रिय श्रीजी के स्मरण करवे सूं निश्चल जड़ीभूत होय गयो है मन जाको ऐसी जागृती वारे पुरुष, को भाग्यवान जीव को शरीर है, सो रोम हर्ष वारो होय रह्यो है ।। और नयन हू आनन्द जल के सहित होय रहे हैं वा श्रेष्ठ पुरुष कूं तुम धारण करो और जे भार रूप पुरुष हैं जे यम के लोक में नरक में गमनागमन परायण हैं ।। विनसूं कहा है केवल दुःख हू है ।। ऐसे कहत फेर हू विह्वल होयके कहे हैं के सो हम कहा करें, कहां जांय और का सूं पूछें और का प्रकार सूं याकूं प्राप्त होवें ।। और हमारे प्रति यामें हित कूं को उपदेश करे ।। और का करिके हम सुखी होयें और यामें हमारो सहायक को होय ।। और या अर्थ में का कूं अंतरंग हम बनावें और हमकूं या प्रिय के श्रीमुख रूप पूर्ण चन्द्र की चन्द्रकान सूं को अत्यन्त शीतल करे ।। हौं विना प्रयोजन के शत्रु रूप वा श्रीजी के विरहाग्नि सूं हम प्रज्वलित होय रही है ।। और जो हमकूं भस्म हू नहीं कर डारे है ।। सो अब सर्व कूं त्यागके या प्रिय के शरण जायके यह प्रिय तो सर्व समर्थ वारे हैं सो हमकूं दुष्टन सूं छोड़ावेंगे और हमारी दृष्टि कूं सुन्दर अपने स्वरूपामृत के स्वरूपन कूं पान करावत तहाँ अपनी दासी बनायके हमकूं सदैव ही अपने चरणन की छाया में ही स्थापन करेंगे ।। अथवा यह प्रिय तो सर्व मर्यादा के रक्षक हैं सो हमकूं साथ नहीं ले जांय हैं तासूं हम तो श्री आपके दास्य में अयोग्य हैं ।। और निर्गुण है और दुष्ट संबंध सूं दुखित है ।। और तैसे भाग्यवारी हू नहीं है सो हमकूं का अर्थ प्रिय ले जायेंगे ।। और यह दीखवे के पति हैं

यह तो पापी हैं, दुष्ट हैं और मूर्ख हैं, और निर्लज्ज हैं तासूं प्रिय श्रीजी के तैसे रस रूप चरणन में दंडवत प्रणाम कूं करिके अभाग्यन सूं ग्रस्त होय रही हम सगरीन को उपायन रूप हू नहीं कर देवे हैं ।। अथवा जिन दुष्टन कूं मन कोमल नहीं है ऐसे इन दुष्टन के दंडवत प्रणामादि कहू प्राणनाथ श्रीजी कहा अंगीकार करेंगे ? कबहू नहीं करेंगे ।। जासूं सो हमारो कहां कैसे काहे सूं कब कहा करेंगे ।। यह दुष्ट कबहू कछु नहीं कर सकेंगे तासूं जहां सो हमारे प्रिय गुणनिधि श्रीजी भीतर प्रवेश करवे में चतुर, प्रसरे ही हैं उज्ज्वल कीर्ति जिनकी जैसे में मंद हास्य पूर्वक अवलोकन रूप हस्त है विनकूं मो सरीखेन में मन के शल्य कूं आछी रीति सूं उद्धार करत विहार कर रहे हैं, सो हम तहां ही चलें ।। अथवा यह हमारे प्रिय तो परमेश्वर महाराजाधिराज हैं, सर्व मंगल करिवे वारे हैं और सगरे अवतारन के हू अवतारी जाकी कृपा दृष्टि कूं प्रार्थना कर रहे हैं और सगरे भक्तन कूं जिवायवे वारे हैं ।। और सुन्दर मनोहर स्वरूप वारे हैं ऐसे प्राणनाथ प्रभुन को जो द्वार है सो तो सर्व सूं सेवा योग्य है ।। वहां तो अनेक प्रकार के ही पुरुष स्त्री भक्त विराजमान हैं तासूं वा द्वार में हमारो प्रवेश नहीं संभवे है ।। तासूं अब तो जहां साधुजन रहे हैं ऐसे सरोवर में चलें के जहां संध्या वंदन लीला के अर्थ पधारे भये वा रस सागर प्रियतम श्रीजी कूं हम दर्शन करें ।। और अपने जन्म कूं सफल कर ।। और ग्रीष्म ऋतु संबंधी प्रचंड सूर्य की किरणन के समूह जैसे जाको सहन नहीं होय सके ऐसो अंग अंग में उदय होय रह्यो जो ताप है वाकूं श्रीजी के श्री अंग संबंधी शोभा रूप सुधासार के जे तैसे महासागर हैं विनसूं दूर करे ।। के ताप कूं मिटावे या अभिप्राय सूं वे सगरी सुन्दरी हैं तिस तिस मिस सूं जा महा सरोवर में जाती भई हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले एकोनबीश तरंग समाप्तम् ।।१९।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग वीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ वीशमो स्तरंग लिख्यते ।।२०।।

शलोक -- **यज्जलां मरकतो पद्म प्रभर्मग्र गौरव पुष्पो ।। मृगेक्षणः स्मारियंति निकयोप लार्पिता ।। ज्ञातकुंभ कमनीय रेखिका ।।१।।**

याको अर्थ -- मरकत मणि के तुल्य है कांति जाकी ऐसे जा सरोवर के जल में मग्न होय रह्यो है गौर स्वरूप जिनको ऐसी जे मृगनयनी हतीं सो वे कसवटी में अर्पण करी सुवर्ण की मनोहर रेखा को स्मरण करावे है ।। के तिस जैसे जल के भीतर हू शोभायमान होय है ।। और जा सरोवर में मज्जन कर रही जे चन्द्रवदनी हैं वाके अंग संबंधी कुमकुमन सूं जल हू जहां राग वारो होय जाय है तहां तैसी सुन्दरी के ऐसे.स्वरूप में रसिकवर राग वारो होय जाय यामें कहा आश्चर्य है ।। और जा सरोवर में स्नान सूं आशक्त होय गयो है के शरीर में एक रूप होय गयो जिन जोवन वारी स्त्रीन के हृदय को वस्त्र है वामें जल की बूंदन सूं चंचल होय रहे जे कुच द्वैय हैं विनके देखवे सूं जहां चक्रवाक पक्षी के मैथुन कूं अपने कुल के विचार सूं के यह हू हमारी कुल के चक्रवाकी है या प्रकार सूं आश्चर्य होय है ।। और जा सरोवर में स्नान करवे सूं एक रूप होय गयो है ।। सुन्दर वस्त्र जामें औरन सूं लज्जा कर संकोच कूं प्राप्त होय रह्यो जो अपनो शरीर है वाकूं अपने शरीर संबंधी दूर प्रसर रही किरणन के समूहन सूं आच्छादित करिकें सो सुन्दरी जल सूं बाहिर तहां तीर कूं आछी रीति सूं ही प्राप्त होय रही हैं ।। ऐसो सुन्दर सरोवर है ।। सो वा सरोवर में वा प्रिय श्रीजी कूं न प्राप्त होय के न समर्थ भईं थकी वे मृगनयनी वा प्रिय की केवल स्मृति सूं ही प्रकाशमान और दूर होय गयो है नीचे देहादि कूं अनुसंधान जामें ऐसी अवस्था कूं प्राप्त होयके चढ़िवे वारे तापन कूं प्राप्त होती भई हैं ।। और या अवसर में लता रूप जो अबला हैं, सुन्दरी हैं विनकूं नचायवे में और गुरु रूप और पद्मन की सुगंधी के भार कूं धारण करिवे वारे जो शीतल मंद सुगंधित पवन हैं सो विन पूर्ण चन्द्रमुखीन कूं शीतल

करिवे लिये है मानो मंद मंद गति सूं विनके समीप आवतो भयो है ।। और प्रगट भये भाव के भेद सूं अत्यन्त शिथिल होय रहे हैं अंग जिनके ऐसी विनके थोरे से हू ताप कूं दूर करिवे में सो तैसो पवन समर्थ न होतो भयो है ।। किन्तु सो पवन विनके वस्त्रन के गिरायवे में कारणताकूं हू प्राप्त होय जातो भयो है ।। तब तो कछुक प्राप्त भयो है बाहिर के अर्थ कूं अनुसंधान जिनमें ऐसी वे सुन्दरी प्रिय के विना जीवन सूं कहा प्रयोजन है, या विचार सूं वा सरोवर में वेग सूं गिरती भई है ।। सो अगाध्य है के थोरो है जल जामें ऐसे वा सरोवर में डूब जाती भई हैं ।। रितु साहस सूं वेग सूं तहां प्राप्त भई जो या प्रकार की उत्कंठा है के को जाने सो सर्वज्ञन के मुगटमणि रूप हमारे प्रिय यहां संध्यावन्दन के अर्थ पधारे हू हैं ।। जासूं अब तो या संध्यावंदन को समय ही है ।। सो इहां पधारे भये प्रिय कूं दर्शन करिके पीछे जो कर्तव्य होयगो वाकूं करेंगे ।। या प्रकार जो उत्कंठा है सो विनकूं बल सूं बाहिर निकासती भई है ।। और विनकूं तब तहां तैसे तैसे तब प्राणनाथ श्रीजी यह जानके हू तैसे आपके अर्थ अत्यन्त व्याकुल होय रही विन सुन्दरीन के प्राणादि कूं रक्षा करवे अर्थ संध्योपासन के मिस सूं शुद्ध हृदय वारे दो तीन अंतरंग भक्तन सूं मिले भये ही करोड़न चन्द्रमान सूं हू कातर महाराज रसिकराय भगवान अपने अर्थ तैसे क्लेश कूं प्राप्त होय रही विनको निमर्याद रस और करुणा के समुद्रन सूं मिली भई दृष्टि सूं चाहना सहित देखते ही तहां प्रगट होते भये हैं ।। तब विनसूं दर्शन को जो दिन कूं शेष हू महाताप को कारण हतो सो और अत्यन्त प्रज्ज्वलित अग्नि में तप्त होय रहे कढ़ाह में तेल रूप कूं व्याप्त होय रह्यो जे वा सरोवर को जल हतो, सो और फण वारे दुष्ट नाग के फुत्कार कूं प्राप्त होय रह्यो जो पवन हतो सो, और कालकूट के गुटिका रूप प्रतीत होय रहे जे भौंरा हते, सो, वे, और क्रोध वारे काल को मुख और शरीर समूह कूं प्राप्त होय रह्यो जो क्षणांकर चन्द्रमा और कमल समूह हते वे, यह सगरे हू तब श्रीजी के तहां पधारवे में तैसे वा श्रीजी के श्रीमुख चन्द्रमा की प्रसरी भई किरणन के समूहन सूं चन्द्रका भाव कूं प्राप्त होय जाते भये हैं के महा शीतल सुखदायक करते ही प्रतीत होते भये हैं ।। जैसे जिनोने रात्रि में ऐसो निरधार कियो है के या अंधकार कूं तो लाखन हू सूर्य दूर नहीं कर सकेंगे सो जब तो सूर्य उदय होय है तब तो यह अंधकार हतो ई नहीं ऐसी विनकी बुद्धि होय है

तैसे विन सुन्दरीन कूं वा तलाब के ऊपर श्रीजी के बिना जे महा दुःखदायक प्रतीत भये हते सो श्रीजी के तहां पधारवे में सगरे हू सुखदायक ही प्रतीत होते भये हैं यह भाव है ।। और जब श्रीजी के पधारवे सूं सो सरोवर सहसा ही हर्ष के समुद्र भाव कूं प्राप्त होय जातो भयो है ।। तब यह सुन्दरी है वामें अत्यन्त ही तरती भई है ।। और अपने मनमें नाचती भई है ।। और अपने नेत्र रूप हाथन सूं वा प्रिय के श्रीअंग संबंधी सुधा के समुद्रन कूं पान कर रही है और वा प्रिय श्रीजी ने जे और अर्थ की मिस सूं प्रिय वचनामृत प्रगट किये हैं विनकूं कान रूप चलुकन सूं पान कर रही है और उच्छल्लित होय रहे वा हर्ष समुद्र संबंधी तरंगन के समूहन सूं सहसा निश्चय सूं प्रेरणा करी भई हू वा प्रिय के अत्यन्त निकट हू पधार रही है ।। और सखीन के सिंचन के मिस सूं वा प्रिय कूं फेंकी भई जल की बूंदन रूप मुक्तान सूं वा प्रिय कूं श्री अंग में तहां तहां चतुराई सूं बारंबार अलंकृत कर रही है नेष्टा विशेष सूं के अपने भाव की विशेषता सूं श्रीजी जल रूप कूं और अपने मीन रूप कूं सूचना करिके क्षण मात्र हू वा जल रूप श्रीजी के वियोग कूं न सहेन करिवे वारे अपने स्नेह भाव के सूचन करिवे सूं वा श्रीजी में कठोरता कूं सूचन कर रही है ।। और श्रीजी हू विनकूं मंद मुसकान रूप अमृत सूं अत्यन्त सिंचन कर रहे हैं ।। और तैसे स्नेह रूप है मधु जामें ऐसे कटाक्ष रूप जे चित पंकज है विनसूं पूजन कर रहे हैं ।। और जो उत्कंठा प्रथम विरहाग्नि के ताप सूं डूब रही इनकूं वेग सूं ही आयके बल सूं प्रेम सहित इन सुन्दरीन कूं रक्षा करत भई हैं ।। सो जल सूं उन्मंजन करवे सूं के अत्यन्त प्रिय श्रीजी के ऐसे लाभ रूप बड़े उपकार के करिवे वारी वा उत्कंठा में प्रपन्न होवत वे सुन्दरी अपने आत्मा कूं धारण करत भई हैं, के नोछावर करत भई हैं ।। तब सुन्दरवर प्रिय श्रीजी तीन बार आचमन कूं करत वाके मिस सूं तुम सूं मैंने मन कर्म और वाणी सूं भीतर धारण कियो है ऐसे सूचना करत भई हैं ।। और प्राणायाम कूं करत यह सूचना करत भये हैं के मैंने तुमकूं अपने हू ऊपर स्थापन कियो है ।। और तीन बार अर्घ्य कूं देवत यह सूचना करत भये हैं के तुमारो संशय और क्लेश को भार मैंने नाश कर दयो है ।। तुम वाके प्रति जलांजली कूं दे देवो और तिस तिस कूं भावना करत यह सूचना करत भयो है के हौं तुमको ध्यान करूं हूं ।। और तिस तिस कूं भावना करत यह सूचना करत भये हैं

हौं तुमकूं हू ध्यान करूं हूं जप करूं हूं ॥ और तिस तिस कूं पठन करत करत यह सूचना करत भये हैं के हौं निरंतर तुमकूं ही कीर्तन करूं हूं और गायत्री को जाप करत हूं और ठाड़े भये थके श्रीजी यह सूचना करत भये हैं के तुम प्रेमवारीन के आगे उठिके ठाड़ो भयो हूं ॥ और बारंबार भ्रमण करत यह सूचना करत भये हैं के तुमारे रसमय सागर के आवर्त में हौं अत्यन्त भ्रमण करूं हूं ॥ और वन्दना करत यह सूचना करत भये हे के तुमारे प्रेम कूं हौं वन्दना करूं हूं ॥ क्यों जो तिहारो प्रेम मोकूं हू वश कर लेतो भयो है ॥ सो या प्रकार सूं सूचना करिके सो रस सागर श्रीजी विन सुन्दरीन कूं अत्यन्त समाधान करत भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले ढ्वेश तरंग समाप्तम् ॥२०॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग एकवीश ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ एकवीश स्तरंग लिख्यते ॥२१॥

श्लोक -- **अथ प्रस्थातु कामोपितन्माधुर्य स्तथा विधैः ॥ हिये माणेक्षण मनोरसज्ञो रसिकाग्रणीः ॥१॥**

याको अर्थ -- याके अनन्तर प्रस्थान की इच्छावारे कूं रसज्ञ, रसिक शिरोमणि श्रीजी विनके तैसे माधुर्यन सूं हर्यो है दृष्टि और मन जाको ऐसे सो प्रिय प्रस्थान करिवे में सामर्थ न होते भये हैं ॥ और वे सुन्दरी तो अब प्रिय श्रीजी उहां सूं पधारेंगे सो को जाने कब का प्रकार सूं कहा हमारी दृष्टिन कूं मिलेंगे ॥ तासूं परमानन्द के समूहमय सर्वांग सुन्दर या प्रिय कूं हम एक वार तो वेग सूं आलिंगन कर लेवें ॥ या प्रकार सूं उछल्लित भई जो उत्कंठा है जो इहां स्थित होय रहे जे तैसे तैसे स्त्री पुरुष हैं विन सगरेन कूं बल सूं शयन कराय रही है ॥ और हम तो साहस रूप एक ही वस्त्र वारी हैं ॥ सो हम कैसे बाहिर निकसें या प्रकार जो इनकी बुद्धि है विनकूं हू शयन कराय रही हैं ॥ के उदय नहीं होवे देवे हैं ऐसी वा उत्कंठा सूं वा जल सूं वेग सूं बाहिर निकसती भई हैं (और तहां प्रगट भयो ऐसो रस रूप जो विनकूं निवारण स्वरूप है वाके रस कूं जानवे

वारी वा दृष्टि सूं आस्वादन करत जे प्राणनाथ हैं वा प्राणनाथ के जे हजारन चिन्तामणि के समूह हू जिनके चरणन की रज के कणिका में हू डारे ऐसे प्रगट भये रस रूप विलास हैं विनसूं उछलित भई सो प्रीति है सो विन सुन्दरीन में उदय भये वा स्तंभ कूं धारण करत भई हैं ।। के वेग सूं प्राप्त भयो और बढ्यो भयो और वेग पाणी जैसे के पहेरेदार जैसे नवल और दुर्निवार जो स्तंभ है सो हां हां तुम या श्रीजी की कृपा दृष्टि सूं अत्यन्त प्रगल्भ होयके और उन्मद होयके परमेश्वर की सगरी मर्यादा की सांकल कूं हू तोड़के न तो स्थान है और न अवसर है ।। और यहां दुष्ट पुरुषन को समाज हू है यामें तुम कहा दौड़ रही या प्रकार क्रोध वारी होयके बल सूं ही इनकूं रोक देतो भयो है ।। और सर्व सूं अत्यन्त बल वारो जो वा प्रिय कूं रूप है सो यदि विन सुन्दरीन के बल सूं आकर्षण करिके केवल अपनेपन नहीं करतो तो अपने प्रतिबिंब सूं हू अत्यन्त चिर पर्यन्त आस्वाद योग्य और वा प्रिय की रस दृष्टि सूं सर्व के ऊपर विराजवे वारे भाव कूं प्राप्त कियो जे निरावरण तैसो विनको रूप हतो वाकूं प्राणनाथ श्रीजी साधारण जनन की दुष्ट दृष्टि सूं दूषित ही कराय देते ।।) और या प्रकार की लीला सूं उहां विलंब हू कर रहे हैं ।। और जाके श्रीमुखचंद्र की छवि के कण पर हू करोड़न प्राणन कूं नोंछावर करे, ऐसे जो श्रीजी हैं वा प्रिय के दर्शन अर्थ रहे जे करोड़न हजारन सूं हू अधिक वे वे भक्ति वारे भक्त हैं विनकूं जो सर्व प्रकार सूं न उल्लंघन करिवे योग्य अनुरोध हैं, अनुसरण हैं के विनके अनुकूल वर्तनो है तासूं प्रगट भई जो वा प्रिय की प्रतिष्ठा है सो वेग सूं बाहिर कूं अनुसंधान और लज्जा और तैसे उद्यम रूप कूं धारण करिवे वारी होयके विन सुन्दरीन में अत्यंत प्रवेश करिके सखी जैसे ही इनसूं विन वस्त्रन कूं पहेरावती भई है ।। के जे वस्त्र क्षण मात्र हू इनके अंगन सूं दूर होयवे कूं समर्थ नहीं होय है ।। प्रथम तो जे वस्त्र विनके रूप में लोभी जे श्रीजी हैं केवल वाके अर्थ ही विन सुन्दरीन के अंगन सूं दूर होयवे कूं सहन करते भये हैं ।। ऐसे विन वस्त्रन कूं पहेरावती भई हैं तब वाके अनन्तर विन प्रियान कूं फेर काल ही सर्व प्रकार सूं मिलेंगे ।। सो अब तो अपने अपने घर को जावो या प्रकार दृष्टि विशेष सूं स्नेह सहित श्रीजी सूचना करिके और विनके सगरे अर्थ सिद्ध करिवे के लिये विनमे अपने मन कूं विनियोग करिकें सो याके अनुसंधान करी भई विन प्रियान कूं दृष्टि सूं आज्ञा करिके रस सागर कमलनयन श्रीजी पीछे मुख करिके बारंबार विनकूं देखत ही विनके मन सहित

सर्व इन्द्रीयन कूं संग ले करिके अपने घोड़ा राज पे असवार होयके जय जय जय जय शब्दन की परम्परा कूं कहे रहे हे अपने भक्त जनन सूं मिले भये ही सो प्रिय श्रीजी अपने देश के मार्ग कूं शोभायमान करत और विन मार्ग के जीवन कूं हू कृतार्थ करत प्रस्थान करते भये हैं ॥ तब डेरा वारे भक्त वैष्णव स्त्री पुरुष सर्व ही आपके आगे उठिके आवते भये हैं ॥ तब प्रिय अपने डेरा में पधारे हैं ॥ तब वे रस रूप सुन्दरी तो श्रीजी ने जे कृपामय उछल्लित श्रृंगार रस के सार समुद्रमय जे सुख भाव अनुभव कराये हते तादृश विन भावन कूं प्राप्त भई निधि कूं रंक जैसे तैसे तैसे अत्यन्त विभावन करती के मन सूं विनकूं अनुभव विचार करती वा श्रीजी के वियोग सूं प्रगट भये महा संताप रूप अग्नि कूं शांत करती और सर्व कूं हू दुर्ल्लभ केन्द्र प्राप्त होयवे वारो और जाके चरणन संबंधी रज के कणिका यह हू करोड़न हजारन अर्बन निधि हू वार डारे ऐसे जो स्नेह सहित वा श्रीजी ने अर्पण कियो मन है ॥ सो या श्रीजी के मन कूं हृदय रूप वस्त्र में धारण करिके वामें हजारन ग्रन्थि देकर मार्ग में नीचे ऊँचे संवलित होती और गिरती और आंधरे जैसे न देखत ही कहूं मार्ग कूं हू छोड़के चलत और ईश्वर की इच्छा सूं शून्यता सू आकाश हू उछल्लित भई के प्रिय के विनियोग सूं अत्यन्त शून्यमय होयके वे मृगनयनी बड़े भाग्यवारी सुन्दरी बड़े यत्नन सूं ही अपने घर कों ही प्राप्त होती भई हैं ॥ या प्रकार तीन दिन पर्यंत डेरा में और वा सरोवर में और तहां तहां मार्ग में हू सो प्राणनाथ श्रीजी रूप महामेघ अछिन्न धारा ही विन विन श्रृंगार रस सागरन कूं वृर्षा करिके और तैसे भाव वारो विन विन सुन्दरीन कूं हू तैसे तैसे समाधान करिके रसात्मक आगे वसिवे वारी भक्त स्त्री गण हैं विनके प्रबल भाग्य रूप पवनन सूं आकर्षण करते भये, सो श्री प्राणनाथ रूप मेघ आगे पधारते भये हैं ॥ अहो श्री प्राणनाथ प्रिय श्रीजी कूं जो स्वरूप है सो महाबलवान् है ॥ जो स्वरूप तैसी सुन्दरीन कूं हू अपने वियोग्नि के हजारन सूं प्रज्ज्वलित होय रहे शरीर वारी हू करें हैं ॥ और विनको समाधान हू करें हैं ॥ और विनकूं मनायके अपनाय के आगे हू पधारे हैं ॥ सो वाकी बड़ाई कहा पर्यंत करे ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले एकबीश तरंग समाप्तम् ॥२१॥

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग वावीश ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ वावीश स्तरंग लिख्यते ।।२२।।

श्लोक -- **गत्वा वीशल नगर संज गामा सोग संज्ञक ग्राम तत्र व्यराज तालं गेहे वैकुंठ जोय सिकस्य ।।१।।**

याको अर्थ -- वाके अनन्तर विशाल नगर में पधार के फेर यह श्रीजी आसोग नाम ग्राम कूं प्राप्त होते भये हैं तहां वैकुंठ जोशी के घर में अत्यन्त शोभा सूं विराजमान होते भये हैं ।। और कन्हाई बाई भक्त के घर हू सो प्रिय श्रीजी विराजते भये हैं ।। वसई नाम के ग्राम में बहुत ही श्रेष्ठ भक्त रहे हैं ।। वामें हू जे वस्तिया नाम वारे हैं और अत्यन्त स्नेही सारंग भक्त हैं वे आपके दर्शनादि सुख कूं तहाँ अनुभव करते भये हैं ।। और सेवा हू करते भये हैं ।। और गोझारिया नाम ग्राम में पधारके वहां के जीवन कूं सो करुणा सागर श्रीजी नाम उपदेश सूं अत्यन्त कृतार्थ करते भये हैं ।। और भक्त श्रेष्ठ वा पुरुषोत्तम के खल्हेण नाम ग्राम में पधारकें वा लक्ष्मीदास कूं जो घर है वाकूं चरणन के धारण करिवे सूं अत्यन्त सुगंधित करते भये हैं ।। तब लाघणज नाम ग्राम में रहिवे वारे भक्तन कूं पावन करिके सभाउ नाम ग्राम में दामोदरदास कूं पावन करते भये हैं ।। और श्री कृपासिन्धु श्रीजी परम रसिक देवजी कूं कृतार्थ करते भये हैं ।। तासूं आगे सो प्रिय श्रीजी धणी और बाबरा नाम ग्राम कूं पधारके तहां अजण जाति वारे गोविन्ददास की विज्ञप्ति कूं मानके तहां अमूल्य विभूषण रूप होते भये हैं ।। और वा गोविन्ददास कूं कृतार्थ करिके वान्हा देश में स्थित जो छाला ग्राम है वामें हू श्रीजी पधारते भये हैं ।। तब वहां को निवासी राजसीय महेतो गोविन्ददास है सो प्रणाम कर करके विज्ञापना करिके अपने घर में पधराय ले जातो भयो है ।। तब वाकूं भोजनादि सूं शयनादि सूं अत्यन्त कृतार्थ करत भये हैं ।। और वाके घर में प्रभून के योग्य भोजन लीला में उपयोगी शाक दधि दूध भात दार आदि बहुत ही सामिग्री होती भई है ।। तासूं प्रसन्न होय रहे प्रिय को दर्शन करिके प्राप्त भयो है, अपार हर्ष सागर में निमग्न भाव,

जाको ऐसो सो महाभाग्यवान महेतो गोविन्ददास एकांत में अपनी माता सूं पूछतो भयो है ।। (के हे मात मेरे घर में तो प्रभुन के भोग योग्य कछु ही सामग्री नहीं है ।। सो मेरे ऊपर प्रभु कैसे प्रसन्न होंयगे ।। या प्रकार अत्यन्त संदेह वारे मैंने कोउ पुरुष सूं कोउ प्रकार सुन्यो है के प्रभु तो गोविन्द मेहेतो के घर में पधारेंगे ।। सो सुनिकें वेग दौड़ के प्रभुन के निकट विज्ञापना करिके अपने घर में पधरावतो भयो है ।। सो तुम तो अपने घर में प्रभुन के पधारने कूं जानत हू नहीं हती ।। ऐसी तुम भाग्यवती तुमने बहुत दूध दही मयी सामग्री को प्रकार सूं सिद्ध करी है, सो मोकूं कहो ।. ऐसे वा पुत्र सूं पूछी भई और वा श्रीजी के चरणकमल स्मरण सूं उदय होय रही है हर्ष की अश्रुधारा जामें ऐसी सौभाग्यवती वाकी माता वा पुत्र कूं कहेत भई है के गुजरे दिनन में शयन कर रही मोकूं सो प्राणनाथ श्रीजी पधारकें प्रेम सहित कहते भये हे के हे भद्रे, काल दिन तिहारे घर कूं पधारूंगो ।। सो बहुत दूध को संग्रह करिकें मेरे अर्थ वेग ही दही कूं सिद्ध करियो ।। और हू भोग्य योग्य तिस तिस वस्तुन कूं सिद्ध करियो ।। ऐसे आज्ञा करिके फेर प्रभु अंतरध्यान होते भये हैं ।। सो कृपालु वा श्रीजी ने जो साक्षात ही स्वप्न के मिस सूं कह्यो है ।। सो वा वचन सूं सत्य ही विश्वास करत हों उठिके पुरुषोत्तमन के समूह के हू मुगटमणि या प्रभुन कूं दंडवत प्रणाम करिकें भोजन योग्य सामग्री कूं संग्रह करिवे में हों निश्चय कूं करत भई हो ।। सो यह सामग्री तो या प्रभुन की अप्रतिहत के कोई सूं हू न दूर होयवे वारी महाप्रवल इच्छा सूं ही वेग सूं सिद्ध भई है ।। ऐसे या प्रकार माता के मुख कमल सूं निकसे भये वचनामृत कूं कान रूप अंजुलिन [illegible] पान करके सो गोविन्द जी मेहतो वा माता कूं दंडवत प्रणाम करत भयो [illegible] ।। और दोनों में ऐसे हू धारण करि रहे वा प्रभुन को हू दंडवत प्रणाम करतो भयो है ।।)• सो परम दयालु प्रभु श्रीजी अपनी वात्सल्यता सूं वा गोविन्दजी के ऊपर अनुग्रह करिके वाके घर में ठहेरके तासूं आगे प्रस्थान करत भये हैं ।। तब खेरोलन सूं ईदु ग्राम के निकट प्राप्त भये हैं प्रिय प्रभुन कूं त्रिवाडी जी विज्ञापना करिके अपने घर में पधरावतो भयो है ।। श्रावण मास की शुक्ला एकादशी में तहां सो प्रिय करुणासिन्धु श्रीजी पवित्रा उछव कूं अनुभव करत भये हैं ।। फेर द्वादसी के दिन मोटीया ग्राम कूं अपने सूं शोभायमान करत भये हैं ।। तहां कृपासागर श्रीजी गुलाबी उपरेना पाग कूं प्रसादी करिके वाकूं

वा त्रिवाड़ी के अर्थ वाके घरन कूं गोविन्द रेव्हल कूं पठावते भये हैं ।। सो हू कृतार्थ होयके बड़े हर्ष कूं प्राप्त होतो भयो है ।। (वा ग्राम में प्रथम कोउ धणीयोर नाम भगवदी रहेतो हतो ।। सो भगवान के नित्य निवास रूप गोकुल कूं उद्देश करिकें चल रहे और ववरा ग्राम वासी वैष्णवन के संग कूं सुनिकें भगवान में बढ़ी है भक्ति रस जाकूं ऐसो सो भगवदीय हू तहां गमन करिवे को इच्छा करत भयो है ।। तब वाको पिता अत्यन्त निवारण करत भयो है ।। सो निवारण कियो हू जब चलिवे लग्यो है तब वाको पिता अत्यन्त क्रूर हतो सो भवन के भीतर वाकूं रोककें दरवाजे में दृढ़ कपाटन कूं यद्यपि लगाय देतो भयो है ।। तथापि सो भगवदी रात्रि के समय में वा घर कूं विदारण करिके वेग सूं हू निकस जातो भयो है ।। और तहां बसिवे वारे कोऊ चंडाल कूं अपनो व्रत सुनाय के सहायता के अर्थ वाकूं संग में लेकर सो बड़े वेग सूं रात्रि में ही चार योजन के ऊपर निवास कर रहे विन वैष्णवन के वा संघ कूं आयके तहां मिलतो भयो है । और वा संघ के संग ही श्री गोकुल कूं प्राप्त होतो भयो है ।। या प्रकार भगवान मे प्रेम सूं श्री गोकुल में प्राप्त भये वाकूं सुनिकें प्रसन्न चित्त भये थके प्रभुन के पिता श्री गोस्वामीजी कृपा सूं दिये भये गोपी नाम सूं वाकूं हर्ष सूं अनुग्रह करत भये हैं ।। के वाको गोपी नाम ऐसे श्रीमुख सूं कहेते भये हैं जासूं सो श्री गोस्वामीजी वाके भाव कूं गोपिकान के भाव जैसे विचारते भये हैं । और वा दिन सूं लेकर सगरे लोक हू याके संग आदर सहित गोपी भाई ऐसे शब्द सूं व्यवहार करत भये हैं ।।) अब तो सो गोपी भाई स्वजन बंधु मित्रन के सहित बाजे सूं और गान नृत्य बहुत स्तुतिन सूं सहित आपके आगे आयके प्रभुन को दर्शन करिकें अत्यन्त प्रणाम कूं करिकें आपके कृपापात्र सेवक भक्तन के मुख द्वारा दीनता सहित विज्ञापना करिकें प्रभुन कूं अपने घर में पधराय ले जातो भयो है ।। और वाके घर में शाक, दूध, दधि, भक्ष्य, भोज्य चूष्य लहेज्य और हू विविधि सामिग्री होती भई है ।। सो हरपति भट ने जब रसोई सिद्ध करी है और जब पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी भोजन लीला कूं करत भये हैं तब वा गोपी भाई कूं सगरो पदार्थ प्रभु के उपयोग में आयो है ।। और प्राणनाथ श्रीजी तहां शुद्ध हृदय वारे वा भक्त के विविधि मनोरथन कूं पूरण करत भये हैं ।। सो या भाग्यनिधि रूप गोपीभाई के स्वरूप कूं कहेवे में को बुद्धिमान समर्थ होय सके ? अपितु कोउ नहीं होय है ।। जासूं

जो गोपीभाई या रस सागर प्रभुन को दरसन करिकें या गीत को कबहू विस्मरण करत भयो है ॥ और दिनरात्र या गीत कूं प्रेम सूं गायन ही करत ही स्थित होतो भयो है ॥ सो यह गीत है के --

''नयणां मीठां माहरा नाथ तणां, वाहलो दीठडे अमीय ढरे देह मांहे ॥''

यह गुजराती भाषामय गीत है याको अर्थ हौं कहूं हूं सो सुनोगे के (मेरे प्राणनाथ के जे नयन कमल हैं सो वे अत्यन्त मधुर हैं ॥ सो वा प्रिय के दरशन करवे में मेरे शरीर में हू अत्यन्त सुधा निवास करे है ॥) और कबहू या गोपी भाई के मुख सूं कोउ भक्त या गीत कूं सुनकर विनोद सहित या गोपी भाई सो कहेत भयो है के प्राणनाथ के नयन ही कहा मधुर हैं और हस्त कमल मधुर नहीं हैं का, मुख कमल मधुर नहीं है का, या वचन कूं सुनिकें वाकूं गोपीभाई कहेतो भयो है के सत्य है ॥ श्री प्राणनाथ को सर्वांग मधुरमय ही हैं ॥ तथापि वे नयन तो अत्यन्त मधुर हैं ॥ सो मैंने अपने अनुभव अनुसार ही कह्यो है ॥ सो या प्रसंग कूं सुनिकें और जे उत्कृष्ट मृगनयनी सुन्दरी हतीं वे हू या प्रिय श्रीजी ने प्रथम सिद्ध कियो जो अपने में अनुभव हतो वाके अनुकूलता सूं या गोपीभाई के या गीत को अनुसरण करिके कहेती भई है के जो गोपी भाई ने कह्यो है सो सर्व प्रकार सूं सत्य ही है ॥ यद्यपि अत्यन्त प्रिय प्राणनाथ के और अंग हू मधुर हैं तथापि जे नयन हैं वे तो अत्यन्त विशाल हैं और कमल की शोभा के ऊपर हू हांसी कूं करें हैं ॥ के महा शोभायमान अत्यन्त मधुर हैं ॥ जासूं नयन सूं यह प्रिय रस के भार भरी कमल नयनी सुन्दरीन के वस्त्रादिकन सूं छिपे भये और अत्यन्त छिपावने योग्य हू सगरे अंग कूं क्षण सूं वेग ही देख लेवे है ॥ अपने वश कर लेवे है ॥ और जिन नयनों सूं प्रेरणा करवे सूं जब वे सुन्दरी श्री आपके चरण कमलों में प्रणामन कूं करे हैं तब रसिकवर उछल्लित प्रेम सूं वाके स्थिर होय रहे शिर कूं श्री हस्त कमल सूं ऊंचो करत कपोलन कूं स्पर्श करें हैं ॥ और कितने एक सुन्दरीन के तो तहा कपोलन में नखदान हू करें हैं ॥ सो या प्रकार ऐसे विन सुन्दरीन के वचन कूं सुनिकें तहां स्थित जे सगरे भक्त हते सो वे हृदय सूं अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं ॥ और रसिकन के शिरोमणीन सूं हू पूजनीय हैं चरण कमल जाके सो ऐसे प्राणनाथ प्रभुन कूं भक्ति सूं प्रेम सूं आदर सूं हू बारंबार प्रणामन कूं करत भये हैं ॥ सो वा गोपीभाई के घर में कृपा सूं और हर्ष सूं भोजन

लीला कूं करिकें सगरे गुणन सूं पूर्ण जे गोकुलाधीश भगवान हैं सो तहां भक्तन ने आछे परम कोमल उज्ज्वल बिछोना सूं सिद्ध करी जो हर्ष शय्या है वाके ऊपर विराजमान होयके ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्ल्लभ है कणका जाको ऐसी विश्राम लीला कूं करत भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले वाबीश तरंग समाप्तम् ॥२२॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग त्रयोविश ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ त्रयोविश स्तरंग लिख्यते ॥२३॥

श्लोक -- **श्री गोकुलेश्वराणां सामर्थ्य तोतप्पधिकं एतद्लीला सिंधावस्तीदं सुभ्रवः कटाक्ष द्रवः ॥१॥**

याको अर्थ -- सुन्दर जाके भ्रुअ हैं ऐसी मृगनयनी की समर्था अपने सूं कटाक्ष में जैसे अधिक होय है तैसे श्री गोकुलेश्वर प्रभुन की जो सामर्थ्य है सो सर्व प्रकार सूं अधिक है ॥ सो आपके लीलासिन्धु में तो यह सामर्थ्य है सो सर्व प्रकार सूं हू अधिक है ॥ याके अनन्तर बलवान अपने भाग्यन सूं के या प्रिय की ही कृपा सूं या प्रिय के अपने निकट पधारवे रूप वृत्तांत कूं तहां तहां विन विन भक्तन सूं तैसे तैसे वे वे भक्त सुनिके और तब तब परमानन्दमय या वृत्तांत कूं सुनायके निरन्तर कृतार्थता कूं प्राप्त कराय रहे जे वे वे भक्त हैं विनके प्रति तिस तिस सगरे अभिलषित पदार्थन कूं हू देकरिके और विनके अपने कूं निरन्तर अधमर्ण भाव कूं के विनके निरन्तर रुणी भाव कूं हू अपने में सदा स्वीकार करिके जैसे जैसे स्थित रहे तैसे तैसे ही वे सगरे प्रफुल्लित होय रह्यो है मुख जिनको और बढ़े भये उत्साहसिन्धु के कल्लोलन सूं प्रेरणा करे भये वे सगरे ही तिस स्थान सूं वेग सूं हू प्रस्थान करत भये हैं ॥ के विनमें हू कितने एक तो ध्यान करि रहे हैं ॥ सो वे ध्यान कूं त्यागकें और कितने एक भोजन कर रहे हते सो वे भोजन कूं त्यागके तैसे और वस्त्रन कूं और विविधि बहु मूल्यवारे भूषणन कूं पहेर रहे हते सो विनकूं त्याग के

तासूं और हू तिस तिस अपने कर्म कूं सर्व प्रकार सूं त्याग के और जे आवश्यक कार्य कर रहे हते विन आवश्यक कार्यन कूं हू त्याग के अधिक कहा कहें के अत्यन्त तृषित भये हू जल कूं हू अत्यन्त त्याग के हर्ष सूं अत्यन्त पूर्ण होवत ही स्त्री पुत्र कलत्र कन्या जन और पिता माता दास भ्रत्य भ्राता भगिनी आदिकन सूं सहित ही और कितने एक तो विनके सिवाय ही श्री गोकुल के सार्वभौम वा प्रियवर को दर्शन करिवे कूं प्रेम सूं हू वे सगरे प्रस्थान करत भये हैं ॥ और चारों तरफ अहमदाबाद ऐसे नाम सूं प्रसिद्ध जो राजनगर है वामें स्थित जे जन हैं प्रायः वे और स्तंभ तीर्थ शब्द सूं प्रसिद्ध जो खंभात है, वामें स्थित जे जन हैं और नागर खंड सूं प्रसिद्ध जो धोलका नाम पुर है वामें स्थित जे जे जन हैं और तैसे अन्य अन्य गामों में हू स्थित जे जन हते वे हू सगरे तहां आवते भये हैं ॥ और नगर में स्थित जो भक्त प्रवर चाचा हरिवंशजी हते सो हू आवतो भयो है ॥ और असारवा गाम में स्थित जो भाईला कोठारी और हरजी कोठारी और श्रीमान त्रीकमदास कोठारी यह तीनों भाई हू आवते भये हैं ॥ और सिकन्दरपुर में रहिवे वारो सो विट्ठल महेता और लखी भाई और सो कसुं भाई और मुरारीदास को पुत्र कृष्णदास और राजपुर में रामदास सो भाई जी ऐसे शब्द सूं प्रसिद्ध है, और सारंगपुर में रहिवे वारो खोखा, खीमा और खांडीया गाम में निवास करिवे वारो भक्तन में श्रेष्ठ प्रसिद्ध है जो मावजी शिवजी है और जो सर्व में प्रसिद्ध विष्णुजी है और राम नाम वारो है और सो, मलूकचन्द और कुंमरजी और मांगजी तैसे लाभपुर में रहिवे वारो सारस्वत परमानन्ददास और खंभात में रहिवे वारो माधवदास और जीउ भाई और धोलका वासी भक्तवर सो देवा भाई, और भक्तन में मुख्य नरसिंघदास को पुत्र श्री रामदास, कुंनप्पा के पुत्र जो प्रसिद्ध कृष्णदास है ॥ और अहमदापुर में स्थित जे भक्त हैं वे सगरे और बड़े बैद्यन सूं हू पूजनीय रूपपुर वासी सो सिंघ जी व्यास और सुन्दर बुद्धिवान प्रसिद्ध भक्त गोपाल दास और यवन सार्वभौम प्रसिद्ध अकबर है बाकूं दक्षिण सगरे देशन कूं अधिकारी जो बड़ो बलवान बड़े सुभट शूरवीरन कों स्वामी बुद्धिमान खानखानां है बाकौ दास जो अत्यन्त भक्त हो वा ठा० हरिदास पोतदार ऐसे पृथ्वी में प्रसिद्ध है सो ये सगरे ही प्रभुन के दर्शन अर्थ जाते भये हैं और कितने एक तो प्रिय के दर्शन अर्थ चलवे में अत्यन्त उत्साह वारे होय के हू बिन प्रभून के विविध लीला उपयोगी पदार्थन कूं सिद्ध

करिवे कूं तहाँ ही ठहरते भये हैं । बिनमें कितने एक तो रसोई घर कूं और कितने एक तो सयन घर कूं, और सभा घर कूं सुधा आदि सू धवल करिवे लिये और चित्रत करवे लिये ठहरते भये हैं । और कितने कितने एक तो वा प्रभुन के अर्थ सुगन्धित पुष्पमय मण्डप कू सजायवे अर्थ तहां ठहरते भये हैं। और कितने एक तो आपके आगे भेट करेवे योग्य महा अमूल्य अद्‌भुत वस्तुन कूं संग्रह करवे अर्थ ठहरते भये हैं । और कितने एक तो करुणा रूप जल के सिन्धु रूप होय कें और भक्तन कूं पठाय कें बिन द्वारा बा प्रिय के दर्शन रूप हर्ष के संभारन कूं पान करिवे अर्थ तहाँ ठहरते भये हैं । और कितने एक तो वा प्रभुन के पधारिवे कूं सुनिवे सूं भयौ जो हर्ष है वासूं बढ़िगयौ जो जड़ता है तासूं श्रृंखलित होयके बंधेभये ही तहां ठहेरते भये हैं और विन सूं अन्यतौ अत्यन्त उछल्लित तैसौ तैसौ दृढ़ भाव है बाके छिपायवे में समर्थ न होयकें तहां ठहरते भये हैं । तैसे और अमूल्य वस्त्रन सूं आपके पधारिवे के मार्ग कूं मंडित करवे कूं ठहरते भये हैं । और कितने एक तो वा मार्ग में रम्भा के स्तम्भन कूं लगायवे कूं और कितने एक तो गान के उपयोगी और नृत्य के उपयोगी और तैसे वाद्य के उपयोगी तिस तिस कार्य कूं करिवे अर्थ तहाँ ठहेरते भये हैं। तैसे और कितने एक तो प्रभुन के सेवकन के विश्राम के उपयोगी कार्यन कूं करिवे अर्थ ठहरते भये हैं । और कितनी एक भाग्यवारी तो चलिवे कूं इच्छा हू करत भयी हैं । परन्तु बिनकूं अधिक प्रेम सूं सो प्रिय श्रीजी हू वस सूं ही निवारण करते भये हैं। कै बहुत दूर है और बहुत भीड़ भाड़ होयगी तुम मति आऔ ऐसे आवने में विन कूं स्वप्नादि द्वारा निवारण करत भये हैं और कितनी एक सुन्दरी तो अत्यन्त प्रेम के प्रकर्ष सूं मिलके ही अपने मनोरथ अनुसार वा प्रिय कूं अमूल्य वस्त्रभूषणादि पहरायवे विचार करत तहां ठहरती भयी हैं । और कितनी एक तो आपकी सेवा कूं और आपकी तैसी आज्ञा कूं अपने प्रेम वारी विन विन सखिन कूं सिखायवे अर्थ तहां ठहरती भयी वा करोड़न कामसूं हू सुन्दर प्रिय को दर्शन करिवे अर्थ बिन सखिन के संग जायवे में समर्थ न होती भयी हैं । और कितनी एक सुन्दरी तो अपने प्रिय के पधारवे कूं सुनके हर्ष उत्साह सूं पूर्ण होयके वेग सूं पुलकित होयगये हैं अंग जिनके ऐसी वे नवयोवन बारी मृगनयनी और पूर्ण चन्द्रमुखी सुन्दरी गण अपने असूर्य फण्य भाव कू हू के सूर्य कू हू नहीं देखनो घर के भीतर ही रहनौ है ऐसे

पर्दा कूं हू तृण जैसे दूर करिकें श्रृंगार रस सूं भावित होयके भावना सूं तनमय होय के सगरे लौकिक वैदिक मर्यादा कूं उल्लंघन करिके वा श्रीजी के विन विन गुणन सूं आकर्षित भयी थकी सो वा श्रीजी के उत्साह कृपा प्रेम रस नाम वारे जे गुण हैं वे उत्तम घोड़ा है विन सूं वा प्रिय के मिलाप रूप रथन कूं वा प्रिय के मिलाप रूप अभिप्राय मय सारथी नाम चित्त जैसे होय तैसे भली प्रकार चढ़िकें अपने वा अत्यन्त प्रिय श्रीजी को दर्शन के अर्थ अत्यन्त आतुर होयके आपस में आलिंगन करत यह दिन धन्य है। और यह देह हू धन्य है और यह घड़ी हू अत्यन्त धन्य है और यह दृष्टि हू धन्य है और यह हमारौ घर हू धन्य है जिन सू वा श्रृंगार रस सर्वस्व सार की मूर्ति रूप प्रिय के दर्शन कूं हम प्राप्त होवेंगी। और हर्ष के समुद्रन कूं अत्यन्त वर्षा करि रह्यो और शरण कूं प्राप्त होय रहे भक्तन कूं धैर्य देवे वारे विन विन वचन न सूं गर्जना कूं कर रह्यो जो प्राणनाथ रूप महामेघ है वाकी हम विजुरी रूप होयेंगी या प्राकर भावना करत और वा प्रिय के दर्शन अर्थ अत्यन्त उत्साह सहित होयके क्षण कूं हू कल्प जैसे मानत और करोड़न सुन्दरी तो तहां श्रीजी के दर्शन कूं जाती भयी हैं।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले त्रयोवीश तरंग समाप्तम् ॥२३॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग चतुरवीश ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चतुरवीश स्तरंग लिख्यते ॥२४॥

श्लोक -- **कृत विश्रांम मीशेश मुत्थाय शयनोत्तमातृ भक्तेः। साधु समास्त्रीर्ण सत्सूक्ष्म मृदुवाससि ॥१॥**

याको अर्थ -- तहाँ ईश्वरन के ईश्वर जे श्रीजी हैं सो विश्राम कूं करिकें उत्तम शय्याजी सूं पौढ़ि कें भक्त गणों ने आछी रीत सूं बिछायो है श्रेष्ठ कोमल सूक्ष्म वस्त्र जाके ऊपर ऐसो जो अमूल्य श्रेष्ठ रत्न खचित कम्बल है वाके ऊपर तूल जैसे कोमल मण्डलाकार सुन्दर और मेघन के सम्बन्ध सूं प्रसर रहे जे

इन्द्र गोप हैं बिनके समूह जैसे जाकी शोभा है ऐसो जो सुन्दर ऊँचो उत्कृष्ट आसन है वाके ऊपर विराजमान हैं और पीछे धारण कियो जो मनोहर भारी उपधान है तकिया है बामें थोड़ो सो पीठ के भार कू धारण कर रहे और परमानन्द समूह में सर्वांग सुन्दर हैं और मुख की शोभा सूं अरबन पूर्ण चन्द्रमान कूं हू तिरस्कार कर रहे हैं। और स्निग्ध निर्मल श्याम जे केसन के समूह हैं बिन सूं मण्डित हैं। शोभायमान हैं और अष्टमी के चन्द्रकला जैसे भालपट्ट सू शोभित हैं। और शरद ऋतु के प्रफुल्लित कमल के दल जैसे विस्तृत नयन वारे है और कामदेव के धनुष जैसे प्रकाशमान मनोहर भ्रूअ कूं धारण कर रहे हैं और दाड़िम के बीज और हीरा तैसे नखन की पंक्ति कूं दन्तन की पंक्ति सूं विजय कर रहे हैं। और प्रसन्न है श्रीमुख जिनको और अंगुलिन में नाना विधि जे मणिगण हैं सो मानो प्रकाश मान बज्रन के जामे समूह हैं सो मुद्रिकान कूं धारण कर रहे हैं। और चरण कमलों में प्रगट पद्म ध्वजादि चिंह्नन कूं धारण कर रहे हैं और विजातीय खल पापी नीरस जन जामें प्रवेश नहीं कर सकें हैं ऐसो जो निद्रा ने कल्पना किये अत्यन्त सुन्दर रत्न मय मन्दिर है वामें विन विन प्रियतमान के संघ अत्यन्त विहार करिवे सूं प्राप्त भयो और नयन के प्रत्यक्ष होय रहो जो आलस है सो आपके तैसे स्वरूप के अनुभव सूं उदय भये प्रेम सूं ही मानो सर्वप्रकार सूं जा श्रीजी कूं अनुसरण कर रह्यो है। और तासूं हर्षन के भार सूं मानो अंग भंगन कूं कर रहे हैं और जंम्भा कर रहे हैं। तामें बिन सुन्दरीन के प्रेम सुधा रस कूं मानो पान करिवे अर्थ मुख कूं ही पसार रहे हैं। और बिनसुन्दरीन के बीड़ी के रस सूं लाल होय के अधरनकूं जो लाल प्रकाशमान रस स्वप्न में अत्यन्त पान कियो है बाके कटाक्षन की उछल्लित शोभा के मिस सूं दृष्टि द्वारा उद्यम न कर रहे हैं कि बाहिर प्रगट कर रहे हैं। और रात्रि में जाने जागरण कियौ है और विन सुन्दरीन के जूड़ा गूंथिवे में व्यग्र जो दोनों श्रीकर हैं विन सूं हर्ष सू सिर में उत्तम स्वरूप कर रहे हैं और विन सुन्दरीन कूं अपने में आसक्त जो मन है बाकूं मानो प्रेम सूं आदर सहित दोनों श्रीकरन सूं ले रहे हैं और कुम कुम तिलक की शोभायमान जे रेखा है सो सुवर्ण मय श्रेष्ठ वस्त्र रूप जाकी ऐसी और फेर उदय होय रहे जे विन सुन्दरीन के मनोरथ परम्परा है विन कूं जतायवे लिये मानो प्राप्त भयी तासूं प्रति सुदर्शन के, के वैरिणि सुन्दरीन के भय सूं कहां संकुचित होय

रही सगरी सुरती क्रीड़ा की साक्षी रूप रात्रि जैसे होय तैसे ही भ्रूअ के मध्य में अत्यन्त सूक्ष्म श्याम रेखा कूं धारण कर रहे हैं। कहां के कुम कुम तिलक के नीचे जो सूक्ष्म श्याम रेखा कूं धारण कर रहे हैं सो मानो स्वर्णमय वस्त्र वारी सूं सगरी सुरती क्रीड़ा की साक्षी रूप रात्रि ही प्रति सुन्दरीन सूं संकोच कूं प्राप्त होय कें बिन सुन्दरीन के फेर उदय भये मनोरथन कूं जतायवे लिये ही प्राप्त होय रही है। और विषय रूप जे तृणन के समूह हैं बिनके लाभ में लोभी मन वारे श्रेष्ठ भक्तन के मन हरिणन कूं कान रूप पाशन सूं मानो बांध रहे हैं। और श्रेष्ठ रत्न हीरा सूं जटित स्वर्णय शोभायमान कुण्डलों के छल सूं कानों में प्राप्त भयी अनुराग और गुणन के गणन सूं मिली भयी गौर स्वरूपवती सुन्दरी कूं हू धारण कर रहे हैं स्वप्न में प्राप्त करी जे कमल नयनी सुन्दरी है विनने किये जे चुम्बन हैं बिन सूं कपोल कूं स्पर्श करिवे वारे विनके लोचनन ने उपायन कियो कै भेंट कियो जो पुलक कुल है वाकूं दर्पण की शोभा कूं हू विजय करिवे वारे दोनों कपोलन में जागरण में हू कितने एक समय पर्यन्त आदर दे रहे हैं। और भ्रूअ तैसे मूंछ रूप जे भौरी है विनकूं कुण्डल सम्बन्धी श्रेष्ठ पद्म रागादि दीप्तिमय ऊपर नीचे प्रसर रही जे रस की धारा है सो पान कराय रहे हैं। और मुखरूप कमल सूं निकस रही जो सुगन्धी है सो बाके सूंघवे कूं मानो विस्तार वारी भयी और दृष्टी रूप दो नदी की सेतु रूप कूं धारण करत ज़ो नासिका है ऐसी नासिका कूं धारण करत हैं। और चन्दन अगर कस्तूरी कुमकुम कर्पूर कूं हूं दुर्लभ जे स्वाभाविक श्रीमुख सम्बन्धी सुगन्धी है बिन सूं भौरान कूं आकर्षण कर रहे हैं। और दन्त अधर और हस्त कमल सूं प्रगट होय रहे चरण पल्लव सूं हू प्रगट होय रहे जे तैसे कान्ति के समूह हैं जिन सूं अपने निकट अलौकिक श्रेष्ठ नदी सरस्वती को ही मानौ दर्शन कराय रहे हैं। और भक्तन के हजारन मनोरथन कूं पूर्ण करिवे वारे अपने श्रीहस्त चरण पल्लवन सूं अपने कल्पवृक्ष भाव कूं कह रहे हैं। और सुन्दर कण्ठ वारे हैं और सुन्दर जिनकी भुजा है तैसो मनोहर जिनको वक्षस्थल है और सुन्दर जिनको उदर है। और कल्पवृक्ष के लाल नवीन पल्लव जैसे शोभायमान हैं चरण की तली जिनके ऐसे प्रिय हैं और करोड़न काम की ही सौन्दर्यता कूं लवण रूप के क्षार रूप के अरुच उपजायवे वारी है शोभा जाकी, कहा कि जा श्रीजी की शोभा को दर्शन करिके करोड़न काम की शोभा

हू लोन जैसे लगे है और लीला सू ही विशुद्ध सच्चिदानन्दमय मनुष्य स्वरूप है और भक्तन सूं स्तुति योग्य और अमृत समुद्र के उछल्लित करिवे वारे पूर्ण चन्द्ररूप हैं। और तुलसी माला सूं शोभित हैं और पुण्य श्लोकन के शिरोरत्न रूप हैं। और करोड़न तापन कूं निवर्त करिवे वारे हैं और निर्दोष हैं और भक्त जनों के जीवन रूप हैं और श्रेष्ठ रस के सागर हैं और विचित्र लीला सूं कौतिक रूप हैं और शोभायमान कुन्द पुष्प जैसी हैं मन्द हास्य जाकी और सुन्दरीन की दृष्टि रूप कुमोदिनी के वन कूं प्रफुल्लित करिवे लिये चन्द्र रूप है। और सगरे शुभ के करिवे वारे हैं। और भक्त स्त्रीगणों के नयन कूं आस्वाद रूप है और पवित्र है श्रवण कीर्तन जाको कहा कि जाके नाम कूं सुननो और कीर्तन करिवो हू रस सम्बन्ध में योग्यता कूं करे है। और सगरे अवतारन के अवतारी हैं बिन कूं हू अत्यन्त दुर्लभ है कृपा दृष्टि जाकी और क्षणक्षण में ही अत्यन्त सुखदायक है और लीला सूं के विलास सूं शोभायमान होयरहे हैं विशाल सुन्दर मनोहर नयन जाके और तैसे तैसे गुणन के करोड़न सागरन सूं शोभित है श्री विग्रह जिनको और सौन्दर्य स्रार को सर्वस्व रूप है और सम्पूर्ण पुरुषोत्तम हैं और उच्छल्लित होय रहे करोड़न करुणासागर के लहरन के समूहन के हू समूहन सूं सन्ताप कूं शान्त कर रहे हैं और सगरे भक्तों में हर्षों के अपार सागरन के समूह कू दान कर रहे हैं। और कटाक्षन के चंचलता रूप अंकुशन सूं भक्तन के मन रूप मदवारी हस्तीनन कूं वश कर रहे हैं और अधरन के उल्लास कूं प्राप्त होय रहे जे अरबन करोड़न राग के सागर हैं विन सूं सगरे जगत कूं रंजित कर रहे हैं। और चरण सम्बन्धी रज के लेस कूं हू दर्शन करिवे वारे के स्पर्श करिवेवारे जनन सूं हू सगरे भूमिमण्डल कूं पवित्र कर रहे हैं और महासुन्दर तैसे भुजदण्डन की दीर्घता और विपुलता सूं सगरे भक्तन कू हू आकर्षण करिके अपने स्वरूप रस के हजार अरबन समुद्रन में ही प्रवेश कराय रहे हैं। और उछल्लित महाउदीप्त श्रृंगार रस सार के सर्वश्व रूप और तासू पुष्टि है और श्वेत श्याम तैसे लाल रंग वारे और अत्यन्त दीर्घ जे तैसे रसात्मक विशाल और कर्ण पर्यन्त विश्राम वारे नैनों के किरण हैं, निस्तूष और उछल्लित होय रहे हर्ष के समुद्रन के समूहन कूं बारम्बार वर्षा कर रहे हैं। ऐसे विन नयनों के किरणन सूं अनिर्वचनीय वेंणी नदी कूं प्रवर्त करिकें वामें मज्जन करिवे वारे सगरे जनन कूं पवित्र कराय

रहे हैं। और अपने पद कूं प्राप्त कर रहे हैं। और रसिक स्त्रीगणों के दृष्टिगोचर करी जो अत्यन्त निर्मल दर्पणों के हू विजय करिवे वारे कपोलन की शोभा है वासूं बिन कपोलों के चुम्बन अर्थ उछल्लित हर्ष के समुद्रन सूं बिन रसिक स्त्रीगणों में वर्षा करि रहे हैं। और कल्पवृक्ष के नवीन दल की लालिमा कूं विजय करिवे वारो जो अपनो अधर है वाके जे बिन सुन्दरीन के अधरन कूं स्पर्श कर रहे जे अत्यन्त दीर्घ किरणन के समूह हैं बिनसूं बिन सुन्दरीन में वा अधर के पान सम्बन्धी सुख के सागरन कूं वर्षा कर रहे हैं। और बड़ौ विशाल जो उरस्थल रूप कटाक्ष है और बड़े विशाल जे भुजदण्ड हैं विनकी जो शोभा है जो चारो और प्रसर रही है वा शोभा सूं जिन सुन्दरीन में अपने गाढ़ आलिंगन सम्बन्धी श्रेष्ठ हर्षों के अनन्त समुद्रन कूं प्रवृत्त करिकें सगरे जगत कूं निरन्तर रसमय ही कर रहे हैं। और अमृत के समुद्र जैसे प्रकाशमान और चारों और प्रसरवे वारे जे श्वेत गुंजामाला सम्बन्धी किरणें हैं विनसुं दुष्टन के अत्यन्त मलिन चित्त कूं अत्यन्त उज्ज्वल करिकें और इन भक्त सुन्दरीन के अत्यन्त उज्ज्वल हृदय कूं हू सदैव उज्ज्वल कर रहे हैं। और धोती सूं आच्छादित होय रही हू उछल्लित होय रही जो दोनों उर स्थलन की शोभा है तासूं विन सुन्दरीन के मन कूं वा प्रकार सूं रंजन कर रहे हैं। कै जा प्रकार सूं रति युद्ध के अर्थ और रंग कूं ही नहीं प्राप्त होय कें निरन्तर या रंग में ही रहे है और सगरे अवतारन के अवतारीन कूं जाके दर्शन के लवलेशहू दुर्लभ है और जो महा सुन्दरता वारी है और जो क्षणक्षण में ही करुणा समुद्रन के हू समुद्रन कूं वर्षा कर रहौ है और अप्रमेमय है प्रभाव जाकौ और सगरे मंगलमय हैं चिन्ह जामें और भक्तन के घर में पधारिवे अर्थ सर्वदा उत्साह वारौ चित्त जाकौ ऐसे जो अपने दोनों चरण कमल हैं विनकी जे रसना के बिना ही अपने गुणन को अत्यन्त वर्णन कर रही विविध रेखा है बिन रेखान सूं चन्द्रमुखिन के समूहन कूं अपने चुम्बन आलिंगन दर्शन रमण सूं हू सर्व प्रकार सूं निवर्त करिकें बिन चरणन के सर्वोपर विराजमान और सर्वसौभाग्य वारे विराजमान वेणुन के समूहों में विशेष सूं लुवित कर रहे हैं। और शोभायमान अमूल्य मनोहर कोमल अत्यन्त सूक्ष्म और उज्ज्वल जो परिधानीय वस्त्र हैं कै धोती है वासू और तैसे ही विराजमान उत्तरीय वस्त्र सूं कै उपरणा सूं शोभायमान है और ताम्बुल की मनोहर बीड़ीन कू बनाय कें प्रफुल्लित श्रीमुख कमल में अंगीकार

करं रहे हैं । और शोभायमान और चंचल होय रही है श्रीहस्त की अंगुली जिनकी ऐसे है कहा कि बीड़ी कूं उंगली के ऊपर चढ़ाय के भ्रमाय रहे हैं। रस विलास कूं सूचना करत अंगुलीनकूं चंचल कर रहे हैं यह भाव है ऐसे श्री गोकुलपति कूं सगरे वे भाग्य वारे भक्त दर्शन करत भये हैं । और वारंवार बड़े बड़े आदरन सूं दण्डवत प्रणामन कूं करत भये हैं । और प्रेम सूं विविध उपायन कू हू करत भये हैं और जै जै शब्द कूं करत भये हैं और तहाँ अपने कू हू वारते भये हैं । और तब अपने जन्म कूं सुफल मानते भये हैं और निवर्त होय गये हैं सगरे संताप जिनके ऐसे वे सगरे भक्त ही परमानन्द कूं प्राप्त होते भये हैं । तब श्रीजी हूं

आयात आयात ।। भद्रं ।। भद्रं ।। अस्तु अस्तु ।। प्रभ्रत प्रभ्रत ।।

यह जिनके अर्थ हैं ऐसे जे । आवो आवो ।। नीके नीके ।। पूरे पूरे ।। भयो भयो ।। ऐसे आदर क्षेम प्रणाम पूर्ति के जतायवे वारे और विन भक्तन में हर्ष के समुद्रन कूं वर्षा कर रहे जे शब्द हैं विन कूं कहते अत्यन्त दयालू कृपा सागर महाराज श्री गोकुलाधीश जी विन सगरे भक्तन कूं समाधान करत भये हैं ।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले चतुर्विंश तरंग समाप्तम् ।।२४।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग पंचविश ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पंचविश स्तरंग लिख्यते ।।२५।।

श्लोक -- **ते तस्य तांहशैरच्छ पीयूष वुद्धि जित्वेरेः वचोभिः शीतलीभूत सर्वागां प्रसन्नमुदः ।।**

याको अर्थ -- तब वा रसिक राय श्रीजी के तैसे उज्ज्वल अमृत के समुद्र कूं हू विजय करिवे वारे वचनन सूं शीतल भये हैं सगरे अंग जिनके और प्रसर रही है प्रसन्नता जिनमें ऐसे वे सगरे हाथन कूं जोड़ के प्रणामन कूं करिके बारंबार विज्ञापना कूं करत भये हैं । के हे राजाधिराज कोट्यच्चर्य पदाम्बुज,

शिरोमणे कहा के करोड़न राजाधिराज हू जिनके चरण कमलन कूं अर्च्चन करे हैं और शिरोमणी रूप हैं, ऐसे प्रभो हे नाथ आज ही हम कूं कुशल भयो है। और हे विभो आज ही हमारो जीवन सफल भयो है। और आज ही हमारे नयन हू धन्य भये हैं। और हमारे मस्तक कूं हू आज ही क्रतार्थता प्राप्त भयी है। और आपके अनुग्रह रूप सूर्य के उदय सूं आज ही हमारो भाग्य रूप कमल विकसित होय के दशों ही दिशान कूं अत्यंत सुगन्धित कर रह्यो है। और आज ही श्री आपुके चरण कमल की निकटता रूप महा पर्वत कूं आरूढ़ होय के हम सूक्ष्म सिद्धार्थ होय के जो गौर संर्षप है वासुं हू जो सूक्ष्म अर्थ है वा सगरे कूं देख रहे हैं। और हे कृपा भोंधि सहस्त्रार्बुद सागर के कृपा समुद्रन के हू हजारन अर्बुद सागररूप प्रभो आज ही हमारे अर्थ शत करोड़न अव्जन पूर्ण चंद्रमान के हू सिर पर विराजमान होयवे वारी है चरण कमल समंधी रेणु के कणिका जाके ऐसो जो अपनो श्रीमुख चंद्र है, वाकी चंद्रिकान सूं हमारी दशों ही दिशान कूं आपु वा शीतलता कूं प्रदान करत भये हो। के जो शीतलता तुमारे हू अनुभव के गोचर में नहीं है किंतु तमारे हुं अनुभवातीत है विलक्षण है शीतलता है। और हे ईश या प्रकार सर्व के शिरोमुकुट संबंधी प्रकाश के हु शिखर पर विराजमान होय वे वारो जो तिहारो दीन वात्सल्य है सो निमर्याद विहार करत ही अत्यंत उत्कर्ष सूं विराजमान होय रह्यो है। और हे प्राणेश तुमारे चरण कमलों के निकट रहिवे वारे कोऊ अणुंमात्र हूं के छोटे से हूं तिहारे सेवक के चरण कमलों की रज के हूं कण पर हुं अपने सगरे सर्वस्व कूं वारंवार वार के स्थित जे हम हैं सो ऐसे हमारे जो तैसे तुमारे गुण के ऊपर वारवे अर्थ दरिद्र उदय होय रह्यो है वाके सर्व प्रकार सूं उन्मूलन करिवे में वा दरिद्र कूं दूर करिवे में कहा आपहू समर्थ हो ॥ सो यह तो रहे परंतु हे ईश्वेश त्रैलोक्य मणिरूप अपने स्वरूप सूं हमारो नगर घर सगरे कूं आज ही विशेष शोभायमान करिये और तिहारे उच्चिष्ट खायवे कूं खुजारवारी होय रही जो हमारी रसना है वाकूं हुं विन हमारे घरन में पधारके अपने झूठन् को दान करिके समाधान करीये ॥ और अधिक कहा कहे के जो कछु हू हमारो है वा सगरे कूं हूं अंगीकार रूप हस्तसूं सर्व के ऊपर ही धारण करो। और हे करुणा रस सागर जो हमारो पुर श्रीमद् गोकुल भाव कूं प्राप्त होयवे अर्थ निंद्रा कूं अत्यन्त त्याग करत ही सदैव ही स्थित भयो है। सो हू अब आप

पधार के जब अपने स्वरूप सूं वाकूं शोभित करेंगे । तब तासु आनंदित होय के चरणन कूं पसार के निद्रां कूं करे और अपने सगरे सर्वस्व कूं हू गोकुल के अधीश जो तुम हो सो ऐसो हम हूं करे । के तुमारे ही अप्पर्ण करे, वाकूं हू अपनो करो । ऐसे वा प्रकार सूं प्रभुन के आगे सगरे ही भक्त विज्ञापना कर रहे हैं । सो विनकूं प्रभुन के आगे लखीभाई और भाईला कोठारी याकी यह जाति है । और यह नाम और यह गाम है । ये और ऐसे गुणी हैं । और या प्रकार सेवा करे है इत्यादिक प्रकारन सूं जतावते भये हैं । और तब श्रीमान रसिकवर श्रीजी हू विन भक्तन की विज्ञापना के अंगीकार कूं भ्रुअ के विलासन सूं और जो मधुर मंद हास्यन सूं और वचनन सूं के हां ठीक है इत्यादि वचनन सूं विन कूं जतावते भये हैं । याके अनंतर वे भक्त पुरुष और वे स्त्रीजन और महाप्रभुन में अत्यंत भक्त सो गोपी भाई और वाके घर में गाम में स्थित जे पुरुष हैं और प्रेम वारे स्त्रीगण हैं वे हू सगरे नानाविधि पट सूत्र सूं आछी रीति सूं रचना कीये और सुवर्णमय और सुवर्ण मुक्ता रत्नन सूं सिद्ध भये थके सुंदर अमूल्य नानाविधि अभिप्राय कूं सूचना करिवे वारे विविधि पवित्रान कूं हाथन सूं लेकर करुणासागर प्राणनाथ के आगे विविधि उपायन कूं धारण करिके और प्रिय के मुख कमल कूं देखत ये सगरे भक्त और स्त्रीगण प्राणनाथ के श्रीकंठ में पहेरावत भये हैं । तब रस सागर प्रिय श्रीजी हू मंद मुसकान सूं विन भक्तन के विन पवित्रा भेट आदि कूं अंगीकार करत ही विन भक्तन के मुख कमल सूं नम्र होय रही जे सुंदरी है विन कूं प्रफुल्लित होय रही है रोमावली जिनमें ऐसे दोनों हाथन सूं कपोल मंडलों में स्पर्श करत और करोड़न चंद्रमान कूं हू विजय करिवे वारे विन के मुखन कूं नखदान सहित ऊंचो करिके भाव सहित और कटाक्षन सहित बारंबार देखत, भाव सूं निश्चल होय के अपने कंठ सूं उतार्यौ भयो अपनो प्रसादी रूप जो और पवित्रा है वाकूं सगरे भक्तन के प्रति दान करत और कितनी ऐक सुंदरीन के कंठ में हू प्रेम सहित हर्ष सूं पहेरावते भये है । और कितने ऐकन के तो नम्र होय रहे शिर में हूँ परम कोमल हस्त पल्लव कूं धारण हू करत भये है । और उच्छल्लित होय रहे प्रेम समुद्र सूं प्रिय श्रीजी पवित्रा कूं पहेरावत हूं जिन सुंदरीन को हृदय देश में स्पर्श करत भये है । वे सुंदरी तो हर्ष सूं कहूं नहीं समावत भई है । और प्रभुन में जे भक्ति वारे हैं विन में हू मुख्य जो चाचा हरिवंश जी हैं सो हू श्री

आपके निकट ठेहरके विन भक्तन के प्रेम कूं वरणन करत हू विदग्धन के शिरोमणि वा प्रिय के रसलीला के उपयोगी भक्तन के हूं प्रणाम कूं तेसे तेसे संकेत सहित मंद हास्य सूं कहत भयो है । और तब यह प्रिय रसिक राय श्रीजी हू अपने हृदय में बारंबार विचार करत भये हैं । के कब तहां तहां पधार के ऐसी विनकूं हम देखेंगे । और तैसे तैसे भक्त हू मोकूं कब वेग ही मिलेंगे । ऐसे विचार कूं करत भये हैं । तब आगे अपने विराजमान अपनो कोषाध्यक्ष कूं के अधिकारी जी कूं आज्ञा करत भये हैं । के तहां तहां सूं आये भये ईन सगरे भक्तन कूं जो कछु उचित होय सो वेग ही करिये । तब सो अधिकारी जी हु श्री आपकुं प्रणाम करिके आपकी आज्ञा कूं शिरमें धारण करिके विन भक्तन कूं आपको प्रसादी भोजन कराय के और जो इन के अपेक्षित हतो सो सगरो ही वेगसूं सिद्ध करत भयो है । और वे भक्त हू यह तो प्रभुन को हमारे ऊपर बड़ो ही अनुग्रह है यह जानि के प्रफुल्लित मुख होय के और रोम हर्ष वारे भये थके हर्ष समंधी अश्रुन के सागरन कूं वर्षा करत ही अत्यंत नम्र होय रहे मस्तक सूं विन प्रसादी अन्न आदिकन कूं लेते भये हैं । तब रस सागर प्रभु श्रीजी विन विन प्रकारन सूं तेसे और प्रकारन सूं हू विन भक्तन में अपने अनुग्रह कूं प्रगट करिके रात्रि कूं प्रथम प्रहर जब गुजर्यो तब भक्तन ने सुन्दर बिछोना सूं शोभायमान करी सुन्दर शैय्या जी कूं अपने सूं शोभायमान करिके शैय्याजी के ऊपर विराजमान होयके विश्राम के अर्थ सेवकन कूं हू आज्ञा देकरि के जब प्रिय जी की जा लीला कूं सतकार करवे लगे हैं ॥ तब सेवक हू तेसे तेसे तहां तहां विश्राम करत भये हैं । और तब महाभाग्यवारे भक्तजन हूं यह निंद्रा वा निंद्रा में हमारे प्रिय श्रीजी कूं हमकूं दरसन करावे या भाव सूं आदर सहित ही तब निद्रा में अत्यंत प्रेम कूं करत भये हैं । सो जो जो भक्त के जो जो सुंदरी जन जा जा प्रकार सूं प्रभुन कूं प्राप्त होय वे अर्थ तब इच्छा करत भये हैं तब सो सो भक्त के सो सो सुंदरी निद्रा में वा कृपा सागर कूं तैसे ही प्राप्त करत भये हैं और निरस जीवन के संकोच सूं ओर वा देश काल के अनुसार सूं हू विन भक्तन कूं जो जो मनोरथ प्रभुन ने स्पर्श पूरण नहीं कियो हतो सो निंद्रा में प्राणनाथ श्रीजी ब्राह्म मुहूर्त में उठिके और आपु के उठीवे सूं हूं प्रथम ही द्वार में मिली के ही स्थित जे भक्त हैं जे या प्रिय के दरसन अर्थ अत्यंत लुब्ध होय रहे हैं ॥ जे अपने नयन हैं विनकूं बड़े बड़े

यत्नन सूं प्रायः धैर्य ही दे रहे हैं सो विन भक्तन के अर्थ अपने स्वरूपामृत के समुद्रन कूं वर्षा करत ही के विन के दर्शन दान सूं स्वरूपानंद को पान करावत वेग ही आवश्यक जो कृत्य है अभ्यंग ध्यान पूजन है के और और हू वा सगरे कूं समाप्त करिके तब मधुर अक्षरन सूं पुछते भये हैं। के संग चलिवेवारे तैयार भये हैं कहा ।। या वचनामृत कों पान करत ही सगरे भक्त सेवक आदर सहित अंजुलीन कूं बांध के विज्ञापना करत भये हैं। के हां जय जय ।। जब सब सगरे ही तैयार हैं तब राजाधिराज श्रीजी कहते भये हैं के यदि सर्व ही तैयार हैं तो मेरे पहेरवे योग्य वस्त्रन कूं ले आवो तब वे सुनत हीं वेग ही वस्त्रन कूं ले आवते भये हैं। तब श्रीजी हूं विन वस्त्रन कूं पहेरते भये हैं और दर्शनीय तेसे टेड़ी ओर आछादित किये हैं केश जाने तासूं अंधकार के सुंदर आवरण पर प्राप्त होय रह्यो जो प्रभुन ने बांध्यो ऐसो उदमीय है पाग सो अत्यंत शोभायमान होती भई है। और श्री आपके श्री अंग में बांध्यो भयो हूं कंचुक सो आपुके श्री विग्रह संबंधी प्रभावन के आवरणनकूं न कर सकतो भयो है। सो मध्य में है दीपक जाके ऐसे स्फाटिक मणी की दीप्ति कुं डब्बी रोक सके हे का ? अपितु नहीं रोक सके हैं। और श्री गोकुलाधीश रूप सरोवर के यह श्री हस्त नहीं हैं। किन्तु कमल ही है। और यह भुजा नहीं है किन्तु वा कमल के नाल है। और यह अगर चंदन कू लक्ष्म नहीं है किन्तु, किन्तु रूपपयोधर की कहा के स्वरूपात्मक मेघ की पंक की प्रभा है। और वा श्रीजी के विशाल वक्ष स्थल में श्री विग्रह संबंधी प्रभा पूर के परिहनव सूं चंचलता सूं सुवर्णमय की भ्रांती कूं प्राप्त होय रहे गुंजा कलाप सूं ग्रथित हार ने सुवर्णमय हार की शोभा ही करी है। और इतउत प्रसरी भई सुगंधी सुं चारो तरफ जतायो है प्रभुन कूं समीप पधारनों जिनने ऐसे जे चंदन के धूलि आदि सुगंधी द्रव्य हैं विनसूं वा श्रीजी के जो कंधरा है सो कांति के भार कूं धारण करिवेवारी होती भई है। के विलक्षण कांतिवारी होय रही है। और यदि मंजिष्ठ सम्बन्धी रंजन सूं अत्यंत सिंचित भये अंधतम कूं के गाढ़ अंधकार कूं यंत्र सूं प्रगट भये दीप में यदि शोभायमान मुक्ताफल रंजित किये जाय तो तब ही निरंतर तांबुल बीड़ी के आरोगवेसु निश्चल धारण करी है श्याम कांति जिनने ऐसे या श्रीजी के दंतन की समता कूं प्राप्त होयवे अर्थ मनोरथ कूं करे किन्तु श्रीजी के दंतन की उपमा नहीं है। निरूपम ही सुन्दर है ।। और प्रिय श्रीजी के अधर की

समता कूं अपने में प्राप्त भये रग सूं लालिमासूं प्राप्त होयवे कूं नवीन कोमल दलोने जब साहस सूं उद्यम कियो है तब ही अत्यन्त कुपित भये विधाता ने वेग सूं ही विन कीं सो लालिमा हर लीनी है । और यदि हमकूं सो गौरता प्राप्त हूं होय तो हूं प्रिय के मनोहर कंठ सूं हमारी समता नहीं होय सकेगी या विचार सूं बुद्धिमानो ने सुवर्ण सूं गौरता कूं मान्यो नहीं है । और यदि तिल पुष्प अपने स्वेतता और श्यामता तेसे भार कूं त्याग के हूं और सुवर्ण सूं पागे भये गौरता रूप कवच कूं पहेरे के हुं वा प्रिय श्रीजी के नाशावंश के संग स्पर्द्धा कूं करे तो तब हू या प्रिय के सुगंधी स्वास रूप पवन अस्त्र वारे वा नाशावंश सूं भंग कूं ही प्राप्त होय जाय के कबहु वाके समान नहीं होय सके । और वा प्रिय के मुख कमल संबंधी सुगंधी सू आकर्षण किये भये जे भौरां हैं सो वा श्रीमुख के चारों ओर भ्रमत ही वा श्रीमुख कमल सूं मधुकूं के मकरंद कूं और या प्रिय के मूच्छन सूं तेसी मनोहर श्यामता की शोभा कूं याचना कर रहे जेसे होय तेसे ही सगरे भक्तन ने वें भौंरा देखे हैं । और हमारे प्राणनाथ के जे अत्यंत दीर्घ और पुष्ट जे बाहु है सो पुरुषोत्तमता की लक्ष्मी के शोभा के हिंडोरा झूलवे के स्तंभ रूप हैं । के कामरूप हस्ती के बंधन स्तंभ हैं के विरह सूं उत्कट तापरूप महासागर के तरवे में नौका की शोभा कूं धारण कर रहे हैं के विपरीत सुरतरूप वर्षा में अत्यन्त बारंबार विविध प्रकार सूं चंचल होय रही जो ऊपर विराजमान विदग्धा कमल नयनारूप विद्युत है विन के रोकवेकूं अत्यन्त दीर्घ और पुष्ट और दृढ़ पाशरूप जैसे शोभायमान होय रही है । जा वक्षस्थल में मृगनयनी गण के श्रीमुखन के प्रतिविंव शोभायमान होय रहे हैं । सो काचन की छबी कूं जाने जय कियो है ऐसो कांतीरूप जामें जल है सो ऐसो सरोवररूप जो वा श्रीजी को सो वक्षस्थल है सो शोभायमान होय रह्यो है । और श्रीजी के केशन की उपमा भौंरा है, और भुजान की उपमा श्रेष्ठ मृणाल है । और स्तनों की उपमा चक्रवाक है । और भ्रूं की उपमा तरंग है और या श्रीजी की रोमावली जो हे सो परिवाह की के जल के उछलने की पद्धती रूप मार्गरूप ही निरंतर शोभायमान होय रही है । और वा श्रीजी के हारन में जे शोभायमान मणी हे विनकी प्रभासूं रोषवारो जो उदर है सो रोम पंक्तिमय खड्ग कूं ऊंचो ग्रहण करिकें मानों अपने समता कूं चाहना वारेन कूं शिरन के नाभि मंडलमय कूप में अत्यंत गिरायवे कूं वेगि सूं ही जो स्थित

भयो है । तासूं याके समता के चाहनावारे हते विन में मुख्य जो पिप्पल को दल है दूर सूं या श्रीजीं के निकट स्थित तेसे खड्ग वारे उदर कूं देखके निरंतर भय के सहित स्थित होय के जो दशा कांतिरूप जल के लहेरीन के समुद्रन सूं हू न दूर होयवे वारी कृशता कूं जामें धारण करत भई है । ऐसी नष्ट होय गई है वा उदर की समता में वेग जामें ऐसी वा दिशा कूं प्राप्त होय जातो भयो है । के उदर की समता में भय सूं इच्छा कूं हूं दूर कर देतो भयो है । और कृश हूं होय जातो भयो है । और हम कूं सदा प्रिय श्री गोकुलाधीश जी या वस्त्रकूं प्रेम आदर हर्ष सहित पहेरेंगे यासु यह वस्त्र महा प्रसाद रूप है । यह निश्चय करिके सगरे जे आपके परम चतुर भक्त हैं वे याकूं अपने मस्तक के ऊपर धारण करिवे कूं उत्साहवारे होय जायेंगे । तासूं पीछे तो या प्रभु की इच्छा हू मेरे लिये न होयगी तासूं पीछे तो या वस्त्र कूं पहेरनो मोकूं दुर्लभ ही होयगो यह विचार के प्रसिद्ध महिमावारे या गोवर्धनधारी ने हू जा वस्त्र कूं अधिक गिण्यो है, के बड़ो गुणवारो कह्यो है । और वा श्री गोकुलपति के हर्ष सम्बन्धी अश्रुन के अनंत सागरन कूं वर्षा करि रहे नयनन ने हूं अथवा श्री गोवर्धनधारी के परमानंद के समूहन कूं दान करिवे वारो जो सौन्दर्य है वाकूं भोग करिवे वारो है ॥ यह जानि के ऊंचो करिके बहुत मान प्रेम सहित बहुतवार ही जा वस्त्र कूं निरख्यो है और वा श्री गोवर्धनधारी की वांछित सुगन्धि वारो यह वस्त्र है यह जानिके निरन्तर उत्साह वारे घ्राणने हु भली प्रकार जाकी सुगंधी लीनी है । और वा श्री गोवर्धनधर के सुखदायक स्पर्श सूं कृत्य कृत्य ही यह वस्त्र है यह जानि के अत्यन्त रोम हर्षवारे होय रहे अंगनने हू जाकूं तेसे तेसे अपने में लगायो है । और वा श्री गोवर्धनधर कूं संतोष करिवेवारे तिन तिस गुणन के गुणवारो यह वस्त्र है । यह विचार के चित ने हूं निरंतर जा वस्त्र को ध्यान कियो है । और तैसे तैसे श्रीमुख कमल ने हूं जाको वर्णन हूं कियो है। और कर्ण ने हूं जा वस्त्र के गुणन कूं स्वरूप कूं सुनिवे अर्थ हू अत्यन्त अभिलाखा करी है । और ऐसे या वस्त्र कूं धारण करिवे में मेरो तो कछु हूं भाग्य नहीं है । या प्रकार दीनता कूं करिके प्रणाम कूं करिके वाके गुणनकूं हूं मन में धारण करिके मन में हू प्रणाम कियो है । और भाग्यवती रसना ने हू तैसे तैसे जाकूं प्रणाम कियो है । सो या प्रकार आनन्द सहित प्रफुल्लित होय रह्यो है । श्रीमुख कमल जिनको ऐसे सो रस सागर

श्रीगोकुलाधीश जी प्रसिद्ध वा प्रसादी वस्त्र कूं बड़े मान पूर्वक अपने शिर के ऊपर धारण करते भये हैं। और दर्पणन कूं व्यर्थ करत जे वा श्रीजी के श्रीविग्रह संबंधी उज्ज्वल भूषण संबंधी मणी है। सो वे अलंकृत भये वा श्रीजी के तिस सुन्दर स्वरूप कूं वा श्रीजी को दर्शन करावते भये हैं। के अपने भूषणन की मणीन में ही श्रीजी अलंकृत भये वा अपने स्वरूप के दरसन कर लेते भये हैं। दर्पणन की अपेक्षा हूं नहीं करते भये हैं यह भाव है। और अत्यन्त तापवारी भक्तन की जे दृष्टि है सो या मेरे मुखचन्द्र में दरसन करिवे कूं आय के धूप कूं देखिके दुखि न होय या विचार सूं करुणा रस सूं मिले अंतः करणवारे सो श्रीजी अपने मस्तक में धूप निवारिणी धूप खेड़ी कूं धारण करावते भये हैं। तब अस्व की रक्षा करिवेवारे सेवक ने सजाय के लायो जो अस्वराज है जो वेग में गरुड़ कूं हूं विजय करिके विराजमान है और जो पवन कूं और मन कूं हू विजय करिकें विराजमान है। ऐसे सुन्दर कांति वारे वा अस्वराज के ऊपर जा व्रजभूमि के इन्द्ररूप श्री गोकुलाधीश जी भली प्रकार सूं चढ़ते भये हैं।

इति श्रीमद् गोकुलेश लींलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले पंचविशमो तरंग समाप्तम् ॥२५॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग षटविस ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ षटविस स्तरंग लिख्यते ॥२६॥

श्लोक -- **निस्सर व्यथ गृहादि दभिराम ग्राम वाम नयनागण मूर्धि ॥ पूर्ण कुंभ निकरं वकमग्रे दृष्टिपात समकालंभ पश्यत् ॥१॥**

याको अर्थ -- याके अनन्तर श्री गोकुलाधीशजी वा घर सूं बाहिर पधारत ही आनन्ददायक ग्राम संबंधी जे वाम नयना गण हैं के मनोहर नयन वारी सुन्दरीन के गण हैं विनके मस्तक में पूर्ण कुंभन के समूहन कूं आगे दृष्टिपात के समान काल में हू देखते भये हैं॥ और ऊपर गिरि रहे जे भौंरा हैं विनके

झंकार रूप भेरी के शब्दन सूं समीप प्राप्त भई जे धारण करे भये माल्लिका के पुष्प हैं विनसूं आनन्ददायक शरीर वारी भक्त स्त्री हैं विनकूं हू भली प्रकार देखते भये हैं ।। और नहीं है भारी पवन को समूह जामें और चारों ओर बज रहे हैं बाजे जामें और रागवारे होय रहे हैं सुन्दरीन के समूह जामें और दक्षण शीतल मंद सुगंधित पवनन सूं सूचना कियो है सुख जानें ऐसे वा यात्रा के समय कूं देखिके वाकूं श्रीजी सराहना करत भये हैं ।। याके अनन्तर वा घर सूं बाहिर पधारे ही सो परम उदार श्रीजी धारण कियो है हाथ में पुष्प और फल वारो पात्र जाने और हांसी वारो मनोहर है मुख जाको ऐसी सन्मुख आय रही आनंददायक एक कन्या कूं बारंबार ही देखते भये हैं ।। और वा श्रीजी के दर्शन अर्थ आय रही जो कोउ सुन्दरी है सो पवन सूं दूर होय गयो है आधो भाग जाको ऐसे अपने कुचन के वस्त्रन कूं न जानत ही सो सुन्दरी प्रस्थान कर रहे वा श्रीजी के आगे अपने कुच कुंभ सूं हू मंगलमय कलश कूं दर्शन सिद्ध करत भई हैं । और सो या प्रकार महामंगल पूर्वक प्रस्थान कर रहे वा प्राणपति श्रीजी के संग ही भक्त स्त्री और पुरुष हू सगरे वे भक्त के भार सूं हर्ष सूं तब चरणन सूं हू आपके पीछे चलते भये हैं ।। सो कृपा सागर श्रीजी विन अपने भक्त स्त्री पुरुषन कूं वा प्रकार चरणन सूं पीछे चल रहे देख करिके अपने घोड़ा कूं रोक ही देते भये हैं ।। और मधुर है अक्षर जामें ऐसे वचन कूं कहेत भये हैं ।। के हौं तो तब ही अपने घोड़ा कूं आगे चलावुंगो जब के तुम हू अपने अपने वाहन में वेग सूं ही चढ़ोगे ।। सो या प्रकार के न उल्लंघन योग्य आपके वचन रूप उदय होय रहे प्रेम सागर कूं अनुशरण करिके सो अपने अपने घोड़ा हाथी आदि सवारी पै हर्ष सूं ही सवार होते भये हैं ।। और प्राणनाथ श्री गोकुलाधीश्वरजी की जे संपदा है सो अनिर्वचन कहेवे रूप सागर के हू पार में विराजमान है के वर्णन नहीं करी जाय है ।। तो हू आपकी जो शिक्षा कूं हू दूर नहीं करे है ।। सो याकूं यदि श्री आपके कृपापात्र यथार्थ वक्ता आप्त महदजन कूं अनुभव नहीं प्रगट करे तो वाकूं और को साक्षात विश्वास करे के निश्चय करे के सत्य है ।। और शोभायमान है, विभूषण जामें तासूं मनोहर जे भारी भारी हस्तिनीन के समूह हैं विनसूं कियो है व्यवधान जिनने ऐसी वे हस्तिनी जिनकी चारों ओर है और पृथ्वी मंडल कूं जे आवरण, के आच्छादन कर रहे हैं ।। और गिर रह्यो है मद जिनसूं ऐसे जे हस्तीन के

कुल हते सो हू धीरे धीरे चलते भये हैं ।। और घोड़ान पर जे असवार होय रहे हैं विनके हस्त ताड़न सूं प्रगट भयो जो हजारन उत्कंठ शब्द है, विनसूं मिल्यो भयो और इत उत दौड़ रहे जे जन हैं विनके संभ्रम सूं प्रेरणा कियो जो प्रिय के पधारवे को जो शब्द है सो निरन्तर ही चढिके ही होतो भयो है ।। विस्तार वारे सुन्दर सुवर्णमय जे दंड हैं विनसूं सुन्दर और निर्मल जे धूप निवारणी छत्री है विनमें लगे हैं हीरा जाके ऐसे प्रिय श्रीजी के चारों ओर अद्भुत मनोहर हजारन सुखासन हैं सो अत्यन्त शोभायमान होते भये है ।। और सगरी दिशान के अन्त पर्यन्त प्राप्त होय रह्यो और बढ़ि रह्यो है नवीन यश रूप चन्द्रमा जिनकूं ऐसे सो जगत के ईश्वर श्रीजी निकटवर्त रहे कितने एक सेवकन कूं तो घोड़ान के ऊपर चढ़िवे की आज्ञा करत भये हैं ।। और व्याकुल होय रह्यो है क्रम कहा चलिवो जाकूं ऐसे सो प्रिय करुणा सागर श्रीजी कितने एक सेवक भक्तन कूं तो वाणी सूं और कितने एक कूं हाथन की चेष्टा और कितने एक कूं नयन कमल की चेष्टा सूं अपने समीप ही प्राप्त करत भये हैं ।। और कितने एक रथन के ऊपर चढ़े भये और कितने एक घोड़ान के ऊपर असवार भये थके और कितने एक तो चरणन सूं चलत ही हर्ष सूं मिले भये वे प्रभुन के आगे दौड़ते भये हैं ।। और या प्रकार पधार रहे वा श्रीजी के चारों ओर सूं चल रहे जे प्रबल घोड़ा हते सो उन हस्तिन सूं तैसे और सूं प्राप्त भई है ताड़ना जिनकूं ऐसे नहीं होय तो मार्ग मों पीछे रह जाय ।। और प्रभुन के दर्शन अर्थ हू अत्यन्त तरल होय रहे हैं ।। जासूं वा प्रभुन के दर्शन सूं ही अधिक और फल नहीं है ।। और या श्रीजी के संग में ऐसो कोऊ नहीं हतो के जाकूं वेश मलीन होय के और ऐसो कोऊ नहीं हतो के जो कुवेर सूं हू न्यून संपदावारो होय और ऐसो हू कोऊ नहीं हतो के जो थोरी सी बुद्धिवारो होय ।। और ऐसो हू कोई नहीं हतो के जो मनोहर न होय ।। और ऐसो हू कोई नहीं हतो के जो धूर्त होय सो जहां सर्व लोक सूं उत्तर श्रीजी विराजमान होय तहां अपूर्व कहां न होय और ज्यों श्वेत चामरन सूं और चन्द्र मंडल कूं हू विजय करिवे वारे छत्र सूं और हाथ तैसे शिर सूं शोभायमान करी है भूमि जिनोने ऐसे वैष्णवन ने किये जे समर्पण हैं भेटा हैं विनसूं श्री गोकुलाधीश रूप जो भूमि में विराजमान हिम किरण हैं के चन्द्रमा है सो दूर सूं ही स्वजनन सूं प्रतीत होते भये हैं ।। और यह वस्तु तो और की है यह सुनिके हू या

श्रीजी को मन वा वस्तु में कबहू तुम्ह कूं न करत भयो है सो या श्रीजी को स्वरूप तो देख रही जे मदिरेक्षणां हैं के सुन्दर नयनवारी सुन्दरी हैं विनके नयन और मन कूं चुराय लेवे है ।। सो बड़ो आश्चर्य है ।। और कमल जैसे सुन्दर जो वा श्रीजी के नयन हैं सो कालकूट विष सहित वाण कूं हू विजय करतो भयो है ।। जासूं जो श्रीजी कूं नयन थोरो सो हू चंचल होय के सुन्दर स्त्रीन के गणन कूं निरन्तर मोह कूं प्राप्त भयो है ।। और वा श्रीजी के परम मनोहर अनिर्वचनीय सुन्दर श्रीमुख को दरशन करिके दूर होय गई है कांति जाकी ऐसे चन्द्रमा की सगरी प्रसिद्ध अपकीर्ति होती भई है ।। सो या अपकीर्ति के रूप कूं न विचारके सगरे लोक याकूं लक्ष ही ऐसे कहें हैं ।। और बड़े मदवारी सुन्दरीन ने अपने नयन रूप उत्पलन की कुमोदिनी की माला सूं जाकूं बांध्यो है और रेखा विशेष सूं अद्भुत कांति कूं है पूर जामें ऐसी जो श्रीजी की कंधरा है के श्रीकंठ सो बंधुर भाव कूं के मुकट रूप कूं के मनोहरता कूं विस्तारित करतो भयो है ।। और प्रभा के प्रवाहन सूं पूर्ण होय रह्यो जो वा श्रीजी को विशाल वक्षस्थल है सो निरन्तर शोभायमान होतो भयो है ।। और राजा हू जाके चरणन कूं नमस्कार करें हैं ऐसे वा श्रीजी के जे जानु पर्यन्त के घोंटू पर्यन्त लंबायमान जे भुजा हते सो महा शोभायमान होते भये हैं ।। और अधिक है कृशता जामें और प्रसर रही प्रभा सूं जो चारों ओर पूरण होय रही है ।। ऐसी वा श्रीजी को मध्य कूं दरशन करिके अंगन मे निन्दा कूं करिके सगरे जन कामदेव निर्भय ही अनंग ऐसे कहे है ।। सुन्दर चिन्हवारे वा श्रीजी के चरण कमलन कूं पद्मन सूं हू अधिकता प्राप्त भई है के श्रीजी के चरण कमलन सूं हू अधिक है सो यह सत्य है ।। जासूं कमलों में तो लक्ष्मी कबहू प्राप्त होय है और वा श्रीजी के चरणन को दरशन करिवे वारे में सदैव तो सो लक्ष्मी स्थिरता कूं ही प्राप्त होय जाय है ।। और जो ही धर्म श्रीजी के श्री विग्रह को आश्रय करत भयो है सो धर्म हू वितने पर्यन्त गुण भाव कूं प्राप्त होय जातो भयो है ।। जासूं जो कछु हू जल गंगाजी के प्रवाह में मिल्यो भयो पावन भाव कूं हू प्राप्त होय जाय है ।। और काम तो सुन्दरता मात्र कूं प्राप्त होय के और ब्रहस्पति तो प्रतिभा मात्र कूं कहा के सर्वतोमुखी बुद्धि मात्र कूं प्राप्त होय के सो एक एक गुण वारे यह महा रसात्मक अलौकिक अनिर्वचनीय अनन्त गुणन वारे श्रीजी के संग तुल्यता कूं कैसे प्राप्त होय सकें हैं ।। और या श्रीजी

के श्रीमुख भाव कूं प्राप्त भयो जो यह चन्द्रमा है वाकूं कबहू राहु को भय नहीं है ।। जासूं जा चन्द्रमा कूं नवीन किरणन को समूह रूप अधर है ।। ऐसे कृपापात्र ही जानें हैं ।। और हौं यह जानूं हूं के या श्रीजी को जो मुख रूप कमल है सो सगरे कमलन को समाज रूप है ।। के चक्रवर्ती रूप है यासूं ही नेत्र नाम वारे सरोजराज हू कमलराज हू या श्रीमुख के सेवक हैं ।। और इतर सगरेन कूं विजय करिके अत्यन्त शोभा सूं विराजमान और मनोहर तिस तिस गुणन सूं समृद्धि वारे जे वा श्रीजी के कान आक्ष अधर और भुजा हस्त चरण हैं विनके तैसे सगरे श्रेष्ट गुणन सूं पूर्ण वस्तु रूप उपमा के अर्थ वेधा कूं जो पूरण करवे लिये ही विनके समान ही दूसरेन कूं रचना करत भयो है ।। और हौं यहां विचार करूं हूं के सगरी दिशान सूं आयके जन मेरे चरण कमलों की ही शरण कूं प्राप्त होंयगे ही ।। सो कृपा सागर श्रीजी यह विचार के विन दसों दिशान के जीवन कूं शरण दान के अर्थ ही अपने चरणों में वितनी संक्षा वारी हू अंगुलीन कूं प्रगट करत भये हैं ।। (और यह श्रीजी यश रूप चन्द्र और श्रीमुख रूप चन्द्र तैसे दो चरणों के अंगुष्ट रूप सो चन्द्रमा ऐसे चार पूर्ण चन्द्रमान कूं धारण करत विदग्धन के शिरोमणि रसिकवर श्रीजी अपने में चतुः षष्टि कलान की स्थिति कूं बिना अक्षरन के ही कहेत भये हैं ।। के आपके कहे विना ही पूर्ण चार चन्द्रमान सूं ही आपमें चौसठ चतुः षष्टि कला विद्यमान हैं ऐसे सर्व कू हू प्रतीत होय है ।। और हौं तो यह जानूं हूं के सर्व अंगन में हू रोम कूं के रेषा कूं प्रगट करिवे में समर्थ हू श्री विग्रह के गुणन के गणना कूं रोम और रेखा सूं रहित आरम्भ कियो है तथापि विन रोम और रेखा सूं रहित जे अंग हैं विनसूं महाप्रभुजी यह सूचना करत भये हैं के रोम और रेखा वाके गुण वर्णन में समर्थ नहीं होय सकी है तासूं वाके अंगन में प्रगट नहीं भई है ।। और प्रभुन के श्री अंग में संबंधवारी विन रोम कूपन कूं हौं बारंबार वन्दना करूं हूं ।।) जासूं जे रोमकूप या श्रीजी में दोष नहीं है ।। यह दोसन के शून्यता बतायवे कूं इहां विद्रुप कूं धारण करत ही विराजमान होय रहे हैं ।। और कल्याण भटजी कहें हैं के सो सदृश जन जड हैं जासूं अनिर्वचनीय अनन्त रस रूप गुण वारे वा रसिकराय कूं वरणन की इच्छा करें हैं ।। सो यह मनोरथ ऐसो है के अंधकार हू सूर्य कूं प्रकाश करे यह कहा होय सके हैं ? और जैसे मान सरोवर में भौंरी सदैव ही निवास करे है तैसें विन सुन्दरीन के हृदय

में रहिवे वारी वा श्रीजी के दर्शन की भावना यदि विन सुन्दरीन में वा श्रीजी के दरशन कूं प्रगट करत अत्यन्त कृपा नहीं करत तो वा श्रीजी के दर्शन की भावना यदि विन सुन्दरीन में वा श्रीजी के दरशन कूं प्रगट करत अत्यन्त कृपा नहीं करत तो वा श्रीजी के दर्शन में विघ्न कूं करत जे निमेष हैं विनने विन चंचल नयनी सुन्दरीन के प्राणन में निर्दय होयके जो प्रहार कियो है सो प्रहार नहीं होतो कहा के सो अवश्य ही होतो ।. के विनके प्राण तो कबहू नहीं रहते ।। परन्तु वा श्रीजी के दर्शन की भावना ही हृदय दरशन करावत इनकूं कृपा सूं रक्षा करें हैं यह भाव है ।। और हौं तो यह जानूं हूं के जब तहां कोटि कंदर्प लावण्य श्री गोकुल के प्राण वल्लभ रूप श्रीजी मार्ग में विराजमान हते ।। तब तैसे सेवा श्रीजी के रूप कूं लेवे कूं इच्छा कर रही जे गुजरात वासिनी चन्द्रमुखी सुन्दरीन की दृष्टि है सो अपने स्थान सूं सर्व प्रकार सूं गिर हू जाती ।। यदि क्षण क्षण में विनके नयनन कूं रसात्मक विधाता नहीं रोकतो तो और कृपा रूप अमृत के सागर रूप रसात्मक प्रभु यदि विन नयनन कूं उन्मेषन सूं पलकन के उघरवे सूं अत्यन्त दर्शन करायके यदि समाधान नहीं करत तो वा गोलक में हू वे नयन अंतरध्यान ही होय जाते ।। और गुजरात की जे सुन्दर नयन वारी सुन्दरी हैं वे धन्य हैं ।। जासूं जे उच्छल्लित होय रहे विदग्ध रूप श्री गोकुल सुन्दरीन के वियोग में श्रीजी कूं शीतल करवे कूं देह रूप शिर सूं प्रेममय जल वारे रोम रूप कलशन के करोड़न कूं धारण करिके सर्व प्रकार सूं चारों ओर सूं अत्यन्त ही दौड़ती भई हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले षष्टविशमो तरंग समाप्तम् ।।२६।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग सप्तविस ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सप्तबिस स्तरंग लिख्यते ।।२७।।

श्लोक -- **भेर्यो मृदंगास्तालाश्च पट हान क झंझराः ठक्का दुदुभयः क्षुद्र दुंदुभीनांशतानिचाः ।।१।।**

याको अर्थ -- तब प्रभुन के पधारवे के समय में भेरी मृदंग और पट हते आनक और झंझर और ठक्का तैसे दुंदुभी और छोटे अनन्त दुंदुंभी रवाव और आयुध और वीणां आदिक जैसे झांझ और उपंग आदिक और वेणुं तैसे गोमुखावंश और मदन भेरी और झालरी और घुंघरी तैसे स्वरनादिनी और मुरज प्रणव हू भूंगल और शंखन के समूह और ड्मड्म डिम डिम सारंगी पिनाक और करोड़न चन्द्र मंडल और स्वर मंडलों के समूह और हुड़फ और मंड्व मर्दल यह बाजे और हू जे हजारन ततके भेद हैं के न के भेद हैं के नाद के भेद हैं ।। और सुपिर नाम वारे जे बाजे हैं ये सगरे बजाये के विना बजाये हू बजते भये हैं ।। और बंदी और मागद सूंत और चारण यह सगरे अत्यन्त प्रसन्न होयके गुणन के सागर प्रभुन की यथार्थ गाथान सूं स्तुति करत भये हैं ।। और तहां भक्त हू अपने अपने मनोरथ अनुसार प्रभुन को दरशन करत नाना प्रकार के विन विन गीतन कूं अत्यन्त गान करत भये हैं ।। और ''जय जय चिरंजीव'' हे प्राणनाथ हे कृपासागर हे श्रृंगार मूर्ते हमकूं चिरपर्यन्त पालन करो या प्रकार के जे शब्द हते सो वे हू अत्यन्त अधिक होते भये हैं और सो ब्रज के महीपति श्री गोकुलाधीशजी जा दिशा में ही लाल कमल जैसे मनोहर नयन युगल कों कबहू दान करते भये हैं के देखते भये हैं सो वा दिशा में ही प्रथम दरशन सूं प्रसन्न भये थके भक्तन के जीव जीव ऐसे मंगलमय वचनन कूं हास्य सहित सो श्रीजी व्रजराज श्रीजी सुनते भये हैं ।।

श्लोक -- **मौक्तिकानि वमनानि करी द्रावजिनः ।। प्रजविनः कनकानिः राखु यत्यथिजने ।।**

और बड़े भाग्यवारे जे महात्मा रहे सो तहां आयके वा पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी को दर्शन करत भये हैं ।। और वा श्रीजी के चरण कमलों में बहुत प्रकार की मंगलमय तिस तिस उत्तम उपायन कूं धारण करिके प्राणन सूं हू प्रिय वा श्रीजी के चरणन में दंडवत प्रणामन कूं करते भये हैं ।। और भाग्यवारेन में श्रेष्ट भक्तन ने प्रक्षालण किये जे या प्रियवर श्रीजी के दोनों चरण कमल हैं विनसूं गिर्‌यो भयो जो श्रेष्ट अमृत है वाकूं सगरे श्रेष्ट भाग्यवारे भक्तजन पान करत भये हैं ।। और शिर में धारण करत भये हैं ।। सुवर्ण माणिक्य मुक्तान की माला पुष्प माला सूं और भूषणन सूं पूजन करत भये हैं ।। और आश्रय करत भये हैं ।। और अपने में याके दासभाव कूं अंगीकार करत भये हैं ।। और तब ईश्वरेश्वर कृपासागर प्रिय श्रीजी असंख्य जीवन कूं कृष्ण नाम के उपदेश सूं कृत्य कृत्य करत भये हैं ।। और अनेक जीवन कूं निवेदन करायके पंचाक्षर सुनायके कृपासागर श्रीजी संसार सागर सूं हू उद्धार करत भये है ।। और श्रीकृष्णः शरणं ममः ।। यह अष्टाक्षर बंचवाय के अनेक जीवन कूं यह श्रीजी कृतार्थ करत भये हैं ।। और जैसे कामदेव पुष्प सूं हू हरिण नयनीन के मन समूहन कूं वश करे है तैसे सो रति रणवीर श्री गोकुलेश जी कृष्ण नाम सूं हू भुवन कूं सरस करें हैं ।। और जो यह पंचाक्षर कह्यो है के जे यहां अष्टाक्षर कह्यो है सो श्री गोकुलेशजी कूं हू वाचक है तासूं सर्व सूं उत्कृष्ट है जासूं या श्री गोकुलेशजी कूं श्री गोस्वामीजी कहेत भये हैं के जासूं यह श्री गोकुलनाथ अपने श्रेष्ट गुणन सूं भक्तन के चित्त कूं आकर्षण करें हैं ।। और सदानन्द स्वरूप है तासूं मात्र नाम सूं हू कृष्ण ऐसे नाम कूं धारण करें हैं ।।५२।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुर विहारभये चतुर्थ कल्लोले सप्तविशमो तरंग समाप्तम् ।।२७।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग अष्टवीस ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्टवीस स्तरंग लिख्यते ।।२८।।

श्लोक -- **समर्द्धः सुमहानासीतस्मिन्नाशा आशापुरे पुरेततः आगच्छतां प्रियं द्रष्टं ततदर्थ चधावताः ।।१।।**

याको अर्थ -- वा आशापुर में प्रिय कूं दर्शन अर्थ इत उत सूं आय रहे जे पुरुष हैं और जे प्रिय संबंधी तिस तिस कार्य के अर्थ दौड़ रहे हैं और तिस तिस कार्य कूं कर हू रहे हैं और तिस तिस वस्तु कूं लाय रहे हैं ।। और कितने एक तो तैसे तैसे वा प्रिय को दर्शन कर रहे हैं ।। और कितने एक वा प्रभुन सूं आज्ञा लैकें जाय रहे हैं ।। और कितने एक तो आपके नाम कूं ले रहे हैं ।। और कितने एक तो नाम कूं लेकर बड़े प्रसन्न होय रहे हैं ।। और कितने एक नाम लेवे ठहर रहे हैं ।। और कितने एक तो अपनी आत्मा देह इन्द्रियादि सर्वस्व कूं अर्पण कर रहे हैं ।। और कितने एक तो अमृत के अर्बन सागरन कूं विजय करिवे वारे और मंद हास्य रूप मुक्तान सूं शोभित मधुर वचन में कान कूं दे रहे हैं ।। और कितने एक तो वा प्रिय के विलास रूप महासागरन कूं चक्षु रूप अंजुलिन सूं कंठ पर्यन्त ही बारंबार पान करिवे की इच्छा वारे हैं ।। और तैसे तैसे हर्ष सहित वा प्रिय की निरन्तर सेवा करिवे की इच्छा करे हैं ।। और कितने एक तो अपने घर में वा प्रिय के पधारवे की इच्छा कर रहे हैं ।। और कितने एक हर्ष के भार सूं अपने अपने मनोरथन कूं निवेदन करि रहे हैं ।। ऐसे विनको बड़ो संमृद्ध होय रह्यो है ।। और ऐसे शकट और रथ और घोड़ा और प्यादा, तिनकूं हू तहां बड़ो समृद्ध होय रह्यो है ।। और श्री आपके दर्शनार्थ तहां आय रहे जे ब्राह्मण और भिक्षुक और धनी तैसी मालाकार, व्यौपारी और गायक तैसे नाचवे वारे और सूत मागध बंदीजन और बुद्धिमान और राजा तैसे राजपत्नी और राजा के जन ऐसे विनको हू बड़ो समृद्ध होतो भयो है ।। और तैसे कवि पंडित गुणी वेदाभ्यासी और चारण और याचक और संत ज्ञानी तैसे नर्तकी और स्मृति के वेत्ता और कर्मठ

तैसे तपस्वी वेदांती सांख्यवेत्ता और पातंजल शास्त्रवेत्ता और नैयायिक शैवी और महात्मा वैष्णव और मीमांसक बालक ब्रह्मचारी यौवन वारे और बूढ़े ऐसे अनेक प्रकार के तहाँ आय रहे पुरुषन कूं तहां बड़ो समृद्ध होतो भयो है ॥ और तहां श्रीजी के दरशन कूं आय रही जे मृगनयनी हैं ॥ पूर्णचन्द्र जैसे जिनके मुख हैं और लांबे स्निग्ध हैं केश जिनके और पुष्ट तैसे ऊंचे हैं स्तन जिनके और जे मन्द मुसकान रूप वर्षा कूं कर रही हैं ॥ और जे मदमत्त गज जैसे गति वारी हैं तैसे रूप सूं अप्सरा कूं जे विजय करि रही हैं ॥ और लक्ष्मी कूं हू विजय करिवे वारो स्वरूप जिनको और वा वा श्रीजी के स्वरूप में आशक्त जिनके नयन हैं और वा श्रीजी के मुखचन्द्र कूं दर्शन ही कर रही हैं ॥ और जे वा श्रीजी के गुणन कूं वर्णन कर रही हैं ॥ और कितनी एक वा श्रीजी के दर्शन सूं प्रगट भये महामोद सूं सात्विक भाव रूप जड़ता कूं प्राप्त होय रही हैं ॥ और कितनी एक तो रोमांचित होय रही हैं सगरे अरगजा के ऐसी हैं ॥ और कितनी एक तो स्वेद सूं पसीना सूं विकल होय रहे हैं अंग जाके ऐसी हैं ॥ और कितनी एक तो गद्‌गद् कंठवारी होय रही हैं ॥ और कितनी एक तो उच्छल्लित होय रही हैं ॥ कंप भाव की शोभा जिनमें ऐसी है ॥ और कितनी एक तो हर्ष संबंधी अश्रु धारान कूं वर्षा कर रही हैं ॥ और कितनी एक तो सात्विक भाव सूं वर्णांतर कूं प्राप्त होय रही है ऐसे वा श्रीजी में ही नेष्टा वारो है चित्त जिनको और सगरी शोभा कूं धारण कर रही हैं ऐसी विन सुन्दरीन कूं हू तहां बड़ो ही समृद्ध होतो भयो है ॥ सो विन सगरे स्त्रीजन और पुरुषन कूं सो ईश्वरेश्वर श्रीजी अपने नयनों के विलासन सूं और वचनामृतन सूं और स्निग्ध दृष्टि सूं और हस्त कमल की चेष्टान सूं और तैसे तैसे मंद मुसकान सूं और अपने समीप बैठावने सूं और तांबूल बीड़ी के दान सूं तैसे आश्वासन सूं यथायोग्य ही विन सगरेन के ऊपर अनुग्रह करत भये हैं ॥ सो वे सगरे स्त्री पुरुष हू वा श्रीजी के स्वरूप सौंदर्य संबंधी अपार अमृत के समुद्रन कूं और करुणा रस के सौष्टव कूं और मंद हास्य के अद्‌भुत मनोहरता कूं और कटाक्षन सूं देखन रूप माधुर्य कूं और कपोलन की उज्ज्वल कांति कूं तैसे उच्छल्लित होय रहे अत्यन्त उच्छल्लित होय रहे अत्यन्त अद्‌भुत दंत ज्योति के प्रवाहन कूं बारंबार आस्वादन करते कृत्य कृत्यता कूं प्राप्त होय जाते भये हैं ॥ और नाम दान के अर्थ आये जे जन हैं विनके प्रति जो मंदहास्य

सहित श्रीजी कहेत भये हैं के तुम का प्रकार सूं आये हो ।। सो सगरे भक्तन में ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्लभ जे हर्ष समुद्रन के समूह है विनकूं वर्षा करत भये हैं ।। वाके अनन्तर हे राजाधिराज हे ईश श्री आपके कृपाबल सूं ही हम इहां आये हैं, ऐसो जो विनको उत्तर है वाकूं सर्व प्रकार सूं प्रसन्न होयके श्रीजी सगरी सभा कूं सुखी करत ''भलो भलो'' ऐसे ही कहेत अनुमोदन ही करत भये हैं ।। और इहां सुगंधी वारे सुन्दर अनन्त वर्ण वारे पुष्पन के समूहन कूं धारण करिवे वारे जे असंख्य मालाकार हते सो वे दो पंक्तिन कूं करिके ठहेरते भये है ।। तब सगरे जन विन मालिन सूं सुन्दर सुन्दर पुष्पन कूं लेकर प्रेम सूं वा श्रीजी के चरणन में प्रणाम कूं करिके वा श्रीजी के कंठ में मालान कूं पहेरावते भये हैं ।। और यह पुष्प जे विरह में जैसे हमारे हृदय कूं निरन्तर विदीर्ण करे हैं ।। तैसे या प्रिय के हृदय कूं हू निरन्तर निःसंशय विकल ही करत होंयगे ।। यासूं भीतर उत्कृट क्षोभ कूं धारण कर रही जे मृगनयनी हतीं सो स्वयं विन पुष्पन कूं सूंछी के (सुई के) अग्र सूं बांध के माला कूं सिद्ध करिकें वा श्रीजी कूं पहेरावती भई हैं ।। और नगर निवासी तैसे और ग्राम वासी हू जे इहां हते सो वे सगरे हू तहां आय आयके प्रेम सूं वा परमेश्वर कूं प्रणामन कूं करत भये हैं ।। और सगरे अवतारन के हू जे अवतारी हैं विनके हू वृन्द कूं समूह कूं विजय करिवे वारो जो या प्रिय को सौन्दर्य है वाकूं वे सगरे अनुभव करिकें कृत्य कृत्यता कूं प्राप्त होय जाते भये हैं ।। और वहां जे नवीन रसमय अंगनवारी सुन्दरी हतीं सो कटाक्षन सूं देखवे सूं अपने मन के भाव कूं सूचना करत हू वा प्रिय के मन कूं हर लेती भई हैं ।। और अपने मन हू वा प्रिय कूं देती भई हैं ।। और कितनी एक कटाक्षन सूं तैसे और तो मंद हास्यन सूं और कितनी एक तो प्रणामन सूं तैसे और तो कंपायमान हस्तकमल पूर्वक पवित्रा पहेरावन सूं और कितनी एक तो तैसे कांपत कांपत हस्त कमल सूं पुष्पमाला पहेरायवे सूं और कितनी एक तो अभिप्राय सूं ही चरण स्पर्श सूं और कितनी एक तो वचनामृतन सूं तैसे और कितनी एक तो और प्रकारन सूं हू वा प्रिय के संग सर्व प्रकार सूं रस संबंध कूं दृढ़ बांधती भईं हैं ।। और केसूं भाई प्रेम सूं प्रभुन के चरण कमलों में आछी रीति सूं प्रणाम करिके प्रभुन के अर्थ हर्ष सूं सुन्दर साज सूं शोभायमान किये सर्व प्रकार सूं अद्भुत दोय शकट कूं समर्पण करत भयो है ।। और वाकी जो भार्या है जो

भक्तिवारीन में श्रेष्ठ राजबाई ऐसे नाम वारी है ।। सो यह बहूजी के उपयोगी अनन्त अमूल्य अत्यन्त दिव्य आभरणन कूं प्रेम सूं भेट करत भई हैं ।। और हू वे वे वैष्णव तिस तिस सुन्दर श्रेष्ठ गुण वारे अनन्त स्वर्ण माणिक्य मुक्ता फलादिक वस्तुन कूं भेट करत भये हैं ।। और सो पुरुषोत्तम श्रीजी वैकुंठ में हू अत्यन्त दुर्ल्लभ जो भोजन लीला है वाकूं कृष्णदास कोठारी के घर में करत भये हैं ।। सो आरंभ किये वांक के उठे जे धुमन के समूह हते और पात्र शाकादि के प्रक्षालन के जे जल के प्रवाह हते सो जैसे जन वर्षा ऋतु हू मानते भये हैं ।। और तैसे ही चारों ओर सूं तब वे प्रगट होते भये हैं ।। और भाईला कोठारी के घर में सो ईश्वर श्रीजी विश्राम के पीछे भक्तन के नयनों में हर्ष कूं वर्षा करत चिरकाल पर्यन्त ही विराजमान होते भये हैं ।। और बड़े हर्ष सूं रसिक सुन्दरीन सूं सेव्यमान सो वा रससिन्धु श्रीजी कूं रात्रि में वा भाईला कोठारी के घर में ही शयन होवतो भयो है ।। और सो परम प्रिय श्रीजी दिन में कृपा सूं हरजी कोठारी के घर में श्रीमद् गोस्वामीजी सूं विशेष सूं आदर कूं प्राप्त भये महा भाग्यवान कपित्थ वृक्ष कोठी के तले सुंष शैय्या कूं प्राप्त होयके निंद्रा लीला कूं करत भये हैं ।। त्यांहा दिन के चतुर्थ याम में विश्राम करिके उठे भये परम प्रिय श्रीजी के सो हरजी कोठारी बड़े आदर सूं चरण कमलों के प्रक्षालण विधि कूं करत भयो है ।। और सगरे जन वा पुरुषोत्तम श्रीजी कूं दरशन करिवे कूं तहां आवते भये हैं ।। और कृपा सागर सो श्रीजी तहां प्राप्त भये अनन्त जीवन कूं नाम उपदेश सूं तैसे और प्रकारन सूं हू बहुत प्रकार सूं कृत कृत्य करत भये हैं ।। और नाम दान करिके वा नाम के ग्रहण करिवे वारे में जो सो श्रीजी प्रसन्न होते भये हैं ।। तासूं वाकूं अपने आनन्द रूप चरण को दान करत भये हैं ।। और नाम दानादि सूं जो सो श्रीजी जनों में अत्यन्त उपकार कूं करत भये हैं ।। सो विनमें प्रभुन की कृपा विना वा उपकार कूं को जाने ।। और सो करुणा सागर श्रीजी विन जीवन कूं वा नामदान सूं अपनो ही करत भये हैं ।। जासूं स्पष्ट ही स्वयं हू सर्व फलों के ऊपर हू विराजमान हैं ।। और बड़े भाग्यवारेन में हू श्रेष्ट कोठारी जयंत नाम जो हतो सो प्रभुन की तैसे प्रभुन के दास सेवकन के सहित वैष्णवन की सगरी पाक भोजन विधि कूं अपने घर में ही करावतो भयो है ।। और दिन रात्रि हू संबंधीन सूं हू सहित यह जयंत कोठारी प्रभुन के शकट, घोड़ा, बैल, रथ आदिकन के हू सेवा कूं

स्वयं करत भयो है ।। और भाग्यवान गणेश नाम जो गोप हतो सो रात्रि में हर्ष सूं दूध की फेंन सिद्ध करिके प्रभुन कूं आरोगावतो भयो है ।। और दिन में के रात्रि में भक्तों ने जो जो सामिग्री हू भक्ति सूं अर्पण करी है सो भक्ष्य के भोज्य के चूष्य के लेह्य के और दूध दधि और सो सो फल हू सो जिनकूं श्रीजी प्रसादी करत भये हैं ।। सो वा प्रसादी रूप विनकूं भक्त जन हू प्राप्त करिके कृत्यकृत्यता कूं प्राप्त होय जाते भये हैं ।। और आरोग्यो जो अपनो तांबूल है सो श्री आपके श्रीमुख कमल संबंधी महामधुर रस सूं मिल्यो भयो जब आपने पीकदान में डार्यो है वाकूं तहां सूं पायके हू अनन्त कृपापात्र कृत्य कृत्य होय जाते भये हैं ।। और जो देश को महा अधिकारी वेणीदास हतो जो राजा के प्रति अवश्य देवे योग्य धन के अभाव सूं कारागृह में स्थिति हतो सो वेणीदास हू दुर्ल्लभ है दरशन जाको ऐसे वा प्राणनाथ कूं तहां पधारयो भयो सुनिकें वा काराग्रह के रक्षक पहेरेदारन के प्रति धन कूं दे करिके विनकूं बहुत मान्यो भयो सो वेणीदास वा काराग्रह सूं निकसि कें एकान्त में आयके प्रभुन को दरशन करत भयो है ।। और आपके चरण कमलों में दण्डवत प्रणाम करत भयो है ।। सो करुणासागर श्रीजी वाके ऊपर अत्यन्त ही प्रसन्न होते भये हैं ।। तासूं हू सो प्राप्त होय रही भारी वा विपदा सूं थोरे से हू काल सूं वेग ही स्वयं ही छूट जातो भयो है ।। के जाके जा विपदा में सर्व काल में बहुत वार हू ताती भई संदंशिका कूं वाके अंगन मे लगायके मांस कूं चीरत ही राजा के जे सेवक हते सो वे वा राजा कूं जो देवे योग्य धन है सो सर्व प्रकार सूं वेग ही दें ऐसे बारंबार याचना हू करत भये हैं ।। सो ऐसी विपदा सूं श्री आपके कृपा कटाक्ष सूं वेणीदास आपके कृपाबल सूं हू विनके प्रति अत्यन्त अल्पमात्र हू धन कूं न देकर के ही छूट्यो भयो हू वा प्राणनाथ के विन विन् गुणन कूं सर्वदा गान करत सदैव प्रभुन की सेवा करत भयो है ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहारभये चतुर्थ कल्लोले अष्टविशमो तरंग समाप्तम् ।।२८।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग ओगणत्रीस ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ ओगणत्रीस स्तरंग लिख्यते ।।२९।।

श्लोक -- **अथा त्रोप स्थिताः सर्व संगीतज्ञान पंडिता नानानटा नृत्य पराः ।। श्रद्धागज्ञान चंचवः ।।१।।**

याको अर्थ -- और यहां संगीत शास्त्र में निपुण और नाना विधि नट और नृत्य परायण तैसे शुद्ध अंग ज्ञान में निपुण जे हते वे सगरे ही श्री आपके निकट ही प्राप्त होते भये हैं ।। और जे नर्तकी हैं जे गान में निपुण हैं ।। और जे ताल में बड़ी चतुर हैं ।। और नृत्य जैसे तांडव में हू परम चतुर हैं और जे वीणा तैसे वेणु के बजायवे में हू कुशल हैं वे सगरे आवते भये हैं ।। तैसे मृदंग बजायवे में चतुर दुला नाम और नृत्य करिवे वारो, रंग राग, तैसे माधवदास और तैसो पोपा व्यास और यह सगरे तहां आवते भये हैं ।। और सो नृत्य कूं अत्यन्त आछी रीति सूं जानवे वारो और जो वेश करिवे मे विविधि प्रकारन सूं चतुर है जाकी प्रभुन ने अत्यन्त श्राद्धा (सराहना) करी है ऐसो नारायणदास हू तहां आवतो भयो है ।। और गंधर्वन में प्रतिष्ठित भरडा जाति वारो सौंदर्य और श्रीमाली ज्ञातिपूजक गुणी मोहनदास और तांडव में तैसे लास्य में चतुर और गान के जानवे वारो और सुन्दर नाचवे वारो द्वारिकादास तैसे रवाव के बजायवे कूं जानवे वारो रायचन्द्र और वंश में निपुण है मनी हू यह सगरे हू तहां आवते भये हैं ।। और गुणन कूं समुद्र नृत्य विद्या में चतुर सो मलेच्छ हू आवतो भयो है ।। जाकूं निरंकुश कृपासागर श्रीजी ने नाम दे करिके अपने दास भाव कूं प्राप्त कियो है ।। और या दादू को मलेच्छ भाव और पतित भाव हू या प्रभुन में उदासीनता कूं न प्राप्त हू करतो भयो हू और जाकूं या श्रीजी ने प्रसिद्ध कियो है ऐसो सो वृन्दावनदास हू तहां आवतो भयो है ।। जे कहे हैं यह सगरे तैसे और हू तिस तिस गुणन के जे सागर रूप हते जिनकूं श्रीजी बड़े आदर सूं के जिनके समान के बढ़ती गुणी और नहीं हैं ऐसे ऐसे गुणी तहां सगरे ही आये हते ।। या प्रकार सूं स्वयं हू बारंबार वर्णन करत भये

हैं ॥ सो भाग्यवारेन में श्रेष्ट गुणी अपने अपने गुण तैसे रूप क्रिया और गति हास्यन सूं वा मनोहर नूपुर के शब्दन सूं मनोहर सुन्दर विस्तार वारे और नर्म ने चतुर तिस तिस श्रेष्ठ भक्तन सूं और रस वारी सुन्दरी गणन सूं प्राणन सूं ही प्यारी नृत्य मन्दिर में विराजमान वा गोकुल के महेन्द्र श्री गोकुलाधीशजी कूं नित्य ही अत्यन्त प्रसन्न करत भये हैं ॥ और जे सुन्दरी योवन रूप कामदेव के विना हू कांति के प्रवाहन सूं चारों ओर स्निग्ध अंगनवारी हैं ऐसी तुल्य रूप के अवस्था वारी वे सुन्दरनयनी स्त्री गण तहां सदैव ही नृत्य कूं करती भई हैं ॥ और यहां थोरो थोरो दियो है ताल जामें ऐसे रंग में भ्रमण कूं और अंगन के कंपावने कूं के अभिनय कूं करत जे सुन्दर भ्रुअ वारी सुन्दरी हैं सो पंचसर कामदेव के मोहन अस्त्र रूप कूं प्राप्त होती भई हैं ॥ और भ्रमर करिवे में संभ्रम सूं रूपमात्र ही जाकूं प्रतीत होय रह्यो है ऐसी सो कोउ एक नर्तकी है सो वा मरकतमय मन्दिर रूप मेघ में चंचला भाव की बिजुरी भाव कूं प्राप्त होती भई हैं ॥ और तहां चंचल होय रहे जे चरण हैं विनमें चंचल होय रहे जे मनोहर नूपुर हैं विनके शब्दन सूं तहां नर्तन परा जे मृगनयनी हतीं सो मानो कामदेव कूं अत्यन्त ही कुपित करत भई है ॥ और हिम तैसे हीरा और सुन्दर गोल जो मुक्ता फल है विन जैसे उज्ज्वल योवन की कांति सहित जे युवती हैं के सुन्दरी हैं वे नृत्य में श्रम जल के कणिकान सूं इहां की शोभा कूं नहीं धारण करत भई हैं ? अपितु सघरी शोभा वारी होय रही हैं ॥ और नृत्य में हरिण नयनीन के चंचल किये जे हस्त हैं सो कहा यह जतावें हैं के जगत में जे नव पल्लव हैं सो वे हू हमारे नाम संबंधी हू तुल्यता कूं नहीं प्राप्त होवें हैं ॥ और जे कमल हैं वेहू हमारे नाम संबंधी तुल्यता कूं नहीं प्राप्त होय हैं ॥ और तहां नृत्य मन्दिर कूं प्राप्त होयके तहां कंकणन में क्वाणेत और नूपुरुन की ध्वनि सूं मिले उज्ज्वल सुन्दर जे गान हैं और विनके पीछे मुरज के जे शब्द हैं विनसूं विस्मित होयके को पुरुष इन्द्र के अखाड़े कूं निन्दा नहीं करत भयो है ॥ और तब वे नृत्यादि हू सर्व प्रकार सूं अपने सर्व सफलता कूं इच्छा करत विन नर्तक आदि निमितन सूं प्राणनाथ कूं तहां ता प्रकार सूं प्रसन्न करत भये हैं के जा प्रकार सूं अन्य जीवन के प्रसन्न करिवे सूं जो अन्य संबंध रूप दोष है सो फेर इन नृत्यादिकन में पद कूं स्थिति कूं नहीं धारण करत भयो है ॥ और गुणज्ञन के जे शिरोमणि रूप हैं जाके चरण कमलों पर

निरांजन करें हैं ऐसे वा प्राणप्रिय श्री गोकुलपति कूं प्राप्त होयके वे गुणीजन अपने जन्म कूं धन्य ही मानते भये हैं ॥ जासूं प्रसन्न भये प्रभुन कूं जानके वे सगरे प्रिय गुणीजन या प्रिय के निकट ही रहते भये हैं ॥ सो विन महाभाग्यवान गुणन के और विन गुणीन के ऊपर अपने कूं हौं सर्व प्रकार सूं वारने करूं हूं ॥ याके अनन्तर जा गुणी कूं देख रहे प्रभुन ने जा तुरंग के रथ के कुंजरादि के प्रति देख्यो है सो मंद हास्य सूं सुन्दर श्रीमुख कमल सहित आदरपूर्वक थोरे से ही नयनों की चेष्टा सूं सो तुरंग के रथ कुंजरादि वा गुणी के प्रति प्राप्त कर दियो है के आपके नयन चेष्टा कूं जानके ही सेवकजन वेग ही वा तुरंगादि कूं वा गुणी के प्रति दे देते भये हैं ॥ और या गुणी कूं लाभ नहीं भयो है ॥ या प्रकार के वचन नहीं होते भये हैं ॥ और यह गुणी अमित धन कूं प्राप्त भयो है यह वचन तो दूर सूं ही होते भये हैं ॥ और सो सर्वेश्वर प्रभु तो या गुणी में कछु दियो है यह मन सूं हू नहीं विचारत भये हैं । यह बड़ो अद्भुत है ॥ और जा मनोरथ सूं या प्रभुन के निकट जो गुणी आयो हतो सो या प्रभु सूं वासूं अधिक ही धनादि कूं पायके तैसे हर्ष सूं विस्मय होय जातो भयो है ॥ के जैसे और दिखायवे के लिये स्थिति होय रहे दीपक कूं प्राप्त होयके और वा घर में सगरे पदार्थ कूं देखे ही है ॥ और का गुणी कूं कहा कहा प्राप्त भयो है याकूं श्रीजी हू निश्चय नहीं करते भये हैं ॥ तैसे गुणी नर्तक हू निश्चय कूं नहीं करत भये हैं ॥ सो जाको जो वांछित हतो सो वा वा पदार्थन कूं यामें निर्भय होय के हर्ष सूं अपने घर में ले जातो भयो है ॥ और सो प्रभु श्रीजी सगरे विन गुणीन कूं तब ता प्रकार सूं अत्यन्त विभव सूं मिल्यो भयो करत भयो है ॥ के अत्यन्त वैभव वारो कर देते भये हैं ॥ के धन के देवे समय में जा प्रकार सूं वह लोक भूमि में धन की वर्षा ही होय रही है ॥ ऐसे ही मानते भये हैं ॥ सो अपने निकट आये भये विन गुणीन के प्रति श्रीजी विविध प्रकार के बहुत धनन कूं और बहुत वस्त्रन कूं के मुक्ता सुवर्ण मणि गणन कूं के बड़े वेग वारे तुरंगन कूं आछे सतकार पूर्वक दे करिके विनसूं इतर हू कहां कहां विनकूं देते भये हैं, सो को जाने ॥ और जोगीदास, तैसे वारण और भूधी नाम वैष्णव और रूप पुर में रहिवे वारो गोपालदास तैसे और हू वैष्णव गुणीजन समय समय में महता नरसिंहदास ने किये के इतर भक्तन ने किये जे विष्णुपद हैं, मधुर स्वरा सूं गान करत वा प्राणवल्लभ श्रीजी

कूं प्रसन्न करत भये हैं ॥ या प्रकार करुणा के सागर रसिकराय श्रीजी वा आशापुर में भक्तिवारेन के विविधि मनोरथन कूं पूर्ण करत और सगरे जीवन कूं कृतार्थ करत निरन्तर प्रियान के संग ही कितनेक दिन विहार करत भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहारभये चतुर्थ कल्लोले ओगड़त्रीसमो तरंग समाप्तम् ॥२९॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग तीस ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ तीसमो स्तरंग लिख्यते ॥३०॥

श्लोक -- **किं गोकुलेश लीलासिंधो प्राणांर्बदादपि प्रेष्ट ॥ प्रकट बयासितात तांस्तांनलं गुणानद्रुतास्तदीयेषुः ॥१॥**

याको अर्थ -- अब श्री गोकुलपति के परम कृपापात्र अनन्य सेवक कल्याण भट्टजी कहें हैं के हे श्री गोकुलेशजी के लीलासिंधो, हे अर्बुद प्राणन सूं हू अत्यन्त प्रिय तुम विन विन अद्‌भुत गुणन कूं काहे कूं प्रगट करो हो ॥ जासूं जे तो तदीय है के वा श्री गोकुलपति के ही है ॥ के केवल श्रीजी के ही अनन्य भक्त सेवक हैं वे तो सगरे ही वा श्री गोकुलपति में ही वे सगरे गुण हैं या प्रकार सूं दृढ़ धारण किये निश्चय वारे हैं ॥ और जे इन साधारण जीवों में कितने एक विमुख जीव हैं वे तो तुमने वर्णन किये विन विन गुणन कूं देखकें यह गुण तो माधव भगवान के हैं ॥ और वा माधव के गुणन कूं यह तो चुरावतो भयो है या प्रकार सूं कहेत तुमकूं बल सूं हू बांध ही देते ॥ तथापि वे श्री गोकुलाधीश की बलवारी जो उदारता है वाकूं जो लोक में प्रसिद्ध ही है ॥ तथापि वे नहीं जानें हैं ॥ जो उदारता तुमकूं तैसे निस्तुष गुण वृंद वारी और बल वारी करत भई है ॥ तासूं वास्तव में जीव नहीं जाने है तासूं ही वैसे कहे है ॥ सो विन जीवन के कहिवे सूं कहा है ? वे तो अपनो ही अपनपो बिगारे है ॥ तासूं तुम तो वा श्री गोकुलपति की परम कृपा उदारता सूं प्राप्त भये वा श्री गोकुलपति के वैसे गुणन कूं श्री गोकुलपति के ही अनन्य कृपापात्र

जीवन के हित ही अवश्य ही प्रगट करो यह भाव है ।। या प्रकार सूं कल्याण भट्ट जी अपने कूं धैर्य देकर फेर हू वा श्री गोकुलपति के आगे के चरित्र कूं कहें हैं ।। अब प्रसंग कूं कहें हैं के याके अनन्तर प्रेम सूं पूर्ण विट्ठलदासजी हाथन कूं बांध के प्रणाम कूं करिके एकांत में रस सागर श्रीजी के आगे विज्ञापना करत भयो है ।। के हे महाराज, हे करुणासागर निश्चय किये अभिप्राय में अविलंबन कूं नहीं करे है ।। हे महामते, हमारे घरन कूं आप अलंकृत करोगे तासूं हम सगरेन कूं आप कृपा सूं ही आनन्दित करें ।। हे प्राणनाथ और हमारे संमंधी जे जन संकोच सूं इहां आपके मिले भये समाज में आयवे में समर्थ नहीं हैं, और आपके अत्यन्त ही भक्त हैं तासूं आपके तहां पधारवे सूं वे हू श्री आपके मिलाप सूं परम हर्ष कूं प्राप्त होवेंगे ।। और श्री आप तो अपने आपके अभिप्राय कूं और प्रेम रीति कूं तैसे भय और लज्जा कूं जानो हो ।। और सुहृद और शत्रुन और उदासीन तैसे सहायक और कार्य साधकन कूं हू जानो हो ।। और असौकर्य तैसे सौकर्य कूं और तैसे तैसे और और कार्यन कूं आप जानो ही हो ।। और तहां सगरे अर्थन कूं सौकर्य हू विद्यमान है ।। ऐसे या प्रकार के विट्ठलदास के वचन कूं सुनकर प्रेम रस कारुण्य कूं सागर रूप प्राणपति श्रीजी हसत हसत श्रीमुख कमल सूं वा वचन कूं अंगीकार हू करत भये हैं ।। याके अनन्तर रात्रि समय़ में एकांत में प्रिय श्रीजी भाईला कोठारी के प्रति कहेत भये हैं ।। के या प्रकार सूं यह बुद्धिमान विट्ठलदास जी ऐसे विज्ञापना करें हैं ।। तामें हमकूं कहा कर्तव्य है ।। ऐसे श्रीजी के वचनामृत सुनिके कहतो भयो है ।। के हे प्राणपति यह घर और यह हम सगरे और जो कछु ही हमारो है सो सगरो ही श्री आपको ही है ।। परमेश हे रस सागर प्रिय तथापि श्री आपके में अत्यन्त भक्त विट्ठलदास के घर में श्री आपकूं अवश्य ही पधारवो उचित है ।। जासूं सो विट्ठलदास जी सर्वोत्तम भक्त हैं ।। और महामुख्य हैं और जे राज संबंधीन में हू जो मुख्य प्रसिद्ध है और बलवारो है ।। तैसे वैष्णव जाकूं अतिप्रिय हैं ।। और आपके ही जे अनन्य, अनन्य वैष्णव हैं विनके संग जो दुष्ट खल द्वेश करे है विनके हू मुख कूं तोड़ें हैं ।। रंच हू विलंब नहीं करें हैं ।। और श्री आपके पितृचरण श्री गोस्वामीजी हू याके घर कूं प्रथम अत्यन्त ही सुगंधित ही करत भये हैं ।। और या विट्ठलदास के जे श्री बहेन जी बेटी आदि हैं वे सगरे ही श्री आपके अत्यन्त ही भक्त हैं ।। सो वेहू सगरे तहां

पधारे भये तिहारे दर्शन कूं निर्विघ्न ही प्राप्त होंयगे ।। और वा तिहारे दर्शन रूप पर्वत सूं प्रकट भये आनन्द रूप सरोवर में ध्यान करवे सूं सगरे ही अपने कूं सर्व प्रकार सूं वेग ही शीतल करेंगे और कृतार्थ हू होय जावेंगे ।। और लक्ष्मीदास ने हू आप श्री के आगे बहुत प्रकार सूं ही यह विज्ञापना कियो है के "हे कृपासिन्धु मेरे घर कूं पावन करो" सो हे प्राणाधिक प्रेष्ट, और हे कृपासिन्धो या प्रकार की या लक्ष्मीदास की विनय सूं हू आपकूं तहां पधारनो अवश्य ही उचित है ।। सो मेरी तो या प्रकार सूं विनय ही है यासूं आगे तो परमेश्वर महाराज स्वयं प्रमाण हैं के जैसे श्री आपकी इच्छा आवे तैसे ही करे ।। सो या प्रकार के वा भाईला कोठारी के वचन कूं सुनकर सो शरणागतन की आर्ति कूं नाश करिवे वारे भगवान दयासागर श्रीजी वा भाईला कोठारी के प्रति कहेत भये हैं ।। "के यदि तुम हू यामें संमति करो हो तो मोकूं तहाँ अवश्य ही पधारनो उचित है" ।। इतनो कहकर याके अनन्तर प्रातःकाल के सगरे आवश्यक कृत्य कूं वेग सूं करिके और श्रीं आप आरोगिकें और विन विन सेवकन सूं सराहना किये और प्रेम सूं विविधि वस्त्र भूषणन कूं पहेराये भये हू और सगरे सेवक भक्तादिक जाके पीछे संग चलि रहे हैं ऐसे सो प्रेमसागर महाप्रभु श्रीजी भक्त गणन सूं मिले भये हू भाईला कोठारी के घर सूं विट्ठलदास के घर के प्रति प्रस्थान करत भये हैं ।। और मार्ग में पधार रहे कोटि कंदर्पन सूं हू सुन्दर वा श्रीजी को दर्शन करिके प्रगट भयो है बड़ो भाव जामें ऐसी कोई एक महाभाग्यवारी मालिन हर्ष सूं उठिके पुष्पमय हार कूं या श्रीजी के महा अनिर्वचनीय शोभा वारे श्रीकंठ में भाव सहित पहेरावती भई है ।। और सो रस सागर श्रीजी बा हार कूं हर्ष सूं ही अंगीकार करत भये हैं ।। तब वा दिन सूं सो मालिन ब्रह्मा इन्द्रादिकन कूं हू दुर्ल्लभ हैं चरण कमल संबंधी रेणु की कणिका हू जाकूं ऐसी या प्रिय की दासिन में गणना कूं हू प्राप्त होय जाती भई है ।। तब सो परमेश्वर श्रीजी सिकन्दरपुर कूं प्राप्त होते भये हैं ।। तहां श्री तात चरण श्री गोस्वामीजी ने स्थापन किये के पधराये जे श्री मदनमहोन भगवान हैं वाको दरशन करिके महाभाग्यन के निधि रूप वा विट्ठलदास के घर कूं प्राप्त होते भये हैं ।। अब वा विट्ठलदास के वा घर की शोभा कूं कहें हैं ।। के जा घर में धारण करी जे नीलमणी है विनके कांति समूहवारी जो स्फटिक मणीमय भूमि है वाकी प्रसर रही किरणन सूं जो घर मिल रही है

श्री अत्यन्त चंचल तरंगन वारी श्री यमुना यामें ऐसे गंगा जल के समानता कूं प्राप्त होय रह्यो है ।। और जा घर के निकट है मगधराज तुम दूर जाओ के है कुंतल देश राज तुम कछुक क्षण इहां ठहेरो के हे गौड़राज बोलो मति या प्रकार सूं वे त्रधारन की के पहेरेदारन की जे वाणी हैं सो बड़ी शोभायमान होय रही है ।। और जा घर के निकट बड़ी सेना सूं मिले भये और कनक रत्नन की समृद्धि सूं गर्वित जे तहां आये भये अनेक देशन के राजा हैं सो गणना कूं हू नहीं प्राप्त होय हैं ।। और जा घर के द्वार में जटित होय रहे माणिक के किरणन सूं अंधकार रहित रात्रीन में प्रातःकाल है ऐसे सदैव ही जहां जनन कूं भ्रम होय है सो महा पद्मराग मणिन सूं परंपरा वारो कियो जो वा घर को द्वार है जो देखवे सूं विदीर्ण होय रहे शत्रुन के हृदय की रुधीन सूं लालिमा कूं मानो प्राप्त भयो है ।। ऐसे वा अद्‌भुत द्वार कूं प्रथम ही सो श्रीजी देखते भये हैं ।। और जा द्वार में महामद वारे हस्तीन के गिर रहे मद की धारान सूं पंक वारी करी है भूमि जाने ऐसे हू राजा जहां निरन्तर जनों के रोकवे में लगे भये सो वे त्रधरन की के पहेरेदारन की समता कूं प्राप्त होय हैं ।। और जा द्वार में रत्नन की राशिन कूं भेटा रूप सूं लायके बैठ रहे जे राजान के समूह हैं सो वे यह कौन हैं ऐसे प्रभु के लोगन सूं नहीं जाने भये ही विकल होयके अनेक दिनन कूं गुजारते भये हैं ।। सो ऐसे द्वार में मंगलमय है रूप और अंग जाके और धारण कियो है मंगलमय कलश जाने और मंगलमय वस्तुन कूं जो धारण कर रही है ऐसी मंगलमय सुन्दरी कूं सो जगत मंगल श्रीजी देखते भये हैं ।। और मंगलमय सुवर्ण पात्र में आरती कूं धारण करिके वा द्वार सूं बाहिर निकसी भई जे मंगलमय गीतन कूं गान करत जो मंगलमय चेष्टावारी हजारन करोड़न मंगलमय सुन्दरी हैं सो या श्रीजी के ऊपर प्राणन कूं वारत ही कुंमकुंम सूं मंगलमय उत्तम तिलक कूं करिके वेग सूं मुक्ता फलन कूं न्योछावर करत भई हैं ।। सो वे मंगलमय सुन्दरी जन या प्रकार सूं या वर प्राणनाथ श्रीजी कूं पधराय के रचना किये रत्नमय मंडप में विछाये भये रत्न खचित सिंघासन में प्रेम सूं बैठावती भई है ।। और बड़े भाग्यवारीन में हू श्रेष्ठ जे और चौदह भुवन संबंधिनि संपदा वारी जे वे सुन्दरी हैं सो वा श्रीजी के श्रीमुख कमल कूं विलास सहित देखत ही वा रत्नमय आरती सूं तैसे विविधि वस्त्र भूषणन सूं तैसे मणी मुक्तान सूं हू और मुक्ताहार तैसे सुवर्ण

रत्न माला और पुष्प मालान सूं हू अर्च्चन करत भयी हैं ।। और नागरो के शिरोरत्नन की मंजरीन सूं हू रत्न पीत वर्ण वारे होय रहे हैं चरण कमल जाके और सर्वज्ञ गणन सूं वंदनीय हैं चरण जाके ऐसे जे विदग्धन के शिरोमणि और निर्दोष श्रृंगार रस के सार के हू सार महासागर रूप श्रीजी हैं ।। सो विन सुन्दरीन के नयनों के विलास विशेष सूं विविधि अभिप्राय वारे वाके देखवे कूं और सुन्दर विस्फारित अधिक पसारे भये नेत्रन के भाव कूं और मुखकमल की प्रफुल्लितता कूं और नयन चकोरन की चंचलता कूं और उत्साह कूं और लज्जा के भार कूं और हर्ष संबंधी अश्रुन के समूह कूं और आनन्द के समूह कों और सम्पूर्ण कारता कूं और तैसे तैसे काम विलास भाव कूं और रोमांचित देह वारे भाव कूं तैसे गद्गद् कंठता कूं और भाव सूं प्रगट भये पसीना के जल सूं ध्यानता कूं और कंप भाव कूं और स्तंभ भाव कूं और भाव सूं विवरणता कूं और केवल अपने में ही मन की नेष्टा वारे भाव कूं सो कमलनयन श्रीजी पान करत भये हैं ।। और विन सुन्दरीन के भाव विशेष सूं तैसे प्रगट ही अत्यन्त होय रहे अत्यन्त आग्रह वारे जे नयन हैं ।। और अत्यन्त उत्साह वारे और अत्यन्त तृषित और अत्यन्त लोलुप और अत्यन्त चपल और तृप्ति रहित और चोरी करिवे में तत्पर और कुटिल और आलसी के आर्त और आनन्द सहित और भय सहित और लज्जा सहित और अत्यन्त धृष्ट और अत्यन्त स्थिर और मंद हास्य वारे और मन के भाव कूं प्रगट कर रहे और या श्रीजी के मन कूं आकर्षण कर रहे तैसे उपालंभ कूं कहे रहे और आश्चर्य सहित तैसे अक्षरों के बिना ही तिस तिस अर्थ कूं कहे रहे और बारंबार प्रणामन कूं कर रहे और आलिंगन कूं कर रहे तैसे चुम्बन कूं कर रहे और चारों ओर पान कूं हू कर रहे तैसे भ्रम रहे सो विहार कर रहे और चारों ओर तर रहे क्रोध सूं नृत्य कूं कर रहे और क्रोध कूं कर रहे और प्रसन्नता कूं दिखाय रहे और तिस तिस वांछित कूं अत्यन्त करत और देखत और तिस तिस वांछित कूं अन्वेषण कर रहे और तहां तहां प्रवेश कर रहे और तिस तिस अंग कूं भेदन कर रहे और तैसे प्रथम बेर सूं बुद्धि कूं हू भेद न कर रहे और कछु हू कहिवे में समर्थ नहीं होय है ।। और नम्र मुख सूं स्थिति है और मानो हाथन कूं बांध रहे और स्तुति कूं कर रहे हैं ।। के कृपा कूं वांछा करें हैं ।। और अत्यन्त गर्वित हैं और स्निग्ध हैं, तैसे हास्य सहित है के रूषे भाव कूं धारण कर रहे

हैं ।। और लपक है तैसे चपल है ।। और मुग्ध भाव वारे हैं ।। और रसदान उदार है ।। तैसे प्रबल है और सुगंधी कूं ले रहे हैं के स्वाद कूं अनुभव कर रहे हैं और तैसे तैसे सुन रहे हैं ।। के विचार कर रहे हैं ।। और स्पर्श कर रहे हैं और अत्यन्त ग्रहण कर रहे हैं और हृदय में वेध रहे हैं के वाणन कूं संधान कर रहे हैं ।। और शीतलता कूं हू प्राप्त कर रहे हैं और शोभित कर रहे हैं के स्नान कराय रहे हैं ।। के बारंबार विक्षिप्त कर रहे हैं के वश कर रहे हैं के तिस तिस बात कूं पूछ रहे हैं और बढ़े भये उत्साह सूं शोभित होय रहे हैं ।। और हंस रहे हैं तैसे हंसाय हू रहे हैं ।। और प्रवर्त होय रहे हैं के कबहू निवृत्त वारे होय रहे हैं ।। और दे रहे हैं और बल सूं हू ले रहे हैं ।। और कबहू प्रगट होय रहे हैं और कबहू तिरोहित होय रहे हैं के छिप रहे हैं ।। और कबहू अपने मे हीनता कूं धारण करें है ।। और कबहू उल्लास कूं प्राप्त होय रहे और ग्रहित भये जैसे है ।। और पलायन कूं कर रहे हैं और आलिंगन कियो है और वियोग कूं प्राप्त होय रहे हैं ।। और बुलाये हैं त[illegible] भाय रहे हैं ।। और आयके हू फेर चले गये हैं और कबहू बिना बुलाये हू अपनी इच्छा सूं आये हैं ।। और बिन समय में समीप आयके नम्र होय रहे हैं ।। और स्पर्श करिके हू फेर अत्यन्त दौड़ गये हैं और कंडु वारे होय रहे हैं ।। के कबहू आधि मार्ग में हू धारण किये हैं और ग्रंथित होय रहे हैं के मिल रहे हैं ।। क्षुधित हैं के क्षोभ कूं प्राप्त होय रहे हैं ।। और दान कियो है सर्वस्व जिनोने ऐसे हैं । और केवल श्रीजी परा ही हैं ।। ऐसे जे केवल रसिक शिरोमणि श्रीजी के अनुभव सूं हू वेध भाव वारे विविधि भाव वारे विन सुन्दरीन के नयन हैं ।। विन नयनन सूं निमेष रहित ही सो प्रिय श्रीजी विनके आधीन होय जाते भये हैं ।। और करोड़न कामन सूं हू सुन्दर और सगरे आभूषणन के हू भूषण रूप श्री गोकुल के प्राणवल्लभ सो श्रीजी तहां विराजमान होय रहे हैं ।। सो हों तो यह विचार करूं हूं ।। ऐसे वा विराजमान सुन्दर प्रिय के स्वरूप कूं लेवे की इच्छा वारी जे गुजरात वासिनी चन्द्रमुखीन की दृष्टि रही सो यदि विधाता विनकूं क्षण क्षण में निमेषन सूं नहीं रोकतो तो नीचे ही गिर जातीं ।। और कृपा रूप अमृत के सागर प्रिय श्रीजी विन नयनों के उन्मेषन सूं के प्रकाशन सूं अपने स्वरूप को दर्शन करायके समाधान नहीं करते तो वा गौलोक में ही वे नयन अंतरध्यान ही होय जाते ।। और भूषणन में हू व्याप्त

होय रही जे वा श्रीजी के महास्वच्छंद श्री अंग हैं विनमें प्रतिबिंबित होय रहे अपने देह ब्याज सूं सगरी वे सुन्दरी गण केवल दृष्टि सूं हू के केवल हृदय सूं हू मग्न नहीं भई हैं ॥ किन्तु सगरी वे सुन्दरी सर्वात्म भाव सूं ही मग्न होय जाती भई हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहारभये चतुर्थ कल्लोले त्रीसमो तरंग समाप्तम् ॥३०॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग एकत्रीस ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ एकत्रीसमूं स्तरंग लिख्यते ॥३१॥

श्लोक -- **सोयं विठ्ठलदासो विठ्ठलामहथेप्येति विख्यातः ॥ वैकुंठादपि महिते यस्य गृहेऽभुषणायत प्रियान् ॥१॥**

याको अर्थ -- और जो यह विठ्ठलदास है सो विठ्ठल महेता या नाम सूं तहां प्रसिद्ध हतो सो जाके घर में सो प्रिय श्रीजी भूषण रूप शोभायमान होते भये हैं ॥ और या विठ्ठलदास महेता को भ्राता लक्ष्मीदास हतो सो लखीभाई ऐसे नाम सूं प्रसिद्ध हतो ॥ जो लखी भाई भक्तन में प्रसिद्ध हतो ॥ और प्राणाधीश श्रीजी के गोपनीय अर्थ में हू अत्यन्त विश्वासपात्र और धैर्यवान हतो और या श्रीजी के सगरे सेवक गणन में हू अत्यन्त प्रसन्न होय रह्यो हृदय वारो हतो ॥ और विविधि विचित्र वस्त्रन सूं सगरे भक्तन कूं अत्यन्त प्रसन्न करिवे वारो हतो ॥ और सगरे भारी अर्थन सूं हू सदैव विनके अत्यन्त उपकार कूं करिवे वारो हतो ॥ और सूंधे मन वारे और अत्यन्त भक्त ऐसे ही और हू या विठ्ठलदास महेता के भ्राता हते जो कानजी ऐसे नाम वारो हतो ॥ और नानजी ऐसे नाम वारो हतो ॥ और जो स्तंभ तीर्थ खंभात मे रहेवे वारो जो माधवदास है सो विविधि गीतन के करिवे वारो है ॥ और रसात्मक प्रिय के स्वरूप कूं जानवे वारो हतो ॥ और सो कसू भाई तो प्राणपति श्रीजी के चरण कमल संबंधी गिरि रही जो मकरंद है सो हे जीवन के प्राण धारण करायवे वारी जिनकी ऐसे ही है ॥ और प्रसिद्ध हू है और स्तंभ तीर्थ मे के खंभात में वसिवे वारो

अत्यन्त भक्त जीऊ भाई और सर्व प्रकार सूं अत्यन्त हित रूप सो भक्त पछा त्रिवाड़ी और भायला कोठारी तैसे सो राधन पुर में रहिवे वारो प्रसिद्ध सो गोविन्द द्विवेदी और गदाधर द्विवेदी और मछुआ ठाकुर सो गोपीनाथदास और तैसो झवाजी यह सगरे ही शुद्ध हृदय वारे हैं ।। और रस मार्ग में नेष्टा वारे हैं ।। और श्रृंगार लीला के अनुकूल हैं और प्रिय श्रीजी के तैसे आपके भक्तन के सुख के अभिलाखा वारे हैं ।। और प्रामाणिक रूप सूं प्रसिद्ध हैं ।। और श्रीजी के लीला पात्र कूं अन्वेषण करिवे वारे हैं ।। और श्रीजी की लीला सूं ही जीवन वारे हैं ।। और वा लीला में जे प्रतिकूल है बाधक है विनकूं निकारवे वारे हैं ।। और भाग्यवारेन में मुख्य हैं और नवनीत हृदय वारे हैं ।। और श्रीजी जे लीलापात्र हैं विनमें जे मुख्य हैं विनकूं कछुक दिखावे हैं ।। के विनमें जो हीर बाई है सो बड़ी प्रतिष्ठित है ।। और कवा बाई बड़ी तैसे कवा बाई छोटी और विठ्ठलदास की जो पुत्री है सो महाभाग्यनिधि रूप है ।। तैसे श्रीजी कूं जो अत्यन्त प्रिय है ।। और कुंवरबाई ऐसे नाम सूं प्रसिद्ध है ।। और जो प्रिय श्रीजी के संग सदैव ही नर्म में हास्य प्रसंग में तत्पर है ।। और जा कुंवरबाई की गुणन के समूह प्रिय श्रीजी ने स्वयं श्रीमुख सूं हू वर्णन कीये हैं ।। और या विठ्ठलदास की जो बहेन है सो हीरबाई है जो सगरे स्त्री रत्नन सूं वन्दनीय है ।। और परमेश्वर श्री वल्लभ की जो मुख्य स्वामिनीजी श्री पार्वती वहूजी हैं वाके श्री चरण कमलों में प्रणाम कूं करिकें दिव्य रत्नन सूं जटित सुवर्णमय कर्ण भूषणन सूं के भक्ति सूं समर्पण करत भई हैं ।। और या हीरबाई की जो बेटी है जाको नाम मानबाई है ।। जो सौंदर्य गुणन सूं अत्यन्त शोभायमान है ।। और जो महाभाग्यवती है ।। और जो श्रीवल्लभजी की अत्यन्त भक्त है और वल्लभा है ।। और विठ्ठलदास की जो बहू है सो तो श्रृंगारदे नाम वारी है ।। और श्रीजी में जे प्रेमवारी नवीन यौवन वारी तैसे षोडश वर्ष के स्वरूप वारी तैसे सुन्दर रूप गुणशील सूं मिली है ।। और प्रिय के आशक्त पात्र है ।। ऐसे जे भक्त हैं विनमें हू यह जे वर्णन करी हैं सो श्रेष्ठ ही मानी हैं ।। और विनमें हू तैसी कुंवरबाई है ।। और मानबाई हू तैसी है ।। और जो श्रृंगारदे नाम वारी है जो गुणन की निधि रूपा है सो तो या प्रिय के हृदय कूं हरिवे वारी है ।। सो इनके तो इतने सूं ही बुद्धिमान अधिक भाग्यन कूं जान लेवे के जो इनकूं देखवे

अर्थ ही ईश्वर के हू ईश्वर श्री गोकुलाधीशजी वो श्री गोकुल सूं पधारते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले एकत्रीशमो तरंग समाप्तम् ॥३१॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग बत्तीसमो ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ बत्तीसमू स्तरंग लिख्यते ॥३२॥

श्लोक -- **अथा सुसुभ्रू श्रृंगारदे नाम्नी भाग्यवत्त मां ॥ कदाचिद्रुहासे प्राणनाथं श्री गोकुलेश्वरः ॥१॥**

याको अर्थ -- याके अनन्तर प्रथम कहे श्रीजी के लीला योग्य रस पात्र रूप भक्तन में अत्यन्त भाग्यवारी जो श्रृंगारदे नाम वारी परम रसिक भक्त हती सो कबहू एकांत में प्राणनाथ श्री गोकुलेश्वर जी कूं दर्शन करिवे की इच्छा वारी भई थकी निरन्तर उच्छल्लित होय रह्यो है प्रेम समूह जामें और तासूं उत्साह भाव सूं प्रेरणा करी भई सो श्रृंगारदे जी अमूल्य मणि मुक्तान सूं खचित मनोहर सुन्दर सुवर्णमय पवित्रा कूं लेके और विविधि उपायन कूं और नवीन वस्त्र और भूषणन कूं सखी द्वारा ले करिकें विलास सहित तहां श्रीजी विराजमान हते तहां प्राप्त होती भई है ॥ और वक्षस्थल में कंचुकी सूं के अंगिया सूं आवरण वारी और मध्य देश में लाल रंग वारे पट सूं आवरण वारी और मुखादिकन में परम शोभा सूं आवरण वारी वा श्रृंगारदे कूं जे बुद्धिमान तहां दरशन करत भये हैं विनके हृदय सूं यह सुवर्णमय मणि जटित है के विन मणीन में वे सुवर्ण जटित है या प्रकार के जे संदेह हते सो निकसिवे में न समर्थ होते भये हैं ॥ और तब तैसे रसात्मक प्रिय के तैसे रूपामृत के पान में लोभ वारे होय रहे हैं नयन कमल जाके, ऐसी सो श्रृंगारदे अन्य चन्द्रमुखीन सूं याके हरवे कूं विचार करके कहा के और चन्द्रमुखी या प्रिय के रूपामृत कूं हर लेंगी या संदेह सूं सो अपने भूषण संबंधी रत्नन की किरणन के समूहन सूं कल्पना किये इन्द्र धनुष कूं या श्रीजी में धारण कराय के सो यह तो इन्द्र है न के

सो श्री वल्लभजी है ।। या प्रकार की उत्पत करी गोकुल संबंधी मृगनयनीन की बुद्धि सूं सो श्रृंगारदे यह श्री वल्लभजी हैं वा बुद्धि कूं विन गोकुल संबंधी चन्द्रमुखीन सूं निवर्त करिवे लिये इच्छा करत भई है ।। और वा प्रिय कूं सो चतुरा श्रृंगारदे दरशन करिके अपने में प्राप्त भयो हो विभावन करत भई है के यह प्रिय तो मोकूं हू प्राप्त होय गयो है ।। ऐसे विभावन करत भई है । और अपने मन में यह हू विचार करत भई है के हौं तो यह मानूं हूं के सर्व सुन्दरीन सूं सगरे मधुर उत्कर्षन सूं हू मानो अत्यन्त तृप्त होयवे सूं जड़ होय गई है रसना जिनकी, ऐसे जे या प्रिय के संबंधी भ्रु और श्री हस्त कपोल कर्ण चरण भुजा नयन हैं विनकी तैसी रुचिर आलि सषी है जैसे उपमा कूं प्राप्त करवे अर्थ वा उपमा कूं अनुसरण करिकें तैसे दूसरे भ्रू हस्त कपोल कर्ण चरण भुजा नयन कूं विधाता रचना करत भयो है ।। और सुख मूर्ति तो तुम हो ऐसे तिहारे स्वरूप कूं चक्षु के होने पर हू जो नहीं देखें हैं सो अंध ही है ।। और यह नहीं है किन्तु तासूं हू अधिक यह है के जो पुरुष या तिहारे स्वरूप कूं देखि के हू तासूं और कूं हू आदर सूं हू देखे है सो हू अंध है ।। और याके अनन्त रसोरस-सागर प्राणनाथ श्रीजी हू वा श्रृंगारादि कूं नख सूं लेकर शिखा पर्यन्त ही निमेष रहित नयन सूं देखत ही अपने हृदय के भाव कूं कहेत भये हैं ।। और अपने हृदय में विचार करते भये हैं के विधाता ने जे प्रथम वे वे स्त्री रचना करी है वे तो अपक्व ही अभ्यास सूं रचना करी है ।। और यह श्रृंगारदे तो परिपक्व अभ्यास सूं रचना करी है ।। और अबहू जो विधाता स्त्रीन कूं रचना करत हैं और आगे हू तो विनकूं रचना करेगो सो तो या श्रृंगारदे कूं विनके जय सूं प्रगट भई कीर्ति हू देवे अर्थ रचना है, मेरो तो यह निश्चय ही है ।। और हौं तो यह मानूं हूं के या प्रिय कूं रचना करिवे वारो तो बसंत ही है तासूं मलय पर्वत संबंधी पवनन सूं याके श्वासन कूं रचना करत भयो है ।। और पुष्पन सूं याके अंगन कूं रचना करत भयो है ।। और कोकिल संबंधी पंचम स्वरान सूं याकी वाणी कूं रचना करत भयो है ।। और तांबूलन कूं आरोग रही जो प्रफुल्लित कमल जैसे मनोहर नयन वारी यह प्यारी है याकूं भीतर धारण कियो कंठाभरण संबंधी हीरान की कांति सूं शुभ्र जो कंठ है वाके मध्य सूं उदय भयो जो श्रीमुख कमल है सो मानो स्फटिकमय शंख के मध्य में धारण कियो जो कपूर और माधुर्य्यादि गुण और

राग और पुष्प रस है सोई ही घनीभूत प्रगट भयो जैसे होय तैसे शोभायमान होय रह्यो है ॥ और सौंदर्यामृत कूं समुद्र रूप या प्रिया के उदर में विधाता ने कियो जो रोमावली रूप सेतु है सो तो मेरे नयनों के निमज्जन कूं के निमग्नं होयवे कूं दीर्घ निपानक रूप है ॥ के छोटो जलाशय रूप है ॥ और अहो या सुन्दरी के उरस्थलन सूं सदृशता कूं इच्छावारे जे ऊंट और हस्ती के कर हते विनकूं जा दिन सूं ही प्रथम उपमा रूप करिके जे सुवर्ण कदली हती वे वा प्रिया के उर स्थलन सूं उपमा संबंधी वा वा अपने मनोरथ कूं, हे तात जासूं विधाता ने ऊंट हस्तीन कूं हू निरंगुल कर दियो है ॥ तासूं वा उपमा कूं अभिलाखा करत तुम प्रमाद कूं मति प्राप्त होवो ऐसे कहेत सदैव ही अत्यन्त कंपायमान होय रही है ॥ के विधाता हमकूं हू कछु दंड नहीं दे दे ॥ और डर रहे बाल मृग जैसे सुन्दर नयनवारी वा प्रियाजी के कुचन में तो कठिनता है ॥ और नयनों में तो चंचलता है ॥ और मध्य में हू अत्यन्त तुच्छता है के सूक्ष्मता है और केशन में वक्रता है ॥ और भ्रूअन में तो मलिनता के श्यामता है ॥ और बिंब समान अधरन में हू लालिमा है ॥ तासूं वा प्रियाजी कूं सदां आश्रय रूप जो तरु है के श्री विग्रह रूप वृक्ष है सो दुष्टता कूं तो अत्यन्त ही त्याग करत भयो है ॥ और श्रेष्ट गुण भाव कूं धारण कर रह्यो है ॥ और कहा कहा फल कूं नहीं प्रगट कर रह्यो है अपितु सर्व फल कूं प्रगट करि रह्यो है ॥ सो यह बड़ो खेद है के या प्रिया के मुख कूं कमल और चन्द्रमा सूं तुल्य करिवे कूं जन वृथा ही यत्न करें हैं जासूं सो श्रीमुख कबहू जा दर्प्पण में स्वयं हू प्रतिबिम्बित भयो है ॥ वा दर्पण कूं हू यह कमल और चन्द्रमा सदैव ही प्रणाम करे है ॥ और हे सुधियः सुन्दर बुद्धिवारे तुम वा दर्पणन के नष्ट भये मुख कूं आज पर्यन्त हू काहे कूं देखो हो ॥ और या दर्पण में तुमकूं वैराग्य नहीं होय है ॥ उपेक्षा नहीं होय है जासूं बड़ो खेद है के अपने में प्रतिबिम्ब रूप सूं आये भये हू वा प्रियाजी के श्रीमुख कूं बलसूं ही नहीं राखतो भयो है ऐसे दर्पण कूं कहा देखनो है ॥ और हे तन्वि परम सकुमारी अहहा रत्नमय तिलक की लालिमा के बल सूं चन्द्रमा में तुम काहे कूं कोप कूं सूचना करो हो ॥ जासूं यह चन्द्रमा हू दूर सूं ही तिहारे श्रीमुख कूं सेवा करिवे अर्थ नहीं आवे है ॥ और हे तन्वि मालूर जे बिल्व है सो वे तो इनके भय सूं वन में जा रहे हैं ॥ और जे ताल हते वे हू भय सूं अपने कूं ऊंचा लंबायमान करत भये

हैं ।। और जे मातुलंग कहा विजौरा हते वे हू भय सूं पीरे रंग वारे हू होय जाते भये हैं ।। और सो सुमेरु पर्वत हू भय सूं निरन्तर लीन होय जातो भयो है ।। सो हे तन्वि यह तिहारे हरि रहित के श्यामता रहित जे कुच, काके संग युद्ध करिवे कूं कंचुक-मय के अंगिया रूप वर्म कूं पहरिकें तैयार होय रहे हैं ।। और सुन्दर कछुक नम्र होय रह्यो जो श्रीमुख है वाके प्रगट होय रहे विलास हैं उतर जामें और आनन्द सहित है मन्द मुसिकान जामें और ऊँचे होय रहे जे भ्रू हैं विनसूं जो लालित है के मनोहर है ।। और जो लीला के तरंगन सूं के विलास के तरंगन सूं जो अद्भुत है ।। और जो अत्यन्त दीर्घ और दृढ़ रज्जु कूं मानो बल सूं ही मेरे अंशों मे डारके जो मोकूं आकर्षण करि रह्यो है ऐसो जो वा मृगनयनी कूं पालन करे ।। और हे तन्वि हौं तो यह मानूं हूं के तिहारे श्रीमुख चन्द्र मंडल की तुल्यता कूं चाहना वारो जो सो दोषाकार बड़े दोष वारो चन्द्रमा है तासूं विधाता ने क्रोध सहित कलंक की मिस सूं शूल सूं चिन्हित ही कियो है ।। के याकूं विधाता ने शूल मार्‍यो है ।। यह कलंक नहीं है ।। सो रात्रि में पवन के वेग सूं बिखरे भये प्राय या चन्द्रमा के ही निर्मल कण ही नक्षत्रन के छल सूं आकाश रूप आंगण में चारों ओर लगे भये ही प्रकाशमान होय रहे हैं ।। और हे सुतनु सुन्दर कोमल स्वरूपवारी प्रिये तिहारे मुख की जो शोभा है सो सरस्वती के नृत्य की रंगभूमि है ।। यह जानके जो दंत रूप पुष्पन सूं पूजन करी है ।। और ओष्ट बंधुक की पंक्ति ने रस समूह सूं जो सिंचन करी है और ऐसी यह तिहारे श्रीमुख की शोभा मेरे मन कूं आकर्षण करि रही है ।। और चन्द्रमा के एकता कहवे में कहा के चन्द्रमा एक है या प्रकार के कथन में अभिप्राय कहा है ।। याकी जो न निवृत्ति है वाकूं तो श्रीमुख बिंब सूं जो भक्षण करि रह्यो है के निवर्त करि रह्यो है ।। और विष्णु ने जो क्षीर सागर कूं मंथन कर्‍यो है वाकूं हू जो अपने अधर के रसन सूं व्यर्थ कर रह्यो है । और दो कुच पर्वतन की मनोहरता सूं मेरु पर्वत में ही तिन भाव कूं धारण करि रह्यो है ।। के मेरु पर्वत हू तीन हैं ऐसे निश्चय कराय रह्यो है ।। और रती के मद कूं हर्ष कूं करिवे वारो जो काम है वाके हू मद कूं करिवे वारो है ऐसो जो यह स्वरूपात्मक अनिर्वचनीय घोषित पदार्थ स्त्रीय रूप है अर्थ है सो अत्यन्त ही बल वारो है ।। प्रकाशमान भाव होय रह्यो है ।। और हे जना या पाप रूप कलियुग में हू

नास्तिकता कूं दूर करिके तप में अधिक ही श्रद्धा कूं धारण करो ॥ तासूं निश्चय सूं फल कूं स्वयं हू देखो के जो शोभा वा अद्भुत ऊंचे स्वर्ण पर्वत पर चढ़िके हू भ्रगुपात कूं के ऊंचे स्थल सूं गिरवे कूं करत भई है ॥ सो यह शोभा कांता के सुन्दरी के कुचन सूं स्थिति कूं प्राप्त होय जाती भई है ॥ और हे काठिन्य जो तुम दुष्टन के वचन रूप अग्नि में चिर पर्यन्त निवास करत हो ॥ और जो कछुक हिम में निवास करत भये हो, और जो वज्रमय धरणी में निवास करत भये हो और जो सदैव शेष नाग में रह्यो है सो औरन सों न होयवे वारो वा तीब्र ताप कूं परम फल प्राप्त भयो है ॥ के जो तुम कांता के सुन्दरी के दो कुच रूप कली के परिरंभन रूप आलिंगन रूप अमृत कूं पान कर रहे हो ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले वत्तीशमो तरंग समाप्तम् ॥३२॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग त्रयतीशमो ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ त्रयतीसमो स्तरंग लिख्यते ॥३३॥

श्लोक -- **अथामुनाध्यासिता तां भुवं प्राप्ता ततोप्यजं वैकुंठकोटेरुत्कर्षं श्रीमत्तो गोकुलादपि ॥१॥**

याको अर्थ -- याके अनन्तर या श्रीजी सूं शोभित करी जो भूमि है जो श्रीजी के बिराजवे सूं करोड़न वैकुंठन सूं हू अत्यन्त अधिक उत्कर्ष कूं प्राप्त होय रही है ॥ और श्रीमद् गोकुल सूं हू अधिक उत्कर्ष कूं प्राप्त होय रही है ॥ ऐसी वा भूमि कूं सो सखीजनन सहित प्रणाम कूं करिके विलास सहित प्रणाम कूं करत सो सुन्दरी श्रृंगारदे अपने भूषणन की मणिन की कांति सूं विचित्र वर्ण वारी ही कर देती भई है ॥ या समय में वा श्रृंगारदे की जे सखी हती वे वा प्रिय श्रीजी के प्रसन्नता सूं मिले तैसे वा श्रीमुख कूं देखिके और विभ्रमन सूं सहित दृष्टि रूप श्याम कमलन कूं के कटाक्षन कूं देखिकें और

उल्लासन सूं के रोमावली सूं प्रफुल्लितता सहित कपोलन कूं देखिकें और मंद हास्यन सहित अधर पल्लवन कूं देखिकें और रोमावली के समूह सूं सहित श्री विग्रह कूं देखिकें और हर्ष के महासागरन के सहित मन कूं देखिकें सिद्ध होय रही है ।। अत्यन्त उत्कंट प्रसन्नता जिनमें ऐसे वे सखीजन अपने मुख कमलन कूं तैसे मंद मुसकान सूं क्षालन करती के शुद्ध करती और अनुलिंपन करती और अलंकृत करती और नेत्र कमलन कूं आनन्द संबंधी आंसून सूं अंजित करती और अपने शरीरन कूं पुलकावली के समूह रूप पुष्पन सूं गुंफित करती भई ही अपनी अंजुली कूं बांधके प्राणनाथ श्रीजी के प्रति विनय करती भयी हैं ।। के हे गोकुल के माणिक्य आपकी जय होय ।। और हे हमारे प्राण वल्लभ आपकी जय हो ।। और हे श्री गोकुलाधीश आपकी जय हो ।। और हे श्री गोकुलेश प्रिय आपकी जय हो ।। और अंबुजन कामदेवन की ही लावण्य कूं लवण जैसे अरुचिदायक करिवे वारी है छवि जाकी हे तैसे प्रभो आपकी जय हो ।। और सुन्दरी के मस्तक संबंधी मुकुटन सूं पूजनीय हैं चरण कमल जाके हे ऐसे प्रिय आपकी जय हो ।। और अनेकान जे प्रेमवारी सुन्दरी हैं विनके हृदय संबंधी ताप कूं शांत करिवे वारो है देखनो जाको हे ऐसे प्रिय आपकी जय हो ।। और मान वारीन के मान रूप सर्वस्व कूं लूटवे वारे हैं नयन कमल जाके हैं ऐसे प्रभो आपकी जय हो ।। और प्रवृत्त कियो है प्रेम की वर्षान सूं भाद्रपद मास जाने हे ऐसे प्रिय आपकी जय हो ।। और प्रेम सहित मन्द हास्य रूप अमृत के प्रवाहन सूं शुद्ध किये है तीनों लोक जाने हे ऐसे प्रिय आपकी जय हो ।। और हे श्रृंगार रस के सार सर्वस्व रूप और रस के जे आवर्त हैं वे भ्रम रहे हैं श्री विग्रह में जाके हे ऐसे प्रिय तुम जय कूं प्राप्त होवो और संतप्त जे नव योवन वारी सुन्दरी हैं विनकी आशा रूप लतान के फूल कूं पूर्ण करिवे सूं तुम जय कूं प्राप्त होवो ।। और हे प्रभो प्रेम संबंधी गद्‌गद् भाव सूं निरदोष जो तिहारो श्रीकंठ मृगनयनी प्रियान के मनोरथ रूप वृक्ष कूं आलिंगन रूप अमृत की वर्षा सूं फल के भार सूं चिर पर्यन्त अत्यन्त ही नम्र करे है सो वा तिहारे श्रीकंठ कूं अर्च्चन करिवे कूं यह हमारी सखी पवित्रा नाम वारी माला कूं लेकर आई है सो कछुक मनोरथ कूं हू अभिलाखा करे है ।। "सो हे कृपासागर विलास सूं ललित जो तिहारी भ्रुअ है वाकी आज्ञा कूं चाहना करि रही है ।। या प्रकार विनके वचनन कूं सुनिकें सो रसिक शिरोमणि प्राणनाथ

जी अपने हृदय रूप गुफा में छिपाये भये जा अपने अखंडित भाव कूं मंद नकान रूप शरद ऋतु संबंधी चन्द्र की चांदनी सूं प्रगट करत भये हैं ।। सो भाव सूं कुटिल भई थकी वा श्रीजी की जो भ्रुअ हैं वा प्रिय के अद्‌भुत भाव कूं सूचना करत भई है ।। और विन सखीन के प्रार्थना रूप मनोरथ वा श्रृंगारदे के हू प्रार्थना योग्य वा मनोरथ कूं आज्ञा हू करत भई है ।। और सुन्दर कंठाभरण सूं और गद्‌गद् भाव सूं भूषित जो वा श्रीजी को श्रीकंठ तासूं प्रगट भयो जो और ऐसो जो एकाक्षर शब्द है सो पूर्वोक्त भ्रु की सूचना में भाष्य रूप कूं प्राप्त होयके वाको अत्यन्त ही व्याख्यान करत भयो है ।। और हे प्रिय तिहारे रूप को पान करिके मेरे नयन तो सफल भये हैं ।। और हे सर्वज्ञ, मुकुटमणि और हे रसिक शेखर अपनी वाणी कूं मेरे कानों में प्रसाद रूप सूं प्राप्त करिके या कानों कूं जो अमृत की अभिलाखा है वाकूं निवृत्त करिये ।। और हे प्रिये प्रणाम करि रहे जे अमृत सागर हैं विनके मुगट संबंधी माणिक्य समूहन के उछल्लित होय रहे कांति के समूह ने सिद्ध कियो जो अनार पुष्प भाव है तासूं जो मनोहर है ।। और सोभायमान सुन्दर मुख कमल में निवास सूं जो सुगंधी है ऐसो जो तिहारो वचन है वाकूं जो मृगनयनी सुन्दरी अपने कानों में भूषण रूप करें हैं सो युक्त है ।। सो या प्रकार अपने हृदय में भावना करत सो श्रृंगारदे जो या प्रिय के ऐसे वचन कूं पान करिके विन हर्ष के समुद्रन कूं प्राप्त होती भई है ।।''

(परन्तु विन हर्ष के सागरन कूं कितने एक तो जानें के अथवा नहीं जानें परन्तु विनने तो प्रगट ही दिखाये है ।। परन्तु विनकूं ज्ञान तो श्री आपके कृपापात्र रसिकन कूं ही होय है यह भाव है ।। और सो या प्रकार सूं पवित्रा के पहेरायवे सूं प्रिया प्रिय कूं परिणय सूं हू के विवाह सूं हू अधिक जो आपस में वरण है सो सिद्ध होय रह्यो है ।। तब विनके अंग हू जे विनके पक्षवारे जन हते के जे विनके अंतरंग जन हते सो वे वासूं और ठौर में हर्ष समूह रूप परिवर्ह के दान कूं सिद्ध करत भये हैं ।। और जो उपायन सूं के भेटा के चिन्ह सूं वस्त्र आभरण साथ लाये हते सो वे वस्त्र आभरण तो तहां केवल शोभा विशेष कूं भली प्रकार पुष्ट करत भये हैं ।। और भाव सूं प्रगट भये कंप वारे अंगन में बाज रहे हैं जे मृगनयनीन के भूषण हते सो तब उचित वाद्य रूप कूं अत्यन्त धारण कर रहे सखीजनों के वचन हते सो मंगल गीत भाव कूं धारण करत

भये हैं ।। और सखी जन रूप पुरोहितन ने अत्यन्त बढ़ायो जो महा रसमय अग्नि हतो वामें विन प्रिया प्रिय के जे संदेह हते सो आहुति भाव कूं प्राप्त होय जाते भये हैं ।। और विधाता ने हू यह सुन्दरी प्रथम तो विश्व के ऊपर हू रचना करी है ।। तब प्राप्त भये यौवन ने तो सर्व प्रकार सूं हू वासूं हू ऊपर करी है ।। और मनोहर चतुरता ने तो वाके ऊपर करी है ।। और स्वयं प्राण ने हू जो मृगनयनी सुन्दरी वाके हू ऊपर करी है ।। ऐसी वा मृगनयनी की हे प्रिये तुम सर्वदा सर्वोपर ही विराजो हो ऐसी स्तुति तो होय है ।। यासूं और कहा स्तुति होय अपितु याकी स्तुति अनिर्वचनीय है ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले त्रयतीसमो तरंग समाप्तम् ।।३३।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग चतुर्थतीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चतुर्थतीस स्तरंग लिख्यते ।।३४।।

श्लोक -- **अथ नेहा विजातीय भक्तवृंदा गमस्ययः ।। सो तृप्तयो रप्पन यो य लौकिक महारसे ।।१।।**

याको अर्थ -- याके अनन्तर विजातीय भक्त समूह के आयवे को जो समय है सो अलौकिक महारस में न तृप्त भये हू या प्रियाप्रिय में कछुक संकोच कूं प्रगट करत सो वियोग में कारण रूप कूं प्राप्त होतो भयो है ।। सो याके अनन्तर सो श्रृंगारदे जो अनुभव करी भई प्रिय की वा रूप वाणी और कृति संबंधी माधुरी कूं चिन्तन करत ही अपने निवास वारे श्रेष्ठ घर कूं प्राप्त होती भई है ।। और वियोग रूप अग्नि सूं दग्ध भई थकी सो प्रियाजी प्रियतम श्रीजी ने अनुभव कराये महारस में बारंबार निमग्न होती भई है ।। तासूं भीतर ताप कूं प्राप्त होय जाती भई है सो युक्त है ।। और प्रियतम के विरह रूपी बलवान शत्रु ने ऊपर चलायो जो चन्द्र रूप महा आग्नेय अस्त्र और मेघ रूप मेघास्त्र और मलय संबंधी पवन रूप वायव्य अस्त्र और आंसुन कूं समुद्र रूप वारुण अस्त्र है विनकूं प्राप्त होयके हू तैसे अत्यन्त संकट में हू यदि या मृगनयनी के प्राणन कूं प्रिय के संगम

की जो आशा है सो यदि वर्म्म रूप सूं के कवच रूप सूं आच्छादन ही करे तो सो प्रियाजी कहा प्राणन कूं धारण कर सके ॥ किन्तु कदाचित हू नहीं जीवे ॥ और वियोग सूं महादुखित होय रही वा प्रियजी के मुख में कोऊ सखी तो जल कूं डारती भई है ॥ और कोउ सखी तो वा सुन्दर शरीर वारी वा प्यारी के शरीर में पुष्पन के दलन सूं जल कूं छिरकती भई है ॥ और सखी तो प्रेम सूं वा प्यारी के शरीर में चन्दन कर्पूर बालक के चूर्ण कूं धारण करत भई है के लगावती भई है ॥ और कहूं रज में लगे ध्वज छत्रादि चिन्ह वारे वा प्रियतम के दोनों चरणन को दरशन करिकें उदय भये भाव सूं प्रगट भये महा मोद सूं मोहित भई थकी सो मृगनयनी प्रियाजी बारंबार वाकूं प्रणाम करिकें यह कहेत भयी है के हे प्रिय मणी रूप अपने स्वरूप सूं मेरे घर कूं आप अलंकृत करो ॥ और यदि हों प्रिय कूं नहीं प्राप्त होवुं तो मृत्यु कूं प्राप्त होवुं सो हू हौं नहीं जानूं हूं ॥ सो रमण हू मोकूं होयगो के नहीं होयगो सो हे मन मेरे लिये तुम जो इच्छा करो परन्तु वा प्रिय के वियोग कूं इच्छा नहीं करोगे ॥ तासूं तुमारी कृपा सूं प्रिय के संग वियोग मोकूं न प्राप्त होय ॥ और प्रियतम के विरह में वज्र सूं हू कठोर जो यह चंचल नयनी है याकूं हों पुष्पमय धनुष वाणन सूं मारिवे में समर्थ नहीं हौं ॥ यह विचारिके पंच वाँणवारो जो कामदेव है सो मेरे प्राणन कूं अपने पंच वाँणन सूं सिद्ध करत भयो है ॥ और मेरे शरीर कूं अपनो धनुष रूप सिद्ध करत भयो है सो विन धनुष वाणन सूं ही सो पापी काम मोकूं आज मारे है ॥ सो हे सखी ''शिव शिव'' हां बड़ो कष्ट है ॥ सो कहा करूं ॥ और इहां शिव शिव जो ऐसो कथन है सो मारिवे अर्थ आय रह्यो जो कामदेव है वाके डरायवे अर्थ वाके शत्रु को नाम विकलता सूं ही कह्यो है सो जाननो ॥ और हे पुष्प वाण कामदेव जो शरीर ताप रूप आग्नेय अस्त्र कूं और अश्रु के समूह रूप वारुण अस्त्र कूं और निश्वास रूप पवन अस्त्र कूं बहुत वार चलायके जो जीवन की नहीं है स्थिरता जामें और कबहू जो दूर न होयवे वारो ऐसो जो ब्रह्मास्त्र तुमने हठ सूं चलायो है ॥ सो इत्यादि प्रकार सूं चिन्तन करत सो प्रियाजी अपार ताप कूं प्राप्त होती भई हैं ॥ और दीर्घ स्वासन कूं देकर सो सुन्दरी अपनी सखी कूं हू कहेती भई है के हे सखी रुखे प्रिय में अत्यन्त आशक्त भयो मेरो मन मोकूं अत्यन्त दुःखी कर रह्यो है ॥ सो हों कहा करूं कहां जावुं ॥ थोरो सो हू मोकूं आनन्द नहीं है ॥

सो मेरो मरण ही या दुःख में आश्रय रूप है ।। परन्तु सो हू दुर्ल्लभ है ।। और हे सखी तामें नहीं कियो है अत्यन्त तप जिनोने ऐसी हमकूं तुम सदृश तैसी सखीन की सहायता के विना सो प्रिय कूं मिलनो हू महा दुर्ल्लभ है ।। तासों मेरे ऊपर वेग ही प्रसन्न होवो ।। इत्यादि प्रकार श्रृंगारदे जी जब कहे रही हैं ।। तब वाके वा वचन कूं आक्षेप करिके वाको समाधान करत सो सखी वा प्रियाजी के प्रति कहेत भयी है के तिस तिस गुण रूप जाती पुष्पन सूं जो अत्यन्त सुगंधित कियो है और कामदेव रूप तौलिक ने चतुरता सूं प्रिय के मधुरता समूह रूप यन्त्र में डारिकें जो निपोडन कियो है ऐसा जो उज्ज्वल तिहारे मन रूप तिलकन कूं समूह है तासूं निरन्तर तुमारे चिन्तन रूप जो मन कूं स्नेह उदय होय रह्यो है ।। सो हे सुन्दरी वा ऐसे स्नेह कूं लेकर तासूं मो सरीखी तिहारी सखीजन जाको अभ्यंग कर रही है ऐसो सो प्रिय श्रीजी तुमारे में कैसो रूखी होय सके है सो तो महा स्निग्ध है तासूं हे प्रिये वाके मिलाप अर्थ तुम विषाद कूं मत प्राप्त होवो ।। वामें तिहारी हम जामिन हैं के वाकूं तुमकूं अवश्य मिलाप करावेगी ही ।। याके अनन्तर वा सुन्दरी को अत्यन्त तैसी व्यवस्था कूं कोऊ सखी देखती भई है ।। सो या श्रीजी की प्रिय सखी प्राणनाथ कूं एकांत में कहेत भई है के हे प्रेष्ट और हे कृपा प्रेम रस के सागर या भूतल में मेरे सौन्दर्य यश कूं जाने बल सूं हरि लियो है ऐसे वा श्री गोकुलपति में यह सुन्दरी अत्यन्त आशक्त है यह विचारके तासूं मत्सरता वारो जो कामदेव है सो केवल तुमारे में ही आशक्त वा सुन्दरी कूं अपने तीक्ष्ण वाणन सूं निर्दय होयके ही अत्यन्त पीड़ित कर रह्यो है ।। और हे प्रिय हों तो यह जानूं हूं के वा मृगनयनी के जे प्राण वायु हैं सो निश्चय सूं ही पंगु है, नहीं तो आज पर्यन्त वाके कंठ कूं आलंबन करिकें का प्रकार सूं स्थित होय रहे हैं ।। और हे प्राणनाथ विरह नाम जो अग्नि है सो प्रियतम के मिलाप की आशा सूं ही सहेन करि जाय है ।। परन्तु शत्रु के संग एक ही के घर में जो निवास है सो रण सूं हू विशेष है ।। परन्तु आशा ही बचाय रही है और वा प्रिया की विरह सूं महा विकलता कूं सूचना करें हैं के हे बहुत वल्लभ ।। बहुत सुन्दरीन कूं प्रिय श्रीजी जिन स्त्रीन कूं तुम प्रिय नहीं हो वे धन्य हैं ।। कासूं वे तुमारे मिलाप अर्थ श्वासन कूं हू नहीं छोड़ें हैं, के दीर्घ श्वास हू नहीं भरें हैं और रुदन हू नहीं करें हैं, और कृश हू नहीं होय हैं ।। और हे प्रिय

जे स्त्री स्वप्न में हू अपने प्रिय कूं देखे है वे धन्य हैं ।। और या सुन्दरी कूं तो तिहारे बिना निन्द्रा हू नहीं आवे है ।। स्वप्न की कहा चली है ।। और कामाग्नि और साधारण अग्नि कूं स्वभाव और ही है जासूं साधारण अग्नि सूं के निरस वेग ही जरे है ।। सरस वेग नहीं जरें हैं ।। और कामाग्नि सूं तो नि रसन को हृदय तो निरन्तर शीतल होय है के खुशी होय है ।। और स रसन को अन्तःकरण अत्यन्त ही प्रज्ज्वलित होय है ।। और यह निश्चय है के विरह रूप मंदराचल सूं या प्रिया के हृदय रूपी क्षीर सागर को मंथन करिकें वासूं सुख रूप रत्न वेगि सूं ही तुमने निकास लिये हैं ।। और हे सुन्दर बलवारे जे आपके मधुर वे वे गुण हैं विनसूं आकर्षण किये जे जनों के समूह हैं सो तहां तैसे तुमारे निकट प्राप्त होय रहे हते ।। तब समाज सूं डरवे वारी जो स्वभाव सूं हू भीरु सो सुन्दरी है, सो लज्जा सूं प्रेरणा करी भई जो तुमारे में आशक्त भये मन रूप रत्न कूं इहां त्याग के वेग सूं गई है ।। सो तुमारे स्वरूपात्मक सुवर्ण में कामदेव रूप स्वर्णकार ने जटित किये तासूं निरन्तर शोभायमान वा मन रूप रत्न कूं देखिकें अब हों निरन्तर प्रसन्न भई हों और सो प्रिया तो जासूं वा समय में सावधान नहीं भयी हती, तासूं क्लेश कूं प्राप्त होय रही है सो युक्त ही है ।। सो अब वा मन रूप रत्न कूं गमाय के फेर ही सुन्दरीन के मध्य में सो मन रूप रत्न अत्यन्त ही दुर्ल्लभ है ।। जासूं जो परकीया है सो तो सदैव ही परवश है ।। और सहायक रहित ही है ।। और हे प्रिय वियोग में वासूंतन सुन्दर स्वरूप वारी सुन्दरी के नासा पुट हू नहीं फरकें हैं ।। और स्तनों के मध्य में हू कंपनो नहीं है ।। सो वाके श्वास के प्राकट्य कूं केवल कमल की सुगंधी सूं हू हों जानूं हूं के जामें श्वास है ।। और हे प्रिये सुन्दर नम्र हैं अंग जाके ऐसी वा सुन्दरी को स्वभाव सूं हू कोमल जो स्वरूप है सो तिहारे विरह सूं तैसी अत्यन्त कृशता कूं प्राप्त होय गयो है के जैसे कामदेव हू उपनेत्रन के विना के दूर विनके जाकूं वाणन सूं वेधवे में ताडन करिवे में समर्थ नहीं होय है ।। और तुम प्रिय कूं निरन्तर प्राप्त होय रही जो सो मृगनयनी है सो इन्द्रीयन के असन्नि कृष्ट ग्राही भाव कूं चाहना करे है के न निकट जे पदार्थ हैं विनकूं हू मेरे इन्द्रीय प्रत्यक्ष करे ऐसे भाव कूं चाहना करे है ।। और तिहारे वियोग में पांसरी भई जो षडिता के पीतरंग पनो और अश्रुता के आंसून कूं चलनो और निश्वासामग्नता जो निश्वासन सूं

ही दीर्घ श्वासन सूं मग्न होनों के मूर्छित होनो और कृशता जो कृश होनो है सो ता प्रकार सूं जनों के नयनों में व्याप्त भयो है के जा प्रकार सूं मृगनयनी के कपोलन कूं और दृष्टि कूं और हृदय कूं तैसे शरीर कूं थोरो सो हू अवकाश वाकी नहीं रह्यो है ।। के वा मृगनयनी के कपोल महा पीरे होय रहे हैं ।। और नयनों सूं जल चलि रह्यो है और स्वासन सूं हृदय विकल होय रह्यो है ।। और शरीर हू अत्यन्त कृश होय गयो है ।। और हे प्रियतम तुमारे वियोग में वा कमल नयनी कूं कामदेव तैसे दुर्बल करत भयो है ।। के जा प्रकार सूं या सुन्दरी कूं कामदेव के भय सूं अनंग भाव कूं प्राप्त भई ही सगरे कहें हैं के वियोग सूं देहानुसंधान सूं हू रहित है ।। और शरीर रहित जैसे होय तैसे ही प्रतीत होय रही है ।। और कितने एक मनुष्य जगत कूं प्रकाश करवे सूं कि किरणन के समूह कूं स्तुति कर रहे हैं ।। और वा कोमलांगी प्रिया के निकट ठहरवे कूं हू वार्ता में मूक होय रहे वा किरण समूह कूं हम स्तुति करें हैं ।। और हम तो स्वाहा के पति अग्निदेव कूं अधिक स्तुति करें है ।। जासूं जो अग्नि जा प्रिया के दूर पर्यन्त जायवे वारे के दीर्घ श्वास समूह रूप अश्व के ऊपर चढ़िके विन श्वासन कूं प्रसिद्ध करत दौड़ रह्यो है ।। सो इत्यादि प्रकार सूं यह सखी तो श्रीजी के आगे कहे रही है ।। और प्राण वल्लभ श्री वल्लभ प्रभु हू अत्यन्त दीर्घ श्वासन कूं देकर अपने मन के अभिप्राय कूं प्रगट कर रहे हैं ।। तब या श्रीजी के चेष्टा सूं अभिप्राय कूं जानवे वारी जो या श्रीजी की और सखी हैं सो प्रिय की या सखी के कान में लाग के प्राणनाथ की वा दशा कूं जतावती भई हैं ।। सो प्राणनाथ की जा दशा कूं सुनिकें अत्यन्त हर्ष और आर्ति जैसे रस प्रेम और साहसमयी अलौकिक अवस्था कूं प्राप्त होयके सो प्रिया की सखी वा प्रियाजी के प्रति दौड़ती भई है सो बड़े आनन्द सूं वा प्रियाजी कूं एकांत में सो प्राप्त होयके अमृत कूं वर्षा करत सो कहेती भई हैं के हे पूर्णचन्द्र तुल्य श्रीमुख वारी प्रिये, श्रीजी तब तिहारे प्रतिनिधि रूप सूं अपने चित्र कूं दान करिकें जब पीछे नहीं चल्यो है ।। तासूं मार्ग कूं प्राप्त भयो सो प्रिय तिहारे घर कूं पधारे ही हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले चौत्रीशमो तरंग समाप्तम् ।।३४।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग पेंतीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पेंत्रीसमो स्तरंग लिख्यते ।।३५।।

श्लोक -- **श्री गोकुलेश लीलासिंधोत्वत्कृत महोपकार शतैः ।। त्वद्रोचराममभृंश या जाता प्रीति रद्भुता सांत्वाः ।।१।।**

याको अर्थ -- हे श्री गोकुलेश लीलासिंधो श्री गोकुलपति के लीला सागर अथवा हे श्री गोकुलेश निःसाधन स्वजनों के स्वामिन और हे लीलासिंधो रसात्मक लीला के सागररूप प्रभो तुमारे किये अनन्त महा उपकारन सूं तुमारे गोचर के तुमारे में ही जो मेरी अद्भुत प्रीति प्रगट भयी है सो प्रीति बहुत वार मस्तक सूं प्रणाम करिके अंजुलि कूं बाँधिके बहुत वार विज्ञापना करे है ।। के हे सर्वजन सर्व दुःख क्षेपण सगरे जनों के सगरे दुःखन कूं दूर करिवे वारे और हे अशेषेष्ट सगरे वांछित स्वरूप और हे पूर्णाक्त पूर्ण अभिप्राय स्वरूप हे ऐसे श्री गोकुलेश लीलासिंधो तिहारे श्रवण रूप महा सुधा के पान में अधिकार रहित जे जीव हैं विनमें पात्रापात्र के न विचार वारी निरुपाधिक स्वभाविक कृपा सूं बलात्कार प्रेरणा किये हू तुम कदाचित हू मत प्रगट होवो ।। जासूं वे जे अनिधिकारी जीव हैं सो वे अपने चित्त में रचना किये दोष समूह रूप गाढ़ कीच के समूह विनकूं सर्व के ऊपर हू विराजमान तुमारे ऊपर लगायवे कूं क्षेपण करें हैं, डारे हैं, सो तुम तो सर्वोपर हू विराजमान हो सो तुमकूं तो प्राप्त नहीं होय सके है ।। सो प्रत्युत विन अनधिकारी जीवों के ऊपर हू गिरे है ।। सो अपने हू ऊपर गिरे भये वे अपने दोष रूप कीचन सूं स्वयं हू वे मलिनता कूं प्राप्त होयके जैसे फेर उठि हू नहीं सके तैसे ही वे विमुख जन गाढ़ कीचन में गिरेगे ही सो युक्त ही है ।। सो या प्रकार कल्याण भट्टजी यह महा अनिर्वचनीय रसात्मिक लीला अनधिकारी जीवन के आगें प्रकट न होय या अभिप्राय सूं प्रभुन के आगे विज्ञापना करिके और विन अनधिकारी जीवों के दुष्ट स्वभाव कूं दिखायवे के अब प्रसंग कूं कहें हैं ।। के यासूं पीछे कहेत रंग में जब अंतरंग सखी ने श्रीजी कूं प्रेम दशा वर्णन करी है ।। सो वा प्राणनाथ की सखी के वचनामृत कूं जब

सो पूर्ण चन्द्रमुखी श्रृंगारदे पान करत भई है ।। तब तैसी आर्ति सूं प्रेरणा किये अपने मन के अभिप्राय कूं कहिवे की इच्छा करत भई है ।। यद्यपि वाकूं लज्जा निवारण हू करत भई है तथापि प्रफुल्लित होय रहे पुलकन ने वा सुन्दर नयनी प्यारी की जो दशा है सो प्रगट ही कहे दीनी है ।। तब यह सुन्दरी वा दशा कूं प्राप्त होय जाती भयी है ।। के जामें प्राणपति कूं जो सुख होय सो सुख अपनो है, न के अपनो जो सुख है सो अपनो है जासूं यह तो प्राणप्रिय के सुख सूं ही अपने कूं सुखी माने है ।। तब वा श्रृंगार दे की सखी प्राणनाथ की वा सखी कूं कहेत भयी है ।। के हे सखी साहस काहे कूं नहीं करो हो।। सो काहे कूं विलंब करि रही हो ।। यह रात्रि हू रास रात्रि सूं हू विशेष है ।। और यह स्थान हू वा स्थान सूं अधिक ही है ।। और यह एकांत घर में अनुमति के श्रुक्त चतुर्दशी युत जो पूर्णिमा है तद्रूप सगरे तीर्थन सूं अभिषेक वारो नहीं होय रह्यो ? के यामें बर्द्धमान पूर्ण चन्द्रमा के किरणन सूं अभिषेक नहीं होय रह्यो है ? किन्तु अभिषेक होय ही रह्यो है ।। तासूं या प्रिय के ते और प्रिया के तैसे हमारे हू जे मनोरथ रूप वृक्ष प्रौढ़ होय रहे हैं सो वे हू पुष्प वारे होय और फल वारे हू होंय सो या प्रकार प्रियाजी की सखी के वचनामृतकूं सो प्रिय की सखी पान करिके वा आनन्द कूं प्राप्त होय जाती भई है ।। के जो आनन्द मनोहर मन्द मुसकान रूपा सूं वा प्रिय की सखी के मुख कूं अत्यन्त शोभायमान करत भयो है ।। जासूं वा प्रिय की सखी को जो मुख कमल है सो वा आनन्द संबंधी मंद हास्य कूं प्राप्त होयके वेग सूं अत्यन्त गिरि रही है हर्ष रूप मधु जामें ऐसो भयो थको प्रफुल्लित ही होय जातो भयो है ।। और अहो सो कोऊ हू अनिर्वचनीय महारस मय प्रस्ताव सर्व प्रकार सूं ही सर्व सूं ही अधिक है ।। और प्राणनाथ के सेवा में तत्पर हू जे भाग्यवान हैं विनकूं हू सो वन्दनीय है के वन्दन योग्य है के जा प्रस्ताव ने वा भाद्रपद मास में हू तब ता प्रकार सूं प्रफुल्लित भये विन सगरी सखीन के प्रफुल्लित भये मुख कमलन सूं प्रफुल्लित होयवे वारे हैं कमल समूह जामें ऐसी सो शरद ऋतु वेग ही सिद्ध करि दीनी है ।। के जो शरद ऋतु वा प्रिय के तैसे महारस रूप हर्ष समूहन में पर्यवसान वारी है ।। के महा रस की अनुभव करावत भई है ।। और याके अनन्तर सो प्रिय की सखी हसत श्रीमुख सूं वा प्रियाजी कूं प्रणाम करिकें श्री गोकुलाधीश प्रभुन के समीप जायके या प्रकार के सगरे वृत्तांत कूं

कहेवे सूं रस सागर रूप वा श्रीजी कूं हू आनन्दित करत भई है ।। तब सो प्रिय श्रीजी हू वा दशा कूं प्राप्त होय जाते भये हैं ।। के जामें वा मृगनयनी कूं जो सुख होय सो ही अपनो सुख है ।। न के अपनो जो सुख है सो सुख अपनो है ।। किन्तु वा प्रिया के सुख सू ही अपने कूं सुखी माने है ।। ऐसे निरुपाधिक रसिकवर प्रिय श्रीजी हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले पेंतीसमो तरंग समाप्तम् ।।३५।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग छत्तीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ षष्टत्रीसमो स्तरंग लिख्यते ।।३६।।

श्लोक -- **अथास्प तादृत्क दृगेहालं चिकीर्षा निशि प्रभोः ।। विभाव्यतां कर्तुमिव स्वयमंतर्दधेरविः ।।१।।**

याको अर्थ --याके अनन्तर या प्रभु की रात्रि में तैसे श्रृंगारदे के वा रसात्मक घर के अलंकृत करिवे की इच्छा कूं भावना करिके विचारके मानो वा रात्रि कूं करवे अर्थ सूर्य स्वयं अन्तरध्यान होय जातो भयो है ।। सो वा सूर्यास्त कूं उत्प्रेक्षा सूं वरणन करें हैं ।। के सो सूर्य अपनी पूर्व दिशा कूं त्याग के ही पर दिशा कूं प्राप्त होय के अधिक राग कूं के रस कूं के लालिमा कूं अनुभव करिके अधिक मंद भाव कूं प्राप्त होयके मानो फेर ही वा अपनी पूर्व दिशा के संग निवास कूं चाहना करत सो सूर्य श्रुद्धि के अर्थ पश्चिम समुद्र में मज्जन करत भयो है ।। आकाश में तमाल वृक्ष के दल समान जो संध्या संबंधी किरणन की जो रेखा हती सो समुद्र में मग्न होय रहे सूर्य रथ संबंधी कसूंभी रंग वारी पताका जैसे होय तैसे ही अत्यन्त शोभायमान होती भयी है ।। और तारागणन के उदय कूं उत्प्रेक्षा सूं कहे है के जब वैरी सूर्य उदय होय रह्यो है तब मानो वाकूं जानवे की इच्छा वारो हू चन्द्रमा अंधकार रूप दंत कूं हू पठावतो भयो है ।। और जब सो अंधकार आकाश रूप धाम में अपनी इच्छानुसार प्राप्त भयो है, तब सो चन्द्रमा तारा रूप अपने स्त्रीगणन कूं बाहिर प्रगट करत भयो है ।।

सो अंधकार हू जासूं सूर्य के संग निरन्तर दृढ़ बैर वारो है तासूं हू मानो वा सूर्य के आकाश रूप धाम पसरत ही गिलन करि जातो भयो है ॥ के सगरे कूं हू अपने आधीन कर लेतो भयो है, जासूं दूर होय गयो है के पराधीन होय गयो है धाम जाको ऐसे वा सूर्य की किरण रूप धन को लेश मात्र हू जनोंने कहूं हू कछु प्रकार सूं हू ढूंढ्यो भयो हू नहीं देख्यो है ॥ अब उत्प्रेक्षा सूं दीपोदय कूं कहे हैं ॥ के घर घर में अंधकार ने मानो सूर्य की प्रभा ही बंदी करिके बाँध के राखी है ॥ सोई ही दीप रेखा प्रकाशित होती भई है ॥ और यद्यपि अत्यन्त मलिन हू है और अपने प्रिय चन्द्रमा को बैरी हू है ॥ तद्यपि ऐसो हू अंधकार है ॥ तथापि वाके निकट हू वे तारिका उदार शोभा कूं प्राप्त होती भयी हैं ॥ जासूं बलवारो निकट स्थित होय सो यद्यपि मिलनो हू होय तथापि दोष के, के दोषा कहा रात्रि के आश्रय वारेन कूं वामें प्रायः ही पक्षपात होय है ॥ और अत्यन्त अधिक हू सो अंधकार तारिकान के समूह में प्रकाश के नाश करिवे में कछु हू समर्थ न होतो भयो है ॥ जासूं गुणन सूं रहित जिनको देह है ऐसो निरगुण पुरुषन कूं जो निरन्तर गुणन के समूह रूप भूषणन सूं भूषित पुरुषन के संग व्यायाम हैं के हानि करिवे को यत्न है सो कहा करे है ? किन्तु कछु हू नहीं करे है ॥ अब चन्द्रोदय कूं कहें हैं के अंधकार रूप कस्तूरी सूं लिप्त भई और दीपक रूप स्वर्ण के किये हैं अवतंस जाने ऐसी जो रात्रि रूप वासक सज्जिका है सो वा पति रूप चन्द्रागमन की प्रतीक्षा कूं दृढ़ बांधती भई है ॥ और संकुचित होय रहे कमल सूं इन्दीवर के रात्रि विकासी कुमोदिनी प्रति आयके भौंरा जो लौं मौन करिवे की चाहना करत गमन करिवे कूं इच्छा करत भयो है तो लौं वा कुमोदिनी कूं प्रफुल्लित करिवे वारो चन्द्रमा हू उदय होतो भयो है ॥ और चन्द्रमा ने दूर कियो है पूर्व दिशा को अंधकार जाको और पश्चिम दिशा रूप अर्ध में प्राप्त होय रह्यो है ॥ अंधकार जामें ऐसी जो द्यौ है के अंतरिक्ष है सो हृदय के ईश्वर पति ने हरि लियो है उत्तरीय जाकूं और नितंबन में स्थिर होय रह्यो है वस्त्र जाको ऐसी सुन्दरी जैसे शोभायमान होती भई है ॥ और ऊंचे पूर्व पर्वत देश में धारण कियो है शरीर, जाने ऐसो जो चन्द्रमा रूप मृगयु है के शिकारी है सो राग वारे भाव सूं प्रसिद्ध भाव कूं प्राप्त होयके आकाश रूप वन के मध्य में अंधकार रूप हस्तिन के बांधवे कूं इच्छा करत सो दीप रूप रज्जुन कूं विस्तारित करत भयो है ॥ और

प्रथम उदय भयो चन्द्रमा जनन कूं किंश्चुक पुष्पन कूं भ्रम होतो भयो है ।। क्षण के पीछे सो रुधिर सूं भरे भये कुटिल वाण कूं भ्रम होतो भयो है । वाके पीछे सो चन्द्र बुद्धि कूं प्राप्त होतो भयो है ।। जासूं परमार्थ स्वरूप जा वस्तु कूं नहीं जान्यो होय सो वा वस्तु मे भ्रम होय है ।। और पूर्व दिशा रूपी सुन्दरी कूं कोप सूं लाल भयो यह मुख है के लाल वस्त्र सूं आच्छादन कियो दीपक है के कहा यह चन्द्रमा है ऐसे बहुत प्रकार के तर्कन सूं जाकूं चारों ओर के जन देख रहे हैं ऐसो सो चन्द्रमा अत्यन्त अधिक राग वारो होयके कांति के समूह कूं धारण करत भयो है ।। और अहो चन्द्रमण्डल जो है सो अमृत को सरोवर है वामें कलंक रूप हस्ति विहार कूं कर रह्यो है ।। और वाकी चन्द्रिका को जो समूह है सो मानो वाकूं बाहिर निकस्यो भयो प्रवाह ही प्रसर रह्यो है ।। और आकाश में के भूमि में के सर्वत्र ही प्रसर के सिद्ध कियो है चन्द्रमा सूं हू अधिक बल जाने ऐसी जो वाकी स्त्री चन्द्रिका है वा सौत के संग निवास करिवे कूं न समर्थ होयके श्याम जो रात्रि रूप सुन्दरी है सो अपने अधीश कूं अनुसरण करत भयी है ।। तब वाको पति चन्द्रमा हू अपने हृदय में धारण करत भयो है ।। सो याकूं इहां लों कलंक कूं ही ऐसे कहे हैं ।। और प्रकाश रूप दिन के उदय होने पर वा आकाश रूप सरोवर में कलंक रूप इंदीवर कूं धारण करत पूर्ण चन्द्र रूप जो पुंडरीक है सो प्रफुल्लित होय रह्यो है ।। और पूर्व दिशा में संध्या जैसे लाल रंग वारो और पश्चिम में अंधकार सहित और मध्य में चन्द्रमा के प्रकाश सूं व्याप्त भयो जो आकाश है सो मानो विराट के भीतर संबंधी उदय भये रजोमय गुण, सत्त्व गुण के तमोगुण जैसे होय तैसे शोभायमान होते भये हैं ।। और अब मानिनीन के मन में जासूं मान निवास करि रह्यो है तासूं ही यह चन्द्रमा मेरे में कोप वारो होयके लालिमा कूं धारण करि रह्यो है ।। ऐसे विचारके उदय भयो है भय जाकूं ऐसो कामदेव हू मानो दिशा दिशा में नव सुन्दरीन के मान की वार्ता कूं हू हर लेतो भयो है ।। और आनन्द देवे वारे वा चन्द्र संबंधी तेज के तहां अधिक होने में समुद्रन के जे जल की लहेरी हती सो इच्छा अनुसार ही बढ़ती भई है ।। और जे चन्द्रकांत मणी हती सो मंद हास्य रूप प्रफुल्लित भाव कूं प्राप्त होती भई है ।। या प्रकार जब जड़ हू प्रसन्न भये हैं तो चैतन्य कूं कहा कहेनो है ।। और यदि शब्द ब्रह्म परंब्रह्म रूप पुराण पुरुष हू नव सुन्दरीन के वश भये हैं हृदय स्थल

के वाम भाग जिनके कहा के वाम भाग में सुन्दरी जिनके विराजमान हैं ऐसो न होते तो वा समय के काम के उद्यम कूं वे हू सहेन करिवे में नहीं समर्थ होते भये हैं तो औरन की कहा गणना है ।। ऐसे में ही उदीपक समय कूं वर्णन करिकें भटजी अब प्रसंग को वर्णन करें हैं ।। याके अनन्तरजो सखी प्रिय श्रीजी ने वा प्रिय के मन संबंधी वृत्तांत जानवे कूं प्रथम पठायी हती सो सखी तहां के ऐसे पूर्वोक्त वृत्तांत कूं जानिके रस सागर प्राणनाथ प्रभुन कूं बहुत आदर सूं प्रणाम करिके हाथन कूं बांधिके आश्चर्य सहित विज्ञापना करत भई है के भूमि में प्रियों में अधिक राग कूं अधिक प्रीति कूं भली प्रकार करिवे वारी स्त्री तो है ही ।। तथापि या मृगनयनी कूं जो तिहारे में प्रेम बंध है सो तो न देख्यो है और न सुन्यो है ।। और सो सुन्दर नयनी जो प्यारी है सो मधु सूं हू मनोहर तिहारे गुणन की पंक्ति कूं आस्वाद लेकर निरन्तर तप्त भयी थकी सो सखीन की आहार की वार्ता कूं हू दूर करे है, के नहीं माने है ।। के सुने हू नहीं है ।।२८।। और तिहारे विरह संबंधी आरति के भार सूं उदय भये स्वासन सूं ही मानो या कमल नयनी के मुखारविन्द में मंद हास्य हू कबहू नहीं नजर आवे है ।।२९।। और कामदेव के धूममय अस्त्रन ने ही मानो उत्पन्न कियो गरम आंसून के समूह सूं डरी भई हो वा मृगनयनी के नयनों में दृष्टि पद कूं नहीं धारण करे है ।।३०।। और चन्दन पंक को लेप और बीड़ा पुष्प माला के भूषणों में हू विमुख होयके विनकूं त्यागके सो वाला परम कोमल सुन्दरी तिहारे अधर बिंब संबंधी सुधारस के आस्वाद अर्थ तपस्या कूं कर रही है ।। सो या प्रकार वृत्तांत कूं सुनाय रही वा सखी कूं सो प्राण वल्लभ श्रीजी मंद हास्य सूं आदर दे करिके निन्दा को आदर करत सो प्रियजी वा सखी कों विदा करत भये हैं ।। और बिछायो है सुन्दर तूल जामें और धारण किये हैं गेंदुवा सिराहने जामें और ऊपर बिछायो है उज्ज्वल उत्तम चादर वस्त्र जामें ऐसे अपने पर्यंक के ऊपर सो श्रीजी विराजमान होते भये हैं ।। तब जे भक्त रहे के सेवक रहे वे हू अपने शुभ स्थान कूं जायकें निंद्रा कूं करि रहे हैं ।। तासूं सो घर हू निर्जन, के वाधक रहित होय रह्यो है ।। तब वा समय के महा उद्दीपक रूप चन्द्र सू और वाकी तैसी चन्द्रिका सूं और तैसे शीतल मंद सुगंधित पवन सूं और स्मरण में आरूढ़ भये सखीन के वचनन सूं और वा प्रिया के विन गुणन सूं हू और वाके सौन्दर्य सूं के शील सूं के तैसे गंभीरता

सूं बढ़ रह्यो है उत्साह जामें तासूं उच्छल्लित भयें थके सो रस सागर श्रीजी कृपाशक्ति की प्रेरणा किये भये तासूं स्थित होयवे कूं न समर्थ भये थके और अत्यन्त हू निवारण करिवे की इच्छा वारे जो चरण कमल की सेवक मर्यादा है दाको अनादर करिके, शुद्ध प्रेम के वश होयके सगरे अवतारन के अवतारीन कूं हू अत्यन्त दुर्लभ है कृपादृष्टि जाकी ऐसे सो रसिकराय भगवान श्रीजी तैसे और हू सगरे रसबाधकन कूं निरादर करिके प्रेम लक्षणा भक्ति को जो प्रभुन को वश कर देनो और स्वरूपानन्द फल देनो है रूप स्वभाव है वाकूं दिखावत और अत्यन्त संखा और अत्यन्त सरल जे गुण हैं विनसूं मिले भये और तैसे प्रभाव सूं सेवा किये और आगे आगे वेग सूं चलि रह्यो जो उत्साह है, और ऐसो जो अपनो मन है सो जाकूं श्रेष्ठ मार्ग कूं विज्ञापना करि रह्यो है ।। और सुन्दर हृदय सूं तिस तिस अधिक अपने रहस्य कू हू जो कह रह्यो है ।। और मुख चन्द्र की चांदनी सूं तैसे धनुषाकार दोनों भ्रु की शोभा सूं और वाण रूप दृष्टि के चमत्कारन सूं और तैसे कुंडलों की कांति के ऊंचे प्रकाशन सूं और मनोहर अधर की दीप्ति रूप दंडन सूं और निरवचन रूप समुद्र के पार में शोभायमान के अनिर्वचनीय शोभायमान सगरे अंगन की लावण्यता सूं और आभरण समूह के संबंधी जे रत्न हैं विनकी दीप्ति ने रचना किये हजारन इन्द्र धनुष हैं विनसूं अपने में हू आश्चर्य कूं सिद्ध करि रह्यो जो ऐसो अपनो स्वरूप है, ऐसे स्वरूप सूं जो मिले भये है ।। और जो श्रीजी करोड़न काम के सौन्दर्य कूं और करोड़न काम के सौन्दर्य कूं और करोड़न समुद्रन की गंभीरता कूं और करोड़न मेरु पर्वतन के महत्व कूं अपने विन सौंदर्य गंभीर महत्त्व सूं तुच्छ करत और सगरे अवतारन के हू जो अवतारी हैं, वे हू जाकूं शत अर्बुद मनोरथन सूं स्पर्श नहीं कर सकें हैं ऐसो जो अपनो अतुल्यातिशय के नहीं है समान जाके और नहीं है अधिक जो अपनो ऐश्वर्य है वाकी गणना न करत और वा प्रियाजी के विनय कूं और शील कूं के कोमलता कूं और प्रेम कूं के चातुरी कूं और यौवन कूं के रसिकता कूं और कोमलता कूं और मधुर वचन कूं और लज्जा वारे भाव कूं और चाहना कूं, और या रस के अर्थ और सखीन के आधीन होयवे कूं और आदर कूं तैसे आशक्ति कूं और हाव भाव कूं तैसे रूप शोभा और अंगन की सुन्दरता कूं और माधुर्य तैसे अतुल कांति कूं और विलासन कूं और मनोहरता कूं और मन्द हास्य और हर्ष तैसे मौनता कूं और सगरे

आभरणन की कांति कूं माधुरी कूं और अलौकिक संताप कूं और चिन्ता तैसे दीर्घ स्वासन के भरवे सूं और स्तंभ स्वेद रोमांच और स्वर भंग तैसे कंप और विवर्णता और अश्रु वा प्रिया के भावन कूं विचार करत और प्रिया सूं जो वियोगी होय हैं तैसे मूर्छा तैसे और और हू सो वे चन्द्रमा कूं जो अग्नि रूपक ही है सो ऐसे ही है ॥ जासूं या चन्द्रमा की जो चांदनी है सो दग्ध भयी थकी अंधकार समूह रूप काष्ट की स्पष्ट ही भस्म समूह है ॥ सो कबहू तो चन्द्रमा कूं देखिके या प्रकार हू मनमें भावना करत सो प्रियवर पुरुषोत्तम श्रीजी वा प्रिय के सुन्दर भाग्यन सूं उद्यम वारे होयके डरी भयी हरिणी के समान जाके नयन हैं ऐसी सो प्रियाजी अपने स्वरूप सूं जा घर कूं अलंकृत कर रही थीं ॥ वा बाहिर घर के निकट प्राप्त होते भये हैं ॥ तब उच्छल्लित होय रहे वा प्रिय के श्रीअंग संबंधी सुगंधी सूं और भूषणन के कांति के आधिक्य सूं और पुष्प माला और तांबूल के आरोगवे सूं और कर्पूर कस्तूरी सूं प्रगट भये और अंगन में अनुलिप्त के लगायो चन्दन है वासूं प्रगट भई जे अत्यन्त मनोहर सुगंधी है विनसूं और चारों ओर प्रसरवे वारी जे तिस तिस अंग की कांति है विनसूं और वा समय में अचानक उदय भये जे अत्यन्त उच्छल्लित हर्ष के समूह हैं विनसूं और अपने तैसे चित्त में प्रगट भये जे अनुभाव हैं विनसूं पधार रहे अपने प्रिय कूं जानके अपने सफलता कूं जानत भई सो प्रेमदा महामद वारी सुन्दरी अनिर्वचनीय रस सूं कंप के मिश सूं नाचत ही विलास समूह सहित द्वार देश में जायके श्री वल्लभजी प्रिय को दरशन करिके सो सुन्दर दन्त वारी प्यारी तब वा प्रिय के दरशन सूं प्रगट भये अपार अगाध्य आनन्द सागर में तैसे ही निमग्न होय जाती भई हैं ॥ के जे सेवक हू फेर न निकसे य़ासूं ही तब वा प्रिय के आलिंगन मय हास्य स्पर्श चुंवनादि रूप जे हर्ष के सागर हते सो वे वा मृगनयनी कूं अपने में मगन किये अत्यन्त दृढ़ माधुर्य रूप अपने रज्जुन सूं वा प्रिय कूं वा दर्शनानंद सागर सूं उन्मंजन करत भये हैं के बाहिर निकासते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले षटत्रीशमो तरंग समाप्तम् ॥३६॥

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग सेंतीशमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सप्तत्रीस स्तरंग लिख्यते ।।३७।।

श्लोक -- **अथ स्वप्रेम विरह प्रणामादर पूर्वकं ।। आनीयमानं प्रेयां संभाग्य वृंदे नता दृशाः ।।१।।**

याको अर्थ -- अब अपने प्रिय के पधारवे कूं जानिके गृह के द्वार पर्यन्त गमन के पीछे सो कोमल अंग वारी श्रृंगारदे प्यारी अपने प्रेम विनय प्रणाम आदर पूर्वक अपने तैसे भाग्य समूह सूं पधार रहे वा प्रिय को दरशन करिकें बढ़ि रही लज्जा सूं के अपने हृदय में अत्यन्त उच्छल्लित होय रहे कौतूहल विशेष सूं के अपने प्रिय के प्रेम और ताप समूह के अनुभव करने की इच्छा भार सूं और अपने अर्थ जो वा प्रिय कूं उत्साह है वा उत्साह रूप अमृत के स्वाद लेवे की इच्छा सूं के संकोच रहित ही वा प्रिय के श्रीमुख कमल संबंधी रस के पान की इच्छा सूं सो प्रियाजी अपने प्रिय श्रीजी के पधारवे कूं जानके हू न जानत ही अद्‌भुत रत्न मुक्ता और हीरान सूं खचित जो सुवर्णमय किवाड़ हैं वाकूं आप ही बंद कर देती भई है ।। के शांकल लगाय देती भई है ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले सप्तत्रीसमो तरंग समाप्तम् ।।३७।।

।। श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग अष्ट त्रीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्टत्रीसमो स्तरंग लिख्यते ।।३८।।

श्लोक -- **अथ तन्वीतस्य तादृक्तत्स्वरूप रसात्मकं ।। निर्मच्छय कामकोट्यअ प्रोंछल द्भाव सुन्दरं ।।१।।**

याको अर्थ -- याके अनन्तर प्रिय ने प्रिया के प्रेम सूं प्रसन्न होयके दान कियो जो अपनो स्वरूप है सोमेर रसमय है और न्योछावर किये जाय करोड़न काम जाके ऊपर ऐसो है ।। और जो उच्छल्लित होय रहे भाव सूं सुन्दर है और जो सर्व प्रकार सूं हू अन्य सर्व कूं हू दुर्ल्लभ है ।। और जो सगरी सुन्दरीन को वांछित है सो अपने कूं बड़े यत्न सूं ही प्राप्त भयो है ।। ऐसे वा स्वरूप कूं तैसे प्रेम के भार सूं अत्यन्त आर्द्र होयके ही सो परम सुन्दरी प्रियाजी आस्वादन करत ही और प्रलय काल की अग्नि के उदय भये जे ज्वाला समूह हैं विनसूं हू कटु के जे महा तीक्ष्ण वा प्रिय के वियोग संबंधी दुःख है विनकूं अत्यन्त अनुसंधान करत के विचारत अब तो यह प्रिय ऐसे रस सूं नम्र होयके मेरे आगे अनुनय कर रहे हैं ।। आधीन होय रहे हैं फेर और समय में तो बहुत प्रिया है वे प्रिय जाकूं ऐसो यह प्रिय याके लिये ताप समूह कूं भोग रही जो मैं हूं, ऐसी मोकूं त्याग के हू और सुन्दरी की व्याकुलता कूं न सहेन करत करुणा रस को समुद्र रूप यह प्रिय वाकूं अवश्य ही अनुशरण करेंगे ही तासूं दुःखन के समूह कूं देवे वारो जो सुख है वाकूं देवे वारे या प्रिय सूं कहा है के याके संग प्रीति करी आछी नहीं है ।। यह अचानक विचारिकें मान वारी होय रही जो सो मृग नयनी प्रियाजी हैं वाकूं सो रसिक शिरोमणि प्राणनाथ श्रीजी प्रेम सहित ही कहेत भये हैं ''के हे कोमल अंग वारी प्रिये लीला कमल कूं दूर करिकें मुख कूं हस्त के ऊपर काहे कूं तुम शयन कराय रही हो ।। और दूर कर दिये हैं भूषण जानें ऐसी प्रिये दोष के विना आंसून के बिन्दु सूं हृदय में हार कूं काहे कूं करो हो ।।'' जो हे प्रिये यदि द्राक्षा रूप सुन्दर दन्तवारी जो सुन्दरी है सो यदि अमृत रूप वस्त्र में पराग रूप हस्त सूं चन्द्रमुखीन के

मणित रूप इति में कुंजन रूप जल कूं और मंद हास्य रूप कर्पूर कूं और मान रूप मरीचन के चूर्ण कूं और विपरीत रमण रूप सितोपला कूं डार के या प्रकार के पान योग्य ठंडाई कूं बनावे तो वाकूं हू तिहारी जो वाणी है सो माधुर्य में विजय ही करेगी ॥ और प्रणाम कर रह्यो जो अमृत है वाके शिरोमुकुट संबंधी रत्नन की किरण समूह सूं रंजित होय रहे हैं चरण नख जाके ऐसे तिहारे वचन के ऊपर अपने कूं न्योछावर करिवे लिये हू कोकिला के गान कूं विचार वारी बुद्धि नहीं होय है ॥ और हे कमल नयनी जा तिहारे सुन्दर वचन कूं विधाता मुख रूप कमल सूं और वाके मधु रूप रस रूप अभिषेक जल सूं और अधर रूप मंगलमय पल्लव सूं और दंत रूप हीरान सूं जो सुनिवे योग्य वचनों के राज्य में आरोपण करत भयो है के सुन्दर वचनों को राजा रूप बनावतो भयो है ॥ ऐसे वा राजा रूप तिहारे वचन के संग जो मुख स्पर्धा करे है ॥ सो विनमें कोकिला के शब्द कू तो या कोकिला के मुख रूप लोहकारा में धारण करत भयो है ॥ और तंत्री सूं के तार सूं बांधे भये वीणा के शब्द कूं तो बारंबार नख रूप असि के खड्ग के धारान सूं दुःखी करतो भयो है ॥ और वेणु के सगरे शब्द कूं वा बांस की लकड़ी सूं और अधर रूप अग्नि सूं तैसे फुस्कार रूप तीक्ष्ण पवन सूं ही अधिक क्रोध सूं अत्यन्त ही जलावे है ॥ और हे प्रिये कारण के विना उदय होय रहे क्रोध कूं आप त्याग करो और या वचन में ही क्रोध कूं करो है जासूं सुन्दरी यह वचन ही नवीन उदित भये चन्द्रमा कूं अपने मुख सूं ही व्यर्थ ही सदृश करता है ॥ और सुन्दरी की क्रूर हू दृष्टि सुन्दरता कूं प्राप्त होय है ॥ और कठोर वाणी हू अमृत कूं प्रगट करे है ॥ और चंचल अधर हू तो कांति कूं शोभा कूं अंगीकार करे है ॥ या प्रकार सुन्दरी को क्रोध हू सुकृत सूं ही प्राप्त होय है ॥ और हे प्रिये स्वभाव सूं ही स्नेह रस में निमग्न जो तुमारो मन है सो तो मेरे ऊपर अवश्य ही प्रसन्न होयगो यह तो निर्णय है ॥ तथापि कब प्रसन्न होयगो या प्रकार की जो चिन्ता है सोई ही मोकूं व्याकुल कर रही है ॥ या प्रकार प्रसन्नता के योग्य प्रभुन के तिस मधुर वचन कूं सुनिकें सो नम्र अंग वारी प्यारी जी प्रिय के केवल सन्मुख नहीं होती भई हैं ॥ किन्तु अपार लज्जा कूं हू प्राप्त होती भई हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले अड़तीशमो तरंग समाप्तम् ॥३८॥

कल्लोल जी चतुर्थ

तरंग ओगणचालीसमो

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चालीसमो स्तरंग लिख्यते ।।३९।।

अब कल्याण भट्टजी कहें है के थोरी बुद्धिवारे मैंने प्राणनाथ श्रीजी की प्रिया के संग अद्भुत यह रस लीला या प्रकार सूं सूचन करी है ।। तैसे और हू यामें जे मधुर प्रकार हैं विनकूं तो रसिक भक्त स्वयं ही विचार कर लेवेंगे। और इन सूं और हू प्रकार जे रस ग्रंथन में पंडितन ने कहें हैं और जे तो अलौकिक और हू प्रकार हैं वे सगरे ही रसिकन के चक्रवर्ती राजाधिराज पूर्ण पुरुषोत्तम श्री गोकुलाधीश प्रभु में ही प्रागट्य कूं प्राप्त भये हैं ।। यासूं ही जे प्रकार लौकिक कविन ने कहे हैं तैसे तैसे और हू विन विन ग्रंथन में जे कहे हैं वे प्रकार तो विन में वरणन कियो जो लौकिक रसाभास रूप नायक मे तो संभवे हू नहीं है और या परम प्रभू महारसात्मक श्रीजी में तो विनसूं ही अधिक ही स्थित है ।। विन सगरेन कूं तो को जान सके और को बुद्धिमान कह सके किन्तु न कोऊ ही जान सके है ।। तासूं कोऊ नहीं वर्णन कर सके हैं ।।१।। और जे प्रकार श्रीजी के भक्तन में के मैंने सुने हैं ।। और या श्रीजी की कृपा सूं और या श्रीजी के कृपापात्र महेद भक्तन की कृपा सूं जे प्रकार मैंने हृदय में अनुभव किये हैं ।। और जे प्रकार इहां सूं लेकर तैसे बड़े कवित्त ने लौकिक नायक रूप भाव सूं कल्पना किये लौकिक पुरुष में निवेश किये हैं के कहे हैं ।। और मैंने तो विन सगरेन में सूं कितने एक प्रकार ही बड़े यत्न सूं संक्षेप सूं कहे हैं ।। और जो ऐसे संक्षेप सूं कहे इनके प्रकारन में हू विस्तार की बुद्धि कूं कहे के यह ऐसो ही विस्तार है ऐसे बुद्धि करे सो तो सूर्य कूं आछिपायवे वारो मेघ जैसे होय तैसे ही श्री महाप्रभुन की महिमा कूं आच्छादन की इच्छा वारो है ।। सो अत्यन्त दुष्ट कलि रूप पाप रूप कवि है ।। ऐसे दुष्ट कवि कूं तो श्रेष्ठ भगवदीय दूर सू ही प्रणाम करिकें वाकूं संग कबहू नहीं करें ।। विशेष कहा कहे यह प्रसंग तो ऐसे हो रहे विचार वारे कृपापात्र तो स्वयं ही

जानेंगेऊ।। अब तो ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्ल्लभ है विंदु हू जाको ऐसे प्रसंग प्राप्त हो महारस कूं विस्तार वारे कान रूप दोनान सूं ही पान करिये ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले ओगणचालीशमो तरंग समाप्तम् ।।३९।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग चलीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चत्वारीस स्तरंग लिख्यते ।।४०।।

अब कल्याण भट्टजी कहें है के थोरी बुद्धिवारे मैंने प्राणनाथ श्रीजी की प्रिया के संग अद्‌भुत यह रस लीला या प्रकार सूं सूचन करी है ।। तैसे और हू यामें जे मधुर प्रकार हैं विनकूं तो रसिक भक्त स्वयं ही विचार कर लेवेंगे और इन सूं और हू प्रकार जे रस ग्रंथन में पंडितन ने कहें हैं और जे तो अलौकिक और हू प्रकार हैं वे सगरे ही रसिकन के चक्रवर्ती राजाधिराज पूर्ण पुरुषोत्तम श्री गोकुलाधीश प्रभु में ही प्रागट्य कूं प्राप्त भये हैं ।। यासूं ही जे प्रकार लौकिक कविन ने कहे हैं तैसे तैसे और हू विन विन ग्रंथन में जे कहे हैं वे प्रकार तो विन में वरणन कियो जो लौकिक रसाभास रूप नायक मे तो संभवे हू नहीं है और या परम प्रभू महारसात्मक श्रीजी में तो विनसूं ही अधिक ही स्थित है ।। विनसगरेन कूं तो को जान सके और को बुद्धिमान कह सके किन्तु न कौऊ ही जान सके है ।। तासूं कोऊ नहीं वर्णन कर सके हैं ।।१।। और जे प्रकार श्रीजी के भक्तन में के मैंने सुने हैं ।। और या श्रीजी की कृपा सूं और या श्रीजी के कृपापात्र महेद भक्तन की कृपा सूं जे प्रकार मैंने हृदय में अनुभव किये हैं ।। और जे प्रकार इहां सूं लेकर तैसे बड़े कवित्त ने लौकिक नायक रूप भाव सूं कल्पना किये लौकिक पुरुष में निवेश किये हैं के कहे हैं ।। और मैंने तो विन सगरेन में सूं कितने एक प्रकार ही बड़े यत्न सूं संक्षेप

सूं कहे हैं ।। और जो ऐसे संक्षेप सूं कहे इनके प्रकारन में हू विस्तार की बुद्धि कूं कहे के यह ऐसो ही विस्तार है ऐसे बुद्धि करे सो तो सूर्य कूं आछिपायवे वारो मेघ जैसे होय तैसे ही श्री महाप्रभुन की महिमा कूं आच्छादन की इच्छा वारो है ।। सो अत्यन्त दुष्ट कलि रूप पाप रूप कवि है ।। ऐसे दुष्ट कवि कूं तो श्रेष्ठ भगवदीय दूर सू ही प्रणाम करिकें वाकूं संग कबहू नहीं करें ।। विशेष कहा कहे यह प्रसंग तो ऐसे हो रहे विचार वारे कृपापात्र तो स्वयं ही जानेंगे ।। अब तो ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्ल्लभ है विंदु हू जाको ऐसे प्रसंग प्राप्त हो महारस कूं विस्तार वारे कान रूप दोनान सूं ही पान करिये ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकन्दरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले चालीशमो तरंग समाप्तम् ।।४०।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग एकतालीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ एक चालीश स्तरंग लिख्यते ।।४१।।

श्लोक -- **अथ तादृक्वद्र समय महालीलात्मकं परंस्वरूपं प्राणनाथस्य तादृक्प्रेष्टा करवितं ।।१।।**

याको अर्थ -- भाग्यवारेन के गणन सूं वन्दनीय हैं चरण कमल की रज जिनकी ऐसी जे कितनी एक प्रेम को समुद्र रूप सखी हैं सो सगरी रात्रि पर्यन्त ही तैसे भाग्यवान गवाखा के छिद्र में मुख्र कूं धारण करिकें और कितनी एक वा महाभाग्य के निधि रूप लीला भवन में ही कहूं छिपके और कितनी एक तो भाग्यवान विन रत्न खचित किवाडों के छिद्रन में नयनों कूं सर्व प्रकार सूं धारण करिके प्राणनाथ श्री गोकुलपति के तैसी महाभाग्य वारी महा रसात्मिक प्रिया सूं मिले भये वा ऐसे महा रसमय लीला रूप स्वरूप को दर्शन करती भई हैं ।। और वा रस वार्तादिकन कूं हू सुनती भई हैं ।। तैसे चिन्तन हू करती भई है ।। और आपस में वर्णन हू करती भयी हैं ।। और महा भाग्यवान महात्मा

वासना नाम वारो सो भक्तराज हू वा प्रिय के तैसे लीला वारे महा रसमय स्वरूप कूं कैसे कैसे यत्नन सूं कछुक सुनतो हू भयो है ॥ और दरशन हू करतो भयो है ॥ और अत्यन्त यथार्थ वक्ता भाग्यनिधि भक्तन सूं या रहस्य कू जानिकें परंपरा सूं भक्ति वारे और हू स्त्री पुरुष वा प्रिय के दर्शन करिवे लिये आवते भये हैं ॥ तहां मोती, हीरा और रत्नन के समूह और सुवर्णमय है अंचल जाको ऐसे दक्षण और ढेर ही कुसुंभी रंग वारे पाग कूं तो धारण कर रह्यो है ॥ और जो रत्नमय कुंडलन सूं शोभायमान है और चंचल तैसे लाल हैं नयन जाके और जो अत्यन्त अद्‌भुत क़टाक्ष रूप अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करि रह्यो है और जो रसवारी जे सुन्दरी समूह के मन के हरिवे में पीडित है ॥ और मिट रह्यो है तिलक जाको और वीरी को रंग लगि रह्यो है जिनमें ऐसे हैं कपोल जाके और भौंरा की पंक्ति जैसे मनोहर शोभायमान होय रही है घूंघर वारी अलकावली जाकी और काम के धनुष की ही शोभा कूं दूर करवे वारे शोभायमान हैं दोनों भुजा जाके और सुगंधी श्वास रूप पवन जामें चलि रह्यो है ऐसे शोभायमान जाके नासावंश हैं और बंदुक के पुष्प समूह कूं विजय करिवे वारो है अधर जाको और अमृत के हू विष भाव कें प्रगट करिवे वारे माधुर्य कूं धारण करि रह्यो है मंद हास्य जाको और तुलसी माला श्रेष्ठ गुंजा माला और मुक्ता माला सूं जो शोभायमान है और पुष्टि तैसे विस्तार वारे हृदय स्थल सूं और घोंटू पर्यन्त शोभायमान होय रहे भुजा रूप दंडन सूं जो अत्यन्त शोभायमान है ॥ और जो प्रिय सू हू प्रिय है, और जाके एक एक अंग के गुण समूह विशेष सूं नहीं कहे जांय है ॥ और क्षण क्षण में ही नवीन है शोभा जाकी और नयनों कूं तो परम आसेचनक है के जाकूं देखत हू नयन तृप्त नहीं होंय हैं, और करोड़न काम के सौन्दर्य कूं तिरस्कार करिवे वारी है चरण कमल संबंधी रज को एक कणिका हू जाको ऐसे प्रिय के दरशन के लिये भक्तजन आवते भये हैं ॥ और ऐसे शोभासार सर्वस्व के सार को महा समुद्र रूप महा रसिकराय श्रीजी कूं वे निश्चल होयके ठहेर रहे दर्शन के अभिलाषी कृपापात्र भक्तजन अनुभव हू करत भये हैं ॥ सो तैसे सगरे साधन के बल वारे ब्रह्मादिकन कूं हू प्रणाम करिवे लिये हू दुर्ल्लभ जो विन भक्तन के चरण कमल संबंधी रज के कणिका के हू कणिका की शोभा है ॥ हौं तो वाकूं सदैव ही प्रणाम करूं हूं ॥१॥ और तैसो महा रसमय अनिर्वचनीय प्रेम कूं उच्छलन रूप जो होरी विहार है वामें

प्राणनाथ श्रीजी हर्ष के उज्वल सार और परम रसरूप महा शुद्ध उज्वल मनोहर कोऊ अनिर्वचनीय श्रृंगक यन्त्र सूं या सुन्दरी के कहूं तैसे महारसमय अनिर्वचनीय अंग विशेष में निशेक करते भये हैं ॥ वा सुमुखी कूं हों शरीर और मन और वाणी सूं निरन्तर ही प्रणाम करूं हूं ॥ याके अनन्तर सो रस सागर प्राणनाथ श्रीजी वा प्रियाजी के सगरे मनोरथन रूपी महावृक्षन कूं फल वारो करिकें और वा कमल नयनी प्रियाजी कूं विन विन चाटुकारन सूं मनायके मारग में प्राप्त होय रहे भक्तन के ऊपर मंद हास्य वारो है श्रीमुख कमल जामें ऐसे कृपाकटाक्षन सूं अनुग्रह कूं करत अपने निवास स्थल कूं शोभायमान करत भये हैं ॥ तब वा अपने निवास स्थल में संतों के गति रूप ईश्वर भगवान सो श्रीजी अपनी रीति और नित्य क्रम के अनुसार ही सगरे आवश्यक कार्यन कूं करते भये हैं ॥ तब तैसी उछल्लित भक्ति वारे सेवकजन चारों ओर ही प्रसर रही है पुष्पन की उत्कृट सुगंधी जाकी ऐसे नवीन तैल कूं सुवर्ण के पात्र में भरिके ले आवते भये हैं ॥ तब वा तैल कूं लगायवे के लिये हू सो प्रियाजी हू प्रारम्भ करते भये हैं ॥१॥ तब तैलाभ्यंग को अनुभव करिके सो प्रिय श्रीजी बड़े बड़े सुवर्णमय कलशान के परम्परा कूं उठाय रहे जे प्रिय जन हैं विनने प्राप्त कियो जो तातो सुहातो जल है वासूं वेग ही अभिषेक को आदर करत भये हैं ॥ वामें कितने एक तो प्रिय सेवक तो वेग सूं ही कलशान कूं जल सूं भर रहे हैं ॥ और कितनेक तो तहां स्नान के स्थल में लाय रहे हैं ॥ और कितने एक कृपापात्र तो या कृपानिधि श्रीजी के श्री मस्तक ऊपर ही जल कूं डार रहे हैं ॥ और जे तो जल सूं रहित हैं वे तो और जल वारेन सूं जोर सूं ही खेंचि रहे हैं ॥१। और वा भूमि में रहिवे वारे जे जन हते सो वे गिरि रहे वा अभिषेक के जल को दर्शन करिके महादेव के मस्तक में जो गंगाजी हैं सो नयन संबंधी अग्नि सूं तप्त होयके ही कैलाश सूं आय रही है ऐसे ही विचार करते भये हैं ॥१॥ और बहुत तैल के मिलाप सूं बढ़ि रह्यो है सुगंधी को प्रसरनो जामें और थोरो थोरो जो गर्म है और बड़ी है लहेर जामें ऐसे वा अभिषेक सूं आय रहे जल कूं देखिकें वेग ही धारा सूं सगरे जीव यह तो कोउ विचित्र जल वारी नदी है ऐसे ही उत्प्रेक्षा करते भये हैं ॥१॥ और वा ताते सुहाते जल सूं स्नान करिवे सूं श्रीजी हू और ही शोभा कूं प्राप्त होते भये हैं के पृथ्वी तल में जय सूं प्रसिद्ध भयो है बड़ो ऐश्वर्य जाकूं तासूं कियो

है महाभिषेक जिसने ऐसो मानो कामदेव ही है और तब जल कणिकान कूं वर्षा करि रह्यो जो सो श्रीजी कूं केश पास है सो श्याम रंग वारे चामरों के जय सूं प्राप्त भई मानो कीर्ति रूप मुक्तान कूं वर्षा करत ही शोभायमान होतो भयो है और याके अनन्तर श्री अंगन कूं पोंछ करिके तिलक आदि कूं करिके सो ईश्वरेश्वर श्रीजी विधि प्रोक्त वैदिक और स्मार्त सगरे कृत्यन कूं हू सम्पूर्ण करते भये हैं ॥१॥ और चलि रही प्रियाजी कूं देखिके वाके हृदय में भली प्रकार रोकवे की इच्छा वारे सो ईश्वर श्रीजी उपरेणा के अंचल के छल सूं ही मानो वा प्रिया कूं ही हृदयमें बारंबार आवरण करते भये हैं ॥१॥ और वा प्रिया के जो दोनों हस्तकमल हैं वे दर्भ धारण के मिस सूं प्रिया के स्तनों को जो वियोग रूप अग्नि है वाके धूंम कूं धारण करत जैसे होय तैसे ही शोभायमान होते भये हैं ॥१॥ और बहुत दूर पर्यन्त ही बिछायो है विचित्र मृग रोम जैसे कोमल रोम वारो बिछोना जामें और परम उज्वल आकार वारे जनों सूं जो सहित है और यथा योग्य स्थान में बैठि रहे हैं उत्तम मध्यम और हीन हू जीव जामें ऐसे वा सभा घर में सो प्रभु श्रीजी प्रवेश करते भये हैं ॥१॥ तब चिरकाल पर्यन्त त्याग कियो है अपनो अपनो आसन जिन्होंने ऐसे सगरे पुरुषन सूं प्रणाम किये भये और पीछे चलि रहे जे अपने अंतरंग अनन्त प्रिय हैं विनसूं मिले भये और अपनी प्रियाजी सुन्दरी समूह हैं विनको स्मरण करत रहे श्रीजी हैं, सो अपने रत्न खचित मंडप में प्रवेश करत भये हैं ॥१॥ और भूमि में सो सभा हू न हती जामें प्रीति सूं प्रफुल्लित होय रह्यो है श्रीमुख जिनको ऐसे पुरुषनने या प्रिय की कथा न करी होय जहां जहां सभा हती तहां तहां ही प्रसन्न होत पूर्वक या प्रिय की ही कथा हती और ऐसी स्त्री हू नहीं हती जो निद्रा रहित होयके या प्रिय के हृदय सूं निरन्तर धारण करती भई हैं ॥ किन्तु जो जो स्त्री हती सो सो हू या प्रिय को ध्यान करत रात्रि में निन्दा कूं न प्राप्त होती भई हैं यह भाव है ॥१॥ और सगरे गुणन को है गुफन जामें ऐसे माला रूप वा प्रिय कूं एक ही दूषण हतो जो जाकी अमृत सूं हू अधिक मधुर वाणी सूं सगरे हू गुण वारे पराभव कूं प्राप्त भये हैं के वाणी तो सर्व सूं हू अधिक मधुर मनोहर ही हती और चन्द्रमा सिंधु सूं प्रगट भयो है यासूं जगत में कोऊ अनिर्वचनीय कीर्ती कूं प्राप्त भयो है ॥ मानो यह मान के ही या चन्द्र के विजय की इच्छा वारो सो श्रीजी को मुख हू सुन्दर वचनामृत रूप सिन्धु कूं विस्तार

वारो करत भयो है ।। और वा श्रीजी की महा महिमा रूप पर्वत सूं है जन्म जाको और श्रेष्ठ विचार वारेन कूं जो अत्यन्त मान है ऐसी वा श्रीजी वाणी रूप नदी हू मानो प्रगट भई है ।। जासूं जामें तत्व विचार वारो तो निमग्न होय जाय है ।। और जाकूं तत्व को ज्ञान नहीं है सो तो रस के लेश कूं हू नहीं प्राप्त होय है ।। और या श्रीजी के मुखचन्द्र संबंधी वचनामृत के पान सूं भूमि वासी जन हू बिना यत्न के ही विविधि भाव कूं प्राप्त होयके बहुत परिश्रम सूं प्राप्त होयवे वारो स्वर्ग की हू कोऊ नहीं चाहना करे है ।।१।। और प्रफुल्लित होय रही रोमावली सम्पूर्ण है कपोल जिनके ऐसे भक्तजन हू पर्वत में के भूमि में के समुद्र के तट में जहां कहां ही वा सगरे गुणन के नवीन धाम रूप श्रीजी के अद्‌भुत चरित्र कूं गान करते भये हैं ।।१।। और जाकूं नगर वारे लोक यह राजा है ऐसे प्रथम मानते भये हैं ।। सो श्रीजी के निकट प्राप्त भये वाकूं हू यह कौन है और कहां को है ऐसे पहेचानते हू नहीं भये हैं ।। कहा के श्रीजी के चरणन में तो वैसे अनन्त ही राजा बड़ी ही दीनता सूं नम्र होय रहे हैं ।।१।। और वा श्रीजी की संपदा इतनी ही यह जानिवे कूं तो स्वयं श्रीजी हू समर्थ नहीं हैं ।। और जाकूं तो श्रीजी की समृद्ध परोक्ष है दर्शन हू नहीं कियो है तो वाकूं तो वा संपदा को वर्णन अत्यन्त ही दूर है किन्तु कोऊ वर्णन हू अत्यन्त ही दूर है ।। किन्तु कोउ हू वर्णन नहीं कर सके है ।।१।। और या श्रीजी के चरणन के निकट भक्तजन मरकत माणिक और हीरा ऐसे नवीन मुक्तान की माला और विद्रुम की भिन्न भिन्न राशीन कूं हू कर देते भये हैं ।।१।। और वा श्रीजी के प्रिय भक्तन के जे समूह हते वे तो नित्य ही तहां तहां कहूं तो कस्तूरी के समूहन कूं और कहूं तो लीला कांति वारे कुंमकुंम की राशि कूं और कहूं चन्दन के समूह कूं और कहूं शोभायमान अगर चन्दन के भारी समूह कूं और कहूं स्वच्छ कर्पूर के समूह कूं कर देते भये हैं और कहूं स्वच्छ स्फटिक मणि के पात्रन में पुष्प समूह की सुन्दर सुगंधी वारे तेलन कूं भरिके तहां तहां ही धरते भये हैं ।।१।। और प्रतिदिन बारंबार बढ़ि रही जो अधिक संपदा है तासूं दूर कियो है इन्दु जाने और कुवेर की दशा कूं प्राप्त भयो थको उत्तरायण में स्थित जो प्रौढ़ के वर्द्धमान महा तेज वारो सूर्य बिंब है वाके प्रकाश कूं विजय करिवे वारो प्रसर रह्यो है तैसो प्रताप जाको ऐसे जो श्रीजी हैं सो कोऊ अनिर्वचनीय ही शोभा कूं प्राप्त होते भये हैं ।।१।। और कहूं तो बुद्धिमानों कूं

उदार न्याय चरचा होय रही है और कहूं तो कवि लोकन के अमृत तुल्य वाणी विलास होय रहे हैं ।। और कहूं तो मनोहर वाणी को गान होय रह्यो है सो इत्यादि प्रकार सूं बढ़ि रही है प्रसन्नता जामें ऐसे कितने एक क्षणन कूं वा स्थल में सो श्रीजी गुजारते भये हैं ।।१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले एक चत्वारीश तरंग सम्पूर्णम् ।।४१।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग बयालीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ द्विचत्वारीश स्तरंग लिख्यते ।।४२।।

श्लोक -- **ईत्थं प्रविहरन्कापि समये रसिकाग्रणि ।। विसर्डिताखिल जनः पंचवैभीत्किमतमैः** ।।१।।

याको अर्थ -- ऐसे विहार करत सो रसिक शिरोमणि श्रीजी कहूं एक समय में सगरे साधारण जनन कूं विदा करिके अत्यन्त भक्ति वारे कृपापात्र अपने अंतरंग पांच छै भक्तन सूं मिले भये ही सो अमूल्य माणिक्य मुक्तान सूं खचित सुवर्णमय चौकी पर अपने श्रीकर कमल की अंगुली संबंध वारी पद्मराग मुक्ता और हीरान सूं शोभायमान मुद्रिका कूं धरके श्री चरण कमल कूं धोयके सदाचार के प्रवृत्त करते संध्या वन्दन की विधि कूं सतकार करत विराजमान होते भये हैं ।।१।। या अन्तर में परम चतुर श्रृंगारदे नाम वारी प्रियाजी और परम प्रेम वारी मानबाई जी और उछल्लित होय रह्यो है श्रेष्ठ रस जामें ऐसी कुंवर बाईजी हतीं ।। सो ही आपस में निश्चय कूं करिके रस सागर प्राणनाथ श्रीजी के संग नर्म विलस करिवे की इच्छा करत और अपने नूपुर और कंकण तैसे और हू भूषण के झनकार रोकत और चरणन की ध्वनि कूं हू रोकत और तहां श्रीजी के निकट रहिवे वारे जे अंतरंग प्रिय हते विनकूं हू स्वयं या कार्य कूं कर्यो चाहें हैं, वाके न कहिवे लिये हाथ की संज्ञा सूं संकेत सूं श्रीजी कूं मती कहियो ऐसे सपथ पूर्वक निवारण करिके मंद मंद हसत ही वे तीन्यो ही धीरे धीरे या श्रीजी के पीछे सूं आयके निश्चय होयके वा मुद्रिका कूं चुराय लेती

भई हैं ।। यामें श्रीजी प्राणायाम ही कर रहे हैं, तब कुंवरबाई ने उठाई है, और मानबाई ने स्पर्श कियो है, श्रृंगारदे ने हृदय में दुबकाय राखी है यह भाव है ।। तब अधर में कुंद पुष्प जैसे विराजमान मन्द हास्य कूं और नयनों में हर्ष के आंसूं कूं और हस्त कमल मं रोमावली के समूह कूं बड़े यत्न सूं रोकके यह तीनों हू और सर्व हू सगरे भक्त जैसे स्थित हते तैसे ही ठहेर जाती भई हैं ।। तब संध्या विधि के आदर कूं सम्पूर्ण करिकें सो श्री प्राणनाथजी वा मुद्रिका कूं पहेरवे के लिये इच्छा करत भये हैं ।। तब वा मुद्रिका कूं वा चौकी ऊपर न पायके इतउत देखत ही अपनी दृष्टि और मन कूं चुराने वारी विन श्रृंगारदे और मानबाई और कुंवरबाई जी कूं देखिकें चतुरता के सागर रूप सो श्रीजी जान जाते भये हैं के इनोंने ही मेरी मुद्रिका चुरायके अपने पास धरी है सो जा भाव सूं विननें चुराई हती ता भाव कूं पुष्टि करिवे लिये ही श्रीजी हू मन्द हास्य सहित कहेत भये हैं के मनुष्य तो कोऊ नहीं आयो है ।। और जाको स्वभाव नही जान्यो होय ऐसो इहां कोऊ नहीं आयो है ।। और धूर्त हू कोऊ नहीं आयो है तासूं हमारी और मन कूं चुराय रही तुमने ही मेरी मुद्रिका हरी है यामें संशय नहीं है ।। जासूं हम देख रहे हैं तुम या मंद हास्य कूं बल सूं हू रोक रही हो ।। सो यह तुमारी मंद हास्य मेरे निश्चय कूं दृढ़ ही करावें है ।। और वा प्रिय के शोभायमान मंद मुसकान सूं जटित या प्रकार के वचन कूं अपने कानों में धारण करिके वे तीनों सुन्दरी ही कोऊ अनिर्वचनीय शोभा के समूह वारे आनन्द के समूह कूं प्राप्त होती भई हैं, जासूं वे सुन्दरी वेई हैं के कोऊ और हैं, ऐसे स्वयं हू परम चतुरा निर्णय में समर्थ नहीं भई हैं ।। तैसे और हू कितने एक परम चतुर भक्त वेग तो वा निर्णय में समर्थ नहीं होते भये हैं ।। और जो आनन्द को समूह विन सुन्दरीन के मन रूप वृक्षन के पुष्प रूप होयके त्याहां अत्यन्त प्रफुल्लित होय के तहां न समावत ही मनोहर उत्तर रूप सूं मुख द्वारा सो बाहिर निकसतो भयो है । तब प्रीति सूं वा पुष्प कूं सो प्रिय जी कानों में अवतंस रूप करते भये हैं और वा पुष्प की सुगंधी सूं अपने मन कूं पूरण करते भये हैं ।। और जो उत्तर रूप पुष्प तहां ठहेरवे वारे जे हू भक्त हे विनके हू कान और नयनन कूं अत्यन्त ही प्रसन्न करते भये हैं ।। तामें हे रसिका तुम हू सावधान होयके सुनोगे जो उत्तर रूप पुष्प केवल तुमारे अंगन कूं प्रफुल्लित रोमावली वारो नहीं करेगो किन्तु ब्रह्मादिकन

कूं हू दुर्ल्लभ है लेश जिनको ऐसे कदंब पुष्प के समूह रूप प्रफुल्लित रोमावली सूं तुमारे मन कूं हू अत्यन्त पूरण करेगो ।। सो उत्तर रूप पुष्प कूं दिखावे है के सो प्रियाजी कहें हैं ''के हे प्रभो हे प्राणेश हमारे या घर में और जे मनुष्य हैं सो वे तो अजाने स्वभाव वारे हू नहीं हैं ।। और धूर्त हू नहीं हैं ।। और अजाने हू नहीं हैं सो विनमें तो ऐसो चौर्य नहीं बने है के वे ऐसी चोरी करिवे वारे नहीं हैं ।। किन्तु केवल तुम ही अपूर्व धूर्त वन्दन के स्वामी हो ।। और अत्यन्त अजाने स्वभाव वारे हो ।। और आछी रीति सूं परिचय हू तुमारो हू नहीं है ।। और तुमने हू सबके देखत ही सामने ही सबके मन और नयन हरि लिये हैं ।। तासूं अपनी तैसी चोरी कूं छिपायवे लिये ही कोऊ अपने प्रीति पात्र अंतरंग जनो के पास ही वा मुद्रिका कूं धरिकें सर्व समर्था सूं शोभायमान तुम या प्रकार सूं हमकूं चोर बनावो हो, ।।१।। सो यदि तुमकूं मुद्रिका चहीये तो वा सुन्दरी कूं अनुशरण करो जो तेरी प्यारी वा मुद्रिका कूं हू देवेगी तैसे तुमारे मनमानी और वस्तु कूं हू देवेगी ।। और यदि मुद्रिका के मिस सूं अपने अत्यन्त वांछित वस्तु कूं हमसूं हू मांगो हो तो हे प्रिय सो हमहू सगरी तिहारी में उदार स्वभाव वारी हैं सो हमारे ऊपर प्रसन्न होवो और कृपा करो ।।'' सो या प्रकार विनके उत्तर कूं सुनिकें सो रसिकवर भगवान श्रीजी मंद मंद हसत भये हैं ।। और रोमावली कूं हू धारण करते भये हैं ।।१।। सो जय कियो है अमृत के रस के सार कूं जाने ऐसी जो यह नर्म लीला है सो वा प्रिय के मन के भाव कूं विन प्रियान में कह देती भयी हैं ।। और विन प्रियान के मन के भाव कूं वा प्रिय में ही कहे देती भई हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले द्विचत्वारीश तरंग सम्पूर्णम् ।।४२।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग त्रैयालीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ त्रि चत्वारीसमू स्तरंग लिख्यते ।।४३।।

श्लोक -- **तासु मानाभिधा तन्वी रूप यौवन शालिनि वैदग्ध सुर सो द्रेक प्रिय सौख्य स्पृहार्ती युक ।।१।।**

याको अर्थ -- और वा प्रिया के अत्यन्त दग्ध होय रहे हृदय कूं हू अपने वक्षस्थल रूप चन्दन के बारंबार लेपन सूं शांत करें ऐसी विज्ञापना कूं हू रसकेन्द्र श्रीजी मानते भये हैं ।।१।। तब सो सखी हू अपनी प्रिया के पास जायके प्रिय श्रीजी के तैसे प्रेम कूं सुनायके सखीगणन के सहित ही वा मानबाई जी कूं अत्यन्त ही आनन्दित करती भयी है ।।१।। तब बढ़े भये उत्साह सूं प्रेरणा करी भयी सो सखीजन सुगंधी वारे सोहाते और कलशा में धारण किये बहुत जलन सूं या अपनी प्रिया मानबाई कूं न्हवावती भयी हैं ।।१।। अथवा न्हवावने कूं उत्प्रेक्षा सूं कहें हैं के वे सखीगण प्रियाजी कूं न्हवावती नहीं भयी हैं ।। किन्तु सुवर्ण सूं रचना करी वा प्रियाजी के कुच कुंभन की शोभा ने विजय करिकें मानो दासी बनाय के राखी जो रसाल वृक्ष की शिखा आंब के बोर जैसे जो लज्जा रूप ग्लानी है वा लज्जा रूप मलीनता कूं ही मानो पानी सूं निवर्त करती भई हैं ।।१।। और तब ये सखीजन प्रेम सहित ही सूक्ष्म कोमल वस्त्र सूं वा प्रियाजी के अंगन कूं पोंछके विविधि भूषणन सूं हू भूषित करती भई और यद्यपि या मृगनयनी प्रियाजी की स्वाभाविक कांति हू स्वरूप कूं शोभायमान कर रही है ।। तथापि प्रिय के लिये ही यह प्रियाजी सगरे भूषणन कूं धारण करती भई हैं और अत्यन्त अनुराग वारे प्रिय कूं निर्णय भयो है समागम जामें ऐसे जो प्रथम को अपराधी विरहग्नि हतो सो विरहग्नि ही मानो सखी ने लगाये महावर के मिस सूं ही या प्रिया के चरणन कूं डरके ही सेवा करतो भयो है ।।१।। और परम कोमल अंग वारी या प्यारी के दोनों स्तनों की सीमा के बीच जो रोमावली है सो वा प्रिया की नाभी रूप सरसी में शोभा रूप जल को पान करिकें मंद

मंद आय रहे जे सुन्दरी के नयन रूप खंजन हैं विनके चरण चिह्न की परंपरा जैसे होय तैसे ही शोभायमान होती भयी हैं ॥ और वा प्रिया के स्वरूप कूं प्राप्त होयकें शोभायमान होय रहे मुक्ताहार और श्वेत वस्त्र और सुवर्णादि के हस्त कूं देखिकें विचार रहित जे हैं वे ही विनकूं भूषण रूप कहें हैं ॥ विचार करिवे में तो भूषण रूप तो वा प्रियाजी को स्वरूप ही है ॥१॥ और काम सूं हू परम सुन्दर जो अपनो प्रिय है वाके मिलाप के ध्यान ने जड़ रूप करी जो सो प्रियाजी हैं वाकूं हीरा रत्न मुक्तादि के हारन में के सुवर्ण के भूषणन में मन कूं संबंध हू न होतो भयो है ॥१॥ और वा प्रियाजी को श्रीकंठ है सो हार रूप कमलाक्ष माला सूं और कंठी के चंचल जे ताटंक हैं विनके शब्दन सूं पांचजन्य शंख के हू जय देवे वारे जय कूं मानो करतो भयो है ॥१॥ और वा प्रियाजी के कुच कुंभन में जो कस्तूरी के पत्रन की बेल है सो यौवन वारो जो काम रूप हस्ती है वाके खेलन गुछा के मध्य में मद कूं लेप जैसे ही शोभायमान होते भये हैं ॥ और नख संबंधी प्रभा के किरणन सूं अत्यन्त शोभायमान होय रही वा प्रिया की अंगुलीन में माणिक खचित जे मुद्रिका हतीं वे तो पुनरक्ति दोष कूं हू निश्चय सूं करती भई हैं ॥१॥ और शब्दायमान है नूपुर जामें ऐसे जो वा प्रियाजी के प्रफुल्लित होय रहे दो चरणकमल हैं सो वा प्रिया के श्रीमुख की शोभा सूं मद रहित होय रहे कमल के मर्दन में योग्य ही होते भये हैं ॥१॥ और जे चामर या प्रियाजी के केश समूहन कूं विजय करिवे लिये यहां प्रियाजी के निकट पधारे हैं वे हू वा प्रियाजी कूं देखके वाके दोनों याश्चे में चलन रूप उपाधि सूं अत्यन्त ही कंप संपदा कूं धारण करते भये हैं ॥ के कंपायमान होते भये हैं ॥ और काम के सूक्ष्म वेधी भाव कूं कहा के महा सूक्ष्म लक्ष पर वेध करवे में समर्था कूं कहेवे में को समर्थ होय सके ॥ जासूं डरे हू ये मृग जैसे हैं नयन जाके ऐसी या महा सुन्दरी के हृदय कूं नहीं प्रवेश कर सके है ॥ विसकी तंतु जामें ऐसे स्तनों के मध्य मार्ग सूं जो कामदेव ताडना करत भयो है ॥ कहा के प्रियाजी के जे दोनों कुच है सो महा पुष्ट और ऊंचे दोनों एकमय ही होय रहे हैं ॥ बीच की सीमा प्रत्यक्ष हू नहीं होय है ॥ ऐसे स्थल सूं ही कामदेव ने हृदय कूं घायल कियो है यह भाव है ॥ और प्राणनाथ श्रीजी की जो सुन्दर वार्ता है वाके करवे सूं प्रगट भयो है पसीना जामें ऐसी जो सो प्रिया है सो मानो कामदेव के वाण जो पुष्प हैं वाके रस के बिन्दुन सूं स्नान

करायी जैसे होय तैसे ही शोभायमान होती भयी है ।।१।। और जो कामदेव वा प्रियाजी के रोम रोम कूंप में ही असंक्षात वाणन कूं गाढ़तो भयो है ।। के वा कामदेव कूं हू के काम तोकूं धिक्कार है ऐसे गा कर रह्यो जो गोकुल को मंगल रूप श्रीजी है वाके विशेष प्रताप वारे स्वरूप कूं देखके बड़े प्रताप वारो जो सूर्य है सो करवे योग्य कृत्य कूं न विचारि के ही कछुक मंद प्रकाश वारो होय जातो भयो है यह निश्चय करे है ।। और सूर्य जब मंद प्रकाश वारो होय गयो है ।। और महा सुन्दर राय प्रिय श्रीजी हू जब वा प्रिया के प्रति अभिसरण के योग्य वेष कूं अंगीकार करते भये हैं तब चिरकाल सूं पीछे ही प्राप्त भयो है अवसर जाकूं ऐसो जो कामदेव है सो हू स्वयं धनुष कूं अंगीकार करतो भयो है ।।१।। और अंगीकार किये हैं वा समय के योग्य आभरण जानें ऐसे वा प्रिय के सम्पूर्ण अंग संबंधी महा सुन्दर निर्दोष कांति कूं देखके सो कामदेव हू हम यह विचारें हैं के तब अपने धन्यता के अभिमान कूं त्याग कर देतो भयो है ।।१।। और निकट होय रह्यो जो संध्या समय है तासूं आनन्द देवे वारो सो दिन जैसे जैसे प्रगट होतो भयो है तैसे तैसे ही वा प्रिया के श्री अंग में कांति और चित्त में स्नेह विशेष ही होतो भयो है ।।१।। और अपने में उत्साह कूं धारण कर रही और अपने में विशेष प्रेम के अभिमान वारी सगरी सखी जन ही प्राणनाथ श्रीजी कूं घर के द्वार समीप ही पधार्यो भयो जानती भई हैं ।।१।। और सो प्रियाजी तो द्वार मे लगी रही जो दृष्टि सूं ही चंचल होय रहे पत्र कूं देखके मेरो प्रिय श्रीजी पधारे हैं ।। या प्रकार बहुत हर्ष सूं बारंबार ही उठिकें ठाड़ी होती भई हैं ।।१।। और हम तो यह मानें हैं के जब श्रीमान गोकुलेशजी पधार रहे हैं तब कामदेव हू डर जातो भयो है ।। जासूं धारा जैसे चलि रही जो वाके वाणन की परम्परा हती सो अन्यथा के और प्रकार सूं कैसे रुक जाती तासूं काम हू डर रह्यो है ।।१।। और पद्म के दल जैसे हैं नयन जाके ऐसे जो दृष्टि सूं हू ताप कूं हरिवे वारे के कामोदीपक यह प्रिय श्रीजी हैं सो या मृगनयनी प्रिया के मन सूं खिचे भये ही मानो स्वरूप कूं प्राप्त भयो काम जैसे होय तैसे ही या प्रिया जी के रमण मन्दिर के निकट ही प्राप्त होय जातो भयो है ।।१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले त्रि चत्वारीशमू तरंग सम्पूर्णम् ।।४३।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग चौवालीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चौवालीसमो स्तरंग लिख्यते ।।४४।।

श्लोक -- **विरोधी वर्णाभरण रत्नामासासकौतुकं ॥ मल्ल युद्ध मुदीक्ष्या रात्प्रसीदंति मुहुर्भृशं ।।१।।**

याको अर्थ -- तहां आपस में विरोध वारो है वर्ण के स्वरूप रंग जिनको ऐसे जे आभरण संबंधी रत्नन के प्रकाश हैं विनके विलास सहित मानो आपस में बारंबार मल्ल युद्ध कूं कहा के विन विविधि प्रकाशों के मिश्रित होयवे कूं देखिकें जो अत्यन्त प्रसन्न होय रही है और चंचल होय रही है चामरों की पंक्ति में अपनी तैसी मनोहर मंद हांसी सूं प्राप्त भयो है विस्मय जाकूं ऐसी चन्द्रप्रभा ने कियो यह शिर प्रकंप है जो यह विचार कर रही है ॥ और अपने श्रीअंग की शोभा के वर्णन में कुंठित ही होय रही के असमर्थ होय रही जे बंदी जनन की स्त्री हैं विनके प्रति स्वयं धारण करी है हृदय के भूषण रूप लज्जा कूं जो दे रही है ॥ और कस्तूरी कुमकुम चन्दन और गोरोचन सूं किये जे लेप हैं विनकूं श्री अंग के संबंध सूं नील लाल श्वेत पीत कांति वारे जे रत्न हैं विनकी किरणन सूं पुनरुक्त ही जो कर रही है ऐसी वा प्रियाजी को वारती मन्दिर में सो प्रियजी देखते भये हैं ॥ और सो प्रियाजी तो वा प्रिय के मिलाप में अधिक उत्साह सूं देहानुसंधान कूं हू भूल रही हैं ॥ सो पधारे भये प्रिय कूं अपनी सखी मानके प्रिय के पधरायवे अर्थ विनय करे है ॥ ''के हे आलि, हे, सखी मेरे प्रिय कूं वेग ही पधराय लावो ॥'' ऐसे कहिके वा प्रिय के चरणन में ही जब गिरी है तब ही सो भाग्यवती वाणी वारी सो प्यारी जी मंद हास्य सूं प्रफुल्लित होय रह्यो है श्रीमुख जाको ऐसे समीप प्राप्त भये वा प्रिय कूं देखती भयी है ।।१।। और जब प्रिय श्रीजी पधारे हैं ॥ तब वा प्रियाजी की जो दृष्टि है सो तैसे ही पसर जाती भई है के जैसे प्रफुल्लित होय रह्यो जो कानों में अवतंस भूषण कमल हतो सो वा दृष्टि सूं मिलिकें एक अंग ही होय जातो भयो है के वा कर्णावतंस पर्यंत ही दृष्टि पसर जाती भई है ॥

और वा मृगनयनी के जे प्रिय के दरशन सूं उछल्लित भयो सात्विक भाव सूं जो दृष्टि के आंसू हते और श्री अंग की कृशता हती सो वा प्रिय कूं ग्रहण करत भये हैं ॥ और सो वा प्रियाजी वा प्रिय के दर्शन में आगे उठिकें ठाड़े होवने रूप आदर कूं तो मन सूं ही करती भई हैं ॥१॥ और वा प्रिय के जो दोनों नयन हैं सो वा प्रियाजी के रस सागर रूप देह की कांति रूप लहेरीन में अत्यन्त कूदत कूदत ही वा प्रियाजी के नाभी रूप आवर्त में डूबे भये सो फेर कैसे निकरें कहा के तहां ही निमग्न होय जाते भये हैं ॥१॥ और काम के वाण समूह को जो वाण है तिनकी गणना है तासूं चंचल होय रहे जो प्रिय के नयन रूप दो मृग हते सो मानो डर सूं विकल होयके ही वा प्रियाजी के कटि रूप पर्वतों के अग्र में ही स्थिर होय जाते भये हैं ॥१॥ और पूर्ण शरद ऋतु के पूर्ण चन्द्र तुल्य है श्रीमुख जाको और प्रसरे हैं नयन जाके ऐसी जो सो प्रियाजी हैं अंगों के देखवे में कायर होय रही है दृष्टि जाकी, और केवल श्रीमुख कूं ही जो देख रह्यो है, ऐसे नयन में वा प्रिय के श्रीमुख कूं सो प्रियाजी देखती भई हैं ॥ वा नेत्र में ही प्राप्त भयी लज्जा सूं मुख कूं नीचो ही कर लेती भई हैं ॥१॥ और प्रिय के जा जा अंग में वा मृगनयनी प्रियाजी की दृष्टि परे वा दृष्टि सूं मानो चिह्न वारे तिस तिस लक्ष कूं कामदेव अपने वाणन सूं वेध करतो भयो है ॥ और अपने सार भाव कूं प्रगट करिवे लिये प्राप्त भयो है शरीर रचना कूं ऐसो श्रृंगार रस रूप श्रीजी है सो वा रमण मन्दिर में विराजमान शय्या के निकट पधारके वाके ऊपर विराजमान होते भये हैं ॥१॥ और सो प्रियाजी तो प्रिय के श्रीमुख प्रति मध्य मध्य मे कटाक्षन सूं कर्पूर और कस्तूरी प्रवाह कूं दान करत अत्यन्त ही शोभायमान होती भई हैं ॥ भगवान रस सागर परम ब्रह्म श्रीमद् गोकुलेश की जो यह परमानन्द समूह रूप सगरी क्रिया वारी मनोहर लीला है सो श्रवण करिकें ध्यान करिकें स्मरण करिके वरणन करी भई हू सगरे जीवन के सगरे मनोरथ कूं पूर्ण करिवे वारी है ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले चौवालीशमो तरंग सम्पूर्णम् ॥४४॥

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग पिचतालीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पंच चत्वारीस स्तरंग लिख्यते ।।४५।।

श्लोक -- **लखीभायीति विख्यातो लक्ष्मीदासो महाप्रभोः ।। अत्यंतम तरंगश्च भक्तश्च प्रीतिमानापि ।।१।।**

याको अर्थ -- और लखी भाई ऐसे नाम सूं प्रसिद्ध जो लक्ष्मीदास है सो तो महाप्रभुन में अत्यन्त ही भक्त है ।। और अंतरंग है और प्रीति वारो हू है ।। और प्रभुन को कृपापात्र है ।। और प्रभुन के आनन्द कूं हू चिन्ता वारो है ।। और प्रभुन में प्रीति वारे जे स्त्री पुरुष हैं विनमें हू सो अत्यन्त ही प्रीति की इच्छा वारो है ।। सो कोऊ एक महा सुन्दरी हती सो रस विदग्धता और सुन्दर स्वाभव और गुणन सूं संपूर्ण है ।। और जो प्राणनाथ श्रीजी में गुप्त प्रीति के भार सूं मिली है ।। और जामें नवीन श्रेष्ठ जोवन कूं अंकुर शोभायमान होय रह्यो है ।। और जो अत्यन्त ही लज्जा वारी है और जो नवीन विवाहित है ।। और गुरुजन तैसे पिता आदि के आधीन है ।। तासूं विनके भय सूं प्रभुन के दर्शनार्थ आयवे में हू समर्थ नहीं है ।। और जो हृदय में तो अत्यन्त ही खेद कूं पाय रही है ।। और वैसी अंतरंग सखीन सूं हू रहित है ।। सो ऐसी सुन्दरी कबहू एकांत स्थल में बड़े यत्न सूं सखीन के संग आयकें प्रिय के प्रेम दृष्टि के सनमुख भई है ।। और रस लीला सूं प्रभुन कूं सुख देवे वारी है ।। ऐसी कोऊ महा भाग्यवारी सुन्दरी कूं रस प्रकार सूं प्रिय के संग मिलायके अत्यन्त कृतार्थ करांयवे वारो सो लखी भाई जो भादो की तीज के दिन लौकिक जनों ने कियो जो कज्जली तीज को व्रत है वाके मिस सूं अपने घर में जागरण कूं प्रसिद्ध करत सो हिंडोरा झूलन लीला की सगरी सामिग्री कूं सो बुद्धिमान सिद्ध करत भयो है और स्त्रीजन मिलिकें वामें जागरण करें हैं ।। ऐसे वा जागरण में सगरी संबंध वारी स्त्रीजन कूं तैसे और हू स्त्रीन कूं बुलावत सो लखी भाई जी साहस सूं ही वा सुन्दरी के मनोरथ सिद्ध रूप अपने परम मनोरथ की

सिद्धि लिये वाकी सखी के संग वा सुन्दरी कूं हू बुलवायके अपने घरन में लावतो भयो है ।। और तहां सगरी स्त्रीजन तहां तहां तैसे तैसे वस्त्र भूषण श्रेष्ट गंध पुष्प मालादिक सूं अनेक प्रकार सूं ही सत्कार कूं प्राप्त होय रही हैं ।। और भट्टजी कहें हैं के यदि परार्द्ध कल्प वारो ब्रह्मा हू होय तो हू प्रभुन के या चरित्रकूं वर्णन करत कणिका सूं हू अधिकी वर्णन नहीं कर सकेगो यह निश्चय है ।।१।। यासूं ही मैं हू अत्यन्त थोरे से हू अक्षरन सूं या लीला को वर्णन करिके निवर्त भयो हूं ।। यासूं जो विशेष है सो तो भाग्यवान श्रीजी के कृपापात्र स्वयं हू विचार कर लेवेंगे ही और जा प्रियाजी ने सो लोक वेदातीत पूर्ण पुष्टि पुरुषोत्तम श्रीगोकुलेश प्रिय कूं प्रसन्न कियो है वा प्रियाजी के भाग्यन की विशेषता कौन की वाणी के गोचर होय के वाकूं कौन वर्णन कर सके ? अपितु कोऊ ही वर्णन नहीं कर सके है यह भाव है ।। और जे सेवन करिवे कूं चाहना हू करे है विनकूं प्रणाम करत अत्यन्त अधम जन हू सर्व प्रकार सूं ही कृतार्थ ही होयगो ।। और श्रीजी की कृपापात्र हू इन सुन्दरीन में यह प्रणाम हू या प्रिय की कृपा के विना और या प्रिय की कृपापात्र इन सुन्दरीन की कृपा के विना अत्यन्त ही दुर्ल्लभ है ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले पंच चत्वारीश तरंग सम्पूर्णम् ।।४५।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग छयालीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ षट चत्वारीस स्तरंग लिख्यते ।।४६।।

श्लोक -- **श्रीमान विट्ठलदासः समहां भाग्यवता वरः ।। प्राणनाथे भृश भक्तस्तमियेष महाप्रभुः ।।१।।**

याको अर्थ -- और महा भाग्यवानों में हू श्रेष्ठ और अत्यन्त भक्त जो श्रीमान विट्ठलदासजी हैं सो तहां महा सुखदायक वर्षा रितु में वा महाप्रभुजी कूं हिंडोला

में झुलायवे कूं इच्छा करत भयो है ॥१॥ तासूं सो विठ्ठलदासजी लीला घर के मध्य में सुवर्णमयी शुभ हिंडोरा कूं सजावतो भयो है ॥ सो हिंडोरा को वर्णन करें हैं ॥ कैसो है सो हिंडोरा के जो मुक्ता, हीरा, माणिक और इन्द्र नील तैसे नीलम के समूह सूं शोभायमान है ॥ और तैसे मनोहर दो स्तंभन सूं शोभित है ॥ और ऊपर विराजमान जो सुन्दर शुद्ध मोर को आकार है तासूं मनोहर है ॥ और जो बैठवे के योग्य सुन्दर चौकी सूं मिल्यो है ॥ और सूधे तैसे स्निग्ध और पांच रंगवारे जे मनोहर दिव्य चार डंडा हैं विनसूं मिल्यो है ॥ और जो दिव्य रेशमी वस्त्र सूं शोभित है ॥ और तामें ऊपर बिछायो है अमूल्य तूल जैसे गोल आसन जामें और बड़े तकिया सूं मनोहर है ॥ और जो नाना विधि पुष्प माला के समूहन सूं चारों ओर शोभायमान है ॥ और मध्य में शोभायमान है मनोहर फूलन को गुच्छा जामें और नीचे चक्करदार शोभा वारे कसुंभी रंग सूं रंगे भये उच्छलित होय रहे वस्त्र सूं जो मिल्यो है ऐसे हिंडोरा कूं सजावतो भयो है ॥१॥ और सुगंधी के समूह तैसे श्रेष्ठ फूलन की माला और तांबूल बीड़ी तैसे और हू रस में उपयोगी तिस तिस वस्तु कूं तहां वा हिंडोरा के निकट ही धारण करत भयो है ॥१॥ और चन्दन अगर कर्पूर आदिकन सूं धूप कूं करत भयो है और मंगलमय फल फूल वस्तु कूं तहां धारन् करतो भयो है ॥ और दास भाव और विशेष प्रेम रस, के सख्य भाव के योग्य कार्यन कूं करतो भयो है ॥ और उच्छल्लित होय रहे उत्साह सूं प्रेरणा कियो सो विठ्ठलदासजी आर्ती कूं सिद्ध करिकें दृष्टि दोष के दूर करिवे के लिये और मंगल के अर्थ प्रिय में प्रेम सूं वा हिंडोरा में भोग सामिग्री कूं रंगीन वस्त्र सूं ढांपिकें धरतो भयो है ॥१॥ ऐसे हिंडोरा कूं सजायकें जब एक प्रहर मात्र दिन रह्यो है तब सो विठ्ठलदासजी हाथन कूं बांधिकें प्रणाम करिके श्रीजी के कृपापात्र भक्तन के मुख सूं अपनी हिंडोरा झूलन लीला कूं प्रगट करिके और सगरे भक्तन कूं अपने लीला अमृत सें सिंचन करिये ऐसे प्रिय श्रीजी कूं विज्ञापना करत भयो है ॥ और करुणा के समुद्र और भक्तन के ऊपर दयाल जो सो रसिकन के चक्रवर्ती ईश्वर भगवान सम्पूर्ण ऐश्वर्य वारे श्रीजी हैं वा विठ्ठलदास की विज्ञापना कूं अनुमोदन करते भये हैं ॥ तब भक्तन के मुख सूं प्रगट भयो जो जय जय शब्द हतो सो समुद्र है पारेखा जाको ऐसो पृथ्वी कूं और चौदह भुवन कूं व्याप्त होय जातो भयो है ॥१॥ और वा हिंडोरा में प्राप्त होय रहे वा रस सागर

प्रिय के तैसे आभूषण और श्री अंग की कांति में रस भक्तन के नयन और चित्त कूं प्रेम विशेष सूं और श्रीमुख कूं मंद हास्य सूं और नयनन कूं विलास समूहन सूं और भूषणन कूं अंग शोभा सूं और दोनों चरण कमलन कूं मद वारे हस्ती की गती सूं शोभायमान करिके और दक्षिण और वाके होय रही कसुंभी पाग कूं और वक्षस्थल सूं सुन्दर लाल उपरना कूं और नितंबन सूं तैसी सुन्दर लाल धोती कूं और श्री हस्तन सूं उत्तम कंकणन कूं और अधर सूं बीड़ी के राग कूं और या अधर कूं दंतन की किरण समूह सूं शोभायमान करिकें और वा हिंडोरा कूं त्रिलोकी के मणिरूप अपने स्वरूप सूं शोभायमान करते भये हैं ।।१।। और उच्छलित होय रह्यो है महाप्रेम और अत्यन्त उत्साह को भार जिनमें ऐसी विन सुन्दरीन में हू भाग्यवारी जो मानबाई और तैसे भाग्यवारी जो कुंवरबाई हैं सो तो कसुंभी रंग वारे मनोहर अमूल्य वस्त्र सूं शोभित होय रही है ।। और श्याम अंगिया सूं ढके भये जे पुष्ट ऊंचे कुच हैं विनकी है शोभा जिनमें और काजर सूं शोभायमान नयन रूप नील कमल सूं शोभित है ।। और तिलक सूं शोभायमान है भाल जिनको और जे सगरे आभरण सूं मंडित हैं और नितंब रूप बिंब में शोभायमान हैं शब्दायमान माणिक जटित कटि मेखला जिनकी और सुन्दर चरणन में शोभायमान है रत्न खचित नूपुर जिनके और रत्न मय केयुर कंकण सूं उच्छल्लित होय रही है मनोहर बाहू जिनकी और हंसि रह्यो है श्रीमुख जिनको, और श्री हस्त सूं धारण किये हैं हिंडोरा के डंडा जिनने ऐसी जे वे मानबाई और कुंवरबाई हैं सो वे तो व हिंडोरा कूं दोनों ओर सुन्दर झुलावत ही शोभायमान होती भई हैं ।। और प्रिय की अत्यन्त प्यारी सो श्रृंगारदे जी तो सगरे जगत कूं शोभित कर रहे श्री वल्लभ प्रिय कूं शोभित करत और नयन कमलन सूं वा प्रिय के मुख कमल संबंधी माधुरी को पान करत ही प्रिय के सनमुख ही विराजमान होती भई हैं ।।१।। और सो प्रिय श्रीजी जो देह रूप श्री हस्त सूं हिंडोरा झूलन रूप क्षीर सागरन को पान करत और दंडन के ग्रहण की मिस सूं तो वा मानबाई कुंवरबाई के हस्त स्पर्श रूप हस्त सूं विनकूं वा क्षीर सागर के संबंधी अमृत को पान करावते भये हैं ।। और वा सनमुख विराज रही श्रृंगार दे प्रियाजी कूं तो बारंबार अपने चरण स्पर्श रूप हस्त सूं अमृत को पान करावते भये हैं ।। तैसे विनसूं और हू जे चन्द्रमुखी है विनकूं तो बारंबार स्नेह भरी नजर रूप हस्त सूं वा अमृत को पान करावते

भये हैं ।। और वे सुन्दरी और अपने हस्त कमल सूं रचना रूप जो मधु है वासूं अत्यन्त मीठी करी जा पान बीडी कूं प्रिय कूं क्रम सूं आरोगावती भई हैं ।। सो प्रिय हू वा बीड़ी कूं ही अपने मुख रूप क्षीर सागर संबंधी अमृत के सिंचन सूं अत्यन्त मधुर करके ही फेर ही विन प्रियान कूं आरोगायवे लिये ही प्रेम सूं विनके हस्त कमल में ही धारण करते भये हैं ।।१।। और तहां सुन्दर मधुर वचनन कूं कहे रहे और रस की वर्षा कूं कर रहे प्रिय कूं मेघ हू मंद मंद मधुर गर्ज्जना करत और वर्षा करत अनुकरण करतो भयो है ।।१।। और वा समय में सबके ऊपर कोऊ अनिर्वचनीय शीतल रस कूं जब तैसे मेघ वर्षा करि रह्यो है तब वा प्रिय कूं और विन सुन्दरीन कूं जो गान है सो वामें मंद कोमल गर्जना रूप होतो भयो है ।।१।। और दीर्घ नयन वारी और अत्यन्त चमत्कार वारी के शोभायमान जे सुन्दरी हतीं सो सखीन सूं अपने कूं छिपावती और बारंबार अत्यन्त प्रगट ही करती ही अपने प्रिय कूं उत्साह सहित करिवे लिये सुन्दर मधुर बिजुरी की लीला कूं धारण करती भयी हैं ।।१।। और हिंडोरा के झूलवे में गमन और आगमन कूं कर रहे जे प्रिय श्रीजी है सो विन सुन्दरीन कूं श्रृंगार सार नाम वारे कमल के संयोग वियोग रूप दोनों हू दलन कूं बारंबार ही पूर्ण अनुभव करावते भये हैं ।।१।। और प्रिय को जो श्रीमुख है सो सगरे हू गुणन सूं जो चन्द्रमा कूं विजय करत भयो है ।। तामें सर्व के ऊपर विराजवे रूप धर्म सूं तो पूर्ण चन्द्रमा कोऊ मद कूं धारण करतो हतो सो हिंडोरा झूलन संबंधी वेग सूं सबके ऊपर विराजमान भाव कूं प्राप्त भयो जो श्रीजी को मुख चन्द्र है सो वा चन्द्रमा के तिस सगरे हू मद कूं सर्व प्रकार सूं ही निवर्त करिकें निकट पधारकें अपनी प्यारी सुन्दरी के नयन रूप चकोरन कूं बारंबार अत्यन्त ही प्रसन्न कर देतो भयो है ।। ऐसे बहुत प्रकार सूं हिंडोरा के झूलन की लीला कूं चिरपर्यंत करत ही सो प्रिय श्रीजी अपने भक्तन कूं तैसे भक्त सुन्दरीन कूं हू सर्व प्रकार सूं सुखी करत भये हैं ।।१।। और वा समय में लक्ष्मीदास जो भाग्यवान भक्त हतो सो तो प्रेम सूं पुलकित होयके वा रस सागर प्रिय कूं पंखा सूं ही सेवा करत भयो है ।। और अत्यन्त प्रसन्न होतो भयो है हृदय जिनको ऐसे जे विट्ठलदासादि हते सो वे तो अपने जन्म कूं सफल मानत ही वा प्रिय कूं चामरन सूं ही सेवा करत भये हैं ।। और जे चामर या प्रिय के केश समूहन कूं विजय करिवे के लिये प्राप्त भये हैं सो वे तो या प्रिय कूं देखिकें पार्श्वों

में चलन रूप उपाधि सूं कंप की संपदा कूं हू धारण करते भये हैं ॥ कंपायमान होय रहे हैं यह भाव है ॥१॥ और अपने अपने भाव अनुसार या प्रिय के निकट तिस तिस वस्तु कूं भेट करते भये हैं ॥ और ईश्वर श्रीजी हू मंद हास्य सूं और नयनों के विलास सूं और भ्रुअ रूप तरंग सूं तैसे और और हू चेष्टा सूं विन भक्तन की तिस तिस भेंट को अनुमोदन करते भये हैं ॥१॥ और वे भक्त या प्रिय के आगे गान स्तुति और अनेक बाजेन के शब्द पूर्वक और जय शब्दन के सहित आर्ति कूं करत भये हैं ॥१॥ और प्रेम विशेष सूं प्रगट भयी दृष्टि दोष की शंका सूं वा दृष्टि दोष के निवारण अर्थ प्रिय के ऊपर बहुत ही दृष्टि उतारण कूं करत भयो है ॥१॥ तब महा रसमय तैसे प्राणनाथ के और तैसे भक्तन के और भक्ति वारे विनकी स्त्रीन के पसरवे वारे और अतुल्यातिशय के सर्व सूं अत्यन्त अधिक प्रेम संबंध कूं विचारकें सगरे भक्त हू जाके गुणन कूं स्तुति करें हैं ऐसो सगरे भाग्य वारेन में श्रेष्ठ जो रूप पुर में वसिवे वारो गोपालदास है सो विन प्रिया प्रिय के दिन संबंधी रमण विशेष में सुख कूं चाहना करत हाथन कूं बांधके प्रणाम कूं करिके करुणा सागर श्रीजी कूं विज्ञापना करत भयो है के आप मार्ग में दिन में हू पर्यंक के ऊपर ही पौढ़े और बिछाये सुन्दर वस्त्र और तुल्य वारे भू तल में जो पौढ़वे कूं नियम कियो है याकूं आप निवर्त करिये ऐसे विज्ञापना कू सुनिकें तब श्रीजी हू मंद हास्यन सूं वाकी विज्ञापना कूं अंगीकार करते भये हैं ॥१॥ सो दिना सूं प्रारम्भ करिके सो प्रिय श्रीजी मार्ग में दिन में के रात्रि में भूमि शयन कूं दूर करते भये हैं ॥ और पर्यंक में ही शयन कूं करते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले षटचत्वारीस तरंग सम्पूर्णम् ॥४६॥

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग सेंतालीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सप्त चत्वारीस स्तरंग लिख्यते ।।४७।।

श्लोक -- **ततश्वाजेक्षणा देह श्रियाविजित कांचना विविधानुर्घ्य माणिक्य भ्राजमाना तदां निशीः ।।१।।**

याको अर्थ -- याके अनन्तर दूसरे दिन प्रातःकाल समय में यह श्रीजी जन्माष्टमी के महोत्सव कूं करत भये हैं ।। जो महोत्सव क्षण क्षण में बढ़त ही सगरी रात्रि कूं व्याप्त होय जातो भयो है ।। और वा जन्माष्टमी के चतुर्थ प्रहर में यह श्रीजी कोऊ भक्त कू यशोदा, और कोऊ कूं नंद और कोऊ कूं गोपाल और कोऊ कूं गोपी वेश वारो बनावते भये हैं ।।१।। जैसे आपके यशोदा नन्दमय रूप अद्भुत प्रागट्य कूं प्राप्त होयके श्रीमान नंद गोपजी आदिक सगरे गोप जैसे विशेष विशेष उत्सव कूं प्रथम करते भये हैं वैसे ही वाके वासूं विशेष ही तैसे महा रसात्मक अपने स्वरूप सूं शोभायमान गान वाद्य शब्द और बड़े उत्साह सूं तरंग वारे महा उत्सव कूं यह श्रीजी करते भये हैं ।।१।। जामें बाल रूप जो रसिक शिरोमणि नवनीत प्रिय गोवर्द्धन धारी श्रीकृष्ण हैं सो अपने विरह के क्षणन कूं या उत्सव कूं गुजारवे लिये अपने वेष वारे कोऊ भाग्यवान में प्रवेश करिके अपने कू देखवे की इच्छ वारे कोऊ भाग्यवान में प्रवेश करिके अपने कूं देखिवे की इच्छा वारे जो या प्रिय के नेत्र कमल हैं विनकूं चिर पर्यंत आनन्दित करत और केवल या प्रिय श्रीजी सूं हू जान्यो भयो जो प्रभु श्रीकृष्ण हैं सो करोड़न पूर्ण चन्द्रमा के हजारन सूं हू हजारन गुणो अधिक शीतल है चरण कमल संबंधी रज जाको ऐसे या प्रिय श्रीजी के मुख कमल कूं देखत ही कछुक अधिक चार महीना सूं बढ़ि रह्यो जो अपने में या प्रिय को विरह है वाकूं कछुक शीतल करतो भयो है ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले सप्त चत्वारीश तरंग सम्पूर्णम् ।।४७।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग अड़तालीसमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्ट चत्वारीस स्तरंग लिख्यते ।।४८।।

श्लोक -- **श्री गोकुलेश लीलासिंधो भवतः पदार्थास्तान् ।। उच्छल्लित रूप भाजोप्यति महतो अस्मदादि तीव्र रुचे ।।१।।**

याको अर्थ -- अब कल्याण भट्टजी महा रसमय श्री गोकुलपति के महा रसरूप लीला रस सूं विमुख होय रहे कितने एक विद्वांनन कूं देखिकें विनके दोनों लोकन की हानि कूं देख शोक करत विनकी मूर्खता कूं ही प्रगट करत कछुक कहें हैं ।। के हे श्री गोकुलेश लीला सुधासिंधो के, हे श्री गोकुलपति के लीला समुद्र तिहारे जे पदार्थ हैं वे तो उच्छल्लित रूप वारे हू हैं और अत्यन्त बड़े हू हैं ।। और अस्मदादिकन की जो तीब्र रुचि है वाके व्याख्यान रूप हाथ में धारण् किये हू हैं ।। तथापि विनकूं जो कितने एक मनुष्यन के अपने अंतःकरणरूप नेत्र नहीं लेवे हैं ।। नहीं देखे हैं ।। तामें हों तो यह निश्चय करूं हूं के सो विद्वन्मन्य भाव रूप के अपने कूं विद्वान माननो यह वृथा अभिमान रूप अंधकार ने ही कियो है ।। कहा के वे मूर्खता . रूप अंधकार सूं ही विन रसमय पदार्थन कूं नहीं देखें हैं और वे नहीं जानें हैं तो मति जानें ।। सो विनके लिये शोक करत हम काहे कूं काल कूं वृथा ही गुजारें यह विचारिकें भटजी अब आगे के प्रसंग कूं कहें हैं ।। "के याके अनन्तर दो तीन दिन गुजरने के पीछे सो महाप्रभुजी आगे के देशादिकन में निवासी भक्तन के प्रवल भाग्यन सूं और वैसे गुणन सूं आकर्षण किये भये ही और अपनी उच्छल्लित होय रही कृपा शक्ति सूं प्रेरणा करे भये ही सो रसिक शिरोमणि श्रीमद् गोकुल के पालक भगवान श्रीजी बढ़ायवे योग्य है महिमा जाकी ऐसो द्वारिका कूं हृदय में धारण करिके अत्यन्त सुन्दर रथ के ऊपर विराजमान होय के प्रस्थान कूं करते भये हैं ।।" तब वा प्रिय के वियोग कूं सहेन न करिवे वारे जे अर्बुद सूं हू अधिक भक्त सुन्दरी और महाभाग्यवान वे वे भक्तजन हैं सो प्रस्थान कर रहे या प्रिय के सुन्दर शुभ रथ कूं आवरण ही कर लेते भये हैं ।।१।। तब गोकुल सूं प्रस्थान

के समय में गोकुल सुन्दरीन कूं जैसे होय तैसे ही विन सुन्दरीन कूं और विन भक्तन कूं तैसे तैसे धैर्य देकरिकें सो श्रीजी मधुर समूह के चक्रवर्ती रूप या वचन कूं कहेते भये हैं ॥ ''के द्वारिका में हमकूं आवश्यक जानो है तासूं तुम अपने अपने घर में जावो ॥ हौं फेर वेग ही आवुंगो ॥१॥ या प्रकार प्रिय ने प्रकट किये अगाधि और अपारता कूं सूं न उल्लंघन योग्य इस वचनामृत रूप समुद्र कूं विस्तार वारे कान रूप नयनन सूं देखके वाके तिर में ही ठहेर जाते भये हैं ॥१॥ और विन पीछे ठहेराये भये भक्त गण और सुन्दरी गण कूं अपने संग जायवे वारे अपने भक्तन के संग प्रस्थान कर रहे जो श्रीजी हैं सो श्रीकंठ कूं फेर के बारंबार ही पीछे देखते भये हैं ॥ और सो लक्ष्मीदास हू विनकूं बारंबार देखतो भयो है ॥ सो लक्ष्मीदास कूं श्रीजी कृपा सूं ही सुन्दर रथ में संग ही बैठावते भये हैं ॥ और जो लक्ष्मीदासजी मार्ग में तिस तिस विष्णुपदन के अर्थ कूं और भाव कूं पूछें हैं ॥ और श्रीजी हू आदर सहित उत्तर दान सूं जाकूं जताय रहे हैं ॥ और तासूं जो लक्ष्मीदास परमानन्द कूं प्राप्त होय रह्यो है ॥१॥ और प्रिय सूं शोभायमान होय रहे रथ में जो लक्ष्मीदास सदैव ही सारथी रूप होतो भयो है ॥ ऐसे वा लक्ष्मीदास के भाग्यन की बढ़ाई कूं को भगवद भक्त कहिवे में समर्थ होय ? अपितु कोई नहीं होय सके है ॥१॥ और जो लक्ष्मीदास वा रथ में कबहू तो मंद हास्य वारे प्रिय के श्रीमुख कूं देखवे लिये पीछे फिरिके सनमुख ही बैठतो भयो है । और करुणासिंधु जे ईश्वर भक्तवत्सल भगवान श्रीजी हैं तब वा रथ में कबहू तो जा प्रिय की गोद में अपने मस्तक कूं धारण करिके पौढ़ते हू भये हैं ॥१॥ और कबहू तो सो ईश्वर प्राणनाथ श्रीजी अपने अश्वराज पै असवार होयके वाकूं नचावत ही भक्तन कूं अत्यन्त सुखी करते भये हैं ॥१॥ या प्रकार श्रीजी मार्ग में पधार रहे हैं ॥ तब हालार नाम नगर में पांचसरा नाम गाम है ॥ वामें निवास करिवे वारी भाग्यवारी और श्रीजी में अत्यन्त भक्ति वारी जो परम चतुर कुंकाजी नाम वारी राज कन्या है जो स्वयं राणी ऐसे प्रसिद्ध है ॥ जो सदैव ही प्रभुन के दर्शन अर्थ उत्साह वारी है ॥ और गुरुजनन सूं सदैव ही लज्जित रहे है और वाके विरह रूप अग्नि कूं अत्यन्त आर्त है ॥ सो अपने गाम के निकट पधार रहे प्रभुन कूं सुनिकें प्राप्त भये हर्ष के भार सूं वेग ही सुमराजी नाम वारे अपने विश्वासपात्र सेवक कूं बुलावती भई है ॥ और एकांत में वाकूं कहेती भई है

के तुम प्रभुन के सन्मुख वेग ही जावो और आपके निकट जायकें आपके कृपापात्र भक्तन के मुख सूं तैसे विज्ञापना करो के जा प्रकार सूं सो प्राणनाथ श्रीजी जो हर्ष सूं ही इहां पधारें ।।१।। और यह कार्य तुमने कियो तो तुमने मेरे ऊपर सदैव ही जहां कहां ही सर्व प्रकार सूं उपकार कियो है ।। तासूं हों तो तिहारे सदैव ही वश होयके रहूंगी ।। और सो परम चतुर सेवक श्रेष्ठ हू वा राणी की आज्ञा कूं सिर में धारण करिके त्यांहां जायके प्रभुन कूं प्रणाम करिकें प्रभुन के प्रिय भक्त द्वारा वा कुकाजी के मनोरथ कूं विज्ञापना करिकें प्रसन्न करिके वा ईश्वरन के हू ईश्वर प्रभु श्रीजी कूं पधरावतो भयो है ।। और बगीचा में वामें अत्यन्त मंगलय सुन्दर शिविर में के राज निवास स्थल में वा करुणा के सागर श्रीजी कूं पधरावतो भयो है ।। तब वहां यथायोग्य स्थान में विराजमान होय़ रहे जगत गुरु महाप्रभुन को तहां के निवासी सगरे जन स्त्री पुत्र कलत्र मित्रन के संग ही आयके बोहोत प्रकार के बहुत मणी मुक्तादिक प्रसन्नता सूं भेट करिकें प्रेम सूं ही प्रणाम करते भये हैं ।। और सो ईश्वर श्रीजी हू विनके ऊपर विनके मनोरथ अनुसार ही नयनन सूं मंद हास्य सूं और अमृत कूं विजय करिवे वारे वचन सूं और श्री हस्त की संज्ञा सूं तैसे भ्रु की संज्ञा सूं और नाम दान सूं तैसे और हू प्रकारन सूं अनुग्रह करत भये हैं ।। और बड़े भाग्यवारी जो कुकाबाई है सो तो दुर्ज्जनों के भय सूं और अपने जनों से लज्जा सूं स्पष्टता आयवे में समर्थ नहीं है ।। तासूं वेग ही अपने मंदिर के ऊपर स्थित होयके प्रेम के सहित निश्चल होयके बारंबार वा प्रिय कूं हर्ष के आंसुन सूं पूर्ण होय रही दृष्टि सूं अत्यन्त देखत ही अनेक प्रकार के प्रणाम सूं और बारंबार हाथन के बांधवे सूं और नाना प्रकार के परिवारणन सूं के नौछावरन सूं भ्रू रूप वल्ली के नचायवे सूं और मंद हास्य सूं और तिस तिस अभिप्राय के जतायवे वारे चेष्टा विशेषन सूं नम्रता और आदर तैसे रोम हर्ष और स्वेद कंप लज्जा आर्ती के सहित ही वा सर्वज्ञ और रसिक समूहन के चक्रवर्ती श्रीजी कूं दूर सूं ही चिर पर्यंत ही सेवन करती भई है ।। और या प्रिय के स्नान और भोजन में तैसे अभ्यंग और विश्राम के तैसे हू तिस तिस कृत्य में जो जो उपयोगी वस्तु चाहिये है तिस तिस वस्तु कूं अत्यन्त नम्रता सहित सो कुकाजी स्वयं अत्यन्त योग्य सेवक सखी द्वारा प्रभुन के निकट पहौंचावती भई है ।। और अभिप्राय विशेष सूं सो कुकाजी स्वयं ही ईशीका के मूंज के सींकन सूं पत्रावली बनायके

जो तिस तिस सामिग्री में चतुराई सूं पठावे है ।। वे तो बहोत ही मनोहर है और भोजन मं योग्य है और वा कुकाजी की भक्ति सूं पठाये सगरी सामिग्री कूं सो भाव के जानवे वारे श्रेष्ठ श्री गोकुल प्राण वल्लभ श्रीनाथजी अंगीकार करते भये हैं ।। और विन पत्रावलीन कूं हू खेम सहित रोम हर्ष सहित बारंबार ही सो रसिकवर श्रीजी श्री हस्त सूं स्पर्श करते भये हैं ।। और या प्रसंग में ही कोऊ वा कुकाजी की परम चतुर सखी हती सो मंद मुसकान सूं वा मृगनयनी के मनोरथ की परम्परा कूं ही प्रगट करत ही नम्रता सूं या प्रिय कूं विज्ञापना करत भई है ''के हे प्रभो ऐसी कोऊ हू वस्तु नहीं है जो तिहारे अर्पण में योग्यता कूं स्वतः ही प्राप्त होय ।। किन्तु तिहारी कृपा ही सर्व वस्तु कूं तिहारे योग्य करें हैं ।। और या प्रिया कूं तो सगरो ही सो धन और घर तैसे जीवन और देह और प्राणादि हू तिहारे अर्पण जो नहीं भये हैं तासूं वे वृथा ही हैं ।। और दुर्ज्जनों से और सर्व प्रकार सूं स्वजनों से तैसे गुरुजनों से और तिस तिसपरिजनों से जो अधिक संकोच है और लज्जा तैसो प्रतिबंध और जो भय है और तिहारे आशय को अज्ञान है यह सगरे तिहारे निकट आयवे में या प्रिया कुकाजी के चरण में वज्रमय श्रृंखला पड़ गई है के तिहारे निकट नहीं आयवे देवे है तासूं हे आर्ति हरण तुम तो सर्व पीड़ा कूं निवर्त करो हो सो आप प्रसन्न होवो ।। और अपने अनुभाव सूं के प्रभाव सूं विन श्रृंखलान कूं तोड़े ।।१।। ऐसे या प्रकार विज्ञापना कर रही या सखी में सो परात्पर प्रभु श्रीजी प्रसन्न होयके वा कुकाजी कों सर्व प्रकार सूं धैर्य देवे वारे वाक्य कूं कहेते भये हैं ।। ''वा मृगनयनी तिहारी सखी कूं जो सगरो तैसो वृत्तांत है जो तुमने कह्यो है और तैसे नहीं हू कह्यो है, सो सगरो ही मैंने तो अपने नयनन सूं और अपने मन सूं और वाकी पठाई पत्रावली द्वारा हू जान लियो है ।। और वाको सगरो अंगीकार हू निश्चय सूं कियो है तुम अब क्लेश कूं मत प्राप्त होवो । मेरे प्रभाव सूं निश्चिंत होय जावो ।। और वांछित मनोरथ में वाधा करिवे वारी जे श्रृंखला है वे सगरी ही आज ही टूट जायगी तामें विज्ञापना के श्रम हू मत करीयो'' ऐसे सो सखी हू अपने कान रूप अंजुली सूं धारण किये जे ऐसे वचन रूप अमृत हैं विनसूं सिद्ध भयो है ध्यान जाकूं और निवर्त भई है संशय रूप रज जाकी ऐसी ही शोभायमान होती भई है ।।१।। तब सो सखी चरण चौकी सूं शोभायमान होय रही भूमि कूं प्रणाम कर रहे अपने मस्तक संबंधी तिलक

के रत्नन की किरणन सूं चित्र करिके वा प्रिय के श्रीमुख सिंधु सूं प्रगट भये मंद हास्य रूप मुक्तान सूं सुन्दर हार कूं पहेर के शोभायमान है मन और कंठ जाको ऐसी सो सखी वा मृगनयनी अपनी स्वामिनी के निकट जायके तैसो वृत्तांत निरूपण रूप श्रेष्ठ पुष्पन सूं वा मृगनयनी के मन और देह कूं संशय रहित ही अत्यन्त प्रसन्न कर देती भई है ॥१॥ और रात्रि में सखी जन वा कुकाजी कूं विचित्र मनोहर वस्त्रन कूं पहेरावती भई है ॥ तब डरे भये हिरण जैसे हैं विशाल नयन जाके ऐसी सुन्दरी विन सखी द्वारा बहुत अनेक प्रकार की भेट कूं लेकर बड़े हर्ष सूं विनके सहित ही या प्रिय के प्रति अभीसार करत भई है ॥ और तैसे वा प्रिय के प्रभाव सूं अत्यन्त आच्छादित होय गये हैं नयन जिनके ऐसे जे जन हैं विनसूं न देखी भयी जो पूर्ण चन्द्रमुखी प्रियाजी हैं सो करोड़न काम के विजय करिवे वारी है शोभा जाकी ऐसे प्राणप्रिय श्रीजी के निकट जायके असंख्यान पूर्ण चन्द्रमा के विजय करिवे वारे वा प्रिय के श्रीमुख कूं दर्शन करिकें निवृत्त होय गये हैं सगरे ताप जाके ऐसी कृत्य-कृत्य भई जो सो भामिनी है के प्रिय को आधीन करिवे वारी सुन्दरी है सो परमानन्द को अनुभव करत भयी है ॥ सो सबके अनुभव सूं अतीत है ॥ जासूं सो मृगनयनी पसरे भये हाथ कमलन सूं कसुंभी रंग वारे अद्भुत वा पाग कूं धारण करत प्रिय के हस्त कमल सूं श्री मस्तक में बंधवावती भई है ॥१॥ और सुन्दर धोती कूं और उपरना कूं तैसे कंचुक कूं पहेरावती भई है ॥ और सुवर्ण के जाके अंचल हैं और हीरा मोती पद्मराग इन्द्र नील और मणीन सूं जो जटित है ऐसे अमूल्य मनोहर दिव्य सारसन कूं कमरबंध कूं हू बंधवावती भई है ॥ और प्रेम कौतिक सहित या प्रिया के वा भाव में सो प्रिंय श्रीजी अतयन्त ही प्रसन्न होते भये हैं ॥ और या प्रियाजी ने वक्षस्थल में इन्द्र नीलमणी जैसे श्याम रंग वारी अंगीकार करी जो अंगीया है और कसुंभी रंग वारी अमूल्य सुन्दर चंचल अंचल सूं शोभायमान जो साड़ी है और मनोहर अंगन सूं शोभायमान जे वा प्रियाजी के वे वे आभरण हैं और प्रेम सूं पसर रहे और लज्जा संकोच सूं प्रकाशमान और श्रेष्ट श्वेत कमल सूं हू उज्ज्वल कटाक्ष हैं और वा प्रियाजी कूं गूढ़ मंद हास्य रूप पुष्प वारो जो अधर बिंब है और विलास सूं मनोहर जे भ्रुअ हैं जे वे वे वा प्रिया के अंग आभरणादि हैं सो वा प्राणनाथ रस सागर श्रीजी के चित्त कूं हर लेते भये हैं ॥१॥ सो आपस में अत्यंत अनुराग वारे जो प्रिया

प्रिय हे सो निमर्याद हर्ष के समुद्र में आपस में मग्न करावत अद्भुत ही क्रीड़ा कूं करते भये हैं ।। और वा प्रिया के सगरे मनोरथन कूं सो प्रिय श्रीजी अत्यन्त पूरण करते भये हैं ।। और सो सुन्दरी हू वा प्रिय के विन मनोरथन कूं पूरण कर देती भई है ।।१।। तब प्रेम और हर्ष तैसे विहार धाष्ट्र्य तैसे लज्जा के तो उच्छल्लित तरंग वारे अर्बन समुद्र ही उदय होय जाते भये हैं ।। तब नगराज नाम वारो जो भक्त श्रेष्ट है सो वा प्रिया प्रिय के विहार में कछुक वर्णन करिवे में जो प्रारंभ करतो भयो है ।। वाकूं सो पूर्ण चन्द्रमुखी प्यारी जी लज्जा सूं तैसे भाव के भेद सूं स्पष्ट ही निवारण करत भई है ।।१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले अष्ट चत्वारीश तरंग सम्पूर्णम् ।।४८।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग उगण पचासमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ उगण पचासमो स्तरंग लिख्यते ।।४९।।

श्लोक -- **एवंता मनुगृत्धेशो लौकिक लौकिकार्थदः विसृज्यं विनतां प्रातस्ततः प्रस्थित वान्मुदाः ।।१।।**

याको अर्थ -- ऐसे लौकिक अलौकिक अर्थ के देने वारे श्रीजी या प्रकार वा कुंकाजी के ऊपर अनुग्रह कूं करिकें और नम्र होय रही वाकूं विदा करिके प्रसन्नता पूर्वक वाके गाम सूं प्रातःकाल प्रस्थान करते भये हैं ।। और मार्ग में छीकरी नाम ग्राम में सुन्दर घोड़ा पर सवार होयके जाय रहे जो यह श्रीजी हैं वाकूं अफ्ने देशवारे विन विन भूषणन सूं और मनोहर पद के गुच्छान सूं शोभायमान जे विशाल नयन वारी सुन्दर अहीरनी हतीं सो मनोहर विलास पूर्वक देखती भई हैं ।। और विनके वा जोवन कूं और रूप कूं तैसे विलासन सूं और उत्कृष्ट उत्साह कूं और वस्त्र आभरण तैसे स्वभाव कूं और प्रेम आदर पूर्वक देखवे कू और अपने स्वरूप के देखवे सूं विनमें उछल्लित होय रहे स्तंभ और स्नेह आदि सात्विक भाव कूं देखिकें अलौकिक हृदय वारे सो प्रिय श्रीजी विन अहीरनीन ने चुराय लियो हैं चित्त जाको ऐसे होय जाते भये हैं ।। तब

विनके देखवे की इच्छा वारे सो श्रीजी तहां के वा तालाब में वा घोड़ाराज कूं जल पिवायवे के मिस सूं तहां रोकते भये हैं ॥ और तहां सूं प्रस्थित भये हू सो श्रीजी अपने कूं आर्ति सहित ही निमेष रहित ही देख रही विन सुन्दरीन कूं श्रीकंठ कूं फेरिके देखत ही आगे पधारते भये हैं ॥ और कबहू श्रीमद् गोकुल में हू विन सुन्दरीन कूं फेर स्मरण करत ही सो यह प्राणनाथ श्रीजी मेरे प्रति विनके सगरे वृत्तांत कूं कहेते भये हैं ॥ और यह हू तहा कहेते भये हैं के वा स्थल सूं मेरे आगे जाने पर नहीं जाने है ॥ विन सुन्दरीन की कहा अवस्था भई हती और तासूं हू सो सुन्दरवर श्रीजी अपने में विन सुन्दरीन के निमर्याद प्रेम कूं और विनमें हू अपने निष्कारण अखंडित प्रेम कूं सूचना करत भये हैं ॥ सो इतने सूं ही विचार वारे कृपापात्र जीव तो विन सुन्दरीन की कृतार्थता कूं और श्रीजी गोकुलपति के सरस भाव कूं और तैसे तैसे श्रेष्ठ गुणन के भाव कूं सद्गुण्य कूं हू विचार ही लेवेंगे ॥ ऐसे तिस तिस पुर कूं और तिस तिस ग्राम कूं वामें हू तिस तिस स्थल कूं और स्त्रीन कूं तैसे पुरुषन कूं हू और विन विन जीवन कूं हू अपनी मनोहर लीलान सूं कृतार्थ करत ही और विन विन कृपा पात्रन के प्रति अलौकिक फल कूं गुप्त ही दान करत सो प्रभु धर्म के धुरंधर प्राणनाथ श्रीजी आश्विन के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी के दिन शुभ क्षण में द्वारिका में प्रवेश करते भये हैं ॥ और वा द्वारिका में स्थित जे भाग्यवारे गुग्गुली जाति वारे ब्राह्मण है जब वे हू आपके निकट आयकें प्रणाम करिके वे सगरे ही कृतार्थ होय जाते भये हैं ॥ और सो महात्मा श्रीजी तहां पुराण स्मृति वेदोक्त सगरे कर्मन कूं हू करते भये हैं ॥ और दान योग्य दान हू देते भये हैं ॥ और श्रेष्ठ पुरुषन कूं शिक्षा करिवे लिये वेद पुराण के विधान सूं तैसे तैसे राज रीति सूं के प्रेम रीति सूं के शास्त्र रीति सूं वा द्वारिकानाथ की सेवा करते भये हैं ॥ और तहां तिस तिस समय में नियमवारी भोग व्यवस्था कूं हू बांधते भये हैं ॥ और तहां सदैव मर्यादा सूं उलटे चलि रहे जे अधम ब्राह्मण गुग्गुली जात वारे सनातन धर्म कूं स्थापन करिकें और साक्षात भक्ति मार्ग कूं हू प्रवर्त करिकें और महायश वारे सगरे जनन सूं स्तुति किये हैं गुण समूह जाके ऐसे सो श्रीजी वहां की गटका गाम में रहिवे वारी जो भाग्यवती कलाबाई है वाके मनोरथ के अनुसार ही सो रसिक शिरोमणि वाके ऊपर अनुग्रह करते भये हैं और सो श्रीजी ग्यारह दिन तहां निवास करिके और वा द्वारिका

की महिमा कूं हू अत्यन्त बढ़ायके रथ के ऊपर विराजमान होयके अपने भक्तन सूं चारों ओर मिले भये ही सो तहां सूं प्रस्थान करते भये हैं ॥ और उछल्लित है प्रेम जिनको तासूं प्रिय कूं त्याग करिवे में न समर्थ जे गुग्गुली जाति वारे वे ब्राह्मण हैं तैसे विनकी जे स्त्री हैं वे हू प्रस्थान करि रहे वा प्रिय के पीछे ही वेग सूं चलती भई हैं ॥ तब ईश्वरेश्वर श्रीजी अपने गुणन सों आकर्षण कियो है मन जिनको तैसे पीछे आय रहे विन सबन कूं प्रसादी देवाय के निवर्त करते भये हैं के घर की ओर आवते भये हैं ॥ और विन गुग्गुली जाति वारे ब्राह्मणन की जे स्त्री हैं वे तो करोड़न काम के विजय करिवे वारे और चतुर्दश लोकों के नियन्ता गुणसागर वा श्रीजी को दर्शन करिके मोहित होयके वे सगरी ही अपने मन सू अपने चरणन में श्रृंखला सूं बंधी भई ही वहां ठहेर के वा प्रिय के तैसे स्वरूप कूं निमेष रहित ही देखत अपने घरन मे जायवे कूं समर्थ न होती भई हैं ॥ और घोड़ाराज के ऊपर सवार होयके वाकूं नचाय रहे और रत्न मुक्तान सूं खचित तैसे अमूल्य सुवर्णमय मनोहर जो धूपखेडी है वाकूं श्रीमस्तक पे धारण कर रहे जे श्रीजी हैं वाकूं वा समय में मंद हास्य वारो है श्रीमुख कमल जाको ऐसो जो स्वरूप है सो यहाँ अनिर्वचनीय प्रगट होतो भयो है ॥ जासूं जा स्वरूप सूं विन सगरे भक्तन के दृष्टि और स्वरूप और मन सांकल सूं अत्यन्त ही बांधते भये हैं ॥ तासूं वे वा स्थल सूं अपने अपने विन विन घरन में जायवे में कैसे समर्थ होय सकें ॥ किन्तु बल वारे हू जाकूं उल्लंघन नहीं कर सके हैं ऐसी जो या प्रभु की इच्छा है सो इच्छा ही बल सूं विनकूं निवर्त करिकें अपने अपने घरन में प्राप्त कर देती भई है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले ओगणपचास तरंग सम्पूर्णम् ॥४९॥

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग पचासमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पचासमो स्तरंग लिख्यते ।।५०।।

श्लोक -- **अथ कस्याश्चन महाभागधेयजुषोगुणैः मृगीदशस्समुद्दभूतै र्भावैर्माग्यै मनोरथैः ।।१।।**

याको अर्थ -- अब याके अनन्तर कोउ महा भग्यवारी मृगनयनी के हृदय के ऊपर चढ़ि रहे अत्यन्त प्रबल गुणन सूं और तैसे उदय होय रहे भावन सूं और तैसे भाग्यन सूं और तैसे मनोरथन सूं आकर्षण किये भये सो रसिक शिरोमणि श्रीजी महाखंभालिया ग्राम कूं प्राप्त होते भये हैं ।। तब अपने प्रिय की निर्दोष श्रृंगार लीला कूं अत्यन्त अनुभव करिवे की इच्छा वारे भक्तजन श्रीजी के कृपापात्र सेवकन के मुख द्वारा श्रीजी के आगे विज्ञापना करत भये हैं ।। के हे प्रभो करुणा सूं हमारो मनोरथ हू पूर्ण करिये ।। तब प्रेम हर्ष उत्साह संकोच सम्पूर्ण होय रहे जो प्रिय श्रीजी हैं सो 'ओं' के 'हां' ऐसे एक अक्षर कूं हू स्पष्ट कहिवे में समर्थ नहीं होते भये हैं ।। और आपके प्रफुल्लित होय नयन ही वा 'ओं' ऐसे अक्षर कूं स्पष्ट ही कर देते भये है के प्रफुल्लित होय रहे नयनन सूं ही वामें सम्मती कूं वे निश्चय कर लेते भये हैं ।। तब वे सगरे भक्त ही प्रसन्न मन होयके तिस तिस उपयोगी कार्यन के करिवे में उद्यम वारे होयकें लीला मन्दिर की शोभा कूं और वस्त्र विभूषण पर्यंक तैसे सुगंधित द्रव्य के प्रकारन कूं और माला और अंगराज तांबूल धूपादि सामिग्री कूं और भक्ष्य भोज्य आदि के नादन कूं और मंगलमय गीत गानादि वे सब ही कूं वेग ही प्रारम्भ करते भये हैं ।। तब सिद्ध कियो है सगरो उपयोगी कार्य जिनोंने ऐसे वे तैसे तैसे तहां स्थित होते भये हैं के सब ही वे श्रीजी के समय अनुकूल सेवा में तत्पर होते भये हैं ।। और शुद्ध और परम काष्टा कूं प्राप्त होय रही है भक्ति जाकी और बाल भाव रूप कोमल दलन सूं छिपाये भये जीवन कूं जो शोभित कर रही है और स्वरूप सूं लक्ष्मी आदि स्त्रीन कूं हू जाने विजय कियो है और शोभायमान होय रहे विन विन अंगन सूं अमूल्य वस्त्र और आभरण

तैसे मंडा तक और सुन्दर अंगिया कूं जो शोभायमान कर रही है । और परम योग्य सखी ने जो प्रेम विनय नम्रता आदर पूर्वक तहां प्राप्त करी है ॥ और हजारन पूर्ण चन्द्र के विजय करिवे वारी है भ्रूअ की शोभा जाकी ऐसी वा सुन्दरी कूं रात्रि समय में रत्न खचित लीला मन्दिर में बिछायो है श्रेष्ट तुल चादर पटु आदि जामें ऐसे मुक्तामणि गण सूं जटित सुवर्णमय पर्यंक कूं त्रिलोकी के भूषण रूप अपने स्वरूप सूं शोभायमान कर रह्यो जो उच्छल्लित है मनोरथ रूप तरंग जामें ऐसो रस सागर रूप प्रिय है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले पचास तरंग सम्पूर्णम् ॥५०॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग एकपचासमो ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ एकपचासमो स्तरंग लिख्यते ॥५१॥

श्लोक -- **अथात प्रस्थितः श्रीमान लंकुर्श्वनुरंर्थ प्रियः निद्रा मांद्रिय माणो सौ कदाचित्यथ्य भूत्क्षणां ॥१॥**

याको अर्थ -- अब यहाँ सूं प्रस्थान करिके श्रीजी रथ कूं शोभायमान करत मार्ग में सारथी भाव कूं करि रह्यो जो लक्ष्मीदास है वाके गोद में कबहू सुख सूं श्री मस्तक कूं धारण करिकें वाके नयनन कूं सुखी करत ही क्षण पर्यन्त निंद्रा कूं आदर करते भये हैं तब सोरठीयाणी नाम नदी में चलि रहे आपके रथराज को जल कल्लोलन की ताड़ना सूं भयो जो शब्द है वा शब्द कूं सुनकर जागके प्रभु श्रीजी कहते भये हैं के यह कौनसी नदी है और यह निकट प्राप्त भयो कौन सो स्थल है ? तब वे हू प्रणाम करिकें हाथन कूं बांधि कें वा करुणा सागर श्रीजी कूं कहते भये हैं के यह सोरठीयाणी नाम नदी है और पृथ्वी मंडल कूं त्याग करिवे की इच्छा वारे स्वतंत्र भगवान देवकी नंदन के आसुरी जीवन के निरन्तर व्यामोह करिवे वारी लीला जहां करी है वाके निकट रहिवे वारो जो सर्व प्रकार सूं प्रसिद्ध स्थलहै ॥ ऐसे या वचन कूं सुनिकें वा कृष्ण में बांध्यो भयो है स्वाभाविक भाव जिनको ऐसे सो श्रीजी खेद सहित ही वा

मार्ग कू वेग ही त्याग करायकें, और मार्ग कूं ग्रहण करावते भये हैं और सोहाणां देश को राजा जो राम जेठुआ राय हतो सो या समय में ही प्रभुन के निकट आवतो भयो है तब प्रभुन कूं प्रणाम करिकें हाथन कूं बांधिकें बड़े आदर सूं ही विज्ञापना करत भयो है ।। के हे कृपासिंधो आपके पीछे निकट ही जो मेरो ग्राम स्थित है वाकूं अपने चरण कमलों के धारण करवे सूं वेग ही सुगंधित करिये और हे द्रष्टया ताप निवर्तक के दृष्टि सूं ही ताप कूं निवर्त करिवे वारे हे प्रभो आपके दासानुदास के दास जे हम हैं ऐसे हमकूं हू कृपादृष्टि सूं पावन करिये और कितनेक क्षण विराज के हमकूं प्रसन्न करिये ऐसे वा रामजेठुआ राय की विज्ञप्ति कूं सुनकर सो महाराज आज्ञा करते भये हैं के तिहारे तैसे गाम में आछे फिरिके कछुक कारण सूं जाने में चाहना हों नही करूं हूं परन्तु तुम और जो कछु कहो सो तो करुंगो ।। तासूं संदेह रहित ही विज्ञापना करिये ।। तब सो हू हाथन कूं बांधिकें प्रणाम करिकें आनन्द के आंसुन सहित वा प्रभुन कूं कहेतो भयो है के हे प्रभो मोकूं अपनो नाम दान करिकें वेग ही अपने दासन में अंगीकार करिये ।। तब तो कृपासागर श्रीजी हू तथास्तु ऐसे आदर सहित कहेकर अपने आगे विनय सूं नम्र होय रहे वा भक्त कूं अपने प्रसिद्ध नाम कूं सुनायकें वेग ही कृतार्थ कर देते भये हैं और सो राम जेठुआराय हू पवन जैसे हे श्रेष्ठ वेग जाकूं और सुन्दर लक्षण जाके अत्यन्त दर्शनीय और श्रेष्ठ गुणन वारो जो ऐसो घोड़ाराज है सो मुक्ता सुवर्ण हीरा के समूहन सूं खचित साजन सूं शोभायमान है वा घोड़ा राज कूं श्रीजी के आगे ही अर्पण करतो भयो है ।। तब सो गोकुल नायक राजाधिराज श्रीजी वा राजा कूं विदा करिकें राजकोट नाम वारे पुर कूं प्राप्त होते भये हैं तहाँ अपने शरण आये अत्यन्त नम्र वीभा नाम बालक कूं देखिकें कृपासागर श्रीजी वाके मस्तक पर महा मंगल रूप अपने श्रीहस्त कमल कूं धारण करते भये हैं जासूं सो वीभा हू थोरे हू दिनन सूं राजा होय जातो भयो है ।। जो महा भाग्यवान पृथ्वी में ताजामाहाल ऐसे शब्द सूं प्रसिद्ध होतो भयो है और गुण सागर सो प्राणनाथ हू नवीन देश में विराजमान वाके घर कूं पधारते भये हैं ।। तब सो वीभा हू अत्यन्त उछल्लित भक्ति पूर्वक बहुत वार ही दंडवत प्रणाम करिकें अत्यन्त बड़े वेग वारे घोड़ा कूं या प्रिय जी के आगे आज भेंट करतो भयो है और इहां ही बड़ो भाग्यवान रणमल्ल नाम वारो जो परम बुद्धिमान भक्त है सो हू भाषा पद कूं सुनाय कें अपने प्रियतम

श्रीजी कूं अत्यन्त प्रसन्न करतो भयो है और भटजी कहें हैं के वो कीर्तन संबंधी भाषा कूं जे नहीं जाने है, विनके लिये वा कीर्तन के थोरे से अर्थ कूं हौं कहूं हूं "के हे श्री वल्लभ श्री यमुनाजी के तट रूप जो कोऊ अनिर्वचनीय भूमि है वाके ऊपर हू अपने कूं वार डारूं हूं जासूं जा भूमि में सो लोकवेदातीत महा पुष्ट पुरुषोत्तम तुम प्राप्त हो ॥" ऐसे अर्थ वारे कीर्तन कूं सो गान करत भयो है और सो महाप्रभुजी तहां अनेक जीवन पर अनुग्रह करिकें सो करुणासागर श्रीजी खम्भालिया गाम में प्राप्त होते भये हैं और महाभाग्यवान सुन्दर बुद्धि वारो जो भट राघवदास है सो आपके कृपापात्र द्वारा विज्ञापना करिकें अपने घर में श्रीजी कूं पधरावतो भयो है और सो प्रेम सूं पूजा कूं करतो भयो है और सेवा हू करतो भयो है और हाथन कूं बांधके नमस्कार हू करतो भयो है ॥ तब सो दीनबंधु गुण सागर जो श्रीजी हैं वो अपने दास पर बहुत ही प्रसन्न होते भये हैं और रस भक्त वारीन में श्रेष्ठ धरोल गाम में रहिवे वारी प्रिय जो अत्यन्त अनुराग वारी जो अनाबाई है सो द्वारिका में पधार रहे वा प्रिय कूं मोरवीपुर में मिलती भई है ॥ तहां अब्जन चन्द्रमा कूं विजय करिवे वारो जो अनुराग भरे मंद हास्य पूर्वक दृष्टि वारो शोभायमान प्रिय को श्रीमुख कमल है वाकूं सो अना बाई दर्शन करिकें वा प्रिय के स्वरूप संबंधी अमृत के समुद्रन कूं दोनों दृष्टि रूप अंजुली सूं पान करिवे में अत्यन्त लोभ वारी होय के वा प्रिय के संग ही द्वारिका में जायवे की इच्छा करती भई है और लौकिकजनों के चित्त सम्बन्धी दोषन कूं अत्यन्त जानवे वारो प्रिय श्रीजी तो याके घर में ही अपने पधारवे कूं कहेकर आदर और चाटुकारन सूं ही प्रथम या अना बाई कूं निवारण करिकें अपने घर में ही पठावते भये हैं और अब तो यह अना बाईजी प्रभुन के पधारवे कूं सुनके दूर पर्यन्त ही आगे जायके अपने घर में ही पधरायवे के लिये विज्ञापना करिकें रोमावली के समूह सूं शोभायमान होय रही सो अनाबाईजी वा कृपासिंधु प्रिय कूं वाद्यन के शब्द और मंगलगान सूं पूरण होय रहे और सुधा सूं धवल होय रहे मान विधी के लिखे भये चित्रन सूं शोभायमान और तिस तिस बिछोनान के समूह और चंदुवा सूं शोभायमान और अनेक माणिकन सूं जटित सुवर्णमय लीला मन्दिरन सूं उछल्लित होय रहे वा अपने घर मं पधरावती भई है ॥१॥ और तहां वा प्राणनाथ की तैसे आपके सेवकादि जनन की हू सेवा कूं आप और अपने जनन के संग

हू मिलि के सो करती भई हैं और वा प्रिय के अमृतन कूं हू विजय करिवे वारे श्रीमुख कमल संबंधी रस के सिन्धु समूहन कूं यथा योग्य ही नयन कमल सूं सो पान करती ही और तामें सात्विक भाव सूं प्रगट भये स्तंभ स्वेद और रोम हर्ष तैसे स्वर भंग और कंप तैसे अश्रु और मूर्च्छा और विवर्ण भाव इनसूं तैसे और हू विन विन भावन सूं मंडित होय रही और निमेष रहित ही बड़े उत्साह वारी और अत्यन्त प्रेम सूं पूर्ण और प्रिय के वियोग कूं न सहेन करिवे वारी जो परम चतुर सकुमारी प्यारी है सो तब करोड़न काम कूं हू विजय करिवे वारो और आनन्दमय है सगरे अंग जाके और विलास रूप हजारन समुद्रन सूं अत्यन्त शोभायमान और मंद हास्य रूप अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करि रह्यो जो सो अत्यन्त प्रिय श्रीजी है वामें अपने कूं तैसे अपने सगरे हू सर्वस्व कूं सो अनाबाई वेग ही भेंट कर देती भई है तब वा प्रेममय नदी रूप वा प्रिया के भेट किये विन सगरे ही पदार्थन कूं सो रस सागर श्रीजी हू अत्यन्त ही अंगीकार करते भये हैं और स्वभाव सूं हू सो सुन्दर प्रिय श्रीजी जो जो कछु करते भये तिस तिस सूं परम हर्ष कूं प्राप्त होय रही सो प्रियाजी हू यह प्रिय मेरे हर्ष के लिये ऐसो करें हैं ऐसे ही तिस तिस कूं निश्चय करती भई है ।।१।। और स्वभाव सूं ही यह सुन्दरी जो जो कछुक करती भई है सो तिस तिस सूं परम सुख कूं प्राप्त होय रही सो प्रिय हू यह प्रियाजी मेरे ही सुख लिये ऐसे करे है ऐसे ही तिस तिस कूं निश्चय करते भये हैं ।।१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले एकपचास तरंग सम्पूर्णम् ।।५१।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग द्विपचासमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ द्विपचासमो स्तरंग लिख्यते ।।५२।।

श्लोक -- **एवंता मनु गृत्स्यालम देयं चवितीर्यसः कमपि स्वर संतस्यै समाधाय तथा तथाः ।।१।।**

याको अर्थ -- ऐसे या प्रकार अनाबाई कूं अत्यन्त अनुग्रह करिके और न देवे योग्य हू अपने कोऊ अनिर्वचनीय रस कूं वाके प्रति दान करिकें और वाकूं तैसे तैसे समाधान करिकें और चाटुकारन सूं वाकूं मान दे करिकें इहां सूं काठियावाड के मध्य में जो स्थित जो कैयाणा बावर नाम गाम है वाके प्रति प्रस्थान करते भये हैं तहां प्रिय के सुख करिवे वारे और प्रेम सूं प्रकाशमान ऐसे भागीरथी और फूलबाई नाम सूं दो भक्त सुन्दरी हतीं ।।१।। विनके प्रति सो ईश्वरेश्वर श्रीजी विश्व कूं मोहन करिवे वारो अपनो स्वरूप वा स्वरूप कूं दिखावते भये हैं के जा स्वरूप ऊपर कल्प वृक्षन के समूह हू न्यौछावर किये जाय और जो करोड़न काम कूं विजय करिवे वारो है और जाके चरणोदक पर हू अमृत के शत अर्बुद समुद्र ही नौछावर किये जांय और चरण की अंगुली संबंधी नख सूं हू हजारन चिन्तामणि वार डारी जांय ।।१।। और जाके श्रीमुख की शोभा के कणका ने हू करोड़न पूर्ण चन्द्रमा कूं पराभव कियो है और जो स्वरूप वाणी संबंधी माधुरी के लेश सूं ही वाणी के नाद और कोकिला के शब्द कूं जय करे है और जाने बाहु दंड की शोभा सूं सुवर्ण के स्तंभन कूं हू तृण जैसे कियो है और वक्षस्थल की शोभा सूं जाने मेरु पर्वत के विशाल शिला समूह कूं हू निरादर कियो है और जाने दृष्टि संबंधी किरण के लेश सूं हू मीन खंजन और कमल हू दूर किये हैं और जो स्वरूप कितनी एक सुन्दरीन कूं तो प्रसन्न करि रह्यो है और कितनी एक कूं तो पीड़ित कर रह्यो है और अत्यन्त ताड़न करि रह्यो है ।। और कितनीक सुन्दरीन कूं बुलाय रह्यो है और तैसे औरन कूं हू अपनाय रह्यो है तैसे कितनीक कूं तो दूर ही स्थित कराय रह्यो है तैसे औरन कूं तो बारंबार विस्मय कराय रह्यो है और कितनीक सुन्दरीन कूं तो तृण जैसे करत है और वैसी कितनीक कूं तो अभिमान वारी सुन्दरीन कूं तो तृण जैसे करत है और वैसे कितनीक कूं तो गिराय रह्यो है और कितनीक प्रियान कूं तो गर्व वारी कर रह्यो है तैसे औरन कूं नम्रता कराय रह्यो है और कितनीक कूं तो जोर सूं हू लाय रह्यो है औरन कूं तो दीन कर रह्यो है और कितनी एक प्रियान के तो हजारन मनोरथन कूं पूर्ण करि रह्यो है तैसे औरन कूं उत्साहवारी करि रह्यो है और कितनी एक सुन्दरीन कूं तो स्नेह वारी करि रह्यो है और कितनीक कूं तो स्तंभ वारी कर रह्यो है तैसे स्वेद वारी कर रह्यो है और गद्‌गद् कंठवारी कर रह्यो है तैसे औरन

कूं अत्यन्त रोमहर्ष वारी करि रह्यो है तैसे विवर्ण कर रह्यो है और कंपायमान करि रह्यो है और हर्ष के आंसुन सूं शोभित करि रह्यो है तैसे औरन कूं तो धूर्णित करि रह्यो है और मूर्च्छित कर रह्यो है और कितनीक सुन्दरीन कूं नचाय रह्यो है और अपने सूं प्रसन्न कराय रह्यो है और कितनीक कूं तो विस्मित कराय रह्यो है औरन कूं मित्र बनाय रह्यो है के दास बनाय रह्यो है के प्रकाशवारो कर रह्यो है तैसे औरन कूं तो अत्यन्त चंचल कर रह्यो है तैसे मान कूं कराय रह्यो है और कितनीक सुन्दरीन कूं मान दूर कराय रह्यो है तैसे औरन कूं तो अपने चरणन में गिराय रह्यो है तैसे कितनी एक सुन्दरीन कूं तो अधरामृत के पान की इच्छा वारो कर रह्यो है और कितनी एक सुन्दरीन कूं तो निर्दय आलिंगन में जो हर्ष है वामें लोभवारी कर रह्यो है और कितनी एक सुन्दरीन कूं अदय अलभ्य जो महारस है वाकी चाहना कूं कराय रह्यो है और जो स्वरूप अपने कूं कितनी एक सुन्दरीन सूं तो वाको मुख करिके मंद हांसी पूर्वक और विनय पूर्वक के आनन्द के सहित के रोमहर्ष और अश्रु सहित तैसे कंप स्तंभ लज्जा सहित और उत्साह के आर्ति सहित ही निमेष रहित तैसे तैसे दर्शन कराय रह्यो है और जो स्वरूप कितनी एक सुन्दरीन कूं शांत कर रह्यो है और ताप रहित कर रह्यो है और सुखन सूं पूर्ण कर रह्यो है और जो स्वरूप सगरे अवतारन के हू जे अवतारी हैं विनके हू समूह के ऊपर जो प्रकाशमान होय रह्यो है और जो सर्व सूं हू सर्वोत्तम है और जो शोभायमान है और सर्व सूं विलक्षण है ऐसे अपने स्वरूप कूं भागीरथी और फूलबाई के प्रति दर्शन करावते भयें हैं ॥१॥ तब वे दोनों भागीरथी और फूलबाई जो दर्शन कों तैसे उछल्लित महारसमय प्रिय संबंधी वा स्वरूप की सेवा कूं आपके दासन के योग्य जैसे होय और हजारन वर्ष सूं वांच्छित जैसे होय और राजरीति सूं के महेद रीति सूं के प्रेम रीति सूं प्रकाशमान जैसे होंय और रस रीति सूं के एकांत रीति सूं के लोक रीति सूं मनोहर जैसे होय तैसे ही करती भई हैं ॥१॥ और वा प्रिय की तैसे विन दोनों प्रियान की आवरण रहित उदय भयो जो रसिक भाव है सो कोऊ महा अनिर्वचनीय है जासूं जो भाव आसन में के शयन में के भोजन में अपनी कथा वर्णन में के रमण में के वचन में कहिवे में के दान में के लेने में और हू तैसे तैसे रस कार्यन में या प्रिय के और विन प्रियान के हू वाकी रहे हू भेदन कूं निवर्त ही कर देतो

भयो है ॥१॥ ऐसे या प्रकार सात दिन ही वा स्थल में सो प्रिय श्रीजी अनुग्रह सूं निवास करते भये हैं ॥१॥ और सो प्रिय श्रीजी विन भागीरथी और फूलबाई में वा रसमय सुख विशेष कूं अत्यन्त ही करते भये हैं के स्मरण किये हू सुख सूं वे दोनों हू अपने प्रिय के तैसे महारसमय वियोग अग्नि में अत्यन्त ही गिरि जाय ॥१॥ और जो तो विन प्रियान के जीवन में क्षण में निर्वाह के योग्य जो यासूं हू महा फल है वा महा फल कूं तो को जानें फेर कबहू वहां देते भये हैं ॥१॥ और विन भागीरथी और फूलबाई कूं अपनो करिवे सूं सो प्रभुजी अनुग्रह करिके और समाधान हू करिके तब तिस देश सूं प्रस्थान करिके हलबद नाम वारे वा देश कूं अत्यन्त ही पवित्र करते भये हैं के जहां विजा झाला नाम सूं प्रसिद्ध जो राजा है सो प्रभुन के निकट आयकें हाथन कूं बांधिकें दंडवत प्रणाम करिकें आगे ठहेरतो भयो है ॥१॥ और वासों श्रीजी दृष्टि सूं हू अनुग्रह करते भये हैं ॥१॥ और या राजा की ब्रह्मण्यता कूं और अंतःकरण की शुद्धता कूं हू अपने श्री गोकुल निजधाम में सभा में विराजमान सो भगवान श्रीजी कोऊ समय में मेरे आगे प्रगट करते भये हैं ॥१॥ और झवाजी नाम वारो जो श्रीजी को स्वकीय भक्त है सो विनय सूं नम्र होयकें विज्ञापना करिकें अपने प्राणवल्लभ प्रभुन कूं तारंग नाम पर्वत के निकट रहिवे वारे अपने कूड़ा नाम वारे गाम में पधरावतो भयो है और तहां वा प्रभुन कूं यथायोग्य ही अपनी शक्ति अनुसार ही सेवन करत भयो है और सो बुद्धिमान झवा जी वा श्रीजी के संग स्थिति जे भक्त हते विन सगरेन कूं सुन्दर मिश्री और श्रेष्ट दही जामें विशेष है ऐसो भोज हू करावतो भयो है ॥१॥ तब या झवाजी के या कर्म सूं भगवान श्रीजी प्रसन्न होय जाते भये हैं और सगरे भक्त हू प्रफुल्लित होय रह्यो है मुखकमल जामें के हंसत हंसत ही वा झवाजी के भाग्यन कूं सराहना करते भये हैं ॥१॥ और वा गाम्म सूं श्रीजी राजपटन कूं प्राप्त होते भये हैं या राजपटन में बड़ो अधिष्ठाता जो मधुआ ठाकुर है सो दूर पर्यन्त ही श्रीजी के आगे आयके असंख्य जनों के समेत ही प्रणाम करतो भयो है ॥१॥ विनमें श्री गोस्वामीजी कूं सेवक जो शिवा भट नाम बुद्धिमान है सो प्रार्थना करिकें प्रभुन कूं पधरावतो भयो है ॥१॥ और कोटिकंदर्प लावण्य वारे ईश्वर कूं देखिवे लिये दिन रात्रि हू आय रहे जो उछल्लित प्रेम वारे स्त्री पुरुष हते विनकूं या बड़े नगर में बड़ो ही समृद्ध होतो भयो है ॥१॥ विनमें कोई तो गली में स्थित होय रहे हैं और तो मंदिरन

के ऊपर ही चढ़ि रहे हैं और कोई तो चावर और आंगण तैसे घरन में स्थित है तैसे और कितनेक तो हट्टीन पर स्थित हैं और भेटान कूं आय रहे हैं और निमेष रहित ही प्रभुन कूं देखि रहे हैं और मुस्काय रहे हैं और तैसे तैसे कह रहे हैं और तैसे तिस तिस कार्यन कूं करि रहे हैं कितनेक तो जाय रहे हैं और कितनेक तो साहस सूं रस्ता में गिरि रहे हैं और तो संवलित होय रहे हैं तैसे और तो ऊँचो दौड़ रहे हैं तैसे कितनेक तो विलंब सूं के अंतराय करवे सूं क्रोध हू कर रहे हैं और कितनेक तो या प्रिय के दरशन की इच्छा सूं अत्यन्त ऊँचे वृक्षन की शिखर पर चढ़ि रहे हैं और कितनेक तो वस्त्र भूषण हू गिरि रहे हैं सो अपने आपकूं स्मरण करिकें ठहेर रहे हैं और भोजन पान तैसे और हू तिस तिस कूं विस्मरण करिकें ठहेर रहे हैं ऐसे स्त्री पुरुषन को तहां बड़ो ही समर्द्ध होतो भयो है ।।१।। और मधुआ ठाकुर हू या प्रभुन कूं प्रणाम करिके अपने घर में पधरावतो भयो है ।।१।। और सो श्रेष्ट बुद्धिवारो जो महाभाग्य वारेन में हू श्रेष्ठ जो मधुआ ठाकुर वा श्रीजी में शास्त्रोक्त अनुसार उपचारन कूं रस रीति सूं ही करतो भयो है ।।१।। और तहां जो महाभाग्यवारीन में हू श्रेष्ट जो जमुना नामवारी सुन्दरी हती सो तो या चन्द्रवदन अत्यन्त प्रिय प्रभु में महा भक्ति वारी होती भई है ।।१।। वा जमुनाबाई के मनोरथ रूप वृक्षन सूं अत्यन्त पुष्प वारे के अत्यन्त फल वारे होय रहे अत्यन्त दुर्ल्लभ हू वा ईश्वर प्रिय कूं प्राप्त होयकें जिन भक्तन के अनुकूलता और बुद्धि दोहद भाव कूं के कामना के पूर्ण करिवे वारे भाव कूं प्राप्त भई है और वा मधुआ ठाकुर के हू जे तैसे उद्यम हू दोहद भाव कूं प्राप्त भये हैं विन सगरेन में हू सो चतुरन के शिरोमणि श्रीजी अत्यन्त ही प्रसन्न होते भये हैं और अदय दान कूं हू देते भये हैं ।।१।। और इहां ही माधवदास नाम जो ब्राहमण है और वाकी जो मोहनदे नाम वारी उत्तम स्त्री है तैसे वाकूं जो श्रेष्ट गुण वारो श्रीमान् उद्धवदास है और याकी हू लीला नाम वारी वधू है सो वे और कल्याणदास गंगाबाई भगवानदास माधवदास महेता और लक्ष्मीदास ऐसे जे भक्त हैं विन सगरेन कूं यह प्रभु श्रीजी अपनी कृपा सूं अद्‌भुत अनुभाव वारे अपने नाम कूं उपदेश करिके कृतार्थ ही कर देते भये हैं ।।१।। और कोउ दिन में कृपाशक्ति सूं वेग ही प्रेरणा किये भये सो श्रीजी वायकन के कहा के कपड़ा बनाने वाले जुलाहन के घरन कूं अपने चरण कमल के संबंध सूं सुगंधित करते भये हैं ।।१।। तब कुटुंब परिवार

के सहित उठिके उछल्लित प्रेम सूं प्रभुन कूं विनय सहित प्रणाम करि रहे विनकूं हंसत हंसत ही श्रीजी पूछते भये हैं के वहां ता प्रकार के सुन्दर चित्र वारे जे नाना विधि वस्त्रन कूं तुम सगरे सुन्दर बुनो हो सो अपनी कपोल कल्पित रीति सूं ही बुनो हो के कोऊ शास्त्र पुराण के अनुसार बुनो हो ॥१॥ ऐसे या प्रिय के श्रीमुख रूप क्षीर सागर सूं वेग ही प्रगट भये या वचनामृत कूं कान रूप अंजुलीन सूं पान करिके अपनी कृतार्थता कूं और अपने जन्म की सफलता कूं जानत ही वे सगरे हर्ष के अश्रु सहित नम्र होयके प्रिय के श्रीमुख कूं देखत ही विज्ञापना करत भये हैं के हे प्राणेश शास्त्र कूं हू अनुशरण करिके जो परंपरा सूं प्राप्त रीति है वाके अनुसार ही हम बुनें हैं ऐसे कहेते भये हैं ॥१॥ भटजी कहेते भये हैं के ऐसे इन वायकन कूं और विनकी इन स्त्रीन कूं और विनके पुत्रादिकन कूं और विनकी कृती कूं तैसे विनके वस्त्रन कूं और वा भक्ति कूं हू हों तो प्रेम सूं निरन्तर ही प्रणाम करूं हूं जासूं जिनके ऊपर प्रसन्न भये श्रीजी विनकूं कहूं कृतार्थता समूह के चक्रवर्ती भाव में ही आरोपण करते भये हैं ॥ के महा कृतार्थ कर देते भये हैं और स्वतंत्र इच्छा वारे भगवान करुणा सागर ईश्वर सो श्रीजी या स्थान सूं सिद्धपुर कूं प्राप्त होते भये हैं जहां सरस्वती नदी है ॥१॥ और सरस्वती प्रयाग में तो गुप्त होयवे सूं तहां प्रगट भये प्रभु के नयनों के प्रत्यक्ष नहीं वही है ॥ तासूं बहुत काल पर्यंत ही वा प्रिय कूं चाहना कर रही है ॥ ऐसी सो अब वा प्रिय कूं और वाके मनोहर श्रीअंग के स्पर्शरूप अमृत कूं हू प्राप्त होयकर कृत्य कृत्य ही होय जाती भई है ॥१॥ सो वा सरस्वतीजी में यह प्रभु श्रीजी यथाविधि स्नान करिकें और वाकूं अत्यन्त कृतार्थ करिके मिहसाणुं नाम ग्राम में वहां के सुन्दर मनोहर तलाब पर सुन्दर स्थान में भक्त जनों ने रचना कियो जो शिविर है तंबू डेरा हैं वामें ही करोड़न जीवन कूं उद्धार करत यह श्रीजी विराजमान होते भये हैं ॥१॥ और सो श्रीजी पद प्रद में ही हालार नाम देश और झालार नाम देश और अनुग्रह करिके डंढायस नाम देश कूं पावन करते भये हैं ॥१॥ और तिस तिस देश में के तिस तिस पुर में के स्थल में के तिस तिस घर में और विन विन भक्तन के संग सो करुणासागर श्रीजी जैसे और जितने और जिन जिन लीला समुद्रन कूं विस्तार करते भये हैं वैसे वितने विन लीला समुद्रन कूं वा समय में जे वा सर्वोपर विराजमान प्रिय के निकट स्थित हते वे चाचा हरिवंशजी आदिक

भक्त झवाजी और पवो त्रिवाड़ी और सो हरिपत भटजी और सो लखीभाई और सो जगन्नाथ और श्रीपाद ऐसो जो प्रथम कह्यो है सो सुदामा ब्रह्मचारीजी और हरिबाई चौधराणी और कान्हबाई तैसे और हू जे सुन्दर भाग्यवारे भक्त हते और तैसे स्त्रीन में श्रेष्ट जे भक्त सुन्दरी हतीं तैसे और हू जे सर्वोपर विराजमान वे वे भक्त हैं वे सगरे ही अत्यन्त विस्तार वारे अपने अंतःकरण और नेत्र कान रूप हाथन सूं लूटते भये हैं ।।१।। और हम तो वामें विनके शील कूं हू के किणकान के इकट्ठे करिवे कूं हू समर्थ नहीं हैं ।।१।। ऐसे या प्रकार विहार करत सो ईश्वर श्रीजी राजनगर के निकट ही प्राप्त होते भये हैं ।। और लक्ष्मीदास ने पठाये जे जन हैं विनसूं श्रीजी के पधारवे के वृत्तांत कूं जानकें वे भक्त प्रथम जैसे ही वा प्रिय के दर्शन करवे कूं आवते भये हैं ।।१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले द्विपचास तरंग सम्पूर्णम् ।।५२।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग त्रि-पचासमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ त्रिपचासमो स्तरंग लिख्यते ।।५३।।

श्लोक -- **इह केचित्रि जल वणीमभृश चुर्णित कामकोटि वांद्रौ गोकुलपतेः पदांबुज पराग लवलेश लेशोपिः ।।१।।**

याको अर्थ -- अब कल्याण भट्टजी श्रीजी के तैसे रसात्मिक चरित्र वर्णन करिवे में प्राप्त भये महादैन्य भाव सूं आयके कृपापात्रन की कृपा कूं प्रार्थना करत कछुक कहें हैं के अपनी लावण्य सूं के सौन्दर्य सूं अत्यन्त चूर्ण किये हैं कामदेव के करोड़न गर्व के पर्वत जानें ऐसो जो चरण कमल संबंधी पराग के लवलेश के हू लेश को लेश है वामें हू वा रसात्मक पुरुषोत्तम भाव कूं भली प्रकार उदय करिके अपने भक्तन की पंक्ति के स्पर्श करायवे कूं जो वांछा करे है और भाव को प्रोढ़ि विशेष सूं के भाव के अत्यन्त उछलवे पर तैसे विनकूं भलो दरशन हू जो करावे है ऐसे वा श्री गोकुलपति के या चरण रज के लवलेश के हू लेश के लेश में जा उत्कर्ष हू देखके या जगत में कितने एक जे बुद्धिमान

हैं सो वाके ऊपर वा पुरुषोत्तम समूह के करोड़न लाखन अर्बुदन कूं हू वारणा करिवे में अत्यन्त लज्जा करे है ऐसे उत्कर्ष वारे होने पर हू जे अपने कूं दीनन सूं हू दीन माने है और अत्यन्त करुणा वारे हैं और सुहृदय हैं और अपने भक्त रूप लोहा के स्वर्ण रूप कूं करवे वारो स्पर्श मणि रूप है स्पर्श जिनकूं ऐसे हैं चरण कमल जिनके ऐसे जे जिन चरण कमल संबंधी रज के लवलेश के लेश कूं वे बुद्धिमान कृपापात्र प्रणाम करें हैं और निरन्तर माथे में धारण करें हैं और संदेह रहित ऐसे स्वरूप वारो जाने हू हैं ॥ सो हे श्री गोकुलनाथ भक्तवरा, के हे श्रीजी के भक्त श्रेष्ठ, तुम सगरे हू मेरे ऊपर प्रसन्न होयकें अपनेदासानुदास मोकूं वा श्रीजी के चरण कमल संबंधी रज के लेश कणिका के कृपा विशय कूं प्राप्त करिये के विनको कृपापात्र बनाईयो ॥ जासूं कर्तु अकर्तु अन्यथा कर्तु में सर्व समर्था वारी वा कृपा सूं ही वा प्रिय कूं हों प्राप्त होयके तुम महेद भगवदीयन ने कृपा सूं अवश्य करिवे योग्य जो विश्व कूं उद्धार रूप छोटो सो कार्य है वामें अत्यन्त शीघ्र काम करिवे वारे सेवक भाव कूं हों धारण करत के वा कार्य कूं हों वेग ही करत और वा प्रिय के अनुभव और आशक्ति कू त्याग करत तुम कूं अत्यन्त प्रसन्न करिवे वारो होवुंगो ॥ तासूं तुम तो उपाधि के विना ही सर्व के हित करिवे वारे हो सो तुमकूं यामें के मेरे कूं वा प्रिय की चरण रज कणिका के कृपापात्र करिवे में विलंब करनो योग्य नहीं है ऐसे विनय करिकें अब भट्टजी प्रथम प्रसंग कूं कहें हैं के याके अनन्तर के जब राजनगर के निकट ही श्रीजी पधारे हैं और लक्ष्मीदास ने पठाये जे जन हैं वेहू प्रभुन के पधारवे के वृत्तांत कूं सुनिके वा प्रभुन के दर्शन करिवे कूं आगे आये भये हैं ॥ तब वे सगरे ही भक्त या प्रभु कूं प्रथम जैसे ही चारों ओर सूं वेष्टन कर लेते भये हैं कैसे हैं वे भक्त के वा प्रभु कूं आदर सहित देख रहे हैं और प्रेम सूं तिस तिस भेंट कूं धरके या प्रिय के तैसे चरण कमलन कूं प्रणाम कर रहे हैं और या प्रिय के फेर पधारवे सूं विरहाग्नि कूं शांत करायके उत्कृष्ट जीवन कूं प्राप्त भये हैं और तैसे ताप में हू शरीर में विकल होय रहे शरीर में जिनने अपनी स्थिति कूं छोड़ो नहीं है ऐसे जे अपने प्राण हैं विनकूं आदर सूं सराहना कर रहे हैं और इन प्राणन ने जो प्रत्युपकार रहित ऐसो प्रिय कूं दर्शनादि को अनुभव रूप महोपकार कियो है, तासूं अपने अन्तःकरण में विनके दास होयवे कूं भावना कर रहे हैं और हों पहेले जावुं हों पहेले जावुं

हूं ऐसे विचार सूं या प्रिय के मुख की शोभा को दरशन करिवे लिये आगे आगे ही होय रहे हैं और तब महाभक्ति वारो अत्यन्त नम्र होय रह्यो जो विठ्ठलदास है सो उत्सव करिवे लिये निमर्याद रस सागर वा प्रिय कूं प्रेम सहित अपने घर में पधरावतो भयो है ॥ तब पहेरे हैं नाना प्रकार के भूषण जिनोंने और अत्यन्त मनोहर अंगिया सूं और मनोहर वस्त्र सूं तैसे चित्त कूं हरिवे वारे और शोभायमान चमत्कार वाके लंहेंगा सूं जे शोभायमान हैं और जागे रो हैं चित्त में सोय रहे अनन्त उज्ज्वल श्रेष्ठ मनोरथन के समूह जिनके और जे प्रिय के तिस तिस श्रीअंग की शोभा के अनुभव सूं उदय भये जे हजारन हर्ष के समुद्र हैं विनमें अत्यन्त डूब रही हैं और बारंबार प्रसर रही है अत्यन्त उत्कंठा जिनों में और प्रफुल्लित है मुख कमल जिनके और रोमावली सूं शोभायमान सुवर्ण जैसे गौर हैं अंग जिनके और बढ़ रहे जे उत्साह रूप हजारन महा सिंधु हैं विनकी हजारन तरंगन सूं जे चंचल होय रही हैं और वा प्रिय के मुख रूप सिन्धु सूं प्रगट होय रहे जे मन्द हास्य रूप अमृत की वर्षा कूं हू पान करिवे वारी है दृष्टि रूप मीन जिनकी और वा प्रिय के अत्यन्त स्निग्ध जे कटाक्ष रूप वाणन के समूह हैं विनमें काँटे हैं ता समूह के मर्म जिनके और प्रिय के महारसमय वचन रूप मधु के पान सूं अत्यन्त उन्मत्त होय रहे हैं कर्ण पुट जिनके और या प्रिय के कपोलन को जो उल्लास है के प्रफुल्लितता है वाने पुष्ट करी है चुंबन की इच्छा जिनने और वा प्रिय ने जो अपने कूं देख्यो है तासूं उदय होय रही है रोमावली और नहीं समाय रह्यो है हर्ष को भार जिनमें और वा प्रिय के अधरबिंब को जो फरकनो है तासूं अनुमान करी जो प्रिय की इच्छा विशेष है वासूं जे विह्वल होय रही है और अपने विरह ताप सूं भयो जो या प्रिय कूं कृश भाव है वाके विचार सूं प्रगट होय रह्यो है मोह जिनमें और या प्रिय के रसदान में उद्यम वारो होय रह्यो जो सार्थकता वारो अपनो देह है वामें है बहुत मान जिनको और तिस तिस अपने मनोरथन के सूचना करिवे वारे जे गीत हैं विनके गान में जे तत्पर हैं और वाके आलिंगन में लोभी है हृदय जिनको और प्रिय के संग संवाद करवे कूं के रहस्य वार्ता करिवे कूं अत्यन्त उत्साह वारो है सुन्दर मन जिनको और प्रत्युपकार रहित जो या प्रिय कूं फेर पधारनो है वाको बड़ो ही उपकार जे बारंबार विचार कर रही हैं और विलक्षण तैसे अत्यन्त बढ़ि रहे तिस हर्ष सूं सगरे हू भवनों में

जे नहीं समाय रही हैं और पूर्ण चन्द्रमा जैसे सुन्दर है श्रीमुख जिनके और चंचल है दृष्टि जिनकी और सुन्दर है भ्रूअ जिनके और जोवन के विलास रूप उत्कर्ष कूं जे धारण कर रही हैं और शोभायमान उज्ज्वल हैं केश जिनके ऐसी जे कोमल स्वरूप वारी स्त्री हैं वे सगरी ही प्रेम सहित इत उत सूं तहां आयके मिल जाती भई हैं ॥ और जे तो अत्यन्त भक्ति वारी सुन्दरी तब कोऊ अलौकिक अर्थ की रक्षा के लिये कहूं कहूं और ठौर में स्थित हती विनकूं हू प्रभुन की चेष्टा कूं जानवे वारो जो भक्त विट्ठलदास है सो आज प्रभुन कूं पधारवे कूं उत्सव है या प्रकार सूं अपने घर में बुलावतो भयो है और बुलाई भई वे हू गुरु जनन सूं लज्जा रूप जो सांकल है विन कूं काट के वा विट्ठलदास ने पठाये भये श्रेष्ठ रथन पे चढ़िके सखीन के संग वेग ही चारों ओर सूं प्राप्त होती भई है और प्रिय के श्रीमुख रूप चन्द्रमा के दर्शन रूप अपार अगाध्य और उछल्लित हजारन तरंगन वारे समुद्र में ध्यान करती भई हैं और तरती भई हैं और पान करती भई हैं और मज्जन हू करती भई हैं और प्रथम ही निश्चय कियो है वृत्तांत जिनने ऐसे जे भक्त स्त्री और पुरुष हैं वे सगरे ही तिस तिस गाम सूं और देश सूं और स्थान सूं तैसे घरन सूं विविधि भेटान कूं ले करिके सो इहां ही मिलते भये हैं और इहां ठहेरे भये वे सगरे स्त्री पुरुष हू प्रेम सूं या प्रिय के चरण कमलन की शरण जायके अपने अपने मनोरथन कूं वेग ही प्राप्त होते भये हैं और रस सागर जो सों श्रीजी हैं विनके वा भाव कूं अत्यन्त ही सराहना करते भये हैं ॥ और विनकी प्रीति मात्र के ही अपेक्षा वारे सो श्रीजी विनकी थोरी सी हू वस्तुमात्र कूं बहुत ही मानते भये हैं और चौदह भुवनन को जो ईश्वर है सो आज दीपावली के उत्सव में हमारे घर में विराजमान होय रह्यो है यह विचारिके वे सगरी ही सुन्दरी अपने हृदय में अत्यन्त ही प्रसन्न होती भई हैं और निरदोष गुण सागर तैसे रसिकन के चक्रवर्ती वा अपने श्री गोकुलेश कूं प्रसन्न करिवे लिये वे सगरी सुन्दरी बड़े हर्ष सूं अभ्यंग स्नान और चन्दनादि लेपन कूं करती भई हैं और नूतन वस्त्र भूषण और तिलक तैसे काजर और अंगिया कूं धारण करत भई हैं और सुन्दर लेंहेंगा तैसे ऊपर को वस्त्र और पुष्प माला और रत्न मुक्ता आदि माला कूं धारण करती भई हैं और चन्दन कस्तूरी श्रेष्ठ कपूर अगर द्रव के चोखा आदि कूं अंगीकार करती भई हैं और पट वस्त्र गंध चूर्ण सुपारी इलायची और काथे

को चूर्ण और जायफल पत्र और त्वचा के दालचीनी और लवंग को अंगीकार करती भई हैं ॥ तैसे और हू विन विन वस्तुन कूं अंगीकार करती भई हैं ॥ और तैसे मिली भई वे सगरी सुन्दरी कोऊ अनिर्वचनीय भाग्यन के उदय सूं प्राप्त भये वा श्री गोकुल मंगल प्रिय कूं सुवर्णमय पीठ में बैठाय के और बहुत सघन कुमकुम के द्रव कूं लेकर गान करती वे सुन्दरी विविधि वाद्यन के नाद सहित ही स्नान करावती भई हैं और पहेरी है सुन्दर कुमकुम सूं रंजित धोती जाने और तैसे केशरी उपरना कूं जो धारण करि रह्यो है और कुमकुम सूं मिले भये चन्दन सूं कियो है तिलक जाने और रसिक सुन्दरीन ने प्रेम सूं अर्पण किये जे बहुत प्रकार के श्रेष्ठ रत्न खचित आभूषण हैं विनसूं जो मनोहर है और तीनो भुवनों की शोभा के जे समूह हैं सो आश्चर्य प्रेम विनय और हर्ष समूह के सहित ही जाके आगे हाथन कूं बांधि के बारंबार दंडवत प्रणाम कूं करके जाके चरणन की रज कूं सेवा कर रहे हैं ऐसी जो कोऊ एक परम भाग्यवारी अनिर्वचनीय शोभा है सो ऐसी शोभा हू उछलित होय रही है रोमावली जामें और निमर्याद है मोद को अश्रु रूप महा समुद्र को समूह जामें ऐसे गाढ़ ही जा प्रिय कूं आलिंगन कर रही हैं कहां के जे महा अनिर्वचनीय शोभा वारे हैं और कियो है आवश्यक कृत्यन को समूह जाने फेरि विलास सहित करी है भोजन लीला जाने और ब्रह्मा के महादेव कूं हू दुर्लभ है कणिका हू जाको ऐसे महाप्रसाद के दान सूं पवित्र कियो है विश्व जाने और पीछे प्रगट कियो है निद्रा लीला कूं क्षण जाने फेर आदर कियो है प्रवोध जाने ऐसे प्रिय श्रीजी कूं और गज मुक्तान सूं रचना कियो है शोभायमान चौक और हजारन रंग वल्ली जामें नाना प्रकार के अमूल्य रत्नन सूं मिली स्वर्णमय होय रही है भूमि जामें और रचना किये है करोड़न मंगल दीपक जामें ऐसे श्रेष्ठ मंडप में बिछायो जो रत्न खचित कम्बल है वामें धारण कियो है ॥ इन्द्र गोपगण के वर्ण जैसे लाला गोल अमूल्य तूल जामें और पीछे सोभायमान है ऐसो लाल रंग वारो बड़ो पीठ तकिया जामें ऐसो श्रेष्ठ जो आसन है वामें विज्ञापना नम्रता के सहित ही लायके भक्तजन बड़े प्रेम सूं पधरावते भये हैं ॥ ऐसे वा प्रिय कूं निमेष रहित ही देख रही जे वे प्रफुल्लित रोमावली वारी वे सुन्दरी हैं सो वे लक्ष्मी कूं हू दुर्लभ है कणिका हू जाको और उदय होय रहे जे निमर्याद चंचल हजारन अर्वुद तरंग हैं विनसूं जो शोभायमान है और जो पार रहित है और अगाधि

है ऐसो कोऊ अनिर्वचनीय हर्ष के समुद्रन में निमग्न होय जाती भई हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले त्रिपचास तरंग सम्पूर्णम् ॥५३॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग चौपनमो ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चतुर्थ पचासमो स्तरंग लिख्यते ॥५४॥

श्लोक -- **तास्वपिबंदे हं तायांधत्वालविक सिताभ्यां ॥ उत्कंपपुलक भाग्भ्यीतां द्रश्यपि पाणिपद्माभ्यां ॥१॥**

याको अर्थ -- और विन सुन्दरीन में हू हों तो वा सुन्दरी कूं प्रणाम करूं हू के भाव सूं कंपायमान और रोम हर्ष वारी होय रही जो तैसी सुन्दरी हैं वे अत्यन्त प्रफुल्लित और कंप और पलक वारे होय रहे हैं हाथ कमलन सूं सुवर्ण की धारा वारे जाके आंचर पल्लू हैं ऐसे शोभायमान पाग कूं धारण करिके लाखन चन्द्रमा के हू तृण जैसे करवे में है उद्यम के प्रगल्भता जिसकी और तीक्ष्ण कटाक्ष रूप अमृत सिंधु समूह के करोड़न आंसून कूं जो वर्षा करि रह्यो है ऐसे वा प्रिय के शोभायमान श्रीमुख कूं ऊँचो होय के देखत ही वा प्रिय सू वा पाग कूं वंधवावती भई है ॥१॥ और जो सुन्दरी निकट ही नयनन सूं वा प्रिय के श्री अंग की शोभा को पान करत ही वा श्रीअंग में सुवर्ण की धारान सूं टपकान सूं शोभायमान अमूल्य निर्मल लाल रंग वारे कंचुक कूं वा प्रिय सूं ही पहेरावती भई है वा प्रिया के जे चरण रज हैं जे ब्रह्मा कूं हू अत्यन्त दुर्ल्लभ हैं और सर्वोपर विराजमान हैं और अत्यन्त मनोहर हैं हौं तो अपने कूं विनके ऊपर हू बारंबार वार डारूं हूं ॥१॥ और मुक्ता रत्नमय है आंचर पल्लू जाके और सुवर्ण के हैं सूत्र जामें ऐसे कटिबंध कूं बड़े हर्ष सूं जो प्रियाजी या प्रिय के शोभायमान कमर में स्वयं बंधवावती भई हैं ॥ ब्रह्मादिकन कूं जाको लेश हू नहीं प्राप्त होय है ऐसे या सुन्दर दास्य कूं हों मन सूं निरन्तर ही चाहना करूं हूं ॥१॥ और कुंडलन सूं शोभायमान जो या प्रिय को मुख है और मुख सूं शोभायमान जो या प्रिय के कुंडल हैं सो जिनके दोनों नयनन कूं शीतल

करते भये हैं विन भाग्यवान को हू हों दर्शन ही करूं ।।१।। और मुक्तान के हारन सूं शोभायमान जो या प्रिय को विशाल वक्षस्थल है सो जिन कुच कुंभन को गाढ़ आलिंगन करवे लिये अत्यन्त इच्छा करतो भयो है सो विन सुन्दरीन के पुष्टता और ऊँचे भाव सूं शोभायमान भये जे वे कुच कलश हैं वे या प्रिय के मुक्ता और मणीन सूं खचित सुवर्ण की मुद्रिका कूं धारण करि रहे और रोम हर्ष वारे होय रहे जो श्री हस्त के ग्रहण कूं अत्यन्त अभिलाखा करत भये हैं सो प्रणाम के समय में विनके कपोलन कूं स्पर्श करिवे वारो और विनके उठायवे के मिस सूं विन कुचन में दियो है नख क्षत रूप सुन्दर रत्न जाने ऐसो जो श्री हस्त है सो कंप के मिस सूं मानो नांचत ही शोभायमान होतो भयो है और प्रिय के अधरपान लिये बढ़ि रह्यो है लोभ जिनमें और आपस में मुखचन्द्र कूं जे देख रही हैं ऐसी जे डरे भये मृग जैसे विशाल नयनवारी सुन्दरी हैं सो वे अत्यन्त लाल और बीड़ी के रस सूं सुन्दर रंग वारे वा प्रिय के दोनों दंत वसनन कूं के दोनों ओष्टन कूं बीड़ी आरोगवाय रही जो सुन्दरी हैं वाके अधर बिंब सूं होमावसित के आच्छादन कियो मानती भई है ।। कहा के प्रिय के जो दोनों ओष्ट लाल हैं सो मानो बीड़ी कूं आरोगाय रही वा प्रिया ने ही अपने अधर रूप वस्त्र सूं ढांपि लिये हैं ऐसे मानती भई है ।।१।। और कुमकुम के तिलक करवे समय में फरक रह्यो है अधर जामें ऐसे या प्रिय के श्रीमुख कमल सूं गिर्यो जो मन्द हास्य रूप मधु है सो दृष्टि द्वारा भीतर प्रवेश करिकें सो सरस सुन्दरीन के वियोग रूप बढ़ई ने के सुतार ने कृश किये जे अंग हते विनकूं वलात्कार ही क्षण मात्र सूं हू बढ़ाय देतो भयो है और बड़ो आश्चर्य है ।।१।। और वे भक्त सुन्दरी जन या प्रिय के आगे निर्दोष अद्भुत गुण वारे अनेक प्रकार के बड़े और भारी अत्यन्त उज्ज्वल बहुत रत्नन कूं और दृष्टि मन के सहित प्रेम कूं हू भेट करती भई है ।। और सो प्रिय श्रीजी यद्यपि विनने भेट किये रत्न और प्रेम ऐसे दोनों कूं हू अंगीकार करते भये हैं तथापि या प्रिय कूं विनके प्रेम में तो निरूपाधिक प्रेम होतो भयो है और रत्न तो विनने जासूं प्रेम सूं अर्पण किये हैं तासूं रत्नन में तो उपाधि सहित ही प्रेम होतो भयो है यह जाननो ।।१।। और तब प्रफुल्लित रोमावली वारे होय रहे हैं अंग जिनके ऐसी जे कमलनयी हैं सो श्रेष्ठ मुक्ता हीरा और चमत्कार वारे माणिकन सूं जटित जो सुवर्णमय मनोहर बड़ो पात्र है वामें धरि के दीपावली

कूं सजाय के वा प्रिय के प्रसर रहे प्रकाश समूह वारे शोभायमान वा मुख रूप पूर्ण चन्द्र पर वाद्य शब्द और गान के सहित आरती कूं वारती भई है ।।१।। और या समय में वा प्रिय के प्रेम आनन्द के समुद्रन कूं वर्षा कर रहे वेग सूं चारों ओर दौड़ रहे जे असंख्य कटाक्ष हैं वे विन सुन्दरीन के रोम सूं शोभित होय रही कपोल पंक्तिन को बलात्कार चुंबन करिकें और प्रकाशमान होय रही विनकी वा अधर सुधा को पान करिके और विनके अत्यन्त ही प्रफुल्लित होय रहे नयन कमलन में विहार करिकें और शोभायमान है गद्‌गद् रूप है हार जिनमें ऐसे विनके कंठन में दृढ़ ही आलिंगन करिके और तीक्ष्णता रूप खडग सूं विनके अंगिया रूप कपाटन कूं तोड़िकें विनके वक्षस्थल में प्रवेश करिके ऊंचे पुष्ट स्तन रूप सुवर्ण के कलशन में धारण किये जे शोभायमान रोम रूप रत्न हैं विन सगरेन कूं हू वे श्रीजी के कटाक्ष अपने हाथन में पुष्ट भये ही कर लेते भये हैं ।। और प्रफुल्लित है मुख और नयन रूप कमल जामें और मनोहर अलकावली रूप है सिवाल जामें और विराजमान है गंभीर नाभी रूप ह्रद जामें और शोभायमान निर्दोष स्वेत अतुल गुण रूप हंसावली सूं जो मिल्यो भयो है और स्तुति रूप गुंजा शब्दन सूं शोभायमान है मुख जिनको ऐसे भक्त रूप भौंरान को वांछित स्वभाव रूप है शीतलता जामें और शोभायमान दीर्घ भुजा रूप है अत्यन्त चंचल तरंग जामें ऐसे सौंदर्य सार रूप जलमय जो यह प्रिय रूप सरोवर है वामें विन सगरी चन्द्रमुखीन के नयन रूप जे मीन हते वे जैसे अत्यन्त विहार करते भये हैं और मज्जन करते भये हैं के पान करते भये हैं के प्रसन्न होते भये हैं के दौड़ते भये हैं के शयन हू करते भये हैं के जैसे अत्यन्त बोलते भये हैं के हंसते भये हैं के कूदते भये हैं के जैसे नाचते भये हैं तैसे इनकी अत्यन्त बुद्धिवारी रसना जो कछु विहारादि रस कूं प्राप्त भई है सो विन सुन्दरीन की कृपा सूं ही है ।।१।। और तहां भक्त जनन में सजायी जो विहार हटड़ी है जो अनेक प्रकार के भक्ष्य मांठ बूंदी के लड्डुआ और फेंनी मालपूआ और खांड और जलेबी तैसे और हू अत्यन्त मधुर असंख्य द्राक्ष आदि फलन सूं और अनेक प्रकार के वस्त्र मुक्तामणि हीरान के समूहन सूं शोभायमान होय रही है ऐसी हटड़ी में विन भक्तजनन के मनोरथ समूहन सूं पधराये भये सो प्राणनाथ श्रीजी दुर्ल्लभ है अनुभव के कणिका हू जिनकी ऐसी वेदोक्त लीला कूं आदर करते भये हैं ।। और भक्तजन तो तहां सुधा सूं

हू मीठी तिस तिस पदार्थ को लेवे की लीला को आदर करते भये हैं तामें अर्थ कूं जो बहुत और थोरो भाव रूप झूंठा महा कलह है विनसूं और तिस तिस वस्तु की हानी और उत्कर्ष गुण दोष रूप वाणी के विवादन सूं और तोल के घटती समान और बढ़ती के विचार रूप कलह सूं और देनो लेनो तैसे आछी रीति सूं देनो आदि महा विवादन सूं और जोर सूं पकडनो और लेनो तैसे दोय वार देने की प्रार्थना रूप बड़े झगड़ेन सूं और मन्द हास्य और हास्य मुख विकास तैसे पुलक और भ्रू भंग तैसे तर्ज्जनादि सूं मिले और स्वेद कंप हर्ष के आंसू जल और स्तंभ आदि सूं और वाणी के विलासन सूं मिले जे स्वयं ले लेनो हांसी करनो आपस में देखनो और स्पर्श करनो और अंचल कूं पकड़नो है विनसूं तैसे और के मिश सूं अलका और उरस्थल और हाथ आदि कूं जो नाना प्रकार सूं पकड़नो है विनसूं उदय भये सर्व सूं उत्कृष्ट हर्षों के समूह हैं विनके एक कणिका कूं हू वर्णन करिवे में हजारन वर्ष सूं हू को समर्थ होय सके अपितु कोई भी नहीं है ॥ और याके अनन्तर सो श्रीजी अत्यन्त रुचिर प्रसाद दान रूप लीला को दरशन कराय के भक्तन के समूह कूं सन्तुष्ट करिकें सगरी सुन्दरीन कूं रमण करावत ही रात्रि कूं गुजारते भये हैं ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले चतुःपचास तरंग सम्पूर्णम् ॥५४॥

कल्लोल जी चतुर्थ

॥ तरंग पचपनमो ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पंच-पचासमो स्तरंग लिख्यते ॥५५॥

श्लोक :- **प्रातः कार्तिका शुक्ला प्रतिपदा कृत्वास कार्यमाश्रेवः आवस्यकं समस्तं गोवर्धन भू भृतो वसं प्रणयन् ॥१॥**

याको अर्थ :- और प्रातःकाल कार्तिक की शुक्ल प्रतिपदा में सो श्रीजी सगरे आवश्यक कार्यन कूं वेग ही करिकें गोवर्धन पर्वत पर जैसे होय तैसे ही सगरे भक्ष्य भोज्य चुष्य लेह्य पदार्थन सूं मिले भये अन्नकूट कूं पूरत ही वहां देवाधिदेव श्रीमदनमोहन प्रभु के आगे वाकूं प्रेम सहित अर्पण करिके या

मदनमोहन प्रभुन की महिमा कूं चारो ओर विस्तार वारो करिकें और या मदन मोहन प्रभु कूं प्रसन्न करिके अपने भक्तन कूं हू हमारो यह प्रिय या प्रकार सूं क्रीडा करे है, ऐसे अत्यन्त प्रसन्न करत भयो है और मधुर रथवाही भाव कूं प्राप्त होय रह्यो विट्ठलदासजी जा रथ के ऊपर चढ़ि रह्यो है वा रथ के ऊपर विराज के कीका महेता सूं प्रार्थना किये सो करुणा सागर श्रीजी जय जय जय जय शब्द कूं कर रहे और उछल्लित आनन्द वारे होय रहे सगरे भक्तन सूं मिले भये ही वा कीका महेता के घरन में पधारते भये हैं और तहां सो कीका महेता अमूल्य वस्त्र आभरण तैसे विविधि भेटा और न्यौछावर धूप, मंगल आर्ती स्त्रोतन सूं और दंडवत प्रणाम और प्रेम सहित अपने सर्वस्व समर्पणन सूं तैसे और हू विविध मधुर प्रकारन सूं हू वा श्रीजी कूं अत्यन्त ही प्रसन्न करतो भयो है ।। और सो रस सागर श्रीजी हू रस और करुणा के समूहन सूं मिले भये कटाक्षन के समूहन सूं तैसे और हू महारसमय विन विन हास्यादि सूं तहां वा कीका महेता कूं तैसे विनके जनन कूं और तहां की स्त्रीन कूं और जीवन कूं अत्यन्त कृतार्थता करिकें फेर ही आनन्द रूप रत्नन के समूहन कूं वर्षा करत विट्ठलदास महेता के घर में पधारते भये हैं और सो कृपासिन्धु श्रीजी कबहू प्रेम विशेष सूं समीप आयके नम्र होय रही शरण आई कोऊ मठ भुजवे वारी सुन्दरी कूं अंगीकार करते भये हैं और सो मठ भूजवे वारी सुन्दरी वा श्रीजी के कृपाकटाक्ष रूप जे अद्‌भुत अमृत के समुद्र हैं विनमें न्हायवे सूं प्राप्त भई योग्यता कूं पायकें अत्यन्त प्रणाम करिके वा श्रीजी कूं आदर सहित विज्ञापना करत भई है "के हे गोकुलावृंदशा प्राणाधिक प्रियतम कहा के गोकुल की जे कमल नयनी हैं विनके प्राणन सूं हू अत्यन्त अधिक प्रिय हे प्रभो हम सरीखे दीन जनों के जागे भये उत्कट भाग्यन के समूहन सूं तुम जितने दिन या भूमि कूं पावन करो हे रसिकन के चक्रवर्ती प्रभो वितने दिन मेरे भुजे जे अत्यन्त मनोहर बना हैं विनकूं तुम कृपा सूं ही अंगीकार करोगे ही ऐसे या मठ भूजिवे वारी ने करी जो प्रेम सूं विज्ञापना है" वाकूं सो श्रीजी अंगीकार करिके वाके प्रतिदिन अर्पण किये विन भुजे चणान कूं सो सगरे भक्तन की आशा कूं पूर्ण करिवे वारे और कृपा के निमर्याद समुद्र सो श्रीजी बढ़ रही रुची विशेष सूं अत्यन्त सराहना करत आरोगते भये हैं और भक्तन के प्रति हू देते भये हैं सो चतुर कृपापात्र इतने सो हू वा मठ भूजवे वारी की कृतार्थता कूं विचार

लेवेंगे ॥ जासूं सो तैसी ही के अत्यन्त हीन हू ने ऐसे उत्तम वा पद की प्राप्ति करी है और कोऊ दिन में प्रातःकाल कियो है नित्य क्रत्य जानें और प्रकट करी है शालिग्राम की पूजा जाने ऐसे श्रीजी परम भक्तिवारे विट्ठलदास ने अत्यन्त मीठे अंजीर नाम वारे चार फल लायके जे समर्ण किये हैं विनकूं वाके प्रेम सूं अंगीकार करिके विनमें एक फल कूं तो कृपा सूं या विट्ठलदास के प्रति देकरिके और एक फल कूं हरिपत भट के प्रति दे करिके वाकी रहे दो फलन कूं सो ईश्वर स्वयं हू आरोगते भये हैं और वा समय में प्रेम सहित और बारंबार विनकू सराहना हू करते भये हैं तैसे कोऊ और समय में हू मेरे आगे हू विनकूं सराहना करते भये हैं और याके अनन्तर कोऊ और समय में इलायची और लवंगन को है चूर्ण जामें सुन्दर शोभायमान है नवीन गिरी के टंक जामें ऐसो तुष रहित गेहूं के चून और जल तैसे कपूर और कारी मिरच तैसे घृत और श्रेष्ठ मिसरी सूं कोऊ अद्भुत भक्ष्य कूं प्रेम सू सिद्ध करिके परम प्रेम वारी विट्ठलदास के मामा की बहू लावती भई है तब वा भक्ष्य कूं सो विट्ठलदास जी श्रीजी के प्रति अर्पण करते भये हैं और हे प्राणनाथ याकूं आरोगिये और याको नाम हू मेरे आगे प्रगट करिये और हे कृपासिन्धो तुम तो सगरे जगत में सर्वज्ञ भाव सूं प्रसिद्ध हो और चातुर्य रूप रत्न केतो रत्नाकर हो के समुद्र रूप हो सो इन सब के देखत ही मैंने पूछो है सो यदि तुम याको नाम नहीं कहे सकोगे तो तब वे सगरे पुरुष और सगरी हिरण नयनी सुन्दरी हू अत्यन्त निमर्याद होय के तिहारी सर्वज्ञता पर के तिहारी चतुराई पर नहीं हंसेंगे कहा, के अवश्य ही हंसेंगे और गोकुल में जे आपके मन्दिर में बसे हैं आपके सगरे हू लज्जित होयगें के हमारे प्रिय श्रीजी वा विट्ठलदास ने अर्पण किये भक्ष्य के नाम कूं नहीं जानते भये है ॥ ऐसे अभिप्राय वारे मंद हास्य सहित या विट्ठलदास में हांसी के वचन कूं सुनिकें या विट्ठलदास कूं तैसे याके संग वारे हू और सगरेन कूं आनन्दित करिवे लिये और रस सागर श्रीजी या भक्ष्य के नाम विचार कूं कोऊ क्षण अभिनय करिकें के वाके नाम कूं न जानत ही मंद मंद हंसत ही सो ईश्वरेश्वर श्रीजी कहेत भये हैं के जो हमारे ऊपर हंसे हैं सो अवश्य हू हांसी करे सो विचार करत हैं हम आज तो याके नाम कूं नहीं जान्यो है तासूं बड़े बुद्धिमानन सूं हू याको नाम नहीं जान्यो जाय है तासूं हे चतुरवर तुम हू याके नाम कूं मेरे आगे प्रगट करोगे सो विजय किये हैं अमृत सार

के करोड़न लाखन समुद्र जाने ऐसे रसमय वा प्रिय के वचनामृत कूं कान रूप चुलुकन सूं पान करिके सो विट्ठलदास वाके उदार रूप श्वेत मंद हास्य कूं प्रगट करतो भयो है और सो विट्ठलदास श्रवण कर रहे हैं सब जनों के आगे याको नाम कहेनो उचित नहीं है ऐसे सूचना करत क्षण एक ठहेर के पीछे या प्रिय के कान में हंसत हंसत ही ऐसे कहेतो भयो है के हे प्रिय याके नाम कूं सगरे जन पवर्ग रहित रोट फल कहेत हैं के रोटला कहेत हैं ऐसे मनोहर याके वचन कूं सुनकर प्राप्त भयो है आनन्द जिनमें और प्रसन्न भयो है मन जाको ऐसे सो श्री गोकुलाधीशजी तैसे मंद हास्य कूं करते भये हैं के जैसे सगरे हू जन अपने कूं पूर्णचन्द्र की चन्द्रिका में अमृत समुद्र के कल्लोलन सूं अभिषेक वारो हू के न्हायो भयो हू मानते भये हैं सो इहां जा विट्ठलदास मेहता आदिकन को और विनके घर वारे हू सगरे स्त्री पुरुषन को श्रीजी के संग ऐसो प्रश्न और योग्यता प्रीति संबंध तैसे वचन और व्यवहार और लेनो देनो ऐसो है तो इन सगरेन के भाग्य कूं कहवे में को समर्थ होय सके अपितु कोऊ नहीं होय सके है ॥ और यह विट्ठलदास हू कब हू अपने परम प्रिय श्री गोकुलपति के निकट अपने प्रेम कूं सूचना करिवे वारे भाषा पद कूं लिखतो भयो है के --

माहारे मन तूं एकलो तहारे मन सो लख पपीयड़ो पीऊ पीऊ करे मेघ न जाने दुःख ॥

ऐसे पद कूं लिखतो भयो है सो हे सुन्दर सूं बुद्धिवारे याके अर्थ कूं हौं कहों हों ॥ सो जानोगे के मेरे मन में तो तुम एक ही वसो हो और तिहारे चित्त में तो लाखन प्रिय हैं और पपीहा पक्षी तो मेघ के लिये पिय पिय ऐसे बारंबार पुकारे है और मेघ तो वाके दुःख कूं जाने हू नहीं है सो स्वजनों के ऊपर दयालु जो सो भगवान श्रीजी हैं सो वाकूं वाचके वाके योग्य उत्तर भाषामय पद कूं ही लिखते भये हैं के --

जिते कित महुतरे सज्जन चित चढ़ीया चित गयंद महुत ज्यों बहुर न उतरीयां ॥

हे सुबुद्धयः याके अर्थ कूं हों कहूं हूं सो जानोगे के जा कोऊ मुहूर्त में तुम साजन मेरे चित्त में चढ़े हो चित्र में लिखे हस्ती के ऊपर महावत जैसे फेर नहीं उतरे है सो जासूं ऐसो प्रेम तो विट्ठलदास कूं या श्रीजी में है और या श्रीजी कूं वा विट्ठलदास महेता सूं ।। वाकी महिमा कूं वर्णन करिवे में को समर्थ होय सके ? अपितु नहीं होय सके है ।। और हू है के अपने निजधाम श्री गोकुल में सभा में विराजमान होय रहे साक्षात भगवान श्रीजी हू विन विन श्रेष्ठ भक्त महात्म के सुनत ही मेरे प्रति ही कहेत भये है के जो मैंने भाषा पद लिख्यो हतो वा पद कूं सो विट्ठलदासजी बड़े आदर सूं सदैव ही अपने माथे पै धारण करिके ही स्थित होतो भयो है ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले पचपनमो तरंग सम्पूर्णम् ।।५५।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग छप्पनमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ षट-पचासमो स्तरंग लिख्यते ।।५६।।

श्लोक -- **कदाचिद्र हसि प्रेष्टं प्रेष्टं श्रृंगारदेऽभिधां सप्रेमोपन्न तातन्वी रुरुचेऽस्मैभ शंखलुः ।।१।।**

याको अर्थ -- भोजन लीला रूप अमृत की वर्षा है विनसूं अत्यन्त प्रसन्न किये हैं अपने भक्त समूह जाने ऐसे सो प्रिय श्रीजी स्त्रीगणन कूं विजय करिवे वारी है मधुरता जाकी ऐसी कुंवरबाई नाम वारी प्रियाजी कूं स्वयं स्मरण करिके और वा प्रियाजी के स्वभाव तैसे गुण और रूप तैसे विनय और सेवा तैसे प्रेम कूं और सखा भाव तैसे दास्य और आदर तैसे उज्वलता कूं और वाके विभ्रम तैसे, हास्य वचन और प्रेम दृष्टि तैसे भ्रूभ्रंग मंद हास्य तैसे चतुरता और विन विन वचनन कूं हू स्मरण करिके निमर्याद अपार रस के सागर रूप सो श्रीजी मानो कोउ सूं बुलाये भये ही के अत्यन्त प्रेरणा किये भये ही के कोऊ सूं मानो अत्यन्त आकर्षण किये भये ही रसोईघर में शोभायमान होय रही वा सुन्दर

दन्त वारी प्यारीजी के देखवे कूं पधारते भये हैं तहां अपने प्रिय के तिस तिस भक्षादिक पाक में जो सुकुमारी तत्पर हैं और धोये भये मनोहर अमूल्य दुकूल कूं के साड़ी कूं जो पहेर रही है और अधिक जाने नहीं पहेरी है और भाल में विराजमान सुन्दर कुंमकुंम बिन्दु कूं जामें और शोभायमान है वेणी जाकी और बहुत भूषणन सूं न मिल्यो जो देह है वाकी हू जो शोभा है सो सौन्दर्य सार के सिन्धु वारी है वा शोभा सूं जाने लक्ष्मीन की हू विजय कियो है के परम सुन्दरी है और विस्तार वारे हैं नयन कमल जाके और करोड़न पूर्ण चन्द्रमान कूं हू विजय करिवे वारी है मुख की शोभा जाकी और शोभायमान है तनुका मध्य देश के कटि जाकी ऐसी या अनन्त प्यारी सुन्दरी कूं वेग ही प्राप्त भये सो श्रीजी निमेष रहित ही देखते भये हैं और अत्यन्त दुर्ल्लभ तैसे विना यत्न समूह के ही अपने निकट पधारे वा प्यारे को दर्शन करिके लज्जा कूं प्राप्त भई ही मानो सो प्यारी जी कहूं विस्तार वारे अनिर्वचनीय हर्ष सागर में डूब ही जाती भई है और लज्जा सूं अत्यन्त ग्रहण करी जो सुन्दर नयनी प्यारी है तथापि घूंघट पट सूं अपने मुख कूं छिपावने की इच्छा हू करत भई है ।। तथापि हों सो यह मानूं हूं के विस्तार वारो हू घूंघट पट ही वा प्रिय सूं डरप के हू विरल सूत्र वारे होयवे सूं मुख कूं आच्छादन नहीं करतो भयो है के स्वामिनीजी लज्जा सूं वेग ही जो घूंघट कियो है सो अत्यन्त सूक्ष्म धारा वारे बस्त्र होयवे सूं वो सूत्र विरल विरल होय जातो भयो है के फाट गयो है और मुख के श्वास आदि स्वाभाविक सुगंधि के समूहन सूं बहुत वार ही घ्राण कूं हू के नासिका कूं हू तृप्त करती भई है ।। और उत्साह के मधुर वचन और रतिम कुंजन मणित रूप जे अमूल्य मणि है विनसूं ही प्रिय की प्रसन्नता कूं हू करती भई है ऐसे या प्रकार तासूं मुख को आछादन नहीं भयो है यह भाव है ।। और यह सुन्दर दन्तन वारी सुन्दरी प्रमोद के सिन्धु में अत्यन्त निमग्न होती भई है और या प्रिया कूं निकारवे के लिये ही मानो प्राप्त भये प्रिय श्रीजी हू वा हर्ष के समूह में अत्यन्त निमग्न होय जाते भये हैं और अपने प्रिय कूं जान रही अत्यन्त रक्षा करिवे लिये तहां ही प्राप्त भये वा ईश्वर प्रिय कूं जान रही सो प्रियाजी कियो है बड़ो उपकार जाने ऐसे वा प्रिय कूं अपनो चित्त ही जामें साक्षी है ऐसे बहुत प्रकार सूं ही सेवन करत भई है और सर्व प्रकार सूं चाहना योग्य वा प्रियाजी कूं हू सो प्रिय श्रीजी सेवन करते भये हैं

तब सो प्रियाजी आनन्द के आंसून सूं अर्घ कूं रचना करिके हृदय रूप मनोहर आसन कूं रचना करती भई है और उदय भये पसीना के जलन सूं अत्यन्त ध्यान कूं रचना करती भई है और उत्साह के समूह रूप विन तापन सूं प्रिय के अंगन के पोंछवे कूं रचना करती भई है और अपने शरीर रूप सुवर्ण के महल पर चढ़नो रूप अंग लेपन नाम वारे चन्दन लेप कूं रचना करती भई है दृष्टि तैसो भ्रुअ और हस्त रूप कमलन सूं पूजन हू करती भई है ।। और अत्तर कस्तूरी आदि आगंतुक सो कुंवरबाई जी प्रिय को पूजन करती भई है, और या प्रकार के संबंध में वा कुंवरबाई जी की जे भक्ति वारी संग की सखी हतीं सो वा कुंवरबाई के तैसे तिस तिस मनोरथन सूं के वाकी जिन सखीन के तैसे तैसे विन मनोरथन सूं के पल पल में निरन्तर बढ़ि रही अपनी उत्कंठा सूं और भूमि के तैसे वाके जीवन के तैसे सेवा काल के भाग्यन सूं और विन सुन्दरीन के नयन तैसे हृदय के और शरीरन के भानन सूं और सगरे भक्तन के कान और रसना और अंग तैसे मन के हू भाग्यन सूं वा कुंवरबाई के तिस तिस रस कूं पान करिवे की इच्छा वारे जो रस सागर सो प्राणनाथ गोकुल के राजा सो प्रिय हैं वाकूं श्रेष्ठ रत्न खचित कंवलमय सजाये भये अमूल्य आसन के ऊपर पधरावती भई है तब अपार और अगाधि तैसे शोभायमान उछल रहे करोड़न तरंगों वारे हास्य के करोड़न समुद्र और विन दो के तैसे रसों के और मंद हास्य के और कथान के तैसे नर्म वचनों के ही करोड़न समुद्र ही प्रवर्त होते भये है ।। तब वा प्रिया की आपसमें प्रीति और विश्वास तैसे अरस परस देखनो और अभेदे तैसे उत्साह कूं देखकें वे सगरी सखी ही आनन्द के समुद्र में गिरि जाती भई हैं तब सो प्रिया कुंवरबाई जी प्रिय के वा विश्राम समय कूं जानत ही सखीन के मुख सूं वेग ही विज्ञापना कूं करत भई है के हे प्रेष्ठ अत्यन्त प्रभो या रसोई घर में ताप और श्रम अवश्य ही स्पर्श करेंगे तासूं आप वेग ही विश्राम घर में पधारिये तहां त्रिलोकी के मणि रूप अपने स्वरूप सूं पर्यंक कूं शोभायमान करिये ।। तब तो सुन्दरी हंसत ही कहेती भई है के हे प्रभो आप वितने पर्यन्त तो अपने चरण कमलों के स्पर्श सूं तैसे पर्यंक सूं शोभायमान होय रहे विश्राम मन्दिर कूं ही सुगंधित करीये सो याके अनन्तर के सखी के वचन कूं सुनके वाके अभिप्राय कूं जानवे वारे प्रिय श्रीजी वैसे ही करते भये हैं के विश्राम घर में पधारते भये हैं ।।१।। और सो सुन्दरी प्रियाजी

हू क्षण के अनन्तर ही अपने चरण कमलन के धारण करवे सूं वा प्रिय के विश्राम घर कूं पूजन करती भई है ।।१।। और वा प्रियाजी ने करी जो वा विश्राम घर की वैसी पूजा रूप कल्प लता है सो प्रिय में के या प्रियाजी में अर्बुद तरंगन सूं शोभायमान जिन असंक्षात हर्ष के समुद्रन कूं फलती भई है के फल रूप सूं देती भई है विनकूं संख्या करिवे में को समर्थ होय सके ।।१।। और यहां गोपालदास मुंशी और जोगीदास तैसे वांसण यह सब मिलिके ही प्रिय के निकट ही मेहता नरसिंहदास ने किये जो पद समूह है विनकूं अत्यन्त सुन्दरही गान करते भये हैं ।।१।। और पोपा व्यास और रायचन्द तो तहां विनोद कूं के हांसी खेल कूं करते भये हैं ।।१।। और अत्यन्त मनोहर तैसे हांसी कूं प्राप्त करिवे वारो नवीन नवीन वार्ता कूं सुनाय के प्रतिदिन ही प्रिय कूं बारंबार प्रसन्न ही करावते भये हैं ।।१।। और विष्णु भट तो कौतुकन कूं करत तैसे अत्यन्त हंसायवे वारी वार्तान कूं हू करत तैसे अत्यन्त विदूषक भाव कूं करत प्रिय कूं अत्यन्त प्रसन्न करावत भये हैं ।।१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले षटपचास तरंग सम्पूर्णम् ।।५६।।

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग सत्तावनमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सप्त-पचासमो स्तरंग लिख्यते ।।५७।।

श्लोक :- **पंडिता द्वादशभृशं दर्धियो दुर्मते स्थिताः पौढ्या जगन्मोह्यंतो दरा चार प्रवर्तकीः ।।१।।**

याको अर्थ -- और यहां अत्यन्त दुष्ट बुद्धि वारे बारह पंडित हते जो दुष्ट मनमें स्थित हते तैसे जे अपनी बड़ाई सूं जगत कूं मोह करवे वारे हते और दुष्ट आचार के प्रवर्त करिवे वारे हते ।।१।। और श्रुती स्मृति तैसे पुराणादि के तैसे श्रीमद् भागवत के हू विरुद्ध ही करिवे वारे हते और वा श्रीमद् भागवद् आदि सूं अन्यथा हू करिवे वारे हते और अपने आप ही जे कछुक मन कूं कल्पना

करिवे वारे और तैसे ही कहिवे वारे हते और मायावाद ही में जे तत्पर हते और ब्रह्मवाद के संग द्रोह करिवे वारे वे शठ हते और प्रभुन कूं जो सुन्दर लीला वारो महा आनन्दमय स्वरूप है वाकूं विद्वेष करिवे वारे हते और वा प्रभु को जो अनन्त कल्याण गुणन के समूह हैं विनकूं छिपायवे वारे हते और वे सगरे ही अत्यन्त एक मत में ही स्थित हते और वैष्णवन के संग द्रोह करिवे वारे हते और पापी तैसे वंचक हते और केवल उदर के ही भरवे वारे हते और जगत में बड़ी प्रतिष्ठा वारे हते ॥ तासूं जे गर्धव हते ॥ ऐसे जे बारह पंडित महामूर्ख हो सो वे विवाद करिवे लिये प्रभुन के निकट आते भये हैं ॥ तब सो अधीश्वर श्रीजी विनकूं देखिके हंसत हंसत ही विनके मत कूं सुनिके तब श्रुति रूप धनुष कूं लेकर और पुराण रूप वाणन कूं स्मृति रूप ऋषि कूं और भागवत रूप शक्तिन कूं शास्त्रन के वाक्य रूप परसान कूं और महा अनुभाव भक्तन की जे युक्ति रूप असि धेनुक है विनकूं लेकर और बुद्धिमानो के अनुभव रूप कर पत्र कूं लेकर विनके मत कूं सो परमवीर श्रीजी शतखंड ही के अनेकान खंड कर देते भये हैं ॥१॥ सो जगत में वार भट्टी नाम सूं प्रसिद्ध जे वे द्वादस भट्ट हते जब श्री गोकुल के परमेश्वर श्रीजी विन सबन के समक्ष ही मायावाद रूप मत कूं खंडन कियो है तब प्रतिभा के नष्ट होयवे सूं श्याम जिनके मुख होय गये हैं ऐसे वे कहिवे में कछुक हू समर्थ न होयकें प्रभुन के प्रभाव कूं जानके लज्जित होय के या प्रभुन के चरणन में वेग ही मूलसूं कटे वृक्ष जैसे गिरि जाते भये है और हाथन कूं बांधिके ही प्रभुन कूं विनय कर कहेते भये हैं ॥१॥ के हे कृपासागर हों अपराध शतन कूं तो लिखतो भयो हूं और हजारन अपराधन कूं तो हौं करतो भयो हूं और हजारन अपराधन कूं तो विस्तारित करतो भयो हूं और हे ईश्वर करोड़न अपराधन कूं तो करतो भयो हूं और अर्बुद अपराधन कूं तो रचना करत भयो हूं तथापि हौं तो आपको दास हूं तासूं ही हे कृपासागर मोकूं पालन करोगे ही ॥ ऐसे जब वे सगरे विनय करते भये हैं ॥ तब सम्पूर्ण भक्तन के मुख सूं प्रगट भयो जो जय जय शब्द है सो चौदह लोकन कूं निरन्तर ही पूर्ण कर देतो भयो है ॥१॥ ऐसे तहां तहां तब तब वाद के लिये आये और हू सगरे पंडितन कूं सुन्दर बुद्धि वारे प्रभु श्रीजी विजय कर लेते भये हैं ॥१॥ याके अनन्तर और ठौर में हू रहिवे वारे भक्तन के जे अत्यन्त प्रबल भाग्य है विनसूं आकर्षण किये भये सो श्रीजी या स्थल

सूं प्रस्थान करिवे लिये जा क्षण कूं निरधार करते भये हैं सो वा क्षण में ही संग चलिवे वारे भक्त हू तैयार होय जाते भये हैं और और सगरी सामग्री जाकी सजाय के करते भये हैं तैयारी करी है ॥ ऐसो रथ हू त्यां स्थित है और हरिदास आदिक जे अस्वपाल हैं विनने पलायण कूं साजन सूं शोभायमान करी है पीठ जिनकी ऐसे जे अश्वराज हैं वे हू वेग ही तहां स्थापित किये हैं तब प्रस्थान में तैयार भये हू सो श्रीजी विन रसभक्ति वारी सुन्दरीन के तैसे स्नेह विशेष सूं और वियोग की कातरता सूं हू मानो सांकलन सूं अत्यन्त बांधे भये ही चलिवे में समर्थ न होयके सो श्रीजी कितने एक दिन ठहेर के सो करुणा के सागर पुरुषोत्तम मुगटमणि श्रीजी के विन विन भक्तन के मनोरथ समूहन कूं पूर्ण करत और विन विन भक्त सुन्दरीन कूं अत्यन्त रमण करावत और तैसे विन विन भक्तन कूं हू आनन्द दान करत ही तहां विराजमान होते भये हैं और रंक जैसें महानिधि कूं प्राप्त भये वा अपने प्रिय कूं प्राप्त होयके वे सुन्दरीजन प्राप्त भये परमानन्द सूं चौदह लोको में नहीं समाते भये हैं ॥१॥ और भगवान कमलनयन श्रीजी तहां जितने ही दिन विराजमान होते भये हैं वितने दिन ही क्षण क्षण में ही रस के समुद्रन कूं ही वर्षा करते भये हैं ॥१॥ और रसिकन के चक्रवर्ती जो कृपासागर श्रीजी हैं सो ब्रह्मादिकन कूं हू जिनको लेश हू नहीं जान्यो जाय ऐसी अपूर्व विविधि प्रकार की लीला कूं प्रगट करते भये हैं ॥१॥ और जहां श्रीजी विराजमान हैं तहां चारों ओर ही तहां तहां ही कपूरन की तैसे कुमकुमन की और तहां तहां कस्तूरीन कूं और सुन्दर वस्त्रन की तैसें रत्नन की और सुवर्णन की तैसे करोड़न मुक्तान की और हीरान की और श्रेष्ठ फुलेलन की चन्दन की और अगरु चन्दन के रसन की के अत्तर चोवान की और पुष्प मालान की तैसे और हू विन विन पदार्थन की तैसे भूषणन की हू और भक्ष्य तैसे पानन की हू राशि की राशि हू तहां तहां देखवे में आती भई है ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धौ सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोले सप्तपचासि तरंग सम्पूर्णम् ॥५७॥

कल्लोल जी चतुर्थ

।। तरंग अट्ठावनमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्ट-पचासमो स्तरंग लिख्यते ।।५८।।

श्लोक -- **तुर्थे सिकंदरपुरादि विहार भयेत्र कल्लोले प्रथमेऽगदं तरंगे श्री गोकुलभूप ते स्ताद्दक ।।१।।**

याको अर्थ --सिकन्दरपुर आदि में विहार रूप जो यह चतुर्थ कल्लोल है यामें प्रथम तरंग में श्री गोकुल भूपति के तैसे प्रगट रसस्वरूप कूं मैने वर्णन कियो है और द्वितीय तरंग में तो तिसि तिस देश के जे रसिक भक्त सुन्दरी हैं विनकूं जो उछल्लित भयो भाव है सो मैंने कह्यो है ।।१।। और तृतीय तरंग में तो प्रभु और चांपाभाई जी को संवाद और चाचा हरिवंश जी को जो विज्ञप्ति पत्र आयो है सो हू कह्यो है और चतुर्थ तरंग में श्री गोकुल सूं प्रभुन के शुभ प्रस्थान कूं कहेत भयो हूं ।।१।। और पंचम तरंग में तो गोकुल की जे मृगनयनी हैं जे श्रीजी के विरह सूं विकल हैं और प्रस्थान के समय में जे यमुना तट पर विकल होय रही हैं विनकूं जो पीछे अपने अपने घरन में आवनो है वाकूं कह्यो है और छटे तरंग में तो प्रिय को नित्य विहार मैंने कह्यो है और सातमे तरंग में पेठ नगर में जो प्रिय को निवास है सो मैंने कह्यो है और यासूं आगे आठमे तरंग में तो प्रिय को जो मार्ग विनोद है सो मैंने कह्यो है और नवम तरंग में तो प्रिय श्रीजी ने जो गोकुल की चन्द्रमुखीन कूं अनुसंधान कियो है वाके जे प्रकार हैं सो मैंने वर्णन किये हैं और दशमे तरंग में तो प्रिय श्रीजी ने जो अपनो समाधान कियो है सो मैंने कह्यो है और अगियारमे तरंग में तो सुन्दर सरोवर जो प्रिय को विलास है सो मैंने कह्यो है और यासूं आगे के द्वादशमे तरंग में वा राधाबाई पर जो श्रीजी ने कृपा करी है सो कही है और रणस्तंभ में पधारने कूं हू कह्यो है और त्रयोदशमे तरंग में लाडबाई पर जैसे श्रीजी ने अनुग्रह करो है सो मैंने कह्यो है और चौदहवे तरंग में तारण शाह के उद्धार कूं निरूपण कियो है और पंचदशमे तरंग में महारसमय मेरे प्रभु के संगम सूं रसमय तैसे पिछोल नाम सरोवर की तैसी महिमा कूं वर्णन

किये है और नाद्यो ग्राम में पधारवे कूं खीरा नाम दास में हू कृपा कूं और यासूं आगे झडोल देश के राजा हरिदास के घर में पधारवे कूं और वाके हू मनोरथ कूं जो प्रिय ने कियो है वाकूं हू मैंने कह्यो है और सोलमे तरंग में हरपाल नाम भिल्ल भूमिपाल पर जो प्रभुन ने कृपा करी है वाकूं हू सो मैंने कह्यो है और सप्तदशमे तरंग में प्रभुन को वड़ाली पधारवे कूं और बीरमदेव नाम राजा में हू अनुग्रह कूं कह्यो है और अष्टादसमे तरंग में प्रभुन ने दुबे गदाधर कूं जो सनमान कियो है तैसे दुधालिया गाम कूं जो पवित्र कियो है और तहां रहिवेवारी आछी भावुक धनाबाई में जो प्रभुन ने कृपा करी है वाकूं हू मैंने कह्यो है और सादरडू गाम में जो प्रभुन कूं पधारनो है तैसो कर्णदास में और आपको सेवक भौमिक गोविंददास पर हू जो प्रभुन ने कृपा करी है सो हूं मैंने कह्यो है और मोढासा गाम में हू प्रभुन के पधारवे कूं और वाके निवासी जीवों में हू प्रभुन ने जो कृपा करी है सो हू मैंने कह्यो है और बड़नगर में जो प्रभुन को प्रवेश है और तामें रहिवे वारी कमलनयनीन कूं जो मेरे प्राण प्रभु के श्रीमुख कमल के दर्शन में प्रेम उत्साह भयो है सो हू मैंने कह्यो है याके आगे एकोनबीसमे तरंग में देवजी के घर में प्रभुन के विराजवे कूं और वा प्रभुन की सेवा के अर्थ भलीबाई और राजबाई के आगमन कूं तैसे और हू जे इहां की कोऊ भाग्यवारी सुन्दरी हैं विनने जो प्राणप्रभु के निमित्त सरोवर में गमन कियो है वाकूं हू मैंने कह्यो है और बीसमे तरंग में वा सरोवर में प्रभुन को जो पधारनो है तैसे विन सुन्दरीन कूं जो संध्योपासन के मिस सूं तो या सरोवर सूं प्रभुन कूं तैसे विन सुन्दरी के गमन कूं मैंने कह्यो है और बाबीसमे तरंग में तो वीसल नगर में प्रभुन के पधारवे कूं और असोक आदि गाम में हू पधारवे कूं तैसे गोविंददास में कृपा कूं और मेहता गोविन्ददास तैसी. वाकी मैया में हू प्रभुन की कृपा कूं मैंने कह्यो है और यासूं आगे मोटिया गाम में जो प्रभुन कूं पधारनो है और तहां गोपी भाई कूं जो चरित्र है तैसे वाके घर में विराज के प्रभुन ने वाके मनोरथ जैसे पूरण किये हैं सो हू मैंने कह्यो है और त्रेबीसमे तरंग में तहां चारों ओर सूं तैसे तैसे भक्तन को जो आवनो है सो मैंने कह्यो है और चौबीसमे तरंग में वा प्राणनाथ कूं जो तैसे महारसमय स्वरूप है सो वर्णन कियो है और भक्त कूं जो वा स्वरूप को दर्शन भयो है और वा स्वरूप सूं जो विन भक्तन कूं धैर्य दान है सो हू मैंने कह्यो है और

पच्चीसमे तरंग में जो प्रभुन के आगे भक्तजनों ने विज्ञापना करी है और पवित्रा अर्पण कियो है तैसे जो भेट करी है विनकूं जो श्रीजी ने अंगीकार कियो है और तहां श्रीजी ने जो निंद्रा विहार कियो है तैसे विन सगरे भक्तजनों ने हू निद्रा में श्रीजी के संग विहार कियो है सो हू मैंने कह्यो है और प्रभुन ने जो प्रस्थान समय में वस्त्र पहेरे हैं और प्रसादी वस्त्र कूं जो श्री मस्तक पर बांध्यो है और छत्री जो धूप खेड़ी है वाकूं जो श्रीजी ने अंगीकार कियो है सो हू मैंने कह्यो है और छब्बीसमे तरंग में मोढिया गाम सूं जो प्रभुन कूं शुभ प्रस्थान है सो मैंने कह्यो है और सत्ताबीसमे तरंग में जो बाजेन के समूह को शब्द भयो है विनकूं कह्यो है और भक्तन के वचन हू कहे हैं और अठाबीसमे तरंग में प्रभुन को आसारुआ गाम में मनोहर उत्सव सूं शोभायमान भायला कोठारी के घर में जो पधारनो है सो मैंने कह्यो है और उनतीसमे तरंग में जो इहां भक्तन कूं सुन्दर समाज भयो है तैसे विनकूं जो अनुराग है जो सेवा है सो सो सगरो हू मैंने कह्यो है और तीसमे तरंग में नटादिकन ने जो परमेश्वर श्रीजी कूं प्रसन्न कियो है और प्रसन्न होयके वा प्रभुन ने जो वे नटादिकन प्रति वस्त्र द्रव्यादि दान दियो है सो हू मैंने कह्यो है और एकत्रीसमे तरंग में तो प्रभुन के आगे श्रीमद विट्ठलनाथ ने जे विज्ञप्ति करी है सो और वाके घर में जो प्रभुन को पधारनो है तैसे तहां सुन्दरीन कूं जो वा प्रभु में अनुराग है सो हू मैंने कह्यो है और बत्तीसमे तरंग में तो प्रभुन की रस लीला के अनुकूल जे भक्त हैं और रसात्मक जे चन्द्रमुखी हैं वे हू मैंने वर्णन करी है और सुन्दर तेतीसमे तरंग में तो शृंगार दे नाम वारी सुन्दरी जो श्रीजी कूं पवित्रा पहेरायवे लिये प्रिय के निकट पधारी है और वा समय में जो महारसमय या प्रभुन कूं वाने अनुभव कियो है और शृंगार दे ने जो प्रणाम कियो है वामें जो प्रिया प्रिय कूं प्रेम है सो हू मैंने कह्यो है और चौंतीसमे तरंग में तो वा सुन्दरी ने जो वा श्रीजी कूं सुन्दर मधुर सो पवित्रा पहेरायो है तैसे और हू जो रस कूं प्रकाश वारो सो सो चरित्र है सो मैंने कह्यो है और पेंतीसमे तरंग में शृंगारदे कूं जो विहारानुभव भयो है वाकूं मैंने कह्यो है और छतीसमे तरंग में प्राणनाथ के अभिसारिका जो निर्णय भयो है सो मैंने कह्यो है और सेंतीसमे तरंग में जैसे प्राणनाथ कूं अभिसार है के शृंगार दे के निकट पधारनो है सो मैंने कह्यो है और अड़तीसमे तरंग में जो वा सुन्दर नयनी प्यारी ने किवाड़ लगाय दीये

है और वासना नाम वारे भक्तन कूं जो प्रिय को अनुभव भयो है सो मैंने कह्यो है और तैसे वा सुन्दरी ने जो किताड़ खोले हैं और तहां जो प्रिया प्रिय की विविधि रस लीला भई है सो कही है और यासूं एकोनचालीसमे तरंग में तो वाने जो मान कियो है सो कह्यो है और चालीसमे तरंग में तो विपरीत रमणादि कूं कह्यो है और एकचालीसमे तरंग में उछल्लित रस सिंधुन के समूह रूप तैसे प्रिय को जो दर्शनादि है सो कह्यो है और बैतालीसमे तरंग में तो प्रिय की मुद्रिका जैसे चुराई है सो कह्यो है और तेंतालीसमे तरंग में तो जैसे प्राणानाथ ने मानबाई के प्रति अभिसार कियो है सो कह्यो है और चौवालीसमे तरंग में तो रस रूप जे प्रभुन की लीला है सो मैंने कही है और पेंतालीसमे तरंग में लखी भाई के मनोरथ कूं पूर्ण करिवे वारे कजरी तृतीया के जागरण उत्सव कूं मैंने कह्यो है और छेंतालीसमे तरंग में हिंडोरा झूलन लीला कूं कह्यो है तैसे प्रथ्वी शैय्या के त्याग करिवे लिये जो रूपपुर वासी गोपालदास ने मनोहर प्रार्थना करी सो हू कही है और सेतालीसमे तरंग में कोई महा भाग्यवती सुन्दरी की प्रिय के संग महारस प्रकार सूं शोभायमान हिंडोरा झूलन को जो प्रकार है सो हू मैंने कह्यो है और दूसरे दिन प्रातःकाल में जन्माष्टमी के अद्भुत वा उत्सव कूं मैंने कह्यो है और अड़तालीसमे तरंग में प्रभुन को द्वारिका के प्रति जो पधारनो है और कुकाजी नाम वारी राणी में जो महारस रूप सुन्दर अनुग्रह है सो कह्यो है और एकोनपचासमे तरंग में जो प्रभुन ने अहीरनी में रसवृद्धि करी है सो कह्यो है और द्वारिका में जो प्रभुन को प्रवेश है और तासूं हू जो प्रस्थान है सोहू मैंने कह्यो है और पचासमे तरंग में महा खंभालिया में जो जो नवीन सुन्दरीन के रमणानंद संपुष्ट जे रसमय लीला है सो कही है और एकावनमे तरंग में जो प्रभुन ने प्रभास के निकट देश कूं जो भाव विशेष सूं त्याग कियो है सो कह्यो है और सोढाणा देश के राजा राम जेठुआ पर जो श्रीजी ने कृपा करी है और राजकोटा के राजा विभा में जो कृपा करी है और जो ताजा माहाले शब्द सूं जो प्रसिद्ध भयो है सो हू मैंने कह्यो है खंभालिया पधारनो तैसे अनाबाई में जो कृपा है सो हू कही है और बाबनमे तरंग में कैयांणा वावरा गाम में प्रभुन कूं पधारनो और भागीरथी तैसे फूलबाई में जो परम कृपा करी है वीजा झाला और झावाजी मेंतैसे शिवा भट्ट में और मधुआ ठाकुरादि में जो कृपा करी है तैसे जमुनाबाई आदि कूं जो आनन्दित

किये है और जुलाहन मे तैसे विनकी स्त्रीन में जो प्रिय ने कृपा करी है तैसे सिद्धपुर में पधारनो हू जो नाना विधि देशों में प्रवेश है तैसे विनकूं जो पावन करनो है सो मैंने कह्यो है और त्रैपनमे तरंग में विट्ठलदास के घर में फेर ही प्रिय के पधारवे सूं जो उत्सव भयो है सो कह्यो है और चौपनमे तरंग में प्राणनाथ कमल नयन कूं हरिवे वारी रसरूप जो दीप माल को उत्सव मय मनोहर हटरी लीला है सो कही है और पंचावनमे तरंग में अन्नकूट को उत्सव कह्यो है और सैयदपुर में कीका महेता के घर में पधारके प्राणनाथ ने जो कृपा करी है और तहां जायके हू फेर जो विट्ठलदास महेता के घर में पधारे हैं और जो भठ भूजवे वारे पर जो कृपा करी है और अंजीर फल के आरोगने की जो सुखदाय लीला है और विट्ठलदास के मामा की स्त्री ने प्राप्त कियो जो रोटला है वाकी जो नर्म लीला है और विट्ठलदास को उत्कर्ष और वामें जो प्रभुन कूं कृपा समूह है सो कह्यो है और छप्पनवे तरंग में प्रभुन की रस लीला कूं और श्रृंगार दे के अलंकरण कूं और कुंवरबाई के ऊपर कृपा को और गोंपाल आदि के जो भक्त रचित कीर्तन को गान कियो है सो और रामचन्द्र के संग और पोपा व्यासादि के संग जो विनोद है सो कह्यो है और सत्तावनमे तरंग में बारह भट्टन कूं जो प्रभुन ने विजय कियो है सो कह्यो है और तामें प्रस्थान की इच्छा वारे ही सो जो रसात्मक सुन्दरीन के स्नेह सूं जो फेर ही तहां ही विराजमान भये हैं सो हू वर्णन कियो है और यासूं आगे के अठावनमे तरंग में सगरे तरंगन के अर्थन कूं संक्षेप सूं मैंने कह्यो है और हे रसिकाः प्रिय कूं रसमय चरित्र रूप जो यह चतुर्थ कल्लोल है जो श्री गोकुल के प्रियरूप श्रीजी की प्राप्ति को कारण है और परम फल रूप है और जो सगरे भक्तन के सगरे वांछित फलन कूं देवे वारो है और सगरे भक्तन के सगरे अभीष्ट कूं निवारण करिवे वारो है ऐसे याके रस सूं परम कोमल होय रहे अपने चित्त में धारण करत ही अब आगे जाको वरणन करूं हूं ।. ऐसे श्रीजी की प्राप्ति के कारण रूप परम फल रूप सर्व अनिष्ट निवारक और सगरे इष्टन कूं दायक या पंचम कल्लोल जी कूं कान रूप हाथन सूं निरन्तर ही पान करोगे ॥१॥

इति श्री गोकुल प्राणवल्लभानु ग्रहोन्मया भाषया चातुर्य्य कल्लोलन द्वितोस्तुमुदेश तां ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो चतुर्थ कल्लोले अष्ट पंचाशतम् स्तरंग सम्पूर्णम् ॥५८॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो सिकंदरपुरादि विहार भये चतुर्थ कल्लोलः श्री गोकुल प्राण प्रियैकतानं श्री रमणलाल महाराज नां चरण कमलैक दासानुदास ना जै जै जै जै श्री गोकुलेशः ॥

श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

१०८ गो० श्री० रमणलालजी महाराज श्रीजी नी परम कृपाथी प्रति करी सं० २०३५ ना मागशिर सुदी-१ ने वार शनीवार ता० १. १२. ७८ व दादा देसाई गोकुलदास हिंमत लाल बेलाबेन गोकुलदास के सादर जय जय श्री गोकुलेश ॥